CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# श्रीसौमित्ररामायण

डॉ0 गीता देवी मिश्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीसौमित्ररामायण

भगवान राम की कथा अनन्त एवं अपार है। अलग-अलग स्वतन्त्र दृष्टि से भक्तों, सन्तों एवं विद्वान कवियों द्वारा इसका प्रस्तुतिकरण हुआ है। अन्तःप्रेरणा वश यह भी एक स्वतन्त्र प्रणयन है।

अवतारों की संख्या अनन्त है और कारण भी अनन्त हैं। कल्प भेद से एक ही अवतार बार-बार होता है। भगवान राम का पुनः अवतार होगा इस तथ्य की प्रस्तुति इस प्रणयन में है। इसके लिये कथा की प्रचलित प्रस्तुति की आनुपूर्वी में कुछ परिवर्त्तन किया गया है और वह है वर्त्तमान कल्प के उत्तरचरित से प्रारम्भ कर भावी कल्प की वैवाहिक उपक्रम से मात्र जोड़ना। यहाँ कथा का क्रम सीता-परित्याग तथा राजधर्म का पालन, लव कुश का जन्म, मधुपुर का पुनर्वास, शम्बूक वृत्तान्त, अश्वमेध यज्ञ, सीता का भूप्रवेश, तथा प्रजापालन, वशिष्ठ लक्ष्मण सम्वाद, पाताल से सीता द्वारा प्रेषित पत्र का आना, उत्तर के रूप में रामकथा रूप लक्ष्मण का पत्रोत्तर भेजना और अन्ततः भावी कल्प में श्रीराम का पुनः अवतार तथा जानकी से मिलन की परिकल्पना वर्णित है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

S.3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीसौमित्ररामायण

डॉ० (श्रीमती) गीता मिश्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक :
गीता-प्रकाशन
राजमन्दिर, वाराणसी-२२१००१

प्रथम-संस्करण
२००० ई०

मूल्यम् : रू० १५१.००

© लेखकाधीन

मुद्रक :
सीमा प्रेस
ईश्वरगंगी, वाराणसी
दूरभाष : २११०९२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। श्री राम ।।

सन्तशिरोमणि
प्रातः स्मरणीय परमपूज्य
श्री प्रभुदासजी महाराज
के
करकमलों में
सादर समर्पित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

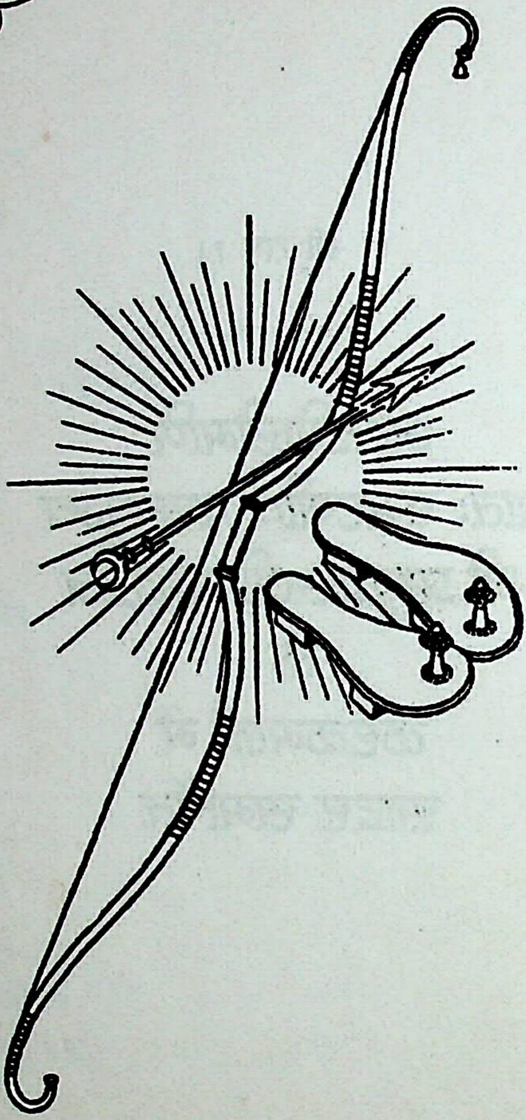

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# निवेदन

।।श्रीः।।

*

गाऊँ पावन चरित राम के शक्ति कहाँ मुझमें इतनी।
नाहीं निपुणता सियाराम की कथा रचयिता में जितनी।।

रामकाव्यविद सन्त समागम रूपी गंगा में अवगाहन।
सुलभ नहीं पर रामचरित कुछ मैं भी गाऊँ ललचाये मन।।

अतः विनय सिय स्वामिनी से माँ ! कृपा कीजिए आवे क्षमता।
शीश झुकाऊँ राम भगति युत जग में जो जहँ जैसी कविता।।

रामचरित मधुरातिमधुर गाते निशि वासर जिसे महेश।
घी के लड्डू टेढ़ भी भले होता जो गुण स्वाद विशेष।।

सो सब देव देवी गुरु साधु सज्जन प्रियतम राम भरोस।
श्रीसौमित्ररामायण 'गीता' विरचति सुधी छमिहें दोष।।

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पुरोवाक्

भगवान राम की कथा अनन्त एवं अपार है। भक्तों, सन्तों, महात्माओं एवं विद्वान कवियों द्वारा अलग-अलग स्वतन्त्र दृष्टि से इसका प्रस्तुतिकरण हुआ है। अन्तः प्रेरणावश यह भी एक स्वतन्त्र प्रस्तुति है।

जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तब-तब धर्म के अभ्युदय के लिये भगवान का अवतार होता है। अवतारों की संख्या अनन्त है और अवतार के कारण भी अनन्त हैं। कल्प-भेद से एक ही अवतार बार-बार होता है। श्रुतियों में इस तथ्य का प्रचुर विवेचन है तथा यही पौराणिक मान्यता भी है।

भगवान विष्णु के अवतारों में श्रीराम का अवतार अन्यतम है। इनका अवतार बार-बार हुआ है और भविष्य में भी होगा। वर्तमान राम कथा के उत्तर-चरित में भावी अवतार की भूमिका एवं बीज विद्यमान है। इस आधारभूत विचार को दृष्टि में रख कर प्रस्तुत प्रणयन हुआ है।

रामकथा की आनुपूर्वी प्रायः सर्वविदित है। भगवान राम का पुनः अवतार होगा इस तथ्य के प्रतिपादन के लिये कथा की प्रचलित आनुपूर्वी की प्रस्तुति में कुछ परिवर्तन किया गया है और वह वर्तमान कल्प के उत्तर-चरित से प्रारम्भ कर भावी कल्प के वैवाहिक उपक्रम से जोड़ना मात्र है।

यहाँ सीता-परित्याग, राजधर्म पालन, लव-कुश का जन्म, मधुपुर का पुनर्वास, शम्बूक वृत्तान्त, अश्वमेध यज्ञ, सीता का भू-प्रवेश तथा प्रजापालन के क्रम से कथा को प्रारम्भ किया गया है, इन्हें भगवान राम के भावी अवतार की भूमिका मानी गयी है। इसमें लक्ष्मण-वशिष्ठ सम्वाद, पाताल से प्रेषित सीता के पत्र का आना बीज है। उत्तर के रूप में रामकथा रूप लक्ष्मण का पत्र वृक्ष है और भगवान राम तथा माता जानकी का कल्पान्तर में पुनः अवतार एवं मिलन की आशा उसका फल परिकल्पित है। इस रामकथा रूप लक्ष्मण के पत्र में यथाशक्य समग्र कथा का सन्निवेश प्रस्तावित है।

भगवत्कृपा से ही जीवन की विविध विषमताओं में रहते हुए भी सन्तों,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महात्माओं, भगवद्भक्तों एवं पूज्यजनों के आशीर्वाद से यह सम्भव हुआ है। इस ग्रन्थ के मूल में ब्रह्मर्षि श्रीदूधाधारी आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार, के वर्तमान आश्रमाध्यक्ष सन्तशिरोमणि श्री १००८ श्री प्रभुदास जी महाराज का आशीर्वाद है, अतः उनके प्रति मैं शतशः सादर नमन करती हूँ।

परम श्रद्धेय पद्मविभूषण प्रोफेसर विद्यानिवासजी मिश्र को सादर प्रणाम करती हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के साथ मुझे आशीर्वाद युक्त शुभकामनाओं से अनुगृहीत किया है।

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा वेदपण्डित तथा विशिष्ट पण्डित पुरस्कार से सम्मानित पूज्य पतिदेव डाक्टर वामदेव मिश्र प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग तथा संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से पग-पग पर सदोत्साह एवं कुशल निर्देशन प्राप्त हुआ है। एतदर्थ इनके प्रति शब्दों के द्वारा कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपनी धृष्टता समझती हूँ, अतएव सादर प्रणत हूँ।

भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ० भूपेन्द्र कुमार मोदी ने इस ग्रन्थ के प्रणयन में प्रवृत्ति को एक श्लाघनीय कार्य कह कर जो प्रोत्साहन दिया इसके लिये मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले उन सभी लोगों के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिनके सहयोग के बिना इस कार्य की पूर्णता असम्भव थी।

इनके अतिरिक्त सीमा प्रेस के व्यवस्थापक डॉ० दर्शनानन्द जी एवं उनके अग्रज डॉ० श्रद्धानन्द जी के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने बड़े ही मनोयोग से मुद्रण कार्य को सम्पादित किया है।

अन्ततः स्खलन मानव स्वभाव है, त्रुटियों के लिये मैं क्षमा प्रार्थिनी हूँ।

श्रीराम विवाह पञ्चमी
२०५७

विनीत
गीता देवी मिश्रा

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यानिवास मिश्र

।।श्री।।

एम-३ बादशाहबाग कॉलोनी,
वाराणसी-२२१००२
फोन : ०५४२-३५६३०९
४/१९ आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : ०११-३२५३२३३

दिनांक : २३-११-२०००

मैं ने डॉ० गीता देवी मिश्रा द्वारा रचित श्रीसौमित्ररामायण की पाण्डुलिपि पढ़ी। सीता के पाताल प्रवेश के बाद की घटना से इस काव्य का प्रारम्भ है। पाताल से काल पुरुष के द्वारा सीता भगवान श्रीरामचन्द्र को सन्देश भेजती हैं कि वे वहां से उनका उद्धार करें। इसी उत्तर के प्रसंग में लक्ष्मण के द्वारा पूरी रामकथा स्मृति रूप में फिर आती है। यह महाकाव्य इस प्रकार एक अनूठी उद्‌भावना से प्रारम्भ होता है और इसमें बीच-बीच में यथावसर लोकगीतों का संगुम्फन है जो इसे अधिक मनोरम बना देता है। यह पुस्तक भी सात पर्वों में खड़ी बोली में रचित है और प्रायः चौपाई का ही प्रयोग है। भाषा प्रवाह-युक्त और सरस है। मुझे विश्वास है कि एक कवियित्री द्वारा रचित रामायण रामकथा का नया आयाम प्रस्तुत करेगा और काव्य के पाठकों तथा रामकथा के प्रेमियों को रुचेगा।

(विद्यानिवास मिश्र)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथा अतिपावनी मनभावनी सौमित्र सीता को
लिखे श्रीराम की कहि पाति हुयी सुखदायिनी सिय को ।
इसे जो कहत गावत सुनत ध्यावत राम अरु सीता
करत कल्याण यह सौमित्र रामायण रची 'गीता' ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# विषयानुक्रमणिका


समर्पण

निवेदन

पुरोवाक्

आशीर्वचन

विषयानुक्रमणिका

**पहला पर्व अवतारीराम पृष्ठ संख्या १ - ३८**

१. मङ्गलाचरण ३

२. भावी अवतार की वर्तमान भूमिका ३

(१) सीता-परित्याग तथा राजधर्म का पालन ३

(२) लव-कुश का जन्म ९

(३) मधुपुर का पुनर्वास १०

(४) शम्बूक वृत्तान्त १४

(५) अश्वमेध यज्ञ १८

(६) सीता का भू-प्रवेश २६

(७) प्रजापालन ३०

३. भावी रामावतार का बीज ३१

(१) वशिष्ठ लक्ष्मण सम्वाद ३१

(२) सीता का पत्र ३४

(३) लक्ष्मण के द्वारा सीता को पत्रोत्तर ३६


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

**दूसरा पर्व बालकराम** **पृष्ठ संख्या ३९-७४**

१. अवधपुरी ४१
२. रामजन्म ४१
३. राम का दर्शन करने के लिए ज्योतिषी के रूप में काकभुशुण्डि के साथ शिव का आना ४८
४. बाललीला एवं अन्य संस्कार ५०
५. मदारी के रूप में हनुमान के साथ शिव का पुनः आना ५६
६. उपनयन संस्कार ५८
७. गुरु के आश्रम में अध्ययन एवं समावर्तन ५८
८. राम का वैराग्य ६१
९. विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा ६२
१०. मिथिला प्रस्थान ६९

**तीसरा पर्व दुलहाराम** **पृष्ठ संख्या ७५-१०४**

१. मिथिला में आतिथ्य ७७
२. ब्रह्मर्षि विश्वामित्र का आख्यान ७८
३. मिथिलापुरी दर्शन ८४
४. सीता का गौरीपूजन एवं राम का पुष्पचयन ८६
५. धनुषयज्ञ ८८
६. श्रीसीता राम विवाह ९२
७. परशुराम राम सम्वाद १०१
८ अवधपुरी में वधू प्रवेश १०३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

**चौथा पर्व युवराजराम पृष्ठ संख्या १०५-११८**

१. रामराज्याभिषेक की तैयारी १०७
२. कैकेयी का वरदान १०७
३. वनगमन के लिये कौशिल्या से आशीर्वाद ११०
४. श्रीसीताराम सम्वाद १११
५. लक्ष्मण राम सम्वाद ११५
६. मुनिवेष धारण एवं प्रस्थान ११६

**पाँचवाँ पर्व वनवासीराम पृष्ठ संख्या ११९-१६४**

१. श्रीराम वनगमन १२१
२. दशरथ एवं परिजनों का विलाप १२३
३. तमसा तीर विश्राम एवं जन्मभूमि को प्रणाम १२५
४. श्रीराम का गुह से मिलन एवं सुमन्त्र की वापसी १२७
५. केवट प्रेम १३१
६. भरद्वाज दर्शन एवं वनवासियों का भाव १३६
७. वाल्मीकि श्रीराम सम्वाद एवं चित्रकूट निवास १३९
८. अवध वृत्तानत १४२
९. भरत-वनगमन १४८
१०. भरत-मनावन १५०
११. कौशल्या का विलाप १५६
१२. जयन्त की कुटिलता १५९
१३. श्रीसीता अनुसूया मिलन १६०
१४. विराध वध १६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

१५. शरभङ्ग के आश्रम में श्रीराम १६१
१६. सुतीक्ष्ण के आश्रम में श्रीराम १६२
१७. अगस्त्य-दर्शन १६३

छठाँ पर्व वीरराम पृष्ठ संख्या १६५-३००

१. पञ्चवटी में श्रीराम १६७
२. खर-दूषण वध १६९
३. मारीच वध एवं सीता हरण १६९
४. श्रीराम विलाप एवं जटायु मरण १७३
५. कबन्ध उद्धार १७७
६. शबरी आश्रम में श्रीराम १७८
७. नारद श्रीराम मिलन १७९
८. हनुमान श्रीराम मिलन १७९
९. सुग्रीव श्रीराम मैत्री १८०
१०. वाली वध १८२
११. वर्षा वर्णन १८६
१२. शरद वर्णन १८८
१३. किष्किन्धा में लक्ष्मण १८९
१४. प्रस्रवन पर्वत पर सुग्रीव राम सम्वाद १९१
१५. सीता की खोज में सिन्धुतट पर वानर सैन्य १९२
१६. हनुमान का समुद्र लंघन १९८
१७. लङ्का प्रवेश २००
१८. सीता हनुमान सम्वाद २०२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


१९. लङ्का दहन २०६

२०. लङ्का से वापसी २१२

२१. हनुमान श्रीराम सम्वाद २१३

२२. लङ्का के लिए ससैन्य प्रस्थान २१५

२३. लङ्का में अपशकुन २१६

२४. विभीषण की शरणागति २१७

२५. सेतुबन्ध एवं रामेश्वर की स्थापना २२३

२६. अङ्गद रावण सम्वाद २२८

२७. युद्ध प्रारम्भ २३२

२८. कुम्भकर्ण वध २३७

२९. वीर राक्षस समूह का वध २४३

३०. लक्ष्मण शक्ति २४५

३१. मकराक्ष वध २५०

३२.मेघनाद वध २५१

३३. अहिरावण वध २५८

३४. राम की शक्ति पूजा २६१

३५. रावण वध २६३

३६. सीता की अग्नि परीक्षा २७८

३७. दशरथ का आगमन २८३

३८. विभीषण द्वारा श्रीराम का सत्कार एवं अवध के लिये प्रस्थान २८६

३९. हनुमान का अयोध्या के लिये प्रस्थान २९३

४०. अवध में श्रीराम के स्वागत की तैयारी २९६


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri


सातवाँ पर्व राजाराम पृष्ठ संख्या ३०१-३१९

१. भरत के पास हनुमान का आगमन ३०३
२. श्रीराम का भरत एवं अवधवासियों से मिलाप ३०३
३. पुष्पक की वापसी ३०५
४. मङ्गल स्नान एवं नगर प्रवेश ३०५
५. श्रीराम राज्याभिषेक ३०८
६. अभिनन्दन एवं उपहार ३१०
७. श्रीसीता द्वारा हनुमान को उपहार ३१२
८. रामदरबार ३१४
९. अभ्यागतों की विदाई ३१५
१०. श्रीराम का आदर्श राज्य ३१६
११. उपसंहार ३१८


*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।श्रीः।।

# श्रीसौमित्ररामायण

## पहला पर्व

## अवतारीराम

विश्वपालक विष्णु विश्वेश
धरा पर धरि मानव का वेष।
पधारे रविकुल में, श्रीराम
जिन्हें कहते, शत कोटि प्रणाम।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



### १. मङ्गलाचरण

प्रथम गणपति गुरु गौरी महेश, मनाऊँ शमन सकल भव क्लेश
पुनः जिनकी शैया है शेष, नमत अज भी कहि जै विश्वेश
निगम आगम है जिनकी साँस, विविध वपुधारी रमानिवास
चराचर जग के नायक एक, उन्हें मेरा प्रणाम सिर टेक
वही प्रभु मीन कमठ वाराह, बने नरहरि वामन जब राह
धरम के सारे वाधित हुयें, मनुज तन भी धरि शिक्षा दिये
तथा भय भगत भूमि के टारे, सभी प्रातःस्मरणीय हमारे

### २. भावी अवतार की वर्तमान भूमिका

परशुधर दशरथनन्दन राम, विरज के छलिया गिरिधर श्याम
तथा बनि बुद्ध स्वयं हरि आये, कुरीति पातक प्रबल मिटाये
इन्हीं के चरित नाम अरु रूप, वखाने निज-निज मति अनुरूप
विविध जन, सगुन ब्रह्म मनभाये जिन्हें जो, हम निज विषय बनाये
सियापति चरित, यहाँ क्या फिर से, पधारेंगे प्रभु ? हाँ, तो कैसे ?

#### (१) सीता परित्याग एवं राजधर्म का पालन

अलौकिक हुआ राम का राज्य, जहाँ श्रीसीता देवी त्याज्य,
हुयीं, तजि सारे भौतिक स्वार्थ, प्रजा की सुविधा सुख परमार्थ
बना व्रत एक, भरत शत्रुहन महामुनि गुरु वशिष्ठ पुर परिजन
सचिव सैनिक कपिवर हनुमान सभी थे स्तब्ध बात यह जान
महारानी को भूपति ने वन दिया है, उन्हें छोड़ने कानन
गये हैं लखन, सिया जब त्याज्य प्रबल जगति में सबसे भाग्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे पूछे क्या किससे कौन अवध निष्प्राण सरिस था मौन
परन्तु 'कहाँ राम की सिया अमर जिसने जग में कर दिया
राम का राज्य' सोंचती मात कौशिला स्नेहाधिक्य वशात्
विकल हिय राम-कक्ष में आईं जहाँ दृग मूँद शान्त रघुराई
विराजे थे, आ बोलीं 'लाल! निठुर विधना ने कैसी चाल
चली, अन्तर्वर्त्नी सुकुमारी बहू मेरी मिथिलेश दुलारी
कहेगी किससे अपनी व्यथा सिया हित जीवन मेरा वृथा'
उधर शेषावतार श्रीलखन सचिव संग लौट रहे थे भवन
सिया को छोड़ अकेली वहाँ विजन वन में नहिं कोई जहाँ
किये था मन को व्याप्त विषाद छलकते थे दृग क्षण क्षण बाद
कभी कह उठते 'पूज्य सचिववर! रहेंगे कैसे सिय बिनु रघुवर
तजे सुख सौख्य स्नेह, निष्कासन सिया का किये, प्रजा का पालन
अलौकिक अब त्रिभुवन विख्यात महामति के ही वश की बात'
विसरते थे नहिं सिय के रुदन तथा प्रभु के प्रति कोमल वचन
'लखन! प्रभु से जा मोर प्रणाम निवेदन करना, दायाधाम
न जाने क्यों यूँ मुझको त्याग दिये सिमटा काहे अनुराग
अभी कल की ही तो है बात बइठ उपवन में श्यामलगात
मधुर शब्दों में दोहद पूछे मनोरथ हुये आज क्यों छूछे'
'हुयी क्या गलती रघुकुल केतु!' सुनत 'लोकापवाद है हेतु'
विसर गईं सुध बुध हुयीं अचेत क्षणिक में आया जब कि चेत
सिया बोलीं 'निर्मल आदर्श प्रजा पावे नृप से, उत्कर्ष
सहित पुर परिजन सारे जियें लखन! जाओ अब मेरे लिये
करो नहिं चिन्ता, जा कह देना प्रजा तो हूँ ही, विसरेंगे ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कठिन नृप-धर्म निभावें नाथ विलग हो कर भी प्रतिपल साथ
सिया रघुवर की, जग आदर्श उन्हें माने मुझको हो हर्ष'
कहत मूर्च्छित हो कर गिर जाना धरा पर, ऐसे में तजि आना
लखन हिय वेधत पर धरि धीर लवटि आये जहँ श्रीरघुवीर
विलोके विरहोदधि का ज्वाल लहर बनि जब जब लेत उछाल
कमल लोचन तट छू छू सिमट रहा है, ऐसे प्रभु के निकट
पहुँच कर लछिमन किये प्रणाम 'किये क्या ? कैसे ?' पूछे राम
बताये बातें सारी लखन छलक गये प्रभु के अम्बुजनयन
जनकलली को तजि, हैं अति खिन्न प्रजावत्सल, निहार उद्विग्न
हुआ पहले से भी अब हृदय लखन का, पर सोंचे यह समय
कठिन रघुकुलनन्दन पर आया तुरत धरि धीर कहे 'रघुराया !
कहूँ क्या छोट वदन बड़ बात विनय बस, मन थिर करिये तात !
विछुड़ना मिलना भाग्य विधान नियत विधि से ही करत प्रदान,
अगर नरवर ! यूँ आप विषाद करेंगे, सम्भव है अपवाद
उठावे पुनः निरङ्कुश लोक अतः राघव ! तजिये यह शोक
सुना मैं यह भी सन्त सुजान कहे, है जिन्हें तत्त्व का ज्ञान
महर्षि भृगु का सच हो शाप इसी से प्रिया-विरह-सन्ताप
किये स्वीकार स्वयं जगदीश रमापति राम कोशलाधीश'
कहा तब प्रभु ने 'भैया लखन ! सुखद सुन्दर समयोचित वचन
तुम्हारे, अब मन शान्त हमार चलो हम चलें राजदरबार
नृपति से सुख सुविधा या न्याय जिसे जो चहिये निर्भय आय
कहे, कह दो मैं रघुकुलकेतु समर्पित सदा प्रजा के हेतु
सभी निज वर्णाश्रम अनुसार करें सब धरम करम व्यवहार'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विविध शुभ कर्म स्वयं भी करत राम, जन दान मान बहु लहत
कहत अस जन-जन 'भाग हमार मिले नृप राघव हमें उदार
चरित इनके सब अनुकरणीय तथा आदर्श और महनीय
गुणों वाले, हों श्रेष्ठ चरित्र हमारे भी सो परम पवित्र
सिया को भी इन ने है त्याग दिया, हम पर अनुपम अनुराग
सबों के अपने कोशलराय मनुज पशु पक्षी सबको न्याय
सदा ही देत नीति अनुसार प्रजा हम सब इन पर बलिहार'

गहन वन में उत जनकदुलारी करत क्रन्दन 'हे नाथ' पुकारी
सुने देखे मुनिबालक धाये गये निज आश्रम में बतलाये
महर्षि वाल्मीकि से 'गुरुवर ! बगल के वन में गंगा तट पर
विलपती एक अकेली नारी बड़ी सुन्दरी और सुकुमारी'
सुने फिर तप बल से करि ध्यान महर्षि ने सब बातें जान
लिया, वह रघुनन्दन की प्रिया स्नुषा श्रीचक्रवर्ती की, धिया
जनक की, जिन्हें मिला वनवास पिया से, तुरत सिया के पास
गये जा बोले 'बेटी ! चिन्ता करो नहिं मैं प्राचेतस, पिता
तुम्हारे सीरध्वजजी मित्र हमारे, देवि ! परम पवित्र
चरित तेरे, तुम तो आदर्श स्त्रियों के लिये और उत्कर्ष
तरणिकुल का तुझसे वैदेही ! चलो पावन आश्रम है यहीं
हमारा, सुन प्रणाम करि सीता चलीं मुनि पाछे परम पुनीता
लिये उनको मुनि आश्रम आये बुला तापसियों को समझाये
'इन्हें रखना है अपने सङ्ग समझ कर आश्रम का ही अङ्ग
सती ये आपद्ग्रस्ता, क्लेश न हो तनिकहुँ आदेश विशेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हमारा, सुता सखी सम प्यार सहित इनका करना सत्कार'
सिया को देखत ही सब प्राण सरिस चाहने लगीं, सम्मान
सहित सिय ने सबको अभिवादन किया तापसियों ने अर्घासन
दिया और मुदितमना अपनाया शुभद आश्रय सीता ने पाया
निरन्तर सुबह शाम मध्याह्न परम प्रियतम निज प्रभु का ध्यान
किया करती थीं, आठो याम सिया जपती थीं बस श्रीराम
गजब नियति का नियत विधान न जिसको लघु गुरु की पहचान

प्रजा थी सुखी और समृद्ध राम की, वन में भी मुनि सिद्ध
सुखी निश्चिन्त करत जप जोग किसी के तन मन में नहिं रोग
करत जन घर घर पूजन यजन धरमप्रद आख्यानों का श्रवण
कहीं व्यक्तिगत कहीं समुदाय बनायी, पूजित द्विज गुरु गाय
प्रहर्षित हृष्ट पुष्ट अनुरक्त धरम में, सब शिव विष्णु भक्त
स्वयं राघव भी चारो भाई सभा में या उपवन में जाई
विविध आख्यान सुनाते सुनते अवध में तो नित आते रहते
तपस्वी साधक सिद्ध सुजान करत आदर कहि 'भाग्य महान'
खुशी से सबका श्रीसुखराशि इसी क्रम में यमुनातट वासी
च्यवन ऋषि तापस मण्डल साथ पधारे बोले 'हे रघुनाथ!
लवण, मधुसुत मधुपुर का शासक प्रजा के लिये बड़ा दुःखदायक
हुआ है, हम तापस को क्लेश सदा रघुनन्दन! देत विशेष
प्रजा मधुपुर में नहीं बराबर भगे जन जहाँ तहाँ घबराकर
रहा अब तक अजेय वह सबसे पिता को उसके वृषभध्वज से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिला था शूल एक, यह बात पुरानी है, वह आयुध प्राप्त
हो गया मधु से लवणासुर को उसी के बल वह रण में सबको
समझता तृण सम, रक्षा हेतु कहे हम जा जा रघुकुलकेतु !
बहुत लोगों से कोई हमार बना नहिं रक्षक करुणागार !
अतः अब आये आपके पास दया करि हरें हमारा त्रास'
उन्हें ढाढ़स दे, दायाधाम कहे अनुजों से 'कहिये काम
महर्षि का यह किससे साध्य' भरत बोले सादर 'आराध्य !
रखें इसको मेरे ही हिस्से' तुरत शत्रुघ्न कहे उठ प्रभु से
'हमारे रहते भैया भरत उठावें कष्ट नहीं यह जँचत
इन्होंने किये बहुत से कार्य अतः यह भार मुझे दें आर्य !
करुँगा वध मैं लवणासुर का' तुरत श्रीराम अनुज का टीका
वहीं करवाये बोले 'जाओ असुर वध के उपरान्त बसाओ
नये ढंग से मधुपुर को भाई !' सुनत शत्रुघ्न बहुत घबराई
चरण रघुराई का धरि लिये 'बड़ी गलती भैया ! हम किये
भरत भैया ने जब स्वीकार किया लवणासुर का संहार
'करुँगा मैं' मेरा कर्त्तव्य नहीं था बोल बड़ों के मध्य
कहूँ निज अभिनिवेश, आदेश आपका अब दुर्लङ्घ्य नरेश !
परन्तु सम्मुख जेठे भाई खड़े, लघु मैं सिंहासन पाई
विराजूँ, यह अति अनुचित कर्म हमारा, एतद् जनित अधर्म
बचावें इससे मुझको नाथ !' उन्हें व्याकुल विलोक रघुनाथ
मधुर बातें कहि हृदय लगाये दिये सायक अमोघ समझाये
'रहे यह ध्यान न जाना भूल भवन में शिव प्रदत्त वह शूल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


छोड़ कर बाहर निज आहार खोजने निकल आये जब, द्वार
नगर का तभी रोक तूँ लेना उसे भीतर मत जाने देना
वहीं रण हेतु उसे ललकार इसी सायक से कर के वार
उसे वध देना, राक्षस क्रूर बहुत है, अपने संग भी शूर
समर विजयी, गज, रथ, तुरगादि प्रचुर ले लो जन, धन, रत्नादि
लवण वध करने के पश्चात् बसाना भी होगा पुर भ्रात!
तुझे ही, पर तुम हो चढ़ आये उसे यह भनक न लगने पाये
सफलता तभी लगेगी हाथ तुम्हारे' प्रभु पद रज धरि माथ
पठाये सैन्य लखनलघुभ्रात प्रथम, फिर एक माह पश्चात्
लवण वध हेतु शत्रुहन चले सबों से जथा जोग मिल गले
अवध से वीर अकेले निकले तीसरे दिन जब दिनमणि ढले
नदी जनपद लाँघत वनप्रान्त पहुँच गये जहाँ तपोवन शान्त
महर्षि वाल्मीकि का पावन विखेरत छटा सुहावन सावन
उतर गये झट शत्रुघ्नकुमार तुरग से मर्यादित आचार
विचारी, पूछे 'कुलपति कहाँ ?' मिले जा, बैठे थे मुनि जहाँ
नमन किये पद धूरि धरि सीस दिये ऋषि हरष मना आसीस
तथा आदर समेत सब हाल अवध का पूछे, शत्रुहनलाल
बताये यह भी कैसे आना हुआ यह अरु प्रातः हि जाना
किये फिर वहीं रात्रिविश्राम परन्तु नहीं नींद का नाम

## (२) लव-कुश का जन्म

मचा उत्सव आश्रम में, लाल सिया के जनमे यमल, निहाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुये आदिकवि वृद्धि पाया तरणिकुल, पिता बने रघुराया
कराई सारी रक्षा विधि स्वयं ही वाल्मीकि तपनिधि
शिशुन्ह के कुश लव नाम बताये मुदित तापसियाँ तापस गाये
सफल हो गया सिया को लाना खुशी यह रिपुसूदन ने जाना
'हमारा यह सौभाग्य महान्' कहे, कैसे हो गया बिहान
किसी को पता ही नहीं चला मनोहर सिय के दोनों लला
कुशल वन्द्या हमार यह देख प्रफुल्लित हो शत्रुघ्न विशेष
नमन करि मुनि को अपना राह लिये, था जगा नया उत्साह

### *(३) मधुपुर का पुनर्वास*

पहुँच गये मधुपुर, द्विज समुदाय सुहृद सैनिक सुधि सचिव सहाय
वहाँ सुनियोजित विधि अनुसार जमे थे छिपकर, जब संहार
लवण का होगा हम सब लोग वसाने में मधुरा सहयोग
करेंगे, रिपुसूदन भी वास लिये जा प्रथम च्यवन मुनि पास
कथा क्रम में सब बातें ज्ञात किये खल का बल अरु उत्पात
मचाया उसने किन पर कहाँ तदन्तर क्या करना है यहाँ
मुझे अब, भली भाँति सुविचार उठे अगले दिन राजकुमार
लिये सब आयुध यमुना पार किये और रोक नगर का द्वार
सैनिकों संग खड़े हो गये तभी लवणासुर बोझा लिये
बहुत से मृत प्राणी का आया विलोकी रिपुहन को गुस्साया
'कवन तूँ ? अब मरने की साध लगी तुझको जो रस्ता बाध
खड़े हो, अच्छा था आहार हमारा कम, अब तुझको मार
भरूँगा पेट ठीक ही किये' सुनत हँस परिचय अपना दिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वीर, 'रिपुसूदन मेरा नाम तथा नामानुरूप ही काम'
सुनत परिचय राक्षस का रोष बढ़ा, दे रावणारि को दोष
गरजता बोला 'थोड़ा ठहर अभी तूँ करना मुझसे समर
जरा मैं ले लूँ अपना शूल' कहे रिपुसूदन 'रे खल! भूल
पुरारि का त्रिशूल, तूँ भार जगत् का, रोक कठिन ये वार'
समर फिर महाभयङ्कर छिड़ा असुर वह बड़े वेग से भिड़ा
लवण अरु रिपुसूदन का समर विलोकत अम्बर पर आ अमर
संग ऋषि मुनि, पर पड़त प्रतीत नहीं की किसकी होगी जीत
बड़ा तरु एक उपारी वार किया खल, श्रीशत्रुघ्न कुमार
धरा पर गिर हो गये अचेत क्षणिक, पर ज्यों ही आया चेत
लिये सायक अब प्रभु का दिया दिशाओं में जिसने भर दिया
तेज, लवणासुर को सन्ताप हुआ वह झपट्टा तब तक 'पाप
शान्त हो' कह शत्रुघ्न प्रहार किये, वह मृत्युप्रद था वार
फटी छाती खल भू पर गिरा गगन में गूँज उठी यह गिरा
'मरा लवणासुर विजयी हुये शत्रुघ्न' ऋषि मुनि जै जै किये
असुर जो शेष थे भगे, आये सहायक शिल्पी वणिक् बनाये
विविध सुर-मन्दिर गोठ मकान नदी सर तट, बड़ छोट दुकान
गली पथ महल बजार सजाये भगे थे जो जन उन्हें बुलाये
नगर में पुनः वीर शुत्रहन तपस्वी ऋषि मुनि अब निर्विघ्न
करत जप तप, अरु धरम निभावत गृहस्थी जन, रिपुहन-गुण गावत
व्यथा चिन्ता थी तनिकहुँ नहीं किसी के तन में मन में, वहीं
शत्रुहन के जनमे दो तनय व्यवस्थित करने में पुर समय
लग गया उनको बारह साल अवध में तब तक दो दो लाल
भरत के लक्ष्मण के भी जनमे मिलन की इच्छा सबके मन में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत थी कब हम सब परिवार एकत्रित होंगे तभी विचार
शत्रुहन के मन में भी आया मुझे प्रभु ने जिसे हेतु पठाया
हुआ सब अब मैं उनसे दूर नहीं रह पाऊँगा भरपूर
सुअवसर सेवा का नहिं प्राप्त हुआ, वे अरुण मृदुल जलजात
सरिस, मेरे प्रभु के श्रीचरण मिलेंगे कब, सोंचत शत्रुहन
सचिव सेनप को तुरत पुकार उन्हें पुर की रक्षा का भार
दिये बोले 'मैं प्रभु के पास अवध जाऊँगा , तनिकहुँ त्रास
न पावे प्रजा रहे यह ध्यान' व्यवस्था सब सहेज प्रस्थान
किये, शत स्यन्दन लेकर सङ्ग जुते थे जिनमें श्रेष्ठ तुरङ्ग
रुके थे जाते जिस-जिस ठाँव उन्हीं जगहों पर पुनः पड़ाव
डालते हुये गये फिर वहाँ महर्षि प्राचेतस थे जहाँ
कहे सविनय 'हम सब मुनिवर्य ! रहेंगे आज यहीं' तब अर्घ्य
मान मुनि ने विधिवत् सत्कार किया फिर कहे 'लवण को मार
अभय सब जीवों को तुम दिये असुर संग समर अनोखा किये
जिसे मैं ने देवों के साथ विलोका है, आओ मैं माथ
सूँघते हुए आज आसीस तुझे दूँ राघव मधुराधीष !
नेह का यही परम उत्कर्ष' हुआ रिपुसूदन को अति हर्ष
गये सोने भोजन उपरान्त परन्तु अचरज, अतिशय शान्त
तपोवन आज गीत से मुखरित इसी के साथ-साथ हि झङ्कृत
हुये कैसे वीणा के तार मधुर स्वर खूब चढ़ाव उतार
यथोचित तथा सुसंस्कृत शब्द गीत के उत्तम मनहर छन्द
अलङ्कृत, जिसमें चरित उदार राम के हैं अनुस्यूत सवाँर
मधुर गायन ने बीती बात तथा घटनाओं से साक्षात्
कराया जैसे, हुये विभोर शत्रुहन, निशा बीत गई भोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हो गया सन्ध्या वन्दन किये महाकवि से जा आज्ञा लिये
साथियों संग अवध को चले सिया-सुत दोनों जो थे पले
जनम से मुनि के आश्रम में ही बना झूला तृण पातों से ही
जिन्हें तापसियों के ही हाथ झुलाये शुचि सनेह के साथ
जननी के पय ने उनका देह किया जिमि पुष्ट, शील अरु स्नेह
सबों के लिये दया का भाव भरा हिय में, दे सरल सुभाव
महर्षि ने शिक्षा संस्कार दिया ऐसा की युगल कुमार
विविध विषयों के अनुपम ज्ञानी हुये अरु धनुर्वेद में सानी
न कोई उनका था, गान्धर्व वेद का भी अभ्यास अपूर्व
कराये, मुनि का आदिकाव्य सजा सुर लय से सुन्दर श्राव्य
बना कर जब लव कुश थे गाते सुनत जन मन्त्र-मुग्ध हो जाते
यही सीता के दोनों लला चमत्कृत रहे गान की कला
इसी हेतु निद्रा को त्याग सदा अभ्यास निरत निशि जाग
लवटि मधुपुर से जब थे आये इन्हीं दोनों श्रुतधर के गाये
महर्षि विरचित राघव चरित सुने थे रिपुसूदन, पर विदित
हुआ नहिं कैसी है यह बात गई थी अचरज में ही रात
पहुँच गये अवध शत्रुहन, आया विलोकी उनको रघुकुलराया
लगाये गले, मिले सब भाई तथा परिजन, पुरजन रघुराई
बहुत खुश थे राक्षस का अन्त अनुज ने किया, सुखी सब सन्त
सुजन हो गये, बसा फिर नगर, अवध में सात दिनों तक ठहर
चले रिपुहन मधुपुर परिवार सहित, श्रीराघव करुणागार
लिये भरतादिक को उदकान्त गये परिगाहन तद् उपरान्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रजा का सहज भाव से पालन लगे करने प्रभु, सब सुख साधन

## (४) शम्बूक वृत्तान्त

सभी को थे उपलब्ध, अचानक अवध में द्विज दम्पत्ति मृत बालक
लिये आये, रखि महल दुआरे लगे रोने आँखो के तारे
गये तुम कहाँ तुम्हारे बिन्ना कठिन हम दोनों का हि जीना
पुनः सिर पीटत बारम्बार लगे कहने 'नृप करुणागार
दया सिन्धु कृपालु रघुराया कहाँ से विपत वज्र यह आया
निशाना बना हमारा लाल अभी तो इस युग की यह चाल
नहीं कि अपने आछत पिता विलोके निज जाये की चिता
कहीं निश्चय ही छिपा अधर्म तुम्हारे शासन में, या कर्म
तुम्हारे खोटे हैं रघुवीर! कि हमको पुत्र मरण का पीर
भुगतना पड़ा, कहाँ हो आओ निहारो मेरी ओर, बताओ
किया कुछ भी नहिं हमने पाप तुझे भी कहते सब निष्पाप
हुआ पर यह क्या मेरा पुत्र मुझे वापस दो' बात विचित्र
सुनत रघुनन्दन दौड़े आये प्रथम ब्राह्मण को धीर बधाये
पुनः बालक का मृतक शरीर सुरक्षित करवाये रघुवीर
कहे फिर 'जब तक यह मृत बालक न जीयेगा यह परजापालक
रहेगा निराहार' सुन बात सबों के हुये विकम्पित गात
सभी ने किया अन्न जल त्याग गजब जन जनपालक अनुराग
बुला फिर द्विज मण्डली विचार किये, इस मृत्यु का आधार
कहां है, क्या है, तभी पधार सभा में नारद करुणागार
अवधपति से बोले 'हे भद्र! कहीं कानन में कोई शूद्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तपस्या रत है, अनाधिकार चाहता है सशरीर पधार
बनूँ मैं अमर सभा का सभ्य तपस्या उसकी है नहिं क्षम्य
व्यवस्था वर्णाश्रम अनुसार यही कि वह सेवा सत्कार
करे सबका, पर अपना कर्म छोड़ तप रत है यही अधर्म
विप्र बालक का मृत्यु-हेतु अतः यह करतब रघुकुलकेतु
आपका, उसे खोजिये जाई करें वारित भी, तब रघुराई !
धरम की वृद्धि से तत्काल विप्र का नन्हा सा यह बाल
पुनः जीवित होगा' सुन बात सुरर्षि की प्रभु श्यामलगात
किये सुमिरन पुष्पक को, आया नमन करि बोला 'रघुकुलराया !
करें आदेश आपका किङ्कर सदा ही है सेवा में तत्पर'
व्यवस्था सकल सहेज अनुज को दिये आदेश राम पुष्पक को
'चलो पहिले पश्चिम की ओर पुनः उत्तर फिर पूरब' गौर
सहित सब जगह निरीक्षण किये तनिक भी स्थान पाप के लिये
नहीं था, सब थे शुद्धाचारी तथा निज वर्णाश्रम अनुहारी
दखिन दिशि पञ्चवटी के निकट गये जब मानुष कोई विकट–
तपस्या रत था उलटे लटक पेड़ से, दृष्टि बरबस अँटक
रहीं थी, मुख धरती की ओर किये था, देख तपस्या घोर
उतर गये पुष्पक से श्रीराम पहुँच उसके समीप निज नाम
बताये, परिचय अपना दिये प्रश्न फिर उस तापस से किये
'तपस्वी ! किस योनि में जन्म लिये हो, दुष्कर तप का मर्म
बताओ, क्या है तेरा नाम ?' कहा तब तापस ने 'श्रीराम !
मुझे सशरीर स्वर्ग है जाना कठिन तप इसी हेतु मैं ठाना
जनम से शुद्र योनि हूँ, आप मुझे शम्बूक कहें निष्पाप !'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुनत श्रीराम खींच तलवार किये उसकी गर्दन पर वार
मरा वह, सुरगण जै जै कार लगे करने अरु बारम्बार
कहे 'जो भावे उत्तमचरित ! वही वर ले लें हम हैं मुदित'
कहे तब राम 'अमरगण आप अगर खुश हैं तो झट सन्ताप
मिटा देवें उन द्विज दम्पत्ति का झटिति जी जाये बेटा उनका'
कहा देवों ने 'अवधनरेश ! वहाँ अब नहीं क्लेश का लेश
मरा शम्बूक यहाँ, वह बालक वहाँ जी उठा प्रजा के पालक !
यशस्वी आप सरिस है नहीं त्रिलोकी में दूसर नृप कहीं'
गये सुर सारे निज-निज धाम विचारे मन ही मन श्रीराम
यहीं कुम्भज ऋषि का है स्थान कि जिनका तप अरु तेज महान्
सुना है, जल समाधि मुनिराज लिये थे, व्रत पूरा करि आज
जगे हैं बारह वरिस के बाद चलूँ उनसे लूँ आशीर्वाद
बिताऊँ आज वहीं पर रात अवध जाऊँगा होत प्रभात
गये आश्रम सरसिरुहगात विलोकी उनको हर्षित गात
महर्षि ने सादर सत्कार किया फिर बोले 'यहाँ पधार
आपने मुझे किया कृतकृत्य आपका आज यहाँ आतिथ्य
सुरों से सुना अधर्म परायण शूद्र को मार आपने जीवन
दिया है द्विज सुत को श्रीराम ! धरम पालक हैं सारे काम
आपके, सब सद्गुण के गेह आपके लिये अतीव सनेह
हमारे हिय में हरि साक्षात् आप नारायण, वसि इस रात
यहीं, प्रातः निज पुर को जायें' वचन मुनि के प्रभु को अति भाये
दिये फिर ला दिव्यालङ्कार महर्षि 'राम ! इन्हें स्वीकार
करो ये सभी दिव्य आभूषण आप ही के लायक नृपभूषण !'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे रघुनन्दन 'मैं स्वीकार करुँ यह क्या मुझको अधिकार ?
विप्रवर !' तब अनेक इतिहास सुना मुनि बोले 'रमानिवास !
जगत में एक मात्र अधिकार तुझे ही, इससे ही उद्धार
हमारा होगा, तब अपनाये महामुनि कुम्भज बड़ सुख पाये
बिताये राम वहीं वह रात बड़े सुख से, जब हुआ प्रभात
सुबह की सन्ध्या के उपरान्त महर्षि से इन्दीवरगात
निवेदन बड़े विनय से किये 'मुझे अब अवध जाने के लिये
महामुनि ! आज्ञा करें प्रदान तथा यह भी देवें वरदान
बनाने को बड़ भाग्य मुनीश ! पुनः आकर के पाऊँ असीस'
बड़े स्नेहिल शब्दों में विदा दिये मुनिवर 'रघुनन्दन ! सदा–
सदा ही तुम परिपूरण काम जभी चाहो तब आओ राम !
यशस्वी बनो प्रजा का पालन करो जाओ' तब स्वस्तिवाचन
किया विप्रों ने रघुकुलराया चले पुष्पक चढ़ि, पुर निअराया
विलोकि पुष्पक अवध निवासी किये स्वागत कहि जै सुखराशि
महल के द्वारे दिव्य विमान धरा पर उतरा झट दरवान
बताया जा आये श्रीचरण मुदित दौड़े आये श्रीलखन
भरत दोनों, अमूल्य जिमि रतन कहीं खोया था पाये, नमन
किये दोनों जन हर्षित गात लगाये हिय से श्यामलगात
विराजे जब सुख से श्रीराम बैठ चरणों के दाहिन वाम
कहा अनुजों ने 'विगत कलेश तथा पाकर के खुशी विशेष
गये द्विज दम्पति' तब रघुराई कहे अनुजों से 'मेरे भाई !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## (६) अश्वमेध यज्ञ

करुँ मैं राजसूय यह चाह हमारी, यदि दोनों हि सलाह
हमें दो, राजधर्म का श्रेष्ठ अङ्ग यह' तब दोनों में ज्येष्ठ
भरतजी सुनकर प्रभु की बात प्रथम बोले 'हे नृपमणि तात !
जगत के जितने भी हैं जीव सभी करते हैं स्नेह अतीव
आपसे, जिनका दुःख अत्यल्प सहन कर पाते नहिं, संकल्प
करेंगे कैसे फिर यह आप सुनिश्चित जिसमें है सन्ताप
सभी राजाओं का' तब राम बहुत हर्षित हो बोले 'नाम
तुम्हारा जस तस सुन्दर वचन तुम्हारे जगरक्षक' अब लखन
कहे राघव से 'मेरी राय करें प्रभु अश्वमेध, सुरराय
किये थे जिसे वृत्र-संहारी परम पावन सुखकर हितकारी'
भरत की भी इसमें सहमति समझ कर बोले श्रीरघुपति
'लखन ! यह राय तुम्हारी ठीक मुझे भी लगी बहुत ही नीक
नृपति इल को था शिव से मिला शाप, वे बन गये इल से इला
प्रजापति कर्दम सुत का क्लेश मिटा जब यह ही यज्ञ विशेष
हुआ तब स्त्रीत्व मिटा सुख पाये' कथा विस्तारी राम सुनाये
सुमित्रानन्दन को आदेश दिये फिर 'जो द्विजवर्य विशेष
विज्ञ हैं वाजिमेध के तुरत बुलाओ गुरु को आदर सहित'
लखन गुरुवर को लेकर आये बड़े आदर से राम बिठाये
कहे फिर 'मेरे मन की चाह करूँ मैं अश्वमेध मुनिनाह !
अगर आज्ञा दें' तब मुनिराई प्रथम शिव के प्रति शीश नवाई
कहे प्रभु से 'अति उत्तम बात करें यह यज्ञ लोक विख्यात'
कहे तब अनुजों से रघुराई 'जुटो तैयारी में अब भाई !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


महर्षि वामदेव जाबालि तथा काश्यप कौशिक तपशालि
विविध विषयों के पटु गुणवान जहाँ जो भी हों सन्त सुजान
सुधी साधक वैदिक विद्वान बुलाओ, होवे शान्ति-विधान
नटी नट नर्तक कला-प्रवीण दिखाना हो कर्त्तव्य नवीन
किसी को तो वह नैमिष चले सबों के पुण्य वहाँ पर फलें
परम पावन नैमिष का स्थान उचित है यज्ञ हेतु, सामान
इकट्ठे करो वहीं सब, सारे निमन्त्रित ऋषि मुनि भूप पधारें
वहीं पर, सुन्दर सुखद सुवास मिले सबको ही, दासी दास
कुशल शिल्पी व्यवसायी जायें बनायें हाट, बजार सजायें
विपुल धन तिल जौ चावल दाल नमक गुड़ घी भेजो तत्काल
रसोइया चतुर अनेक पठाओं सभी वस्तुयें साथ भिजवाओ
विविध विधि भक्ष्य भोज्य जो लेह्य बनावे चोष्य चर्व्य अरु पेय
सभी को दान मान से तुष्ट वहाँ करना है, आगत हृष्ट–
मना अपने-अपने गृह जावें निरख शुभ यज्ञ लोग सुख पावें
सुरक्षा के भी सकल उपाय कराओ, नर-नारी समुदाय
अवध के बूढ़े बालक सभी चलें नैमिष को भाई! अभी
खबर भेजो रिपुसूदन आवें पृथक् दो द्रुतचर धावक धावें
सनेशा जो कपिपति को देवे तथा लङ्कापति को, आवें वे
महल से वधुयें सब मातायें सभी बच्चे सेवक सेविकायें
तथा सिय की यह प्रतिमा साथ चलेगी नैमिष को' रघुनाथ
कहे ज्यों सुन उनकी यह बात सिहर गये दोनों के ही गात
विलोकी कञ्चन वदना सिया परन्तु रघुनन्दन की प्रिया
विदेही एक मात्र जगरानी जिन्हें हैं प्राण सरिस धनुपाणि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


परम पावन दोनों का प्यार बना आदर्श अगर नर-नार
चलें तो जीवन के सुख सारे सिमट आयेंगे उनके द्वारे
विराजेगी यह प्रतिमा दायें यज्ञ में, किन्तु कौन समझाये
अवधवासी को, ये श्रीराम सिया के ही केवल जितकाम
सिया राघव में सदा अभेद विचारत जो थोड़ा सा खेद
हुआ था अभी, मिटा श्रीभरत उठे प्रभु की आज्ञा अनुहरत
किये करवाये सारे काम दिये थे आज्ञा जो श्रीराम
अवध से नैमिष तक का मार्ग सजाया गया, सरोवर बाग
कराये गये साफ, फल फूल तथा जल पथ में हो अनुकूल
नगर बन गया नैमिषारण्य गोमती तट पर मण्डप भव्य
बना, थे यूप लगे इक्कीस व्यवस्था में हनुमान कपीश
विभीषण भरत लखन शत्रुहन तथा गुह आदि सभी मुदित मन
जुटे थे इष्ट मित्र के साथ करेंगे अश्वमेध रघुनाथ
हुयी तैयारी सारे लोग सिमट गये नैमिष में संयोग
सुखद था, सुन्दर वातावरण बना था, आये जब गुरुचरण
हुआ ब्रह्मोदन-पाक, विशेष तुरग मंगवाये फिर अवधेश
हुये मख दीक्षित, बन्धन प्रोक्षण किये घोड़े का सरसिजलोचन
सविधि तब सस्वर गाथा गान किया विप्रों ने अति सुख मान
किये सावित्री इष्टि राम अश्व के पूजन का सब काम
कराये गुरु वशिष्ठ तब रघुवर तुरग के कानों में कुछ कहकर
प्रकट बोले 'अब आप पधारें भ्रमण हेतु' तब सैन्य सँवारे
लखन घोड़े के पीछे गये पवनसुत अङ्गदादि को लिये
ऋत्विजों सहित राम अब नित्य, नित्य-पूजन हवनादिक कृत्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लगे करने अरु विधि अनुसार सबेरे नित दो विप्र कुमार
तथा सायं क्षत्रिय वपुधारी युगल वीणागाथी विस्तारी
चरित राघव का गाने लगे मधुर धुन में सुर लय से पगे
दुपहरी में इनको विश्राम हुआ करता था पर श्रीराम
कलाजीवी की कला निहार दिया करते थे नित उपहार
अवैदिक, वृद्ध पुरुष, प्रियदर्शन नये युवक युवती पट भूषण
पहन कर, साँप समेत सपेरे छठें दिन पापी चोर लुटेरे
महाजन व्याज खोर, मछुआरे मछलियों के संग जाल पसारे
नवें दिन व्याधे अपना कौतुक दिखाते थे अन्तिम में वैदिक
वहाँ आते थे जो कि दान नहीं लेते थे पर सम्मान
सहित राघव करते थे सत्कृत इन्हीं के करतब क्रम से नियमित
वहाँ होते थे, अवधनरेश दिये थे सबको मान विशेष
वहाँ जो आया सबने कहा बहुलता दान मान की यहाँ
चला यह क्रम सम्वत्सर यावत उधर वह घोड़ा धावत-धावत
नगर में जनपद में या गाँव जहाँ भी रुकता था। उस ठाँव
वहाँ के मुखिया या नृप नेम सहित पूजी वाजि को, प्रेम
तथा आदर से आकर मिलते 'करुँ क्या सेवा' सादर कहते
किसी ने कहीं अश्व को बाँध भी लिया, पर लड़ने की साध
नहीं थी, कर सर्वस्व समर्पण उन्हें करना था प्रभु के दर्शन
बहुत से नृप दल बल के सङ्ग बने वाजि-रक्षक के अङ्ग
असुर भी मिले राह में कहीं किया पर उनका कुछ भी नहीं
हुआ, वे गये काल के गाल बचे जो शेष भगे पाताल
धरा के ओर छोर को नाप रहा था अश्व बिना सन्ताप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चले यह अप्रतिहत गति क्लेश न हो घोड़े को, गुरु आदेश
दिये थे, मूत्र पुरीषोत्सर्ग करे जब तब तहँ रक्षकवर्ग
करेंगे हवन, रहे यह ध्यान कथन गुरुवर का यह ही मान
किसी रक्षक ने ना हि टोका न ही आश्रम में जाते रोका
इसी क्रम में अति पावन आश्रम मिला श्रीवाल्मीकि का, विरम
गया वह वहाँ जाइ, लघुलाल सिया के देखे उसका भाल
बँधा था लिख जिस पर, यह अश्व चलेगा जिस भूमि पर स्वत्व
वहाँ रघुवर का होगा, अगर नहीं यह मान्य कीजिये समर
समझता हो जो निज को वीर तभी बाँधे इसको, रणधीर
अवध की वाहिनि इसके साथ पढ़त ही बढ़ गये लव के हाथ
तुरग को बाँध लिये वह वीर उमड़ आयी पीछे से भीर
निरख लव को मुनिबालक जान चपलता की है इसने मान
सैनिकों का दल आगे बढ़ा कि खोलूँ अश्व, तभी शर चढ़ा
धनुष पर, लव बोले ललकार 'हटो पीछे नहिं मेरा वार
तुम्हारा कर देने को अन्त बहुत है किन्तु साधु सन्त
यहाँ रहते हैं सो वध तेरा करूँगा नहिं, ये सायक मेरा
उड़ा देगा कर तेरे' और लड़कपन समझ इसे वे गौर
किये नहिं अश्व खोलने लगे तभी शर लगा, कटा कर, भगे
वहाँ थे शेष साथ जो, जान गये सब बालक वीर महान्
गई तब बात लखन के पास सुनत ही बोले वह 'शाबाश
बड़े मर्यादित हैं मुनिबालक अवज्ञा उनकी सेनानायक !
न हो जाये कइसहुँ, समझाई तुरग वापस लें, कि रघुराई
किये हैं अश्वमेध अरु छोड़ा उन्हीं ने मन्त्रपूत यह घोड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जगत जय हेतु, यह प्रतिमान वीरता का इससे अनजान
न बनिये, छोड़ दीजिये अश्व अवध के सम्मुख सारा विश्व
झुका है, इस पर भी नहिं माने तभी रण मुनिबालक से ठानें'
गये सेनानायक सब बात कहे लव से सुन कर मुसुकात
कहा लव ने 'नहिं बात बनाओ समर में जीत अश्व ले जाओ'
छिड़ा फिर महाभयङ्कर युद्ध अकेले ही लव ने अवरुद्ध
किया था, सब प्रतिपक्षी वीर समझते थे नहिं धनु पर तीर
रखा कब कब छोड़ा, संहार मचाने को शूली अवतार
लिये थे जैसे बन धनुधारी, जगत विश्रुत सेना पर भारी
अकेला बालक, बात विचित्र समझ अङ्गद हनु को सौमित्र
पठाये रणभूमि में, उधर कई मुनिबालक जाकर खबर
दिये कुश को कि 'भाई तेरा अकेले ही डाले हैं घेरा
अवध की सेना पर' सुन रोष सहित कुश किये जाइ ज्याघोष
समर भूमि में फिर जब देखा अनुज के माथे पर श्रम-रेखा
किये कुश रौद्र रूप तब धारण कठिन था अब तो और निवारण
अवध की सेना द्वारा, बालयुगल लगते थे जैसे काल
प्रकट हो आये हैं, कुछ खेत हुयी सेना कुछ हुयी अचेत
बचे थे बस अङ्गद हनुमान परन्तु इनके भी तो प्राण
विकल थे आज, महाबलवान असुर दल को जो घास समान
समझते थे उनका भी जोश हुआ ठंढा, अङ्गद बेहोश
हुये अरु वीर केसरीनन्दन भी थे लस्त-पस्त तब बन्धन
में कसी उनको दोनों भ्रात मुदित मन चले जहाँ थी मात
सिया ने देखा दोनों बेटे फँसा बन्धन में जिन्हें घसीटे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिये आये हैं वह तो प्यारे हमारे अञ्जनिलला दुलारे
विकल हो बोलीं 'यह क्या किया' तभी मुनि आकर बोले 'सिया !
दुःखी मत होओ, ना ही रोष करो इन दोनों पर, नहिं दोष
तनिक भी इनका, ये तो काम किये हैं वीरोचित, बलधाम
पवनसुत पर निज स्नेहिल हाथ फिरा दो, ये घोड़ा के साथ
पधारें रथारुढ़ जहँ लखन, चलूँ मैं भी करि के आवाहन
अमरपति का, दूँ जीवन दान उन्हें जिन वीरों ने निज प्राण
दिये हैं रण में, फिर है जाना मुझे भी नैमिष तथा सुनाना
होगा आदिकाव्य भी वहाँ इन्हीं दोनों को' जो जो कहा
महर्षि वाल्मीकि ने काम हुए सब वैसे, तुरत प्रणाम
किये सीता को केसरीतनय गये ले अश्व, बात उस समय
जहाँ की तहाँ दबी रह गई उधर प्राचेतस के संग कई
महर्षि, कुश लव दोनों भाई गये नैमिषारण्य, रघुराई
दिलाये सुन्दर सुखद सुवास बुलाकर कुश लव को तब पास
कहे मुनिवर 'कल होत बिहान सुनाना है रामायण-गान
बजाकर वीणा सुन्दर भाव सहित, सब लोगों से बर्ताव
मृदुल हो इसका रखना ध्यान कहीं कोई कुछ करे प्रदान
न लेना, पर आदर के साथ मना करना, श्रीरघुकुलनाथ
चरित जिनका तुम हो यह गाते प्रजा पालक होने के नाते
पिता सबके हैं, पितु ही मान उन्हें देना दोनों सम्मान
जहाँ रघुपति का वास स्थान बना हो, यह रामायण-गान
विचरते हुये वहाँ भी गाना बुलावें तो भीतर भी जाना
सुनाना उनको उनका चरित मधुर स्वर में आदर के सहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अगर पूछें हो किसके तनय बताना इतना ही इस समय
महर्षि वाल्मीकि आचार्य हमारे पालक भी वे आर्य
उठो अब जाओ सायं कृत्य करो जो जो करते हो नित्य'
गई उत्कण्ठा में ही रात सुबह सन्ध्यादिक के उपरान्त
महर्षि की आज्ञा अनुसार चले दोनों सुन्दर सुकुमार
बजा वीणा रामायण गाने सभी को आदिकाव्य सुनाने
अलौकिक गान मधुर संगीत सुनत जन होते थे नहिं तृप्त
जहाँ जिसने भी उनका गान सुना सबकी गति मति मन प्राण
हुये वश में उनके, नर नार लगे कहने 'जाऊँ बलिहार
निहारी इनका मनहर रूप हमारे प्रभु के ये प्रतिरूप'
गली पथ पर जन-जन गुनगुना उठे श्रीरामचरित, जब सुना
अवधपति ने भी तब बुलवाया कहा 'गाओ' क्या तुमने गाया'
तुरत ही सादर जोरी हाथ झुकाये प्रभु को लव कुश माथ
सुनाये फिर दोनों कुछ अंश मधुर स्वर में, तब श्रीरविवंश–
विभूषण बोले 'सुन्दर श्राव्य रचा किस कवि ने है यह काव्य
मिला किससे तुमको, सब बात बताओ कौन तुम्हारे तात ?'
कही तब कुश ने कोमल वाणी 'वरुण सुत वाल्मीकि मुनि ज्ञानी
उन्हीं की रचना यह भूपेश ! रखा रामायण नाम विशेष
उन्होंने इसका, और पढ़ाये वही हमको हम दोनों गाये
कृपा उनकी अतीव, आचार्य हमारे वे, पालन का कार्य
उन्होंने ही दोनों का किया जनम से, महाराज ! श्रीसिया
सती साध्वी किन्तु दुखियारी हमारी माँ मिथिलेश दुलारी
उठायी जब भी हमने बात पिता विषयक तब मेरी मात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुःखी जो जाती हैं सो क्लेश समझ हम चुप ही रहे नरेश'
वहीं बैठे थे सब तत्काल अवध के लोग विविध भूपाल
सभी ने कुश की वाणी सुनी सभा में गूँज उठी यह ध्वनि
'यही बालक मेरे युवराज रतन अनुपम पाये हम आज'
तदन्तर उन दोनों ने कहा 'पधारे हैं प्राचेतस यहाँ
हमारा सारा योग-क्षेम किये वे तापस ही सप्रेम
उन्हीं की प्रतिभा का यह खेल विविध वर्णों छन्दों का मेल
तथा शुचि चरित सुसंस्कृत काव्य बना, वीणा के सुर पर साध्य
कराया गुरुवर ने, मन भावे अगर करिये, आदेश, सुनावें
कहे श्रीराम 'अवश्य' सुनाये प्रथम दिन बीस सर्ग वे गाये
भरत के कर उनको श्रीराम दिलाने लगे द्रव्य तब 'काम
हमारे आयेगा यह नहीं अतः रहने दें इसको यहीं
विपिन वासी हम तो फल मूल विपुल मिल जाता है अनुकूल
हमें वन से' कहि कुछ नहिं लिये अनुज संग गुरु समीप कुश गये
इसी क्रम से रामायण-गान हुआ कई दिन तक, कृपानिधान

## (६) सीता का भू-प्रवेश

बुला कर दूतों को यह कहे 'जहाँ जिस खेमे में रह रहे
महामुनि वाल्मीकि तहँ जाओ, उन्हें मेरा सन्देश सुनाओ
सिया तन मन से शुद्ध पवित्र अगर उनका निष्कलुष चरित्र
महर्षि की अनुमति भी पावें सभा में आ विश्वास दिलावें
सब को ही, कलङ्क हो दूर हमारा, क्या यह है मञ्जूर
सिया भी मुनि भी क्या यह चाह रहे हैं ? समझो जा' नरनाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे ज्यों दूत गये बतलाये महर्षि से सब बातें, आये
फिरि जब कहे 'कहे मुनिनाथ सभा में कल सीता के साथ
पधारुँगा, पति जिसके प्राण देवता, वह पिय की कही मान
शपथ लेगी, जग के सब प्राणी विलोकें देव पितर मुनि ज्ञानी'
सभी को करा दी गयी ज्ञात बात यह, अगले दिवस प्रभात
हुआ, नित नियम धरम उपरान्त सभा में आकर सब जन शान्त
विराजे, तभी जानकी साथ पधारे वाल्मीकि मुनिनाथ
वहाँ पर सारा राज-समाज जुटा था, अन्तःपुर भी आज
उमड़ आया था, जन सामान्य अवधवासी एवं गण मान्य
असुर, वानर, किन्नर, सुर, नाग सभी थे, सब ने सोचा भाग
जनकलली के अद्भुत चहुँ ओर 'सिया तुम धन्य धन्य' का शोर
हुआ, जब आई सभा के मध्य कहा तब मुनि ने 'राम! असत्य
कभी मैं ने भाषण नहिं किया परम पावनी आपकी सिया
सभी अर्जित पुण्यों को दाव पर लगा कहूँ सत्य मैं, भाव
सिया के शुद्ध सभी व्यवहार निष्कलुष हैं आचार विचार'
कहे पुनि प्राचेतस मुनिराई 'सिया ये पतिप्राणा रघुराई!
इन्हें सब भाँति पावन जान दिया था आश्रम में मैं स्थान
वहीं जनमें हैं दोनों तनय आपके कुश लव' उठ उस समय
पवनसुत बोले 'अद्भुत वीर ये दोनों भाई हैं रणधीर
इन्होंने ही तो हय को बाँध लिया था, भली भाँति फिर साध
मुझे भी ले गये माँ थीं जहाँ परन्तु ज्यों ही मुनि ने कहा
मुझे छोड़े घोड़ा लौटाये विनय वीरता अलौकिक पाये'
पुनः मुनि बोले 'दोनों पुत्र तथा सिय को जो परम पवित्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवधपति अपनालें' तब राम महर्षि को करि प्रथम प्रणाम
कहे 'हैं परम पावनी सिया यही मुनिवर ने भी कहि दिया
सिया ने पहले भी था शपथ लिया सुर सम्मुख, इनको सुपथ–
गामिनी मान भवन में जगह दिया था मैं ने पर बेवजह
उठा लोकापवाद पुनि, त्याग दिया मैं ने इनको, अनुराग
हमारा इनके प्रति कम नहीं परन्तु निज मुख से फिर कही
सिया जग को विश्वास दिलायें ये मेरी आज्ञा, आगे आयें'
पिया की बात सुनत जगरानी जगत् पावनी व सद्गुणखानी
प्रकट तप तेज की मूरत समा जनकलली गैरिक वसना रमा
सरिस, अवनत वदना, रघुराई जहाँ थे देखी शीश झुकाई
कहीं फिर नीचे देखत 'राम सदा ही गति मेरे सुखधाम
अगर यह सच है तुमरे जान, धरा माँ ! गोदी में दो स्थान
अगर है मेरा शुद्ध चरित्र समझती हो तुम मुझे पवित्र
जननि ! वसुधे ! तो अब सम्मान सहित, गोदी में दे दो स्थान
अगर मन वाणी कर्म हमार चले हैं रघुपति के अनुसार
नहीं यदि मुझमें तनिक कलङ्क, बिठा लो मुझको अपने अङ्क'
शपथ लेंगी सीता यह बात सुनत काँपे सब ही के गात
शपथ जब लीं अम्बर पाताल हुये कम्पित, भू पर भूचाल
आ गया, बिनु बादल के कड़क उठी नभ में बिजली, गिरि दरक
गये, सागर की लहरें छोड़ चलीं तट को, दोनों कर जोड़
शपथ लीं सीता, सर्व समर्थ शक्तियों का कुछ भी नहिं अर्थ
रहा, नहिं कोई रहा प्रमाण शपथ सृष्टि में हुआ महान
सिया ने शपथ-वाक्य ज्यों कहा फटी धरती भू देवी वहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


प्रकट आईं सिंहासन साथ पकड़ कर बड़े स्नेह से हाथ
बिठाई उस पर ले पाताल गईं वह सीता को, तत्काल
लपक कर दौड़े श्रीरघुवीर लगा जिमि पुनः धरा को चीर
प्रिया को कर लेंगे वह प्राप्त तभी यूँ निरख सिया को जात
गगन से सुमन वृष्टि सुर किये सुबक कर लव कुश माँ के लिये
लगे रोने, रघुनन्दन शोक उदधि में डूब गये जनु लोक
सकल हो गया सून, सब लोग सिया से प्रभु का देख वियोग
दुःखी थे, जै जै थे कर रहे तभी हो कूपित राम यूँ कहे
'सिया को पहले मुझसे दूर किया था रावण राक्षस क्रूर
गया जड़ मूल सहित मनुजाद कथा वह वसुन्धरे! कर याद
मुझे मेरी सीता दे जाओ धरा देवि! वापस लौटाओ
नहीं तो कर के कठिन प्रहार मचा देगा राघव संहार'
तभी रोके वशिष्ठमुनिनाथ 'नहीं ऐसा कुछ भी रघुनाथ!
करोगे नहिं, आदर्श पुनीता मिलेगी नहीं आपको सीता
अगर प्राचेतस दें आदेश तनय अपने कुश लव अवधेश!
रखें अपने संग, अवधनिवासी सिया को खो हि दिये सुखराशि!'
कहे फिर वाल्मीकि से 'देव! दिखाया यह दिन भी दुर्दैव
परन्तु अब अस दाया करें विषम यह घाव सबों का भरे'
तुरत प्राचेतस पकड़े हाथ सिया के बेटों का, रघुनाथ
जहाँ थे जा उनको पकड़ाये हुये भावुक कुछ कह नहिं पाये
निकल गये यज्ञस्थल से, वीर तनय को हिय लाये रघुवीर
गई सुख दुःख झेलत वह रात हुआ अगले दिन का फिर प्रात
किये सन्ध्या वन्दन रघुराई गये मण्डप में, जहँ मुनिराई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराये उस दिन की सब विधि कहे पुनि राघव से 'गुणनिधि !
कहो, लव-कुश रामायण-गान करें, तुम सुनो भद्र ! सुख मान'
हुआ फिर ऐसा ही जो शेष चरित था लव-कुश से अवधेश
सुने फिर पूर्णाहुति उपरान्त किये अवभृथ-स्नान, मन शान्त
हुआ सबको दे उचित विदाई अवध को लौटे श्रीरघुराई
लिये दोनों पुत्रों को, काम प्रजा पालन सम्बन्धी राम
लगे करने सब, आदर नेह भरा सब भाँति सुखी था गेह
विविध पूजा जप तप मख हवन किया करते थे श्यामलवदन
सिया की मूरत को ले साथ जगत के प्यारे श्रीरघुनाथ
सतत सेवारत थे सुख मान सजग श्रीलखन राम-रुख जान
परन्तु मैथिली के गुण रूप भुलाये भुलते थे नहिं भूप
जभी वे स्मृति पथ में थीं आती विकल रघुनन्दन को कर जातीं,
लखन से स्थिति यह छुपी नहीं थी वही तो थे प्रतिपल के साथी

## *(८) प्रजापालन*

सभा सम्राट राम की नित्य अवध में लगती थी जहँ चिन्त्य
विषय रहता प्रायः सद्धर्म तथा किसके हित क्या सत्कर्म
भरे रहते थे तापस ज्ञानी तथा सामन्त नृपति, विज्ञानी
विविध विषयों के, जिनके ज्ञान सदा करते नूतन निर्माण
प्रजा की सुविधा का, श्रीराम नियंत्रण रखते थे, जो काम
जहाँ हो, जितना हो, हो ठीक चले नहिं कोई कहीं अलीक
सभी को दान मान से तुष्ट सदा रखते थे देख विशिष्ट
कला, विद्या, गुण वा निर्माण पुरस्कृत करते थे, सम्मान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुरक्षित था सबका, संयमी वृद्ध बालक को कोई कमी
न होवे साधन की, वे पायें मनोभिलषित वस्तु, महिलायें
सुसज्जित सदाचारिणी मूल गृहस्थी की पति के अनुकूल,
अतिथि, गुरु, द्विज, देवों की भक्त उन्हीं में उनके पति अनुरक्त
पिता माता सद्गुरु के वचन सदा शुभ समझ सभी अनुसरण
किया करते थे, पर उपकारी सभी थे सुचरित्र नर-नारी
सुहृद सेवक सबका व्यवहार सुखद था, बच्चों को आचार
सिखाते थे बूढ़े बड़ प्यार सहित, यह सब सुख का आधार,
सचिव देते निःस्वार्थ सुमन्त्र नृपति राघव को, सैनिकतन्त्र
सुदृढ़ अनुशासित, सारे लोग सहज पाते थे नृप का योग
दिवस पुनि मास साल पर साल करत, रघुपति के शासन काल
का समय गया हजारो वर्ष चतुर्दिक सबके मन में हर्ष

## ३. भावी रामावतार का बीज

कहीं भी नहीं क्लेश का नाम सिया के खातिर केवल राम
हुआ करते थे प्रायः खिन्न समझ यह उनके अनुज अभिन्न
रहा करते थे सदा उदास गये वे एक दिवस गुरु पास

### (१) वशिष्ठ-लक्ष्मण सम्वाद

दिये आसन मुनि 'बैठो तात ! कहो फिर क्षेम कुशल की बात
कुशल तो है सारा परिवार कवन कारण हो खिन्न ? कुमार !'
चरण में सिर धरि बोले लखन सुखी परिवार, सुखी है भुवन
दुःखी बस एक कोशलाधीश तरणिकुल के पालक जगदीश
उन्हीं का क्लेश सोंच से परे कवन विधि दुःख हम उनका हरें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवन भाँति मिथिलेशदुलारी मिलेंगी प्रभु से, देव! विचारी
कहें मुझसे, मैं सकल उपाय करुँगा' तब बोले मुनिराय
'बड़ी ही सुन्दर तेरी बात जगत में दुर्लभ तुझसा भ्रात
लखन! यूँ होओ नहीं अधीर नहीं सामान्य मनुज रघुवीर
स्वयं ये सगुन ब्रह्म श्रीराम सिया इनकी माया का नाम
इन्हीं का नाम सदा त्रिपुरारि जपा करते हैं भव भय हारी
उमा के कहने पर विस्तारी चरित भी राघव का सुखकारी
सुनाये थे आदर के साथ परम प्रिय शिव को श्रीरघुनाथ
धरे नर तन धरणि का भार हरे सब सुखी हुआ संसार
दुसह दुःख सहके अम्बुजगात निभाये देवर्षि की बात
बचाते हैं अपनों की लाज सदा रघुवर का यही रिवाज
दिया था भृगु ऋषि ने जो शाप सफल हो इस हेतु निष्पाप
रमापति राम रूप में आये जनकलली को तजि सफल बनाये
महर्षि भृगु की वाणी लखन! दयालु अतिशय सीतारमन
यहाँ लोकापवाद के कारण किये निष्करुण सरिस निष्कासन
सिया का राघव, पर दुःखदायी विरह नहिं है दोनों का स्थायी
अभिन्ना शक्ति इनकी सिया जगत हित हेतु खेल यह किया
सिया भी शुकी शाप को सफल बनाने हेतु, पति पद कमल
विरह को की हैं अङ्गीकार दयालु दोनों अपरम्पार
मनुज वह ही जगति में धन्य लिया जो इनका शरण अनन्य
तुम्हारी राघव में आसक्ति इसे हम भजन भाव या भक्ति
कहें जो भी सब उत्तम, राम तुम्हारे प्रियतम हैं निष्काम
जगत के योग क्षेम के हेतु सजग रहते हैं रघुकुलकेतु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उन्हीं के सब विधि सुख का ध्यान तुझे है, तुझको कहे महान्
कवन विधि गुरु वशिष्ठ यह बात इसे ही आज होत नहिं ज्ञात
मिलेंगी रघुनन्दन से सीता कवन विधि, यह तुम्हार सत् चिन्ता
कहत फिर विविध बात मुनिनाथ लखन के सिर सनेह से हाथ
धरे बोले 'सौमित्र! कुमार! चलो हम चलें राजदरबार
गये फिर दोनों ही जन साथ सभा में लखन और मुनिनाथ
वहाँ की श्री शोभा को कौन वखाने, सब अनुशासित मौन
विराजे थे, ऋषि, मुनि, सन्यासी, सचिव, सेनापति, नगर निवासी
प्रमुख जन, जनप्रतिनिधि, जब आये विप्रवर सब उठ शीश झुकाये,
लखन गुरु को बैठाये सादर स्वयं अपने आसन पर जाकर
अभी बैठे ही ज्यों, रघुनाथ पधारे भाई भरत के साथ
उठे सब ही स्वागत के हेतु कहत 'जै हो जै रघुकुलकेतु'
जलद जैसी तन शोभा श्याम चलनि मृगराज सरिस अभिराम
विभूषण अङ्ग-अङ्ग में सोह रहे थे, देखत ही मन मोह
गया सबका, त्रिभुवन सुखदाई विराजे सिंहासन पर जाई
हुये प्रारम्भ सभा के काज सचिव सेनप सब नियत रिवाज
मुताबिक बतलाये 'महाराज! हुये निर्बाध हमारे काज
सभी पूरे' तब ही दरवान कहा आ सविनय 'कृपानिधान!
अपरिचित विप्र एक आ द्वार खड़े हैं, चाहत करुणागार
दरश दें' झट बोले श्रीराम 'तुरत लाओ सादर जो काम
कहें करने को यह रघुवीर उपस्थित है, उनको कुछ पीर
तो नहीं, जाओ देखो लखन! पखारो सादर द्विज के चरण'
गये सौमित्र विप्र को लाये सभा में पद पखारि बैठाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिये फिर अर्घादि 'सम्मान्य हमारे आप, हुये हम धन्य दबाऊँ चरण थकावट हरुँ कहें फिर जो भी सेवा करुँ' पुनः उन द्विज से रघुकुल कमल विनय से पूछे 'सब विधि कुशल आपका है तो' तब द्विज बोले 'कुशल सब विध हमार, नृप ! यहलें

## (२) सीता का पत्र

जनकलली भूमि सुता का पत्र चला मैं' सुन कर नाम पवित्र सिया का भू-प्रवेश फिर याद हुआ सबको ही मुद्दत बाद सभी सिय के प्रति सादर शीश झुकाये, राम कोशलाधीश कमल कर पर रखि सिय की पाति पढ़े प्रभु विरह व्यथा बहु भाँति लिखी थी जिसमें—

**प्रथम प्रणाम सभी माताओं को, श्रीराम अवधपति हेतु जै जै कार हमारा सब छोटों को प्यार पुनः पुनि पुनि प्रियतम को नमन सिया का, सादर छूकर चरण कुशल हों प्रभु, प्रभु पालित देश कुशल हो सारा चाहुँ, विशेष चरणरज ले सीता कब माथ चढ़ायेगी, कब होगा साथ**

**हे निठुर ! फुलवारी में मिथिला के दरश जब से किये ।**
**तन मन वचन से स्थान पिय का आपको ही हम दिये ।।**
**मम नाम सीता राम के ही साथ केवल है जुड़ा ।**
**फिर कौन कारण विरह का दुःख दुसह यूँ पाछे पड़ा ।।**
**सिन्दूर चूड़ी आपने जो दी पहन यह जानकी ।**
**दिन रात जोहत बाट बैठ पताल में भी आपकी ।।**
**हे देव! मेरे हित उदधि पर सेतु बाँधे थे वहाँ ।**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


फिर क्या कठिन पाताल दुष्कर आपका आना यहाँ ।।
सम्मान सब विधि आपका होगा यहाँ बड़ भाव से ।
नाराज तो होती नहीं यह जनकदुहिता आपसे ।।
आती नहीं पाताल तो फिर राह क्या था दूसरा ।
कैसे उठा पाती वहाँ अपमान का वह भूधरा ।।
जानें न मेरे वीर दोनों बात उस अपवाद की ।
सारी प्रजा है पुत्र सम करती विनय सिय आपकी ।।
असुरपुर से उबारी अवधपुर में आप ले आये ।
पुनः अपवाद की सुन बात वन में नाथ भिजवाये ।।
विदेही हो गई सीता कनक की यज्ञ में बनकर ।
शपथ भी ली सभा के बीच सुन फाटी धरा प्रभुवर ।।
प्रतीति अवधवासी को हुयी नहीं नाथ ! क्या अब तक ।
विरह की आग में जलती रहेगी जानकी कब तक ।।

सिया—

श्रीजनकलली का पत्र पढ़े राघव उनको सर्वत्र सिया ही सिया दीखने लगी. विरह की पीड़ा अब फिर जगी थमा वह पत्र लखन के हाथ विसर्जित किये सभा रघुनाथ दिया जो प्रभु ने सिय का पत्र लखन को, उसको परम पवित्र समझ श्रीसिया चरण की भाँति लगाये सिर से फिर दिन राति विचारन लगे यही सौमित्र जनकदुहिता ने तो यह पत्र पठाया किन्तु इसका उत्तर न देंगे राघव, अगर निरुत्तर रहे तो मर्यादा की बात नहीं यह, प्रभु इन्दीवरगात हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम मुझे क्यूँ दिये, करें अब क्या हम लिखी हैं इसमें जो जो बातें पढ़ू मैं सब देवर के नाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिया से प्रभु के मिलन की राह निकल ही आवे कुछ, मुनिनाह
कहे हैं जो वह वाणी सफल हो रहा हो ऐसे ही, अमल
हृदय लछिमन ने पढ़ ही लिया पत्र वह, व्यथित हृदय श्रीसिया
लिखी थीं जो सबका था सार मिलेंगे कब श्रीराम उदार
दुःखी हो गये बहुत सौमित्र किये संकल्प तुरन्त पवित्र
हृदय से अम्बा को स्वीकार करेंगे यदि नहिं पूज्य हमार
इसी तन से तो रघुकुलकेतु सिया को अपनाने के हेतु
पुनः धरती पर लें अवतार मनुज तन धरि, संकल्प हमार
करें प्रभु पूरा ऐसी आश लिये सौमित्र सिया के पास

### (३) लक्ष्मण के द्वारा सीता को पत्रोत्तर

लिखे पत्रोत्तर

**आर्ये! नमन करत शतशः चरणों में लखन**
**मिली पाति नृपमणि ने पढ़ा सभा में ही, कर पल्लव बढ़ा**
**दिये मुझको मैं किया विचार सफल जीवन है तभी हमार**
**मिटे जैसे भी आपका कष्ट करूँ वह, मर्यादा भी नष्ट**
**न होवे प्रभु की उत्तर भेज बताऊँ पातिव्रत का तेज**
**आपके दुनियाँ में है व्याप्त न अपने को करिये माँ! क्लान्त**

**विरह में आपके निशिदिन दुःखी हैं पूज्यवर माता।**
**प्रजावत्सल निभाते काज सब पर कुछ नहीं भाता।।**
**निठुर इनको न कहिये आप, प्रतिपल का अनुज सहचर।**
**लखन कहता है अम्बा! आपको यह आपसे बढ़कर।।**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हृदय में स्थान देते हैं, सो कैसे वह बताता हूँ।
क्षमा करिये जो बीती बात फिर सुमिरन कराता हूँ।।
हरण करके असुर जब आपको था ले गया लङ्का।
दुःखी कितने थे राघव विरह में वह कष्ट मैं इनका।।
विलोका था, करें यह आप भी आर्ये! जरा सुमिरन।
मरा लङ्केश प्रभु विजयी हुये तब अञ्जनिनन्दन।।
गये थे आपको लेने वहाँ पर आप जब आईं।
विलोकी आपको बोले परुख कुछ वचन रघुराई।।
कहा तब आपने मुझसे लखन! तुम धरम के नेगी।
बनो भैया! हमारे हित करो पावक प्रकट वेगी।।
समझ लें ना कहीं यह आप, पिय का नेह कम मुझपर।
इसी से वह विरह पावक कि जिसमें रात दिन रघुवर।।
जले थे मैं रखा लाकर कि माँ नजदीक से आकर।
निरख लें पर विरहपावक वहाँ पर आपको पाकर।।
हुआ ठंढा परन्तु ज्वाल था उसका प्रबल कितना।
विलोका आपने था, माँ! यहाँ फिर आप हैं जब ना।।
पुनः वह ही दशा रघुवीर की संग राज्य संचालन।
विषम ऐसी घड़ी में आपका ही नाम जग पावन।।
सहारा राम को अरु राम सीता नाम की जोड़ी।
मिला अवलम्ब जन जन को, धरा को आप जब छोड़ीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तजीं यह लोक गई पाताल जो वह धाम भी अपना ।
कहत यह शेष अवतारी विरह के दिन अधिक अब ना ।
सुयश निज इष्ट का मनहर श्रवणप्रिय शुभद सुखदाई ।
लिखा सौमित्र पाती में, पढ़ें माँ! आप मन लाई ।।
विरह के शेष दिन सुख से कटें, यह लखन इस हेतु ।
चरित है भेजता जिनका वे नायक तरणिकुलकेतु ।।

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# दूसरा पर्व

# बालकराम

पीत झगुली लट घुँघरवारे
डिठौना भाल नयन कजरारे।
बकैयाँ खींचत अवधदुलारे
वसे यह छवि, हिय बीच हमारे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १. अवधपुरी

अखिल भूमण्डल में विख्यात मुक्तिदा पावन पुरियाँ सात
सुखावह सुर नर मुनि जन वन्द्या प्रथम सब में है कौन ? अयोध्या
यहीं आदित्य वंश विस्तारक हुये नृप इक्ष्वाकु भू-पालक
इसी कुल में अनेक श्रीमान् नृपति हो गये, जिनका गुणगान
करत गावत थकते नहिं लोग सुनत जो समुझत आज सुयोग
प्रसिद्ध कोशल जनपद के मध्य वसी वह पुरी उसे अति रम्य
बनाकर, उसमें साज समाज बढ़ा कर के, दशरथ महाराज
राज्य करते थे इन्द्र समान प्रजा को पुत्र बराबर मान
अवध की प्रजा वृद्ध आबाल धर्म प्रिय कर्मनिष्ठ खुशहाल
बड़ों को आदर लघु को प्यार वहाँ के जन-जन का व्यवहार
अवध में भव्य भवन नभ चूमत अश्व गज सबके द्वारे झूमत
गली मग सींचे सजे सवाँरे हरे तरु पल्लव सड़क किनारे
स्वच्छ जल पूरित नदी तड़ाग मधुर फल-युक्त प्रफुल्लित बाग
देव-मन्दिर अरु अतिथि-भवन देख लागत मानहु सुर-सदन
राज प्रासाद के सारे शिखर हेम मणि मण्डित अति मनहर
विप्र गण क्षत्रिय वणिक् समाज शूद्र सब निश्छल रत निज काज
सुहासिनी सजीं सुवेषमयी पुरी सोहत मानहु नित नयी
प्रजा-वत्सल थे भूपति यथा मन्त्रिजन कुशल नीति में तथा
अवध की सुखप्रद राज्य व्यवस्था किन्तु नृप दशरथ को ही व्यथा

## २. रामजन्म

सदा रहती थी यह मन माहिं वंशधर मोर कोउ सुत नाहिं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


एक दिन इसी बात से खिन्न बुलाये नृप निज सचिव अभिन्न
कहे 'हे मीत ! आप झट जावें पूज्य गुरुवर को लेकर आवें'
सुमन्त्रजी सुनत तुरत हि धाये वशिष्ठजी को सादर ले आये
चरण रज सिर धरि विनयावनत भूप बोले गुरु से दुःख लहत
'चउथपन देव ! मुझे यह लही कोइ सुत अब तक मुझको नहीं
विचारें यत्न कोइ मुनिनायक ! पाऊँ जिससे मैं कुलपालक
कहें यदि अश्वमेध मैं करूँ देवें आयसु जो सब अनुसरूँ,
कहत गुरु 'सुनु नृप ! बात हमार धरहु धीरज सुत होइहें चार
दिये आयसु पुनि 'यज्ञ व्यवस्था शुरू हो' तब मन्त्री एक कथा
पाई एकान्त कहे 'नृपमणि ! सुनें इतिहास जो मैंने सुनी
बात यह आप संग है जुड़ी आज अब कहूँ अपेक्षा पड़ी'
पुनः मुनिऋष्यशृङ्ग की कथा पुराणादिक में वर्णित यथा
सुना कर बोले 'हे नरपति ! विभाण्डक-सुत शान्ता के पति
हुये जामाता पूज्य तुम्हार वही सुत सुलभ करावनहार
करायेंगे शुभ मख सम्पादन, लोक सुखकारी सुन्दर कथन
कहे, सतयुग में सनत्कुमार' सुनत नृप को सुख हुआ अपार
गये गुरु गेह सचिव से ज्ञात हुयी जो, बतलाये सब बात
पाइ गुरू आज्ञा नृपवर स्वयं चले लेने मुनि को, नहीं अहं
पहुँच गये अङ्गराज के देश रानियों के संग अवधनरेश
माँगि अङ्गाधिप से अनुमति शृङ्गी ऋषि के संग कोशलपति
अवध आये, कुछ दिन उपरान्त विभाण्डक-सुत सुस्थिर हो शान्त
विराजे थे, भूपति तेहि समय पास जाकर, वाणी अति विनय
सहित बोले 'मुनि ! यज्ञाचार्य बनें, सम्पादित हों सब कार्य,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


प्रसन्नता पूर्वक ऋषि स्वीकारे बुलाये गये विप्र तब सारे
वसिष्ठ के चरणों में धरि शीश कहे नृप 'आपकी कृपा मुनीश
पूर्ण होगा अभिलषित हमार व्यवस्था का प्रभु पर सब भार'
कहे फिर सचिवन्ह से 'श्रीमान् मन्त्रिगण! गुरु की आज्ञा मान
सभी उपकरण करें तैयार द्विजों का सब विधि हो सत्कार'
बुलाये सेवक सब मुनिनायक सहेजे कारज जो जेहि लायक
पुनः गुरु ने दी सबको आज्ञा 'समागत जन की हो न अवज्ञा,
पधारे जो सबका सत्कार करें सब रखकर वृत्ति उदार'
यज्ञ मण्डप सरयू के तट पर बनाये, वास्तु-कुशल कारीगर
काम में जुट गये सब सुख मानी हुये मख दीक्षित राजा रानी
प्रथम श्रीशृङ्गीऋषी तपनिधि कराये अश्वमेध मख सविधि
वेद विधि वर्णित सकल विधान सहित मख पूर्ण हुआ, नृप जान
दिये दक्षिणा, द्विजन्ह आशीष दिये 'मनवाञ्छित लहो महीश!'
मधुर वाणी अतिशय सुखदाई सुनत बोले नृपमणि हरषाई
'विप्रवर! पुत्रेष्टि का समय करें अब निश्चित मोरी विनय'
विनय भरी वाणी नृप की सुनि समय शुभ फलदायक मन गुनि
किये पुत्रेष्टि की शुरूआत शृङ्गिऋषि मख विधि में निष्णात
विप्र गण शुरू किये जब हवन सुरों के प्रति 'स्वाहा' करि, यजन
परम प्रिय जिनको वे सुर सारे सृष्टि कर्ता भी क्रमिक पधारे
वहाँ विधि से देवों ने कहा कैकसीसुत बलशाली महा
आपसे पाकर के वरदान असुर दुःखदायी बना महान्
स्वर्ग पर चाहत विजय सुरारि चलत नहिं उसके आगे हमारी
देव, द्विज, गउ, नारी को त्रास देत बड़ भारी केहि विधि नाश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


असुर का होगा, देव ! विचारें आप ही सब विधि शरण हमारे'
सोंच कुछ कहन लगे चतुरानन 'माँग वर मुझसे दुष्ट दशानन
कहा था, यक्ष, असुर, गन्धर्व, इन्द्र, यम, वरुणादिक सुर सर्व
मार नहिं पावें मुझे अवध्य बनूँ मैं उनसे, और मनुष्य
तुच्छ है, ऐसा मन अनुमान उपेक्षित रखा उन्हें, वरदान
दिया था मैं भी, सुर समुदाय ! किन्तु अब सूझा मोहिं उपाय
दुष्ट लङ्काधिप के मृत्यु का मनुज के ही हाथों वध उसका
सुनिश्चित' सुनि सब सुर हरषाये गरुड़ चढ़ि रमारमण भी आये
तभी तहँ क़िये देवगण विनय विचारी फलदायक शुभ समय
'देव ! देवेश ! देत दुःख भारी दुष्ट दशमुख द्विजद्वेषी सुरारि
लोकरक्षक ! खल भू पर भार बना, करि कृपा करें संहार
सुरेश्वर ! सीदत सुर द्विज धरणी कृपा तोरी सब संकट हरणी
दयासागर ! दाया विस्तारो असुर वध हेतु, नर तन धारो
मनुज के कर ही खल का हनन सुनिश्चित है, यह विधि का वचन
करत सम्प्रति नृप दशरथ याग पुत्र प्राप्ति लगि, अतिशय राग
आप में उनका, बन कुलपालक नृपति का, अवतरिये जगपालक !'
विनय सुनि देवों का श्रीहरि हुये अन्तर्हित निश्चय करि
'मनुज तन धरिहौं, परम उदार नृपति दशरथ ही पिता हमार
बनेंगे', इन्द्रादिक सुर हरषे कहे तब ब्रह्मा सब देवों से
'आप सब भी वानर वपुधारी पुत्र उत्पन्न करें, भयकारी
राक्षसों को, अतिशय बलवान नीति रण कुशल, कि जब भगवान
विष्णु ही राक्षस के वध हेतु जनम लें बनकर रघुकुल-केतु
और वे राम बनें वनचारी टारने को भू-विपदा भारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सहायक होंगे तब सब वानर गुफायें हि गिरि की जिनका घर,
उधर मण्डप में पूर्णाहुति दे रहे थे द्विज वैदिक रीति
प्रसन्न थी अतिशय अग्नि ज्वाल खीर से भरी स्वर्णमयी थाल
लिये प्रकटे एक प्राजापत्य पुरुषवर यज्ञवेदी के मध्य
दिव्य पायस पूरित वह थाल दिये नृप को, बोले 'महीपाल !
प्रजापति-लोक से मैं हूँ आया देव निर्मित यह पायस लाया
ग्रहण करें, इसे आप ले जायें पत्नियों से कहिये, इसे पायें
इस तरह करने से नररत्न ! प्राप्त होंगे तुझको सुत-रत्न'
बोल अस हुये वे अन्तर्धान भूपवर भाग्योदय निज जान
किये पायस का सम दो भाग प्रथम कौशल्या को एक भाग
दिये, फिर दूजे को नृपमणि बराबर दो हिस्से में पुनि
बाँट कैकेई कर पर दिये कहत यूँ 'चरु का तेरे लिये
भाग यह है' अब अति अनुराग सहित बाकी चरु का दो भाग
किये फिर कहे 'सुमित्रे ! प्रिये ! ये दोनों अंश तुम्हारे लिये'
इस तरह गर्भवती सब रानी अयोध्या हुयी और सुखखानि
पुंसवन अरु सीमन्तोन्नयन यथाविधि यथावसर सम्पन्न
किये, आ गया समय सुखमूल ग्रहस्थिति सभी सुखद अनुकूल
गरम सर्दी सम सुखद बयार चैत नवमी सुदी मंगलवार
जगत को देने को शुभ मोद श्रीहरि जननि कौशिला गोद
आ गये, पुत्र जन्म सुनि कान अवधपति को सुख हुआ महान्
कैकेई एक श्याम सुत, और सुमित्रा जनीं कुवँर दो गौर
ललन संग सोहतीं हैं सब कैसे रानियाँ, शशि युत अम्बर जैसे
सुनत पुर जन अरु राज समाज कहत 'मनवाञ्छित पाया आज'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दास दासी पुर-जन परिवार सभी इक दूजे को उपहार
दे रहे कह यह 'अवसर आया, अवध युवराज आज है पाया'
वृद्ध, बालक, नर, नारी सारी हरिद्रा, दधि, खिल, रोली उछारी
मनावत खुशी मङ्गलाचार कहत 'चिर जियें, नवजात कुमार'
धरा पर नभ से झरत प्रसून पटी धरती दीखत कतहूं न
चतुर्दिक बाजत मङ्गल बाजा गये गुरु गेह हरषि के राजा
जाइ गुरु-चरण में राखि शीश कहे 'बड़ी कृपा तुम्हार मुनीश !
आपके आशिष चार कुमार हुये मुझको, अब गेह पधार
करावें जातकरम मुनिराई ! चिरायु हों सुत आशिष पाई'
संग ले गुरु को, गेह जनेश आ गये, पूजी प्रथम गणेश
किये सब जातकरम की विधि महर्षि हर्षित लखि सुखनिधि
पुनः बारहवें दिवस महीश बुलाये गुरु को, आइ मुनीश
रखे सब शिशुओं के शुभनाम 'कौशिलानन्दन प्रथम ये राम
राम सम रूप रंग छवि लहत कैकयी के लालन ये भरत
सुमित्रा जननी के सुखदाई यमल गोरे ये दोनों भाई
ज्येष्ठ जो इनमें, इनका नाम लखन, लघु का शत्रुघ्न ललाम'
नाम राखि गुरु बोले 'भूप! तनय ये चारो तोर अनूप
भगत भयहारी जन सुखदाई अयोध्या इनसे अधिक सुहाई'
अवध में अब भी गूँजत सोहर सुनत धुन लागत परम मनोहर

**जनम लिन्हों दशरथ के ललनवाँ।**
**गाँव-गाँव नगर-नगर, गली-गली डगर-डगर**
**धूम मची अवध नगर गूँजी है गगनवाँ, जनम... ।**
**पुरी द्वार-द्वार सजे घरे घर बधाव बजे**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तुच्छ लागे इनके आगे इन्द्र के भवनवाँ, जनम... ।
पाइ खबर आये गुरु जात करम कीन्ह शुरु
उपरोहिताई सफल ईश यजमनवाँ, जनम... ।
पहिले ललन को लखि राम दिये नाम रखी
इ रमत सकल जगत में याहि मे जहनवाँ, जनम... ।
दूजो कैकेयी गोद नृपति मन माहिं मोद
भरिहें विश्व नव प्रमोद भरत ताहि नमवाँ, जनम... ।
दोनों जुड़वाँ कुमार बड़भागी हैं तुम्हार
लक्ष्मण शत्रुघ्न नाम सुमित्रा ललनवाँ, जनम... ।
पूरण भये संस्कार गुरु मुखश्री सों उदार
गोद में यूँ शोभे जैसे चन्द्रमा गगनवाँ, जनम... ।

गौर दुइ दुइ इन्दीवर श्याम ललन झूलत पलना छवि धाम
हुये जब चार मास के ललन बड़े सुख से सबका निष्क्रमण
हुआ सम्पन्न, कक्ष से बाहर सुलाने लगीं अम्ब अब लाकर
विविध पंछी मुड़ेर पर आई चहकते कमलनयन रघुराई
बड़ी उत्सुकता से उस ओर निरखते, बोलत जब शुक मोर
कमल सम कर पद कोमल लाल फेंक खेलत, लखि मात निहाल
सकल पुर परिजन दासी दास दुलारत, नित आ आ कर पास
अलप वय के शिशु माँ संग आते परस करते कर पद न अघाते
छोट बड़ जीव सभी को प्यारे अवध के चारो राजदुलारे
अन्नप्राशन का अवसर जानी सभी खुश पुरजन राजा रानी
विविध विधि व्यञ्जन सारे बने छहो रस पूर्ण नाम को गने
किये जब द्विजवर स्वस्तिवाचन कराये सबको क्रमशः प्राशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नृपति दशरथ निज गोद बिठाई अवध में अनुपम खुशियाँ छाई
अयोध्या में सुर मुनि नित आते दरस करि रघुवर का सुख पाते

### ३. राम का दर्शन करने के लिए ज्योतिषी के रूप में काकभुशुण्डि के साथ शिव का आना

इसी क्रम में कैलास निवासी संग लेकर एक अन्तेवासी
अवध को चले चाहते दरश राम का, शिष्य चाहता परस
पुरारि के संग शिष्य कवन था भुशुण्डि थे कोई और नहिं था
ज्योतिषी का धरि रूप महेश बनाये थे अति अद्‌भुत वेष
शुभ्र कर्पूर सरीखा रंग जटिल अरु भस्म विभूषित अंग
संग का अन्तेवासी श्याम चतुर, चञ्चल, विनम्र पर नाम
कहत नहिं अपना, कोई कहीं पूछ हि लिया, तो कहता यही
'परम दैवज्ञ ये गुरु हमारे आज ही तो ये अवध पधारे
शिशुन्ह के देखत हैं ये हाथ बतावत हैं क्या उनके साथ
भविष्य है, तभी कई जन तहाँ आ गये कहते 'हाँ हाँ वहाँ
और मेरे घर भी बतलाये किन्तु हम इन्हें न कुछ दे पाये
शिष्य ने कहा 'जहाँ गुरु मोर रहत हैं, रत्न कूट चहुँ ओर
घिरे हैं, धन दौलत से काम इन्हें नहीं, ये जपते बस राम'
पसर गई चर्चा 'ये दैवज्ञ विषय के अपने हैं अति विज्ञ'
दासियाँ सुनीं तुरत ही जाई रानियों से यह बात बताई
'उमापति सम एक ब्राह्मण गौर संग उनके एक श्याम किशोर
परम तेजस्वी पुर में फिरत देख शिशु कर पद फल हैं कहत'
महारानी ने तब झट कहा 'अरी मध्याह्न होने को रहा
विप्र फिरते हैं दो पुर माहीं और अब तक कुछ पाये नाहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बुलाओं राजसदन सत्कार करे उनका, फिर हाथ निहार
कुमारों का भविष्य बतलावें जो देवें आशिष, हम सुख पावें'
तुरत हि दौड़ गई इक दासी आये दैवज्ञ व अन्तेवासी
विराजे आसन दोनों आई करि सत्कार रानी हरषाई
ज्योतिषी वेषधारी शिव-गात हुआ पुलकित सोंचत यह बात
परम कोमल नीरज सम श्याम गोद अइहें मोरे प्रभु राम
हाथ संग पद तल भी सहलाई कहूँगा फल, क्या भाग्य बड़ाई
तभी रघुवर को ला महतारी गोद में दी 'फल कहें विचारी'
देख निज इष्ट की मनहर छवि विसरि गे तन सुधि शिव, तो कवि
कहे प्रभु शोभा, समझ न आवत लेखनी ही सब सफल बनावत
सम्हारि निज को शिव सुखधाम कहत 'हे अम्ब ! आपके राम
अमित तेजस्वी, त्रिभुवन पावन, चिरायु, निज जन शोक नशावन'
अङ्क में ले दूसर सुकुमार लगे कहने फिर रेख निहार
विश्व का भरण प्रजा को तुष्ट करेंगे भरत भक्ति करि पुष्ट
तीसरे ललन ये गोरे वदन सदा ही रघुवर का अनुसरण
करेंगे, गुण गौरव नहीं भिन्न राम से, लक्ष्मण-राम अभिन्न
अवध सेनापति छोट कुमार शत्रुहन' फिर निज जटा से झार
सबों के अङ्ग, विभूति लगाये दिये आशिष, तब जो संग आये
शिष्य, गुरु का करि के अनुकरण अङ्क ले शिशुओं का कर चरण
देखने लगे, चपलता जानि अवस्था सुलभ, हँसीं सब रानी
ज्योतिषी वेषधारी करुणाकर शिष्य संग विदा हुये, पुर बाहर
आ गये; बोले वायसप्रवर 'देव ! मैं यहीं पाँच सम्वत्सर
रहूँगा, जबतक अवधिबिहारी करेंगे शिशु लीला' त्रिपुरारी
गये कैलास, पाई अनुमति धरे वायस तन वायसपति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ४. बाललीला एवं अन्य संस्कार

आ गये, नृप दशरथ के आंगन करत शिशु लीला जहँ सब लालन
भुवन मोहन त्रिभुवन सुखदाई जभी से जनमें थे रघुराई
तभी से पुर के बालक सारे अजिर में आते नित, अरु न्यारे
बहुत से लघु पंछी भी प्यारे फुदक कर सुन्दर पंख पसारे
चहकते नित आंगन में आई रिझाते हों जनु गीत सुनाई
उन्हीं में जाकर मिल गये काग, राम में था अतिशय अनुराग
सो रहे यदि पलने में राम देखते रहते छवि अभिराम
जगे प्रभु गये कक्ष में पैठ निहारत द्वार, मुड़ेरी बैठ
कभी पक्वान्न कभी दधि भात राम खाते जूठन गिर जात
ताकते रहते कागा अवसर बीन लूँ मैं जो सरकें रघुवर
कभी ले पूप खण्ड दिखलाई बुलाते थे समीप रघुराई
खिलाते कभी, कभी ललचाते भुशुण्डि लखि विनोद सुख पाते
'सच्चिदानन्द परम सुख धाम सहज शिशु लीला रत श्रीराम
अलौकिक क्या' मन ज्यों हि आया इन्हें भी माया ने भरमाया
देखते क्या कि रघुवर रोटी खा रहे हैं, समीप जा झपटी
ले लिये, प्रभु धरने को धाये देख कर वायस पर फैलाये
उड़ गये, ज्यों ज्यों भागत आगे देखते प्रभु भुज पीछे लागे
आ रहा है, जहँ लगि थी गति भागते थक गये, व्याकुल अति
हुये जब, मूँद के आपन नयन कहे 'प्रभु ! राखहु अपने शरण'
बन्द आँखे फिर खोल निहारे अवधपति के आंगन प्रभु प्यारे
बैठ हँस रहे, बुद्धि अकुलाई हँसत प्रभु के मुख गये समाई
उदर में जाइ विलोके काग अनगिनत लोक, लोकपति नाग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अनगिनत सूर्य, चन्द्र अरु तारे अनगिनत ब्रह्म, रुद्र, सुर सारे
अनगिनत सर, सरिता अरु सागर अनगिनत भूधर, जीव, चराचर
अनगिनत अवधपति, महारानी अनगिनत अवधपुरी रजधानी
अनगिनत भरतादिक सब भाई अनगिनत ऋषि, मुनि, अरु रघुराई
स्वयं वायसपति की यह गिरा 'अनेक ब्रह्माण्डों में मैं फिरा
अनेक कल्पों में प्रभु की लीला निहारा मैं ने चारुशीला
सभी कल्पों में सबके रूप भिन्न थे पर श्रीराम-स्वरूप
सभी कल्पों में एक प्रकार बाललीला सनेह व्यवहार
उदर में प्रभु के सृष्टि विराम वहीं मैं भी रामहिं में राम'
देख वायसपति जब घबराये हँसे फिर राम, काग बहराये
निकल बाहर फिर वही निहारे सहज शिशु लीला रत प्रभु प्यारे
दृश्य वह, यह लखि मन घबराया भुशुण्डि को कुछ समझ न आया
गिर गये चरणों में धरि शीश पुकारत, नाथ! कोशलाधीश!
ब्रह्म तूँ निर्गुण सगुन अकाम शरण में राखहु मोही राम!
राम तब बोले 'वायसराज! मांग लो जो चाहो वर आज'
परम सुखदायी गिरा गभीर सुनत प्रभु की, वायस मतिधीर
विविध विधि मन में किये विचार कहे फिर 'प्रभु! पद पदुम तुम्हार
जहाँ मुनिजन मन करत विहार लहत रस कोई कृपा तुम्हार
इन्हीं में रहे मोरि अनुरक्ति दयासागर! दो तो दो भक्ति'
'एवमस्तु' कहि के रघुराया कहे पुनि 'तुझपर कबहुं माया
बिछा पायेगी अब ना जाल और नाहीं खग! कबहूँ काल
डाल सकता तुझ पर निज जोर भजन करते रहना नित मोर'
राम से पाइ विविध वरदान भुशुण्डि को सुख हुआ महान्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निहारे पुनि दृग मींजत राम, अम्ब दौड़ी तजि सारे काम
'खेलता मेरा अम्बुजगात थका अब' कहत उठाई मात
लगीं प्रभु को पय पान कराने दरश सुख तो बस खग ही जाने
एक दिन उबटि मात नहलाई सवाँरी बहु विधि लोरी गाई
राम को सुला स्वयं करि स्नान पूजने बैठीं निज भगवान
इष्ट को पूजि भोग धरि आगे भोजनालय में अति अनुरागे
गईं कि अवँटि तुरत ले आऊँ आज प्रातः पय हरि को पिलाऊँ
दूध ले आईं अम्ब झट वहाँ भोग प्रभु को अर्पित था जहाँ
देखतीं क्या कि मोर रमैया पा रहा भोग बोल पड़ीं 'दैया
कौन इसको ला यहाँ बिठाया अभी तो मैं ने इसे सुलाया'
दौड़ी पलना देखीं जाई 'अरे यह क्या सोवत रघुराई'
समझ नहिं पाइ खेल यह कैसा रूप यह दोनों एकहि जैसा
भ्रमित थीं कि ठाकुर मुसुकाये मुखाम्बुज में ब्रह्माण्ड दिखाये
भक्ति का आश्रय ले, कर जोरी कहीं माँ 'प्रभु ! धनि माया तोरी'
नयन थे बन्द जुड़े थे हाथ खड़ी थी जननी नाये माथ
जननी का यह दुर्लभ वात्सल्य न कम हो, सोंच चराचरवन्द्य
भोग पावत वह रूप दुराई जगे पलना में, दौड़ी माई
दुलारन लागीं, यह शिशु चरित जो ध्यावे, होवे ना जग भ्रमित
नृपति के आंगन में रघुरैया अनुज संग खीचन लगे बकैयाँ
पीत झिगुली लट लटकत काँधे स्वर्ण करधनि कटि काछनी बाँधे
भाल पर सोहत कज्जल विन्दु रूप लखि हरि का लाजत इन्दु
मुखाम्बुज में दो दुधिया दाँत झलकते, शोभा कही न जात
राम छवि वरनत नाहिं सिराई कहूँ एतनहिं, तीनों लघु भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परम सुन्दर पर उनके ज्येष्ठ शील सुन्दरता में अति श्रेष्ठ
शैशवावस्था से ही लक्ष्मण राम का करते थे अनुसरण
भाई दोनों रिपुहन भरत जागते सोते संग संग रहत
गोर साँवर दुइ जोरी निहार पिता माता पुरजन परिवार
कहत 'यह जोड़ी सुघर सलोना बचावें, ईश, लगे ना टोना'
बड़े सुख से दिन सन्ध्या प्रात करत था बीत रहा, एक रात
सो रहे थे जब श्रीरघुराई निशापति ने आ टेर लगाई
'सुखद जन्मोत्सव, सुर नर सारे अवध आ-आकर तोर निहारे
और अब सभी तोर शिशु क्रीड़ा देखते, करते संग, यह पीड़ा
हृदय में मोरे जब मैं आऊँ भगवती निद्रा को तब पाऊँ
लिये बैठी है तुझे उछंग कहो प्रभु! मुझे क्षणिक भी संग
नहीं दोगे अपना' रघुराई उठे बोले अति स्नेह जताई
'सुधाकर! करो न मन तूँ खिन्न तुझे मैं तो नहिं मानूं भिन्न
नाम में तुझे सदा अपनाऊँ राम से 'रामचन्द्र' कहलाऊँ'
सुनत प्रभु वाणी हुये विशोक नमन करि चन्द्र गये निज लोक
राम नन्हें बच्चों के सङ्ग खेलते थे उनके श्रीअङ्ग
धूल से धूसर फिर भी प्यारे तभी नृप दशरथ वहाँ पधारे
देखते प्रभु को तुरत उठाई धूल झारे लिये हृदय लगाई
रानियाँ थीं संग शोभा लहत बड़ी माँ की गोदी में भरत
आ गये, कैकेई अति मोद सहित रिपुसूदन को लीं गोद
लखन को मिला जननि का अङ्क चूम लीं मुख कहि 'मोर मयङ्क'
अवधपति का सुख पारावार उमड़ता था मुख चन्द निहार
राम की मनोहारि लरिकाई धन्य थे पिता, धन्य थी माई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तभी कौशल्या बोलीं 'नाथ! हुये सम्वत्सर के रघुनाथ
करावें इनका चूड़ाकरण' सुनत हरषे नृप 'सुन्दर कथन'
पूज्य गुरुवर से पूछि नरेश किये निश्चित कि इनके केश
उतारे जायेंगे, रघुवर के भरत के लक्ष्मण के रिपुहन के
समय शुभ जानि गुरुवर आये गजानन ग्रह मातृका पुजाये
पुनः नान्दीमुख श्राद्ध कराई बुलाये सादर, आया नाई
किया नृप ने उसका सत्कार केश-शृङ्गारक केश उतार
किया रघुपति का जब जै कार सभी आगत अपना उपहार
लगे देने, पुर बजत बधाई कहत सब 'रघुवर चारो भाई
हजारो वरस जियें सुख पायें रहें हम साथ जनम फल पायें'
व्यस्त थीं माँ सब करते दान स्वयं नृप विप्रन्ह का सम्मान
कर रहे थे, जो आगत आये भद्र शिर प्रभु का लखि सुख पाये
विविध विधि उत्सव पुर में मचा कहीं कोई याचक नहिं बचा
भाग्यशाली नापित जो केश उतारा प्रभु का उसे विशेष
खुशी थी 'सफल हो गई कला हमारी, नेवछावर भी मिला
विपुल इतना कि मेरे बच्चे कई पीढ़ी तक खायें खरचें
नहीं कम होगा, चारो कुवँर नृपति के होवें, युग युग अमर'
देव द्विज गुरुजन के प्रति नेम कुटुम्बी जन से निश्छल प्रेम
बड़ी, छोटी दोनों मातायें बतातीं जभी सुअवसर पाये
धनुर्विद्या में अति अभ्यस्त कैकेई माँ उपकरण समस्त
लक्ष्य भेदन का, बना खिलौना सजा लीं मुख्य भवन का कोना
वहाँ आकर नित सभी कुमार खेलते, सबकी हि रुचि अपार
तहाँ भाइन्ह संग श्रीरघुवीर खेलते ले लेकर धनु-तीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अश्व पर कभी, कभी जा गज पर बैठते मानहु वीर धनुर्धर
'अश्व गज बड़े व मोटे ऐसे मनुज के वश में होते कैसे ?
स्वर्ण से मढ़े धनुष चमकीले संग ये सायक बड़े नुकीले
चन्द्र सम कुछ, कुछ वृत्ताकार बनावट सबके विविध प्रकार
सबों के अलग-अलग क्या नाम और आते हैं ये कब काम ?
होत कैसे ज्या-सज्ज कमान धनुष से जुड़ते कैसे बाण ?
निशाना होता कैसे सफल ?' पूछते माँ से रघुकुलकमल
विलक्षण लगन देखकर अम्ब बतातीं बातें सब अविलम्ब
छोट सा धनुष छोट से तीर लिये फिरते जब श्रीरघुवीर
धनुष धारी छवि प्रभु की बरबस निहारा जिसने, उसे किया वश
खेलते खेल बहुत सी कला सीख गये माताओं से लला
नृपति दशरथ रानिन्ह के साथ विराजत सन्मुख श्रीरघुनाथ
अनुज संग क्रीड़ारत अति सोहत सुखद छवि मात पिता मन मोहत
भाल पर तिलक केश घुंघराले भवँर सम लटकत काँधे काले
रेशमी स्वर्ण खचित अंगरखा स्वर्ण मणि माल बीच बघनखा
छोट सा बाजुबन्द अति सुन्दर कान में मोती, वलय युगल कर
कमर में काछनी किंकिनि राजे ठुमक चलते पग पैजनी बाजे
बड़े हो गये कुछ चारो भाई महल से बाहर भी अब जाई
खेलने लगे, नगर नर नार निहारत छवि गृह काज विसार

खेलन लागे पुर में चारो भैया।
मात पिता के अति सुखकारी, पुर विचरत अब अजिर विहारी
जो जहँ निरखत धाइ उठावत, चूमत लेत बलैया॥
आगे भागत हैं रघुराई, पीछे से तीनों लघु भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करन कलेउ बुलावत धावत, पीछे से जब मैया ॥
गलियन बीच अवध उपवन में, बाल सखा सारे हैं संग में
खेल करत अरु नकल उतारत, बोले जबहिं चिरैया ॥
गलियन महँ खेलत हैं कन्दुक, अश्व सवारी को भी इच्छुक
सभी सीख गये अलप वयस में, जल में चालन नैया ॥
रघुवर की नीति यह भाई, खेलैं जब जीतैं रघुराई
लहुरन्हि मान बढ़ावन लागि, हारि कहैं 'जीतल मोर भैया' ॥
पुरजन परिजन निरख न पावत, तेहि दिन भोजन वसन न भावत
सबके प्राण रहत हैं आकुल, कब दरशन दैहें रघुरैया ॥
चलनि रहनि परख परख के, प्यारी मुख छवि निरख निरख के
जाननहार कहत ये वे ही, जो सोवत हैं शेष की शैया ॥

## ९. मदारी के रूप में हनुमान के साथ शिव का पुनः आना

मदारी एक अवध में आया सुनहला बन्दर संग में लाया
घूमता पुर में डमरु बजाई एकत्रित कर बालक समुदाई
दिखाता था बन्दर का कौतुक कृपा जो करते सदा अहैतुक
वही कैलासपति शिवशङ्कर केसरीनन्दन को संग लेकर
बनाये बन्दर, स्वंय मदारी बन गये थे कर डमरुधारी
मदारी आकर महल दुआरे नचाया बन्दर, अवधदुलारे
मचल गये 'नाचत कैसा सुन्दर पिताजी ! मुझे दिला दें बन्दर'
सोंचने लगे भूप कि 'लला अभीप्सित कहा प्रथम, पर भला
मदारी बन्दर क्यूँ कर देगा दे दिया तो क्या काम करेगा'
भूप असमञ्जस में थे पड़े लखनलाला आ सम्मुख खड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लगे कहने 'भैया ! रघुराया ! शीघ्र चलिये मैं पूछ के आया
बोलता है वह बन्दर वाला चाहते हैं यदि इसको लाला
उन्हें मैं दूँगा पर वे आयें जो रीझे हैं आकर ले जायें'
अनुज संग दौड़ गये रघुराया मदारी कपि का रज्जु बढ़ाया
राम की ओर, किन्तु यह पाश कीस का आकर भी प्रभु पास
गले में ही अँटका रह जाये ध्यान जिसका भवपाश नसाये
मदारी से डोरी नहीं थाम बैठ गये भूमि पर तहँ राम
खोल दिये रज्जु, और चिपककर चरण से बैठ गया वह बन्दर
देखते जो थे बड़े अचम्भित नहीं भागा कपि, पाया इङ्गित
राम का, पहले से भी सुन्दर नाचने लगा छलांगे भरकर
ले लिये बन्दर जब श्रीराम भूप सोंचे अब इसका दाम
उचित जो हो दे दूँ बुलवाये मदारी को, पर पता न पाये
मदारी ने अपना कर्तव्य निभाया था पाया था लक्ष्य
उसे अब रुकने से क्या काम मिले जब रामभगत को राम
परन्तु नृप चिन्तित कि निष्क्रय दिया नहिं गया, दूसरा विस्मय
शीघ्रता से इतनी वह किधर चला ही गया कि मेरे ये चर
पता पा सके नहीं, मुनिराया वशिष्ठ जी ने आकर समझाया
'आप चिन्तित क्यों होते भूप ! देव-देवी धरि विविध स्वरूप
नित्य ही अवधपुरी में आते रिझा रघुवर को वापस जाते
उन्हीं में से कोई फिर आज आ गये होंगे' तब महाराज
हुये निश्चिन्त, उधर रघुराई बहुत ही खुश थे बन्दर पाई
सदा हि प्रभु के संग कपि रहता राम जो भी कहते वह करता
कछुक दिन बीते श्रीरघुराई कहे कपि से 'सुकण्ठ पहँ जाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहहु किष्किन्धा में कुछ काल मिलूँगा वहीं अञ्जनिलाल !'
सबों का हि वह बन्दर प्यारा हो गया था, पर निकला न्यारा
राम को छोड़ गया वह कहाँ सभी को अचरज था यह महा

## ६. उपनयन संस्कार

खेलते खेल विविध विधि नये कुअँर उपनयन योग्य हो गये
बुलाये गये गेह मुनिनाथ जनेऊ हुआ सबों का साथ
आज रघुनन्दन का उपनयन जुटे सारे सम्बन्धी स्वजन
सुहृद सेवक पुर के नर नारी कहि नहिं जात भीड़ भइ भारी
सभी के मन में अति आनन्द भाइयों के संग रघुकुलचन्द
मांगि भिक्षा हम सब का दान सफल करिहें, क्या भाग्य महान्
उधर उपनयन परक सब काज करावत रघुवर से मुनिराज
ब्रह्मचारी छवि मन को मोहे गोखुराकृति शिखा सिर सोहे
मेखला मौञ्जी परम पुनीत अजिन कौपीन दण्ड उपवीत
लटकती है काँधे में झोरी भीख लेने को दाहिन ओरी
पाइ गुरु से सावित्री दीक्षा प्रथम जननी से मांगत भिक्षा
कहत 'भिक्षां भवति ! में देहि' देख सम्मुख वटु परम सनेही
भीख जब दिया मात ने उनको सुअवसर मिला बाद में सबको
रानियों के पीछे नर नारी प्रतीक्षा रत थे भर-भर थारी
अनुज संग सबके सम्मुख जाई किये सम्मानित जब रघुराई
शेष विधि भी गुरु पूर्ण कराये समागत दान मान बहु पाये

## ७. गुरु के आश्रम में अध्ययन एवं समावर्त्तन

करि उपवीत चले निज आश्रम गुरु वशिष्ठ हरषाई ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ब्रह्मचारी का वेष बनाये पाछे चारिउ भाई ।।

पढ़न आये गुरु गेह रघुरैया
माता पिता पुरजन परिजन के प्राणहिं सम प्रिय चारो भैया
प्राणहिं सम प्रिय चारो भैया, पढ़न आये...
चारो लला गुरु द्वारहिं आये प्रथम मिली हँकरत धेनु गैया
प्रथम मिली हँकरत धेनु गैया, पढ़न आये...
पद रज शीश धरे सानुज प्रभु रघुकुल की हेतु यह मैया
रघुकुल की हेतु यह मैया, पढ़न आये...
पितु सम अब हितकारी मुनिवर बन गई अब तो अरुन्धती मैया
बन गई अब तो अरुन्धती मैया, पढ़न आये...
शेष महेश नमत जेहि बहु विधि गुरु पद सेवत सो चारो भैया
गुरु पद सेवत सो चारो भैया, पढ़न आये...
वेद वेदाङ्ग पढ़त भाइन्ह संग श्वासहिं में श्रुति सार रचैया
श्वासहिं में श्रुति सार रचैया, पढ़न आये...
सब इतिहास पुराण घोखि गये आयुर्वेद, जगत रखवइया
आयुर्वेद, जगत रखवइया, पढ़न आये...
विधि सुत गुरुवर विधि को बतावत
मौन साधि सुनें शिष्य विधि के नचैया
मौन साधि सुनें शिष्य विधि के नचैया, पढ़न आये...
गुरुवर सों व्यवहार जगत के सीखत, विश्व के नाट्य रचैया
सीखत विश्व के नाट्य रचैया, पढ़न आये...
शस्त्र-कला में होत परीक्षण एकहुँ वार गिरत नहीं भुइंयाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकहुँ वार गिरत नहीं भुइंयाँ, पढ़न आये...
सहपाठी सब भाग्य बखानत मोर सहाध्यायी हैं रमैया
मोर सहाध्यायी हैं रमैया, पढ़न आये...
पूर्ण हुयी विद्या अब रघुवर घर जइहें बोलत मुनिरैया
घर जइहें बोलत मुनिरैया, पढ़न आये...

समावर्तन का शुभ संस्कार वशिष्ठाश्रम में पहली बार हुआ आयोजित ऐसी बात नहीं थी, पर विस्मय की बात अवश्य यह थी सुरधेनु सुता नन्दिनी गुरु-पूज्या मुदिता राम लागी अनेक उपहार प्रकट की, पट भूषण शृङ्गार वशिष्ठ की आज्ञा से रघुराई स्नान किये, विधिवत् क्षौर कराई किये धारण रेशमी परिधान, सहाध्यायीगण अति सुखमान अलंकृत किये, अरुन्धती आई लगाईं तिलक, आज रघुराई जा रहे आश्रम तजि निज गेह नयन थे भरे मानहु नेह हृदय के, सरल नीर बन छाये तभी रथ लिये सारथि आये दिये गुरुवर अन्तिम उपदेश और बोले इक बात विशेष 'आचरण जो अनवद्य हमार वह हो अनुकरणीय तुम्हार कहीं कोई व्यवहारिक च्युति मिली हो मुझमें हे रघुपति ! उसे जीवन में नहिं अपनाना' हुआ सब, पर गुरु की दक्षिणा शेष थी, रघुवर जोरे हाथ खड़े थे बोल उठे मुनिनाथ 'सुनो राघव ! यज्ञादिक कार्य करोगे जो उसका आचार्य बनाना मुझे और यह तोर परम पावन छवि हिय में मोर सदा ही वसे, दक्षिणा मुझको यही दो' रघुराई गुरुवर को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहें क्या, पदरज शीश चढ़ाये सारथि संग सानुज घर आये

## ८. राम का वैराग्य

बहुत दिवस गुरु गृह करि वासा रघुकुल कुवँर आये पितु पासा
भइ प्रसन्नता मात पिता को विद्या गुण युत देख सुतन्ह को
गज गति लाजत राम के चलते वरसत फूल जबहिं कछु कहते
श्यामल रंग जलद जस लागत पटुका पीत तड़ित छवि लाजत
वयस किशोर दीप्त अति वपु छवि जेहि के आगे मलिन लागत रवि
मन विचरत बन अलि रस लोभा कहूँ कैसे मुख अम्बुज शोभा
गुण, गुण रघुवर में असंख्य गुन मन मिलिन्द करि के गुण को गुन
गुन-गुन-गुन-गुन गाते फिरता रघुवर में गुण अगणित कहता
शीश पिता पद प्रभु नित नावत मात सकल व्यवहार रिझावत
पुरजन परिजन काहु न ऐसे जेहि प्रभु नहीं प्राण के जैसे
हुआ एक दुःख दुस्सह सबको दिन दिन दुर्बल लखि राघव को
जबसे गुरु गृह से प्रभु आये सब भाइन्ह को सजे सजाये
भूपति ने था भवन दिया, पर सहज विरागी सम हो रघुवर
जानें क्या चिन्तन रत रहते उत्तम असन न वसन पहिरते
जप तप में बहु समय बिताते अवसर पड़े अलप बतियाते
पर उपकार निरत पहले से हुये विरत पर सुख-साधन से
उदवर्तन स्त्रक चन्दन धारण तक नहिं करते, यह क्या कारण
असमय में ही यह परिवर्तन देख राम में, चिन्तित थे जन
मात पिता को था अतिशय दुःख देखत सूखत इन्दीवर मुख
गुरु गृह जा नृप विनय सुनाये रघुनन्दन-गृह गुरुवर आये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आते ही मुनि प्रश्न उठाये 'रघुवर ! क्यों अस वेष बनाये ?'
पद पखारि पादोदक धरि सिर राम मधुर वाणी बोले फिर
'श्रीमुख से सब शिक्षा पाया सबका मूल यही मन भाया
करि विचार, गुरुवर ! अद्यावधि आत्मज्ञान ही परमोपलब्धि
किन्तु देहाशक्ति परिग्रह बाधक इसमें, इसीलिये यह
त्याग और तप को अपनाया' तब बोले वशिष्ठ मुनिराया
'त्याग और तप उत्तम रघुवर ! पर इन दोनों से भी बढ़कर
सुख-साधन सम्मान को सहना अनाशक्त हो इनमें रहना
अत्युत्तम है, अब यह शिक्षा रघुकुलनन्दन ! सुनो, तितीक्षा
शीत ताप सहना है जैसे सम हो सुख दुःख सहना वैसे
शक्ति तितीक्षा जनित प्राप्त कर बन जाता अजेय सबसे नर
प्रबल माया भी सम्मुख आई नहीं टिक पाती है रघुराई !'
विविध बातें ऐसी बतलाकर गये गुरुवर गृह, क्रमशः रघुवर
हुये सामान्य, सबों की चिन्ता मिटी, सुख पाये माता-पिता
पुर गृह मँहु रघुवर की रहनि परम सुखद जाती नहीं वरनि
उचित समय पितु आयसु पाई मृगया को जाते सब भाई
लगे देखने राज्य व्यवस्था पितु से पूछ-पूछ समीपस्था
ग्राम्यपल्लियों में जा जाकर पहले से भी सुखद बनाकर
जीवन, जीवन के साधन को राम हुये प्यारे जन-जन को

## ९. विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा

गाधितनय महामुनि तापस जिन्हे सताते थे नित राक्षस
करि विचार 'भू भार हरन को जनमे हरि, बनि सुत दशरथ को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चलूँ उन्हें ले आऊँ अवध से, मरिहें खल उनके ही शर से'
पुलकित तन, मन से प्रसन्न अति किये अवध प्रस्थान तीव्र गति

अवध में आये इक मुनिराइ

गाधितनय नाम अति सुन्दर विश्वामित्र सुहाई।
सुनि मम द्वार पधारे मुनिवर दशरथ अति हरषाई॥
सिंहासन अरु अर्घ दिये नृप, निज कर चरण धोआई।
कहते भाग्य उदय किये मोरी मुनि! मम महलहिं आई॥
अब कृतकृत्य करहु प्रभु! मोहि आवन हेतु सुनाई।
मैं जाचन हित आयऊँ हे नृप! अऊर हेतु कछु नाई॥
दे देहु मोहि निज जेठे सुत नाम जाहि रघुराई।
मख रखवारी करैहऊँ इनसे आश्रम में ले जाई॥
सुनत बात गाधिसुत की नृप कहन लगे दुःख पाई।
जाचन से पहले मुनिवर! नहिं किये विचार मन लाई॥
राजपाट मांगहु दे दैहों प्राणहु नहिं कठिनाई।
पर हे मुनि! जनि मांगहु मोसे प्राणाधिक रघुराई॥
क्रोधित हो मुनि शाप न दे दें नृप दशरथ को भाई।
अस विचारी समझावत नृप को गुरु वशिष्ठ तहँ आई॥
मुनि की तेज तपस्या महिमा बहु विधि वरनि सुनाई।
गुरु की समुझावनि सुनि भूपति रघुवर को हिय लाई॥
माथ चूम पुनि पुनि हिय लावत, रामानुजहिं बुलाई।
कहत राउ, सुत! जाहु भ्रात संग मात चरण सिर नाई॥
मात पिता गुरु चरण वन्दना करि अतिशय सुख पाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते मुनि के पाछे-पाछे राम लखन दोउ भाई ॥
किशोरावस्था के दो वीर काँध दोनों के धनु तूणीर
सुमन सज्जित थीं काली अलकें कान में मणिमय कुण्डल झलके
कुटिल भृकुटि पद्मायत लोचन भाल पर माँ कृत अक्षत रोचन
पीत पट, पटुका सुन्दर सोहे कुसुम सुकुमार अङ्ग मन मोहे
गले में सोहत मुक्ताहार लजाता सुन्दरता लखि मार
जगत हित तत्पर दोनों भ्रात सुखद शुभ शकुन हुये मग जात
डेढ़ योजन चलकर मुनिराई कहे रघुवर से नेह जताई
'आचमन करि सरयु के जल से शीघ्र आओ तुम दोनों मुझसे
सीख लो बला और अतिबला नाम की विद्या, इससे भला
तुम्हारा होगा, तनिकहुँ त्रास न दे पायेगी क्षुधा व प्यास
मानसिक या शारीरिक कष्ट प्रभाव से इसके होगें नष्ट
रूप में कबहुँ कोई विकार न होगा तेरे, नृपति कुमार !'
आचमन करि पवित्र हो आये राम तब मुनि से विद्या पाये
सहज ही प्रभु की अनुपम छवि दीप्त हो उठी और ज्यों रवि
निशा होने को आयी जान किये सन्ध्या, करि सरयू स्नान
महामुनि सानुज अम्बुजगात राम, भू पर कोमल तृण पात
विछाये मिल कर दोनों भाई महर्षि शयन किये जब आई
दबाने लगे चरण हरषाइ भ्रात दोनों, पुनि आज्ञा पाइ
राम सोये, उनके श्रीचरण पलोटन लगे मुदित मन लखन
तुरत हि रोक उन्हें करुणाकर सो रहे, अपने पास सुला कर
रात बीती सुख से, सब जागे निबाही नित्य चले अब आगे
पहुँच गये चलते-चलते वहाँ मिली थीं सरयू गंगा जहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पावनी गंगा का शुभ दर्शन हुआ फिर पूछे रघुकुलनन्दन
'देव ! सम्मुख यह पावन आश्रम दिखे जो किसका ? जिज्ञासु हम'
सुनाये गाधिसुत इतिहास 'किया था यहीं काम का नाश
रुद्र ने, कुसुमायुध निज अङ्ग छोड़ पाया था नाम अनङ्ग
तभी से इस प्रदेश का नाम हो गया अङ्गदेश, श्रीराम !
निवसते आश्रम में जो मुनिगण सभी शिव शिष्य, सभी निर्मल मन'
कह रहे थे मुनि विश्वामित्र 'चलें हम सब तहँ होइ पवित्र
बितायें आश्रम में ही रात चलेंगे आगे होत प्रभात'
तभी तप बल से आश्रमवासी जान गये कि आये सुखराशि
सबों के मन में अति उल्लास छा गया, आकर के झट पास
लिवा लाये आश्रम, बैठाये किये सत्कार अतिथि सुख पाये
सबेरा होते मुनि ने विचार किया कि 'सुरसरि को यहीं पार
करूँ' सो मंगवाये इक नैया बैठे मुनि, सानुज रघुरैया
जो आश्रम में रहते थे मुनिजन लगे कहने 'उस पार गहन वन
ताड़का का भय वन में व्याप्त चतुर्दिक् , अतः कोऊ नहिं जात
स्वभाव से ही वह अतिशय क्रूर सहायक संग में राक्षस शूर
बन्द है आवागमन उधर से नहीं अनभिज्ञ महामुनि इससे
तेज तप जिनका श्रेष्ठ विचित्र आज वे यहीं से विश्वामित्र
जा रहे हैं सुरसरि के पार संग ये कोमल राजकुमार'
कहत कोऊ 'अब उसका काल आ गया, मरकर होगी निहाल'
बात करते थे सब यूँ खड़े दिखाई जब तक तीनों पड़े
मध्य धारा में पहुँची नैया तुमुल ध्वनि सुन के श्रीरघुरैया
पूछते कौशिक से 'यह ध्वनि कहाँ से कैसी आवत ? मुनि !'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगे कहने मुनि 'प्रश्न तुम्हार बहुत उत्तम, अब सुनो हमार
बात प्राचीन कि विधि ने विचार किया मन माँहि, तुरत जलधार
प्रकट भइ, निर्मल परम मनोहर बनाया विधि ने उसे सरोवर
श्रेष्ठ सर प्रकट हुआ विधि-मन से अतः विख्यात हुआ 'मानस' से
हिमालय में कैलास निकट वह ब्रह्म-सर राघव ! उससे ही यह
हुयी निर्गत सरयू की धारा अवध से सटी बहत जो, सारा
जगत जानत, सुरसरि के साथ यहाँ सङ्गम उसका, रघुनाथ !
श्रेष्ठ दोनों ही नदी हहाकर मिली हैं, जलधारा टकराकर
तुमुल ध्वनि होती है, रघुराई ! चलो उतरो तट नैया आई'
चले आगे मुनि संग रघुराई देख वन सघन कहे 'मुनिराई !
विविध तरु तिन्दुक, धौरा, शाल, बेल आदि के बहुत विशाल
हिंस्र पशु व्याघ्रादि गज सूअर भरे हैं, दिखते कहीं नहीं नर
कौन वन ? किसका है करि दया कहें मुनि !' तब बोले मुनिराया
'इन्द्र जब वृत्रासुर के वध से हुये कलुषित पुनि छुधित क्षुधा से
हो गये थे तब सुरगण लाये यहीं, गङ्गाजल से नहलाये
क्षुधा भी उनकी शान्त कराये पुनः निर्मल निष्करुष बनाये
छुड़ाया देवों ने मल यहाँ इन्द्र का अतः 'मलद' अरु वहाँ
मिटा कारूष, करुष यह नाम मिला दोनों जनपद को राम !
इन्द्र से, पुनि सुरपति वरदान दिये 'दोनों जनपद धन धान
पूर्ण होंगे' सुर साधुवाद दिये उनको, अब इसके बाद
सुनो ये जनपद थे खुशहाल परन्तु बीता जब कुछ काल
ताड़का नाम वाली यक्षिणी आ गई यहाँ दुराचारिणी
वृहत् काया है वह यक्षिणी स्वेच्छया विविध रूप धारिणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सहस गज का बल रखती तन में विचरती भयदायिनी बन वन में
पुत्र भी हैं उसके दो क्रूर सुबाहु मारीच संज्ञक शूर
कर दिया जनपद उसने नष्ट अभी भी देती सबको कष्ट
चलो अब हम उस ओर हि चलें मार डालो ज्यों ही वह मिले'
राम पूछे 'मुनि ! जब वह अबला हुयी कस अस बलवाली भला'
ताड़का का सारा वृत्तान्त बताये मुनि इसके उपरान्त
तुरत बोले कि 'हे रघुवीर ! चढ़ालो धनुष हाथ में तीर
ले लो अब वह यहाँ कहीं भी आक्रमण कर सकती है' तभी
गरजती दोनों हाथ उठाये विखेरे केश और मुँह बाये
वृहद्वदना को दौड़ी आती देख कर भी जब ठिठके रघुपति
महामुनि बोल उठे 'रघुराई ! जान इसको स्त्री दया दिखाई
न छोड़ो, राक्षसी विकाराला महापापिनी, तुम हो रखवाला
जगत रक्षा का तुम पर भार' सुनत गुरु आज्ञा राम उदार
चलाये एक तीक्ष्णतम तीर दिया जो उसकी छाती चीर
मर गई गिर भू पर ताड़का गगन में 'जै-जै' शब्द सुरों का
गूँजने लगा और फिर विनय किये सुरगण 'मुनि ! ये नृपतनय
योग्य हैं, अपने सब दिव्यास्त्र इन्हें दे दें, ये हैं सत्पात्र'
ताड़का-वध से हर्षित मुनिवर स्नेह करि प्रभु को बोले 'रघुवर !
बिताकर आज यहीं हम रात चलेंगे आश्रम होत प्रभात'
दूसरे दिन मुनि अति सुख मान राम को सब दिव्यास्त्र प्रदान
किये फिर सबका उपसंहार बताये, था जो प्रेम अपार
चले फिर मुनि सानुज रघुराया परम पावन प्रदेश मन भाया
राम बोले 'अति सुन्दर आश्रम बतायें देव ! कहाँ आये हम ?'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हरषि के मुनि सब कथा सुनाये 'यही 'सिद्धाश्रम' जहँ हम आये'
राम लक्ष्मण के संग कुलपति आ गये आश्रम, हर्षित अति
किये मुनिजन आ आ पद वन्दन और सानुज प्रभु का अभिनन्दन
विराजे सुस्थिर हो जब मुनि कमल कर जोरी रघुकुलमणि
कहे 'निश्चिन्त मना मुनिराज ! ग्रहण करिये मख दीक्षा आज
आपने राक्षस वध की बांत कही जो पूरी हो' फिर रात
सावधानी के साथ बिताये प्रात उठि दैनिक नियम निभाये
पुनः कौशिक पद रज धरि शीश सहानुज, बोले राम 'मुनीश !
असुर कब कैसे और किधर से यहाँ आते ? कृपया यह हमसे
कहें' तब तापस कोई बोले 'मौन हैं कुलपति मख दीक्षा ले
यज्ञ का धूम देख वह नीच-कर्म करने वाला मारीच
लिये राक्षस अनेक चिल्लाता दखिन दिशि से ही प्रायः आता
प्रबल मख द्वेषी राक्षस-झुण्ड अपावन करता वेदी कुण्ड
आज दशमी पूनो पर्यन्त सतत हो सावधान अत्यन्त
सजग करिये मख की रखवारी आप दोनों समर्थ असुरारि'
उठाये तदनन्तर धनु तीर कुशल दोनों रघुवंशी वीर
सुमन सम सुन्दर सरसिज गात बिताये जाग पाँच दिन रात
पूर्णिमा के दिन स्वाहाकार गगन में गूँजा, धूम अपार
छा गया, देखि असुर सब धाये राम बिनु फर का बाण चलाये
टँगा उस पर हि दल का नायक गया उदधि तट आने लायक
रहा नहिं तब उसका हि भाई बढ़ा आगे करता अगुवाई
मार कर उसे अग्नि का तीर भस्म कर डाले जब रघुवीर
सैन्य दल वायव्यास्त्र चलाई रौंद डाले क्षण में लघु भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उधर मण्डप में पूर्णाहुति हो रही थी, हो गई, रघुपति
जाइ कौशिक पद शीश नवाये महामुनि अति हर्षित हिय लाये
कहे 'तुझको पाकर रघुराई ! कृतारथ हम सब मुनि समुदाई'
दूसरे दिवस हुआ यज्ञान्त सभी मुनि जन बैठे थे शान्त
कहा कौशिक ने 'हे रघुनाथ ! चलो अब मिथिला मेरे साथ

### १०. मिथिला प्रस्थान

वहाँ मिथिलाधिप यज्ञ रचाये निमन्त्रण सादर हमें पठाये'
सुनाये मुनिवर फिर इतिहास जनक के पुरखों का, अरु नाश
त्रिपुर दानव का शिव ने किया कवन विधि पुनि पिनाक दे दिया
भूपमणि देवरात को, अब भी धनुष की पूजा करते सभी

इक्ष्वाकु नृप के ही एक तनय 'निमि' जिनका नाम।
निमि के संग तुम्हारे कुलगुरु मुनि वशिष्ठ का राम ! ॥
किसी बात पर ठन गई दोनों दिये परस्पर शाप।
देहपात का, दोनों पाये क्रोध जनित सन्ताप ॥
मित्र-वरुण के मिलित तेज से मुनि वशिष्ठ ने देह।
प्राप्त किया, निमि के ऊपर था गौतम का अति नेह ॥
निमि के मृत वपु को मथ ऋषि ने पुत्र किया उत्पन्न।
मात-पिता संयोग रहित वह जनमा था सुत-रत्न ॥
नाम हुआ उसका 'विदेह' उससे ही वह कुल आगे।
चला इसी से लोग उसे तब जनक कहन भी लागे ॥
मन्थन से उत्पन्न हुआ था मिथि भी वह कहलाया।
मिथिला नामक पुरी उसी नृप ने था राम ! वसाया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उन्हीं मिथिल के 'उदावसु' सुत उनके 'नन्दिवर्धन'।
नन्दिवर्धन-सुत 'सुकेतु' नामक हे रघुकुलनन्दन ! ।।
'देवरात' थे उनके बेटे शिव के अनुपम भक्त।
उनको शिव ने दिया धनुष जग विश्रुत और सशक्त ।।
वह पिनाक अब भी उनके कुल में है रघुकुलकेतु ! ।
उन्हें 'बृहद्रथ' 'महाबीर' सुत 'सुधृति' के धृष्टकेतु' ।।
उनके सुत 'हर्यश्व' और उनके 'मरु' उन्हें 'प्रतीपक'।
'कृतिरथ' 'देवमीढ' 'विश्रुत्र' फिर 'महाधृति' कुलदीपक ।।
उनके सुत 'कृतिरात' 'महारोमा' नामक सुत पाये।
उनसे हुये 'स्वर्णरोमा' जब भूपति अति हरषाये ।।
हुये 'ह्रस्वरोमा' इकीसवीं पीढ़ी में रघुराई ! ।
उनके सुत 'सीरध्वज' मिथिलाधिप जिन्ह नेवत पठाई' ।।

'पिनाकी का पिनाक परित्राता कहें केवल क्यों पूजा जाता ?' राम पूछे पुनि पूछे लखन 'मुनीश्वर ! मिथिला में अब कवन यज्ञ हो रहा ? कृपा करि कहें' 'प्रश्न अति सुन्दर' मुनि सुख लहे बताये 'शिव धनु वह अति भारी कोउ भी तिल भर सके न टारी सदाशिव का प्रसाद शिव-रूप मान कर पूजा करते भूप हुयी पर अचरज की यह बात कमल-कलिका सी कोमलगात उर्विजा मिथिलाधिप की कन्या नहीं जिन सम त्रिभुवन में अन्या उठा कर में, भूमि को पोतीं सजा दीं पुनि जहँ पूजा होती जान यह बात जनक को चिन्ता हुयी 'किसको दूँ मैं यह दुहिता' अतः धनु को ही राखे माध्यम 'उठा जो तोरे उसको ही हम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विवाहेंगे यह बेटी अपनी' परन्तु अब तक रघुकुलमणि !
नहिं कोई भी यह कर पाया उठाना दूर, डुला नहिं पाया
वही यह धनुष यज्ञ सौमित्र !' रोम हर्षित प्रभु बोले 'विचित्र
उर्विजा कन्या' 'हाँ उर्विजा, पड़ा दुर्भिक्ष भयानक प्रजा
हुयी व्याकुल नृपति घबराये वहाँ के, ये सब मर ना जायें
द्विजों को बुलवाये नृप, कारण जानना चाहे, विप्र निवारण
बताये 'यज्ञ हेतु भू-कर्षण आप जो करें, करें हम यजन'
प्रजा रक्षण हित नृपति हल ले यज्ञ भूमि जब जोतन चले
किये ब्राह्मण सब स्वस्ति-वाचन जनक का 'जै हो' कहे प्रजा-जन
बढ़े कुछ ही थे नृप कि हल का फाल धरती के भीतर अँटका
जनकजी हारे जोर लगाई नहीं निकला तब विप्र खुदाई
कराये भू की निकला कलश, कलश में नन्हीं कन्या, हरष
हुआ सब को 'यह अतिशय सुन्दर' जनक अति पुलकित ले आये घर
वरस के मेघ किये अभिषेक मानहु भू पर माथा टेक
लगी बढ़ने वह चन्द्र कला सी भूमिजा भू पर स्वयं रमा सी'
कहे पुनि मुनि 'यामिनी गहराई करो अब शयन जाइ रघुराई !'
दूसरे दिन सारी तैयारी हुयी, दल था मुनियों का भारी
शकट सौ लद कर के तैयार हुये, करि वैदिक मन्त्रोच्चार
किये मुनि मिथिला को प्रस्थान संग सानुज श्रीराम सुजान
आ गया दल जब सोन किनारे जानि सन्ध्या तहँ डेरा डारे
किये जब रात्रि को विश्राम कहा मुनि ने 'सुनहु श्रीराम !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मसुत कुश के बेटे चार द्वितीय जो 'कुशनाभ' हमार
पितामह थे, उन्हें कन्या मात्र एक सौ थीं, पाकर सत्पात्र
विवाहे, पुत्र प्राप्ति का जतन किये पाये 'गाधि' सुत रतन
यही गाधि थे पिता हमारे नगर 'गिरिव्रज' जो सोन किनारे
वसा, जहँ हम सब डेरा डाले आज आ, इसे वसाने वाले
हमारे दादा के लघु भाई नाम उनका था 'वसु' रघुराई !'
कथा कहते हुयी आधी रात सभी सोये फिर होत प्रभात
चला दल, आगे का विश्राम हुआ गंगा तट पर लखि शाम
सकल मुनि सुरसरि तट के वासी जद्यपि, पर पावन जलराशि
जाह्नवी का देखत हरषाये मानहु दरश प्रथम ही पाये
स्नान, पूजन, पितरों का तर्पण किये खाये पीये कुछ मुनिजन
पुनः बैठे गंगा तट आइ राम लक्ष्मण संग जहँ मुनिराइ
'विप्रवर ! सुरसरि की उत्पत्ति आज कहिये' जबकि रघुपति
किये जिज्ञासा तब विस्तार सहित उत्पत्ति अरु उद्धार
सगर पुत्रों का, नाम 'त्रिपथगा' कवन कारण से पाई गंगा
सुनाये मुनि, पुनि गंगा पार विशाला नगरी में सत्कार
किये नृप सुमति, रात बिताई चल पड़े आगे, श्रीरघुराई
देखकर आश्रम परम सुहावन पूछे कौशिक से 'अति पावन
लगत इहवाँ पर मुनिजन वास यहाँ करते नहिं होता भास'
लगे कहने तब विश्वामित्र 'बात ऐसी ही परम पवित्र
भूमि यह, गौतम ऋषि का स्थान यहीं था राम ! बात दे ध्यान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुनो देखो सन्मुख यह शिला तपस्या रत सी इसको मिला
महर्षि गौतमजी से शाप किया था सुरपति ने जब पाप
इसे निज चरण धूल दे तारी बना दो रघुपति ! पावन नारी'
'चरण की धूलि मोर, अवज्ञा विप्र पत्नी की' 'यह नहिं, आज्ञा
गुरु की' फिर भी कुछ सकुचाये हुये से रघुवर चरण छुआये
अहल्या कर जोरे उठ खड़ी हुयीं, फिर प्रभु के चरणन्हि पड़ी
लगीं करने स्तुति 'हे रघुवीर ! हरी प्रभु ! तुमने मोरी पीर'

रघुकुल कुवँर ! राम ! रघुनन्दन ! केहि विधि करूँ तोर पगवन्दन
असमय केरी विचार न कीनी मुनि जानी तेहि निज तन दीनी
पतित परस अति अधम शरीरा किये अविचल पाथर मुनि धीरा
शाप दिये मुनि भल किये मोरी पावा दरश जगत्पति ! तोरी
तुम पालक संहारक कर्ता मैं अति अधम तजे जेहि भर्ता
सब विधि मैं जग महुँ अति दीना भइ कृतकृत्य जो दाया कीना
निज पग धूलि देइ मोहि तारी करि दीन्हीं प्रभु ! पावन नारी
पाई दरश सुफल भये लोचन परस से पावन दुर्गतिमोचन !
परम उदार हे रघुकुलवीरा ! प्रेम विवश मम वाणी अधीरा
तुअ चरणन्हि सिर टेक अवनि पर माँगऊँ वर यह हे रघुकुलवर !
चरणकमल धूलि प्रभु ! तोरी जनम जनम हो माथे मोरी

राम की स्तुति की गौतम नारी पुष्प वृष्टि नभ से बड़ी भारी
हुयी, गौतम ताहि क्षण आये अहल्या को मृदु वचन सुनाये
'अहल्ये ! बीती बात विसार करो प्रभु का सादर सत्कार
हमारे अतिथि त्रिभुवननाथ' और फिर दोनों दम्पति साथ
किये आतिथ्य गये तप हेतु 'कृपा तोरी धनि रघुकुलकेतु'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किये फिर आगे को प्रस्थान पहुँच गये मिथिला कृपानिधान

कृपा श्रीराम की जिसपर हुयी, है हो रही, होगी।
अचेतन हो कि चेतन नारी नर पशु पक्षी रिपु जोगी॥
सभी भव सिन्धु थाहक, देर बस प्रभु शरण आये की।
कवन विधि, जबकि गति श्रीराम में मन कर्म वाणी की॥

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# तीसरा पर्व

# दुलहाराम

सिर मणि मौरी कान्ह कन्हावर
पीअर धोती पाँव महावर।
नख शिख से अति सुन्दर साँवर
कौशल्या के लाल सियावर।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## १. मिथिला में आतिथ्य

'जनकपुर आजु अधिक सुहावन लगत' कहते सब पर क्या कारण
न जानत कोई जनक दुलारी जिन्हें जपतीं वे अवधविहारी
आये मिथिला पुरी मनोरम हुयी, पा पाहुन पुरुषोत्तम
व्यवस्थापक वर वास दिलाये गये पुनि राजमहल बतलाये
'महामुनि कौशिक अभी पधारे' जनक बोले 'बड़ भाग्य हमारे'
लिये द्विज मण्डल अपने साथ गये स्वागत को मिथिलानाथ
किये गाधिसुत का पद वन्दन साथ के मुनियों का अभिनन्दन
युगल कर जोरी श्रीमिथिलेश कहे 'भगवन् । यह कृपा विशेष
आपकी, आये पाया दर्शन साथ ये श्रेष्ठ तपस्वी मुनिजन
हुआ यह यज्ञ हमारा सफल' उसी क्षण सानुज रघुकुलकमल
आये, देख पास की बगिया बगल में मुनि ने बैठा लिया
जनक ने पूछा 'शोभा सागर साँवरे गोरे कुवँर सुधाकर
सरिस सुखदायी दिनमणि जैसे तेज में, देव ! पधारे कैसे
सहज ही नम्र वीर धनुधारी उमड़ता नेह हिलोरें मारी
हृदय में मेरे इन्हें निहारी, कहें परिचय यह विनय हमारी'
कहा तब मुनि ने 'ये रघुराई और ये लक्ष्मण दोनों भाई
अयोध्या हे नृप ! इनका धाम पिता नृप दशरथ विश्रुत नाम
मांग कर उनसे इनको लाया किये मख रखवारी रघुराया
सहानुज, विविध असुर संहारे राह में मुनि-पत्नी को तारे
देखने धनुष यज्ञ नृप ! साथ हमारे आये 'हैं रघुनाथ'
विप्रवर शतानन्दजी वहीं विराजे थे, कौशिक की कही
बात सुन हुये प्रफुल्लित गात लगे कहने 'इन्दीवरगात !'
धरा पर धन्य धन्य अति धन्य आपसा पुरुष न कोई अन्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## २. ब्रह्मर्षि विश्वामित्र का आख्यान

कि जिनके रक्षक विश्वामित्र जुड़ा इनसे इतिहास विचित्र
इन्होंने ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया तप-बल से सुनहु तात !
क्षत्रिय थे, थे पहले नृप ये भ्रमण के क्रम में जब ये गये
वशिष्ठ के आश्रम में, दल सारा साथ था, तहँ राजोचित न्यारा
विविध विधि से नृप का सत्कार किये ब्रह्मर्षि, मन में विचार
लगे करने तब विश्वामित्र 'नन्दिनी धेनु मुनि की विचित्र
प्रकट की स्वागत के उपकरण निमिष महुँ यह है धेनु रतन
भूमिपति हूँ अतएव हमार अवसि इस धेनु पर अधिकार'
प्रकट बोले फिर 'हे मुनिराय ! मुझे दे दें यह अपनी गाय
लक्ष गौएँ, रथ, गज या वाजि स्वर्णमुद्रा जितने से राजि
आपका मन हो, वह ले लेवें गाय यह मुझको दे ही देवें'
कुशिकनन्दन की सुनकर बात वशिष्ठजी बोले श्यामलगात !
'सुनो नृप ! यह है मेरी निधि इसी के बल मैं सारी विधि
निभाता हूँ जप तप यज्ञादि स्वर्णमुद्रा रथ गज तुरगादि
करूँगा क्या, नहीं कुछ लूँगा होम धेनु यह नाहीं दूँगा'
दुराग्रह ग्रसित थी उस क्षण मति हाँक कर होमधेनु भूपति
ले चले, पर वह सैनिक सारे झटक दी जो बनकर रखवारे
चल रहे थे, हँकरत मुनि पास आ गई लेती लम्बी साँस
देख मुनि को वह क्रन्दन करने लगी 'हे मुनिवर ! कारण कवने
आपने मुझे दिया यूं त्याग हुयी गलती क्या जो अनुराग
समेटें, तब मुनि बोले 'बात नहीं यह शबले ! नृपति बलात्
छीन कर तुझे लिये जा रहे क्षात्र बल वश मन की कर रहे'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कही तब धेनु 'आप द्विजोत्तम ब्रह्म बल युत, बल दूजा उत्तम
कौन है, मैं भी हूँ परिपुष्ट आप ही के बल, क्षण में नष्ट
करूँ इस राजा का अभिमान मुझे बस आज्ञा दें भगवान् !'
वशिष्ठजी ने तब आज्ञा दिया तभी हुंकार धेनु ने किया
उसी से प्रगटे पह्लव वीर मची तहँ मार काट, रणधीर
नृपति ने सबका ही संहार किया, पुनि शबला की हुंकार
प्रकट हो गये यवन-शक जाति तथा काम्बोजादिक बहु भाँति
वीर, कौशिक की सारी सेना कर दिये नष्ट, बचा कोई ना
साथ थे इनके जो सौ तनय कुपित हो सबके सब उस समय
वशिष्ठ पर टूटे किये प्रहार, ब्रह्म ऋषि ने तो बस हुङ्कार
किया, सब जलकर हो गये नष्ट सैन्य सुत की गति देखी कष्ट
हुआ अतिशय गाधिनन्दन को बचा था अभी एक सुत उसको
राज्य का भार सौंप तप हेतु गये कानन को, रघुकुलकेतु !
कठिन तप करि के शिव से मांग धनुर्विद्या का साङ्गोपाङ्ग
लिये वरदान, वहीं फिर आये जहाँ थे शत सुत; सैन्य गवाँये
वशिष्ठाश्रम में, आगे हाल हुआ क्या, सुनें कौशिलालाल !
विविध दिव्यास्त्रों का सब ज्ञान मिला, मन में उपजा अभिमान
कुशिकनन्दन जा आश्रम पास लगे देने मुनिजन को त्रास
पेड़ पालव कर डाले नष्ट चीखने लगे जीव, पा कष्ट
सुनत ब्रह्मर्षि कुटी से बाहर आ गये, सबको धैर्य बँधाकर
नृपति से बोले 'अब नहिं कुशल तोर, तूँ पायेगा अबहिं फल'
कहत यूँ कर में दण्ड उठाये कुशिकनन्दन सम्मुख मुनि आये
देख उनको नृप विश्वामित्र चलाये आग्नेयास्त्र, विचित्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बात पर हुयी, हुआ बेकार अस्त्र वह, तब नृप बारम्बार
ब्रह्म ऋषि पर दिव्यास्त्र चलाये विविध विधि पर कुछ कर नहिं पाये
भूप कृत सारे दिव्याघात वशिष्ठ के डण्डे से ही शान्त
हो गये, तब ब्रह्मास्त्र उठाये नृपति, यह देख सभी थर्राये
चला ब्रह्मास्त्र किन्तु निस्तेज हुआ द्विज सम्मुख, अद्भुत तेज
हो रहा था तन से उद्भासित ब्रह्मसुत के, वे थे ही अजित
हुआ ब्रह्मास्त्र शान्त विधितनय समेटे विप्रशक्ति जब विनय
किये सब, देख के गाधिनन्दन क्षुब्ध हो सोंचे, रघुकुलनंन्दन !
धन्य है ब्रह्मतेज, धिक्कार क्षात्रबल को, जो यूँ बेकार
हुये दिव्यास्त्र, 'विकट तप करके बनूँगा विप्र', प्रतिज्ञा कर के
गये वन तप हेतु नरनाथ दखिन दिशि, पत्नी भी थी साथ
कठिन तप कौशिक ने फिर किया प्रकट हो ब्रह्मा ने वर दिया
'अहो नृप ! तुम तो अब राजर्षि हो गये' पर ये तो ब्रह्मर्षि
चाहते थे बनना, सो विरत हुये नहीं तप से, अगला चरित
सुनो राघव ! है कथा अनूप त्रिशङ्कु थे रविवंशी भूप
जितेन्द्रिय, सतवादी, गुणवान, प्रजावत्सल, मन में यह ठान
कि जाऊँगा मैं स्वर्ग सदेह बुला गुरुवर वशिष्ठ को गेह
बताये अपने मन की बात 'कृपा करि द्विजवर ! मुझे सगात
पठायें स्वर्ग' तो मुनि ने कहा 'असम्भव यह, होने से रहा'
त्रिशङ्कु तब गुरुसुत के पास गये, पर पूरी नाहीं आश
वहाँ भी जब, बोले 'जा शरण गहूँगा अन्य किसी का' कथन
सुनत अभिसन्धियुत तत्काल कहा गुरुपुत्रों ने 'चण्डाल
बनोगे नृप' पट भूषण केश बदल गये, चाण्डालों का वेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हुआ उनका, लखि शाप-प्रभाव हुये व्याकुल, निज मन का भाव
लिये पहुँचे कौशिक के पास दिये ये धैर्य्य कि 'नृपति ! निराश
न होओ, तुझको स्वर्ग सगात पठाऊँगा' फिर श्यामलगात !
बुला शिष्यों को बोले 'जाओ द्विजों को ऋषि-मुनि को ले आओ
कराऊँगा मैं यज्ञ विशेष नृपति हित, सुन कर यह सन्देश
कहा क्या किसने रखना याद बताना आकर', इसके बाद
'बुलावा कौशिक का' सुन बात द्विजों की आने लगी जमात
नहीं आये तो एक महोदय तथा ब्रह्मर्षि के सौ तनय
कहा क्या उन ने अन्तेवासी बताये जब, कौशिक तपराशि
कुपित हो शाप सबों को दिये 'सात सौ जन्मों तक के लिये
वशिष्ठ के सभी पुत्र चण्डाल बनेंगे' सब के सब तत्काल
जहाँ थे वहीं हो गये क्षार जलकर, तत्पश्चात् कुमार !
स्वयं अध्वर्यु बनकर याग कराये पर सुर निज-निज भाग
न लेने आये तब खिसियाकर कहा कौशिक ने स्रुवा उठाकर
'नरेश्वर ! आओ तप से प्राप्त मुझे जो फल, दे तुझे सगात
पठाऊँ स्वर्ग नहीं घबराओ तुझे जो इच्छित है वह पाओ'
दृढ़व्रती ने ज्यों हि यह कहा त्रिशङ्कु स्वर्ग पहुँच गये, वहाँ
इन्द्र उनको नहिं रहने दिये कहे 'यह स्थान आपके लिये
नहीं बस गिरे नृपति चिल्लाते, विलोकि नृप को नीचे आते
तपोधन बोले 'रुक जा भूप वहीं' फिर तप के फलस्वरूप
विधाता की सृष्टि से अलग प्रकट कर दिये, जानवर विहग
विविध धन धान्य फूल और फल नखत नये सप्तर्षिमण्डल
जुटे फिर, मैं नृप हेतु इतर बना दूँ स्वर्ग, तभी सब अमर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वहीं आ मुनि से सविनय बोले 'तपोधन ! सुनें, बात सुन तो लें तपोबल धन्य आपका धन्य परन्तु अमर सभा के सभ्य नहीं बन सकते हैं महिपाल शाप वश गुरु के ये चण्डाल हो गये हैं" मुनि बोले 'बात न होगी झूठ हमारी, प्राप्त करेंगे सुरपुर के सुख सारे नृपति, एवं निर्माण हमारे सदा ही जग में कायम रहें अमरगण ! आप अगर हाँ कहें विरत हों हम' सुर सारे मिलकर कहे 'ऐसा हि होगा मुनिवर !' बहुत अच्छा कहि कौशिक शान्त हुये फिर पूर्णाहुति उपरान्त गये पुष्कर पश्चिम की ओर, किये प्रारम्भ वहाँ तप घोर वहीं उनको ऋषि पद की प्राप्ति हुयी, इस क्रम में ही यह ख्याति मिली, ऋषि विश्वामित्र बचाये यज्ञ पशु शुनःशेप को, लाये नृपति श्रीअम्बरीष जो क्रय कर यज्ञ के लिये, पाश में बँध कर बच गये, इनके तप में शक्ति बहुत है, मिली विप्र को मुक्ति' अमरपुर में भी इनकी चर्चा पसर गइ थी, सुन हलचल मचा इन्द्र के मन में अतः बुलाये मेनका को समीप समझाये चली जा मर्त्यलोक, कौशिक का करो तप भङ्ग', सुन सुरपति का कथन, वह ऋषि के सम्मुख आई अलौकिक रूप जाल फैलाई फँसा मन मुनि का तापस हार गया, था धन्य कुसुमशर मार रही वह तपबाधा दश साल वहीं, जब सफल सुरों की चाल हों गई तब मुनि को अति ग्लानि हुयी, पर उसको कहि मृदु बानी विदा कर दिये, उत्तर की ओर स्वयं जा पुनः किये तप घोर कठिन तप करते वरस हजार गये, तब सुर मुनि सभी विचार किये, ये हैं महर्षि पद जोग कहे विधि से भी जा वे लोग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विधाता ने तब आ वरदान दिया 'हे ऋषि ! अब आप महान्
महर्षि हो गये' किन्तु निश्चय अटल था सो श्रीगाधितनय
ब्रह्म ऋषि पद पाने के लिये कठिन तप करते ही रह गये
तपस्या रत थे ऋषि निष्पाप मगर सुरपति को था सन्ताप
बहुत ही रम्भा को बुलवाये उसे क्या करना था समझाये
स्वयं भी लिये मदन को साथ गये उसके पीछे, रघुनाथ !
गई वह ऋषि सम्मुख जा चाल लगी चलने अपना तत्काल
दिये ऋषि शाप बहुत खिसियाकर हुयी रम्भा तत्क्षण ही पाथर
निरख यह इन्द्र वहाँ से भागे, सुनें श्रीराम ! हुआ क्या आगे
हुये मुनि खिन्न क्रोध के कारण हुआ यह मेरे तप का हरण
इसे जीतूँगा, तप मैं फिर से करूँगा बोलूँगा नहिं मुख से
विचारी मन हि मन वह स्थान तजे, पूरब दिशि को प्रस्थान
किये, थल देख एक एकान्त लगे करने तप, मन करि शान्त
बिना बोले व साँस भी रोक किये तप सहस वरिस सब लोक
लगा थर्राने, विधि को लिये देव सब इनके सम्मुख आये
कहा विधि ने 'हे ब्रह्मन् ! मनसा तुम्हारी पूरी हो गई' शिरसा
नमन करि श्रीकौशिक ने कहा 'पितामह ! सबके सम्मुख यहाँ
पधारी विप्र वरेण्य वशिष्ठ स्वयं यदि ऋषि मुनि पंक्ति वरिष्ठ
कहें 'यह बात मुझे स्वीकार' मनोरथ होवे पूर्ण हमार'
हुआ फिर यही ब्रह्म ऋषि आये इन्हें ब्रह्मर्षि कहि अपनाये
कहे पुनि शतानन्दजी 'ज्ञान अस्त्र विषयक तप सरिस महान'
कथा कौशिक के तप की सुनकर चकित थे सभी, उठे मिथिलेश्वर
कहत यह 'जदपि कथा से तृप्ति नहीं हो रही देव ! पर सम्प्रति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मुझे दें आयसु कि मैं जाऊँ यज्ञ का सायं कृत्य निभाऊँ'
कहे फिर चरणों में धरि माथ 'अरज स्वीकार करें मुनिनाथ !
मनोहर साँवर गोर कुमार चक्रवर्ती के राजकुमार
हृदय मन्दिर में रहने लायक रहें इस उपवन में, मुनिनायक !
नहीं मन मानत ये मनभावन चलें अतिथिगृह, पदरज पावन
आपका पाकर, गेह हमार परम पावन हो' मुनि स्वीकार
किये तब राम लखन के साथ महामुनि को भी मिथिलानाथ
लिवाते आये सुखप्रद वास दिलाये, राजमहल के पास

### ३. मिथिलापुरी दर्शन

आ गये अतिथिगृह में सभी परन्तु जब थे पथ में तभी
लखनलाला के मन में जगी लालसा, पुर कोमलता पगी
महामुनि आज्ञा जो दे देते घूम कर नगर देख हम लेते
अनुज के मन का यह ही जान, सुअवसर पा श्रीराम सुजान
कहे मुनि से 'जो आज्ञा पाऊँ लखन को नगर दिखा ले आऊँ'
विचारा मुनि ने दाया धाम स्वयं ही सगुन ब्रह्म श्रीराम
लखन को लेकर नगर दिखाने जा रहे, यह नहिं, इसी बहाने
भूमिजा भक्ति जिन्हें बराबर प्राण के, उनको दरश दिखाकर
करेंगे सफल सबों के नयन विचारत बोले मुनि मृदु वचन
'कृपालु जन-मन राखन हार कथन अति सुन्दर राम ! तुम्हार
अनुज संग जाओ पुर अति रम्य टहलि आओ, पुरवासी धन्य
बनें पा दरश तोर' श्रीराम चले पुर देखन लीलाधाम
मनोहर वपु छवि साँवर गोर युगल धनुधारी वयस किशोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मुकुट सिर सोहत पटुका पीत विराजत काँधे, शोभा जीत
लिये है मन्मथ को भी कुवँर वही दोनों अब आये इधर
सुनत कोलाहल गृह-गृह द्वार, झरोखा खोल खड़ी थीं नार
निरख मोहिनी रूप सब ठगी रह गईं, फिर बतिआने लगी
कहत कोई 'वर साँवर यही जनकलली जोग दूसरा नहीं'
मनावत विधि को दुइ कर जोर कहीं कोई 'प्रभु ! विनती मोर
करो स्वीकार सलोना सुघर साँवला सिय को दे दो यह वर'
नृपति का पन करि करि के याद कहीं ऐसा भी था सम्वाद
'कठिन शिव का पिनाक, सुकुमार नयन अतिथि लो क्षणिक निहार'
सुनत बोली कोई 'सुकुमार जदपि ये कोशलराजकुमार
परन्तु मन जो कहत हमार सुनो ये मुनि मख राखनहार
कठिन शिव का पिनाक करि भङ्ग करेंगे व्याह सिया के सङ्ग'
मनोहर जोरी श्यामल गोर गुजरती थी पथ पर जिस ओर
निरख छवि कहते थे जन सारे 'अगर कुछ भी हों पुण्य हमारे
यही साँवर वर पावें सीता इन्हीं से जुड़े हमारा रिश्ता'
बड़े छोटे बालक कई नेह सहित मिल पूछत 'कहिये गेह
कहाँ ? क्या नाम ? यहाँ किस लिये पधारे ?' समुचित उत्तर दिये
हमारे प्रभु जब झट धरि हाथ कहा कोई बालक 'रघुनाथ !
जनक जननी हरि भगत अनन्य हमारे घर चलिये वे धन्य
समझ लेंगे निज को सत्कार करेंगे हम, यह गेह हमार'
'पहुँचने में गुरु सम्मुख देर हमें होगी, न रोकिये फेर
मिलेंगे' अमृत ही जिमि घोल दिये अस सुनि रघुवर के बोल
दिखाते सुरमन्दिर, सर, बाग, प्रमुख पथ, वीथि अति अनुराग
सहित वासस्थल तक सब आये विदा पाये प्रभु से घर आये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ४. सीता का गौरी-पूजन एवं राम का पुष्प-चयन

पधारे थे मिथिला रघुपति जभी से सिय के मन की गति बड़ी अद्भुत थी, तन मन प्राण पुलक उठते थे सुनि गुणगान राम के, पर लज्जा की बात समझ लें कहीं न मेरी मात बहन, सखियाँ, गुरुजन यह सोंच इन दिनों प्रायः वे सङ्कोच–शालिनी इष्टार्चन में व्यस्त बनी रहतीं उत सखी समस्त विकल थीं, जनकलली का संग मिले कैसे तब मात उछंग विराजी थीं जब माँ ने कहा 'लली ! गौरी मन्दिर में वहाँ चली जा सखियों को ले साथ, सविधि पूजी चरणों में माथ नवाना, जगदम्बा शिव-प्रिया मनोरथ दायिनी हैं' सुनि सिया सखिन्ह संग गौरी पूजन हेतु गईं, तहँ सानुज रघुकुलकेतु पधारे, संग लिये रितुराज पहुँच गये कुसुमायुध जनु आज वहाँ मग में मयूर निज पाँख गिरा थिरकत जिमि मैं तो आँख विछाये किया तोर अगवानी हुआ धन, आये तुम धनुपाणी झुके वह ही शिखि पच्छ उठाये मुकुट में प्रभु के लखन लगाये कहत 'हम करते स्वागत तोर तुम्हारे हैं हम अब तूँ मोर' डुलावत चवँर सुगन्ध समीर बहाई, कुसुम चुनत रघुवीर मनोहारी छवि, जनकदुलारी सविधि पूजि त्रिपुरारि पियारी इधर आयीं बगिया के मध्य बने नयनों के विषय, अलभ्य अभी तक जो थे, साँवर सूरत निहारी निर्निमेष वे मूरत जिमि रह गईं खड़ी की खड़ी उसी क्षण रघुवर की भी पड़ी दृष्टि सिय पर, दोनों की आँखें मिलीं जो जगा प्रेम विधि राखे सखिन्ह के बीच सिया की छवि अलौकिक निरखत रविकुलरवि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



अनुज से बोले 'भैया लखन! अचानक आज हमारा मन
वहाँ छवि मध्य महाछवि माहिं अँटक है गया कि हटता नाहिं
नजर भी, हम रघुकुल के भाई! कभी ऐसी स्थिति ना हि आई
यही श्रीजनकराज की धिया कठिन प्रण जिनके खातिर किया
नृपति ने, जो पिनाक को तोड़े उसी से इनका रिश्ता जोड़ें
पठाई गौरी पूजन हेतु सुनयना रानी' रघुकुलकेतु
कुसुम चूनत दृष्टि पथ बाहर हुये ज्यों सीता पलक गिराकर
उन्हें मन मन्दिर बीच बसा लीं विहँसती बोली झट इक आली
'अगर करि के गौरी का ध्यान चाहती हो उनसे वरदान
चलो पुनि वहीं चलें हम साथ मांग लो आलि! वर रघुनाथ'
गईं फिर गौरी मन्दिर सिया चरण में सिर धरि विनती किया
'जगज्जननी! माँ! आद्याशक्ति! सफल कर देना मेरी भक्ति
अभी जो दृष्टि पथ में आये मनोहर साँवर, जो मनभाये
बना दो प्रियतम उन्हें हमार हरण करना पिनाक का भार'
गले से गिर गौरी का हार पड़ा सिय सिर पर, जनु स्वीकार
किया माँ ने विनती, वर तोर बनेंगे रघुवर यह वर मोर
मुदित मन सीता आईं गेह लगालीं अङ्क मात सस्नेह
सजाये हिय में रूप सलोना सिया का तथा हाथ में दोना
लिये फूलों का श्रीरघुराई सहानुज गये जहाँ मुनिराई
दिये दोनों प्रसून गुरु हाथ और फिर सहज सरल रघुनाथ
बताये मुनि से सारी बात, महामुनि पूजा के उपरान्त
दिये आशिष कि 'इष्ट हो पूर्ण तुम्हारे राघव!' उत सम्पूर्ण
नगर में चर्चा थी 'मुनिराई लिये आये हैं जो दो भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्हीं में बड़ा सिया के जोग' कहत निज-निज विधि यह सब लोग

साँवर लागे दुलहा सिया मोरी गोरी
मुनिवर संग कुवँर दोऊ आये हैं
देख सूरत जियरा मोहे ले मोरी, साँवर...
पुष्प चयन मुनि तिन्हहीं पठाये हैं
मैया पठाई सिया पूजन गौरी, साँवर...
डाली से सुमन गुरु आयसु लीनो हैं
आली का मन लाला करि लीनो चोरी, साँवर...
नृप पन कईलन धिया के बिआह को
शिव-धनु तोरी कुँअरि ब्याहि लो मोरी, साँवर...
बिना रे धनुष तोरे ब्याहब कइसे
अति सुकुमार उमरिया से थोरी, साँवर...
नगर निवासी नर नारी परिजन मिली
विधि को मनावत दुई कर जोरी, साँवर...
रघुवर दुलहा जनकलली दुलहीन
जोरी द इ जोरी विधि ऋणी होब तोरी, साँवर...

## ९. धनुषयज्ञ

कई दिन बीत गये तदनन्तर जहाँ बैठे थे कौशिक मुनिवर
तथा श्रीलखन संग रघुनाथ वहीं मिथिलेश आइ धरि माथ
धरणि पर, सविनय बोले 'देवा ! कहें क्या करूँ आपकी सेवा'
कहे तब विश्ववामित्र 'महीप ! चाहते हैं ये रघुकुल-दीप
देखना शिव-पिनाक दिखलायें' तुरत नृप सादर धनुष मंगाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वृहद मञ्जूषा पहियादार लौह की, जिसको पाँच हजार
महाबलशाली ठेलत लाये, जहाँ थी रङ्गभूमि पधराये
इधर नृप मुनि से सारी बात बताये धनुष हुआ कस प्राप्त
हमें, कवनि विधि सिया उठाई तथा भू लीप पुनः पधराई
कवन कारण यह सकल समाज बटोरे, बना इसे ही ब्याज
परन्तु हुआ नहीं प्रण पूर्ण, हुआ विश्वास लोक सम्पूर्ण
हुआ वीरों से खाली' लखन तड़क बोले 'मिथिलेश्वर ! कथन
आपके उचित नहीं, यह बात जानते हुये कि अम्बुजगात
यहीं हैं वीरों के सिरमौर' तुरत टोके मुनि उनको, और
कहे नृप से इनको ले जायें धनुष रघुनन्दन को दिखलायें'
पुनः बोले राघव से 'जाओ नृपति की चिन्ता राम ! मिटाओ'
सहज गम्भीर उठे श्रीराम किये गुरुवर को प्रथम प्रणाम
बड़ों के प्रति सादर कर जोर बढ़े जैसे मृगराज किशोर
लगा वीरासन धनुष सम्हाले धरा को धारण करने वाले
तोड़ने जब प्रभु चले पिनाक सजग हो चारो ओरी ताक
रहे थे नित अनुचर लघु भ्रात कहीं कुछ होवे ना उत्पात
स्त्रियों में उधर सुनयना रानी निरख प्रभु को सनेह से सानी
वचन बोलीं 'कौशल्या-लाल परम कोमल जस बालमराल
इन्हें नृप क्यों पिनाक पहँ लाये हँसी इनकी भी हो ना जाये
सखी ! कोई जा नृप को रोको धनुष देवें नहिं नहिं नहिं इनको'
अहिल्या का जिसने आख्यान सुना था बोली 'तेज महान्
महारानी ! करिये नहिं चिन्ता' लिये कर में वरमाला सीता
निहारत प्रभु को प्रेम विभोर मनाने लगीं मनहिं मन, जोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युगल कर शिव को 'ये सुकुमार, कठिन तव धनु हर उसका भार
यथारथ नाम करहु गौरीश ! सफल हो माँ का भी आशीष'
विकल मन सीता इनको उनको मनाती थीं, रघुनन्दन धनु को
विलोके, नमन किये फिर मध्य पकड़ कर उठा लिये, कसि लक्ष्य
साधते जैसे डोरी खींचे करुँ ज्या घोष, अचानक बीचे
धनुष वह टूट हुआ दुइ खण्ड विकट रव से गूँजा ब्रह्माण्ड
इसी रव ने सबको बतलाया धनुष शिव का तोड़े रघुराया
सभा में सब अचेत, रघुराई लखन मिथिलेश तथा मुनिराई
इन्हें बस छोड़, ध्वनि जब शान्त हुयी, मूर्च्छा गइ तदुपरान्त
विलोकी खण्डित धनु सब लोग हुये प्रमुदित, अब बना सुयोग
शतानन्द ने विदेह से कहा 'बुलाकर श्रीसीता को यहाँ
कहें अब वरमाला पहनावें सुमङ्गल मिथिलापुरी मनावे'
सुनत आदेश सिया की माई पठाईं सिय को जहँ रघुराई
सिया-गति लाजत हंसिनि चाल विराजत कर सरोज में माल
विभूषण अङ्ग-अङ्ग में राजे घुघुर पायल की रुनझुन बाजे
विलोके सिय आवत श्रीराम हुये रघुनन्दन पूरणकाम
सिया-छवि रति को भी है जीत लिया, गावत सहेलियाँ गीत

जनक नगरी भीड़ भई बड़ी भारी राजा विदेह रचाये स्वयम्वर
देखन को दौड़ी मिथिला सारी, जनक नगरी...
देव दनुज भूपति सब आये हैं
आये हैं दशमुख सहसभुजधारी, जनक नगरी...
गाधिसुत ऋषि मुनि संग आये हैं
संग में लाये हैं दुइ धनुधारी, जनक नगरी...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कोई धनुष मख देखन आये हैं
कोई बिआहन जनककुमारी, जनक नगरी...
एकहि संग मिलि जोर लगाये
हार गये जब सब पारा पारी, जनक नगरी...
देख दशा मिथिलापति बोलेऊ
जाहु भवन कुअँरि रहिहें क्वारी, जनक नगरी...
राम अछत नृप कही दिये कस अस
क्रोधत हो गये शेषअवतारी, जनक नगरी...
गुरुवर आयसु दिये रघुनन्दन
सहजहिं शिवधनु तोर मही डारी, जनक नगरी...
तीनहुँ लोक नृपति संग प्रमुदित
सियावर बनि गये अवधविहारी, जनक नगरी...

जनकलली पहिरायीं जयमाल चतुर्दिक ध्वनि गूँजी तत्काल 'दुलह रघुनन्दन जुग-जुग जियें' सुमन वृष्टि सुर नभ से किये कहीं सखियाँ 'प्रभु के पदकमल परस करि लो आलि !' करकमल बढ़े पर रुक गये, क्यूँ ? आख्यान अहिल्या का जो आया ध्यान हृदय में सुसम्मान व नेह पुलक पूरित कञ्चन सा देह झुकाईं चरणों में अब स्थान हमारा, मानत भाग्य महान पुरुष से प्रकृति ब्रह्म से माया मिली, मिल गये सिया रघुराया विलोकी इष्ट युगल को साथ लखन चरणों में नाये माथ सिया को ले सखियाँ रनिवास गईं, मिथिलाधिप कौशिक पास पधारी सविनय किये प्रणाम कहे पुनि 'मुनिवर ! अब जो काम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ६. श्रीसीताराम विवाह

उचित हो आगे का आदेश कीजिये' मुनि बोले 'मिथिलेश !
पठायें दूत अवध को जावे यहाँ का समाचार बतलावे
धनुष शिव का तोड़े रघुनाथ चलें मिथिला बरात के साथ
सुमङ्गल साजि, तब हो व्याह यथाविधि राघव का नरनाह !'
अवध को आये दूत, नरेश बुलाये सादर, वे सन्देश
सुनाये सब बहु भाँति वखानी मुदित सुनि दशरथ तीनों रानी
हमारे राम लला का व्याह तुरत गुरु गेह गये नरनाह
बताये समाचार, तब गुरुवर करें कब हम प्रस्थान सुअवसर
विचारी राजा को बतलाये अवध में घर-घर मङ्गल छाये
सुपल्लव युत शुभवन्दनवार थम्भ कदली के द्वार हि द्वार
साथ में मङ्गल कलश धराये यवाङ्कुर द्वार-द्वार उपजाये
भरत, शत्रुघ्न, सुमन्त्र उछाह सहित साजत समाज यह व्याह
अवध के राजकुवँर का, महल गली पथ हाट चतुष्पथ विमल
सजे जगमग, नर नारी गावत सुमङ्गल, व्याहगीत, बतियावत
'बराती हम रघुनन्दन दुलहा बनेंगे जनकपुरी में वहाँ
खुशी का होगा ओर न छोर विलोकहु राज महल की ओर
महारानी करि सब कुलरीति नृपति की आरती करत सप्रीति
बगल में भरत शत्रुहन सजे' नगाड़े ढोल नफीरी बजे
सुमिर गणपति, गुरुवर को भूप सुखद स्यन्दन जो गुरु अनुरूप
चढ़ाये सादर प्रथम प्रणाम करि के, स्वयं सुमिर श्रीराम
सचिव सैनिक सुत सबको साथ लिये प्रस्थान किये नरनाथ
बढ़ी ज्यों ही बरात, जल भरे कलश, एवं बेचत सिर धरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दही, मछरी, बछड़े को गाय पिलावत दूध, सगुन समुदाय मिले क्रमशः, नेउर मृगमाला तथा जो चील श्वेत सिर वाला दिखे सारे सुसगुन अनुरूप बराती सहित मुदित थे भूप विविध स्यन्दन गज वाजि विशेष अनगिनत, पहने थे जो वेष बराती, देखत ही नहिं बने काम सोने चाँदी के घने किये थे, मणि मोती के झालर लगे थे यथास्थान लहराकर बिखेरत जो अति अद्भुत छटा चाह कर भी जन दृष्टि हटा नहीं पाते थे, मुदित बरात बढ़ रही थी, जब सीमा प्राप्त हुइ मिथिला की सूचना पाये जनक, नृपमणि बरात ले आये लिये बहु विप्र सचिव परिवार किये अगवानी हरष अपार परस्पर विनय बड़ाई प्रेम सहित वैवाहिक जो जहँ नेम करत मिथिलापति ने जनवास दिया, सुविधायें सकल सुपास विविध सम्मान हेतु सामान दही चिउरा नाना पकवान विपुल मिष्टान्न, फूल, फल, मूल, वसन, बहुमूल्य समय अनुकूल सबों के सम्मुख सेवक लाई दिया करते थे, विभव बड़ाई कहे कस कोऊ गेह विसार अवधवासी सुख लहत अपार

जनवास का सम्मान सुख आनन्द कोउ कैसे कहे।
आनन्द की रसधार में फिर लेखनी क्यूँ ना बहे॥
सुध बुध विसारे शान्त थी गूँजी ठहाका जोर से।
मिथिला अवध सम्वाद सुन आई थी जो जनवास से॥
उस हास रस की राग से सज्जित किया मुख आपनी।
परिहास ही तो कह सकी दोनों पुरी की जो सुनी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


श्रीराम का शुभ व्याह देखन पुरी अयोध्या पावनी।
आई, चली अगवान को मिथिला सदैव सुहावनी ।।
दोनों सुभागिनी प्रेम से अँकवार जब थीं दे रही।
अति भाग्य आज हमार जो तुमसे मिली दोनों कहीं ।।
अतिशय विनोद का यह सुअवसर जान मिथिला ने कहा।
बड़भागिनी तुम हो बहन ! पर पुरुषरत सुन्दरी अहा ।।
झट हँस अयोध्या बोल दी तोरी बड़ाई कस कहूँ।
मैं पर पुरुषरत ही बहन ! पर तूँ तो रत जनकहिं महूँ ।।
यूँ हास अरु परिहास लग्ना पावनी दोनों पुरी।
लें शरण उसको सर्वदा जिसकी सुअञ्जलि सिर जुरी ।।

बहुत उत्सुक थे दर्शन हेतु पिता के लछिमन, रघुकुलकेतु कहत पर नहीं सुअवसर पाये कुशिकनन्दन ले उनको आये जहाँ नृप दशरथ का आवास विलोकी राम लखन को पास नृपति पुलकित हो हृदय लगाये कि जैसे खोयी थी निधि, पाये पिता को दोनों ने ही नमन किया छूकर के सादर चरण भरत शत्रुहन को रघुनाथ लगाये कण्ठ, चरण में माथ रखे दोनों ही प्रभु के, नमन भरत के चरणों में करि लखन अनुज को हिय लाये, मुनिराई मिले गुरुवर वशिष्ठ से जाई पठाये तदनन्तर सन्देश सचिव से दशरथ को मिथिलेश बुलावा पा पहुँचे नरनाथ जहाँ मिथिलेश्वर, गुरु के साथ उचित सब कुशल क्षेम उपरान्त लगी होने वैवाहिक बात कहा दशरथ ने 'मेरे यहाँ इन्हीं गुरुवर वशिष्ठ का कहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सदा सब होते रीति रिवाज हमारी कुलपरम्परा आज
वखानेंगे ये ही ब्रह्मर्षि अगर दें आज्ञा कौशिक ऋषि'
किये फिर भूपति गुरु से विनय 'कृपा करि देव ! दीजिये परिचय'
किया तब गुरु ने गोत्रोच्चार यशस्वी रविकुल का विस्तार

'श्री आदित्य' और संज्ञा के वंशज का ये नाम है क्रम से।
'वैवस्त' 'इक्ष्वाकु' विकुक्षि को सब जानत है 'शशाद' से॥
श्री शशाद के पुत्र पुरञ्जय वाहन जब सुरपति को बनाये।
इसीलिये 'काकुत्स्थ' और ये इन्द्रवाह भी हैं कहलाये॥
आगे हुये 'अनेना' 'पृथु' तब 'विश्वरन्ध्रि' के आत्मज 'चन्द्र'।
'युवनाश्व' 'शाबस्त' वीर फिर 'वृहदश्व' जैसे सब इन्द्र॥
इनसे जनमे 'कुवलयाश्व' जिनको सब कहते धुन्धुमार।
फिर 'दृढ़ाश्व' 'हर्यश्व' पुत्र इनके 'निकुम्भ' जानत संसार।
'बर्हणाश्व' 'कृशाश्व' 'सेनजित' आगे जनम लिये 'युवनाश्व'।
'मान्धाता' सुत 'अम्बरीष' के जेठ तनय संज्ञा 'यौवनाश्व'॥
'हारीत' से 'पुरुकुत्स' हुये पुनि 'त्रसदस्यु' के हैं 'अनरण्य'।
शाप दिये थे रावण को ये सुन लो रे सुरद्रोही जघन्य॥
ब्रह्मलोकगामी मुझको तो मार बन गये हो तूँ धन्य।
पर मेरा वंशज ही तुझको मारेगा कोई नहिं अन्य॥
इनके सुत 'हर्यश्व' हुये फिर 'अरुण' हुये 'त्रिबन्ध' हुये।
'सत्यव्रत' सुत नाम 'त्रिशंकु' जिनसे 'श्रीहरिश्चन्द्र' भये॥
इनसे 'रोहित' 'हरित' 'सुदेव' फिर 'विजय' 'भरुक' 'वृक' 'बाहुक' वीर।
'सगर' तनय 'असमञ्जस' 'अंशुमान' 'दिलीप' 'भगीरथ' धीर॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आगे क्रम 'श्रुत' 'नाभ' 'सिन्धुद्वीप' 'अयुतायु' 'ऋतुपर्ण' महीप।
'सर्वकाम' के सुत 'सुदास' 'कल्माषांघ्रि' के 'अश्मक' दीप॥
अश्मक के ही सुत 'मूलक' हैं मूलक के हैं 'दशरथ' पूत।
दशरथ के सुत हुये 'एडविड' 'विश्वसह' 'खट्वाङ्ग' प्रसूत॥
दीर्घबाहु ही हैं 'दिलीप' 'रघु' 'अज' 'दशरथ' ये सब लें जान।
इनके सुत 'श्रीरामचन्द्र' हैं सिया योग्य सब गुण के खान॥

जनक फिर करि निज गोत्रोच्चार कहे 'सिय राघव की, स्वीकार मुझे, कुल दोनों श्रेष्ठ महान' हुआ जब इसके बाद बिहान नृपति से गोदानादि कराये कहे गुरुदेव 'बरात चलायें सुमङ्गल पूर्ण हुये महाराज! सुदिन सुघड़ी विवाह की आज'

सुघर साँवर सलोने राम अब सज धज चढ़े घोड़ी।
वखानी को कहे शोभा सकल उपमा लगे थोड़ी॥
गगन पर आ गये सुर दरश को अमरावती छोड़ी।
विखेरत सुरसुमन सुरबाग से सुरगुण स्वयं तोड़ी॥
नचावत वर तुरग तीनों अनुज हैं दाहीनें बायें।
दुआरे पुजि राघव को जनक आंगन लिये आये॥
मनोहर दिव्य सिंहासन पकड़ कर-कमल बैठाये।
पखारे पद पदुम जब नभ से नृप पर फूल झरि आये॥
सुनयना आरती ले राम का परिछन करन आईं।
निरख हरषित लली जस मोर मिल गये दुलह रघुराई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दिये मधुपर्क नृप प्रभु को अरघ आचमन करवाई।
विलोकन व्याह रघुवर का लिये सुर आये सुरराई॥
करा कुलरीति सखियाँ जनकलली को मड़वे में लाईं।
किये सङ्कल्प कन्यादान का नृप गोद बैठाई॥
लिये कर कञ्ज में अपने सिया कर पुलकि रघुराई।
करावत व्याह विधि विधिसुत शतानन्द श्रेष्ठ मुनिराई॥
फिरत श्रीराम सीता भावँरी रतिकुसुमशर लाजे।
शुभद सिंगार सेनुर शीश सिय के राम जब साजे॥
कहे गुरुदेव अब बायें सिया श्रीराम के राजे।
चतुर्दिक हर्ष का वातावरण नभ दुन्दुभि बाजे॥
तभी गाधि-तनय सुविचार रविकुलपूज्य से बोले।
अहो मिथिलेश! जो हमने विचारा आप भी सुन लें॥
भरत लछिमन व रिपुहन का लगन भी अब यहीं कर लें।
अवधपति को मधुर सम्बन्ध से तनी और भी कस लें॥
कहा मिथिलेश ने तब आपकी अनुपम दया मुझपर।
दुलारी लाडिली दुहिता हमारी उर्मिला मुनिवर॥
लखन के हाथ में उसका समर्पित कर रहे हम कर।
अनुग्रह कीजिये अवधेश! अपनी स्वीकृति देकर॥
अनुज मेरे कुशध्वजजी सुतायें जिनकी दो मुनिवर।
सुशीला माण्डवी जेठी भरतजी होंगे उसके वर॥
सहज श्रुतिकीरति भोली उसे शत्रुघ्न को देकर।
हुये निश्चिन्त हम मुनिपुङ्गवो! नृपवर्य! तदनन्तर॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुशकेतु कन्या माण्डवी श्रीभरत संग व्याही गई।
सीतानुजा थी उर्मिला सौमित्र सुखदायिनी भई।।
कुशकेतु की लघु लाडिली श्रुतिकीरति प्यारी सुता।
श्रीराम के छोटे अनुज शत्रुघ्न की भई परिणिता।।

कुवँर चारों बहुअन्ह के साथ विराजत देख अयोध्यानाथ
उठे सबको आशीष प्रदान किये फिर बहुओं को सम्मान
सहित नाना वस्त्रालङ्कार दिये तदनन्तर करि सत्कार
कहे कौशिक से कोशलभूप 'महामुनि! तोरी कृपा अनूप
धनुष शिव का तोड़े रघुराया वधू सीता को मैंने पाया'
'मुझे आ चक्रवर्ती अपनाये बड़ाई यह हम कैसे गायें'
जनक ने बड़े विनय के साथ कहा दशरथ से दोनों हाथ
जोड़ कर 'दुहितायें नादान हमारी, इन्हें धिया सम मान
अगर हो गलती क्षमा प्रदान करेंगे, नृपमणि! आप सुजान'
अवधपति बढ़ि झट गले लगाये जनक को कर धरि पास बिठाये
कहे फिर 'आप सनेही स्वजन हमारे, देकर कन्या रतन
हमारा कुल कर दिये अँजोर ऋणी मिथिलेश! सदा मैं तोर'
बड़ाई, विनय, शील, सम्मान सभी में दोनों नृपति समान
न जग में इनसा समधी इतर कहत सब लोग और फिर उधर
विराजत चउके दुलहा चार निरख मिथिला के नर अरु नार
वखानी भाग्य कहे अब ध्येय हमारे यही, चरित भी गेय
इन्हीं के, वैवाहिक सब रीत राम के बने वहाँ पर गीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बजत बधाव जनकपुर महुँ सखि ! आज जनकलली रघुवर परिणय
पूजि दुआरहिं सब विधि करि नृप, राम को मण्डप लावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
परम सुशोभित मण्डप मध्य सिंहासन पर बिठावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
देइ अरघ आचमन कराइ के, निज कर चरण पखारहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
पुनि मधुपर्क दुलह सनमानि के सिय को मण्डप में बुलावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
रामसिया केरी व्याह विलोकन, सुर नर तन धरि आवहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
विप्रवरेण्य शतानन्द आयसु, कुलरीति रानी करावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
साजि दुल्हन वेष सिय को सुहासिनि, लइ पितु ढिग बैठावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
उपरोहित हैं वशिष्ठ शतानन्द, विधिवत व्याह करावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
कन्यादान विदेह किये जब, देवन्ह दुन्दुभि बजावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
लाजाहुति अश्मारोहण पुनि कर अङ्गुष्ठ गहावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
राम सिया भावँर जब फेरत, कुसुमायुधरति लाजहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सप्तपदी पर पाँव धरी सिय, चिरसंगिनी पद पावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
सिन्दुर शुभ सिंगार सिया सिर, रघुनन्दन पहिरावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
अब वामाङ्गी भई सिय राम की, दशरथ नृप सुख पावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
सुत सम्पति शुभ हेतु विविध विधि, राम सिया सों करावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
पट भूषण बहु विधि दइ सिय को, ससुर नृपति सनमानहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
जो जस तस सनमानि अवधनृप, जनवासे पग धारहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
रामसिया सिर चूमी सुनयना, सखी सब मङ्गल गावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
कोहबर लाई करावई नेग जो, तन सुध बुध बिसरावहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय
रामविवाह भयो तिहुँ लोक में, सुनि सब ही सुख मानहिं सुनु सखि
आज जनकलली रघुवर परिणय

हुयी वैवाहिक विधि सम्पूर्ण मगर मिथिला अब भी थी पूर्ण सजी, जन मानस में उत्साह वही स्वागत में, खुशी अथाह मिली थी, जब जब सिय को जनेश बुलायेंगे तब तब ये देश हमारे आयेंगे रघुराई करेंगे हम इनकी पहुनाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


करत नित नूतन आदर मान जनक अतएव आज प्रस्थान
करेंगे हम, पुनि पुनि यह सोंच रुके रह जाते थे सङ्कोच
विवश नृप दशरथजी, मुनिनाथ पधारे जभी जनक के साथ
अवधनृपति समुचित अभिनन्दन किये, सानुज श्रीरघुकुलनन्दन
चरण रज सादर राखे शीश गये हिमगिरि की ओर मुनीश
विदा तब दशरथजी भी माँगे सुनत मिथिलेश्वर अति अनुरागे
महल में जाइ सभी को सहेज सुनाये 'आज विदाई' दहेज
रूप में विविध वस्तुएँ दिये सियादिक सब बेटी के लिये
सजी गौयें, रथ, घोड़े, हाथी, सहेली प्रिय जो बेटियों को थीं
शताधिक दास, दासियाँ, वस्त्र, विविध मणि, मोती, रत्न, विचित्र
करोड़ों मुद्रा स्वर्ण रजत की उधर मातायें कन्याओं की
विकल थीं सुनत विदाई आज परन्तु विदा समय का साज
सजा दुहिताओं को पतिधर्म सिखायीं दैनिक उत्तम कर्म
पहुँच गये सानुज श्रीरघुवीर विदा को, माँ का छूटा धीर
तभी शिविकायें आयीं चार पड़े जिन पर बहुमूल्य ओहार
बिठाये कन्याओं को नेह सहित, सिय को करि विदा विदेह
विसर गये ज्ञान विराग, वियोग दुसह दुहिता का कह गये लोग

## ८. परशुराम-राम सम्वाद

अवधपति अवध ओर जब चले शकुन अपशकुन साथ ही मिले
हुये चिन्तित नृप पूछे गुरु से कहे गुरुवर 'भय है पर इससे
नहीं है घबराने की बात तनिक में ही होगा सब शान्त'
तभी देखे नृप परशुराम आ रहे हैं, था जिनका काम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बहुत पहले क्षत्रिय संहार कवन कारण ये यहाँ पधार
रहे हैं, सोंचत सब अभिनन्दन किये, ऋषि बोले 'रघुकुलनन्दन!
सुना है तुम हो वीर महान किये खण्डित पिनाक यह जान
तुम्हें यह दूजा धनुष प्रदान कर रहा हूँ, यदि इस पर बान
चढ़ा दो तो मैं तुझको वीर समझ फिर द्वन्द्व युद्ध रणधीर
करूँगा' सुन कर उनकी बात विनय बहु किये नृपति, सब गात
काँपते थे उनके यह देख लखन को आया रोष विशेष
परन्तु राघव उनको रोक नृपति से कहे 'पूज्यवर! शोक
करें नहिं' फिर मुड़ बोले 'ब्रह्मन्! आपको मेरा सादर नमन
सुना है मैं ने भी इतिहास किये थे क्षत्रिय कुल का नाश
कभी मन में रख प्रबल विरोध पिता के वध का जो प्रतिशोध
लिये वीरोचित ही था, इस पर हमारा भी अनुमोदन द्विजवर!
सुनें भृगुनन्दन! क्षत्रिय धर्म हमारा, विप्र समादर कर्म
समझते हम, कहिये किस कारण करूँ मैं समर आपसे ब्राह्मण!
अगर असमर्थ आपने मान कहा यह तो अपना धनु बान
दीजिये' कह कर श्रीरघुवीर परशुधर से लेकर धनु, तीर
चढ़ाये बोले 'अब बतलायें किसे हम इसका लक्ष्य बनायें'
कुपित सा था आगे वक्तव्य 'हमारे होते विप्र अवध्य
अतः नहिं होगा लक्ष्य शरीर, न होगा व्यर्थ चढ़ा जो तीर
तपोबल से जो आपने प्राप्त किये हैं पुण्यलोक, आघात
करूँ मैं उस पर या वह शक्ति हरण कर लूँ जिससे की गति
आपकी है चहुँ दिशि निर्बाध, किसे कर दूँ विनष्ट शर साध'
चढ़ाये वैष्णव-धनु पर तीर कह रहे थे जब यूँ रघुवीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चकित सब देख रहे थे प्राणी परशुधर जड़वत् कोमल वाणी बड़े धीरे से प्रभु से बोले 'हमारे पुण्यलोक को ले लें न करिये बाधित मेरी शक्ति कि जिससे मन समान है गति हमारी, मैं महेन्द्र गिरी ओर अभी जाऊँगा, अवधकिशोर! धनुष यह सर्वोत्तम यूँ साध लिये, हो हरि, मेरे अपराध क्षमा कर दो, मैं तुझे प्रणाम करूँ हे सगुन ब्रह्म श्रीराम! न हो अब देर चलायें बाण करूँगा तब ही मैं प्रस्थान' छुटा शर पुण्यलोक सब नष्ट हुये परशुधर के, गये, कष्ट मिटा नृप दशरथ का, तदनन्तर बढ़े सब पुर के पास पहुँचकर

## ८. *अवधपुरी में वधू-प्रवेश*

दे सन्देशा राउ दशरथ दूत अवध पठावहिं।
अहे वधुन्ह सहित युवराज अवधपुर आवहिं॥
सुनि उछाह भयो अवध अति, नारी मङ्गल गावहिं।
अहे पुरजन बहु विधि निज-निज सदन सजावहीं॥
पुलक कौशल्या उठीं, गुरु विप्र पत्नी बुलावहिं।
अहे पट भूषण शृङ्गार विविध पहिरावहिं॥
चऊक चार सुमित्रा पूरीं, मङ्गल घट भरवावहिं।
अहे द्वार हि कदली को थम्भ सुहरिअर राजहीं॥
पालकी चारिउ विविध, मणि रत्न जटित सुहावहिं।
अहे तिन्ह महुँ चार कुमार वधुन्ह संग राजहीं॥
साजी मङ्गल हेम थारी कैकई बड़भागिनी।
अहे परिछहीं सिया रघुनाथ सकल गुण आगरी॥
रानी कौशल्या रानी सुमित्रा, कैकई मन भावहिं।
अहे निरख जनकलली सासुन्ह भाग्य सराहहीं॥

उतारीं बहुओं को सब सास गईं ले इष्ट देव के पास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम पूजि प्रणाम करवाईं सबों से, रघुवर चारो भाई
किये सब माताओं को नमन सियादिक बहुयें भी श्रीचरण
धरीं सासुन्ह के, आँचल छोर पकड़, बोली सब सास 'अँजोर
हुआ घर, जब लगि मही अहि सीस सुहागिन रहो, हमार असीस'
ससुर नृप दशरथ के भी पाँव पड़ी सब बहुयें, कोमल भाव
सहित आशिष दे नृपवर कहे रानियों से कि 'ध्यान यह रहे
हमारी बहु अबोध सब, क्लेश इन्हें होवे नहिं ध्यान विशेष
रखेंगी इन पर अब से आप हमहिं अब इनके माई बाप'
सभी बहुयें भी आदर मान सबों का करतीं अपना जान
किसे कब क्या चाहिये यह ध्यान उन्हें रहता था, प्राण समान
सबों के थे पति, सिय रुख जान करत पति सेवा, रूप निधान
राम ही उनके व्रत जप नेम धरम सब, पति का निश्छल प्रेम
मिला उनको भी रमा समान राजतीं, घर था सुख का खान
खुशी का उमड़ा पारावार अवध में, जन जन का सत्कार
किये नृप, भर भर थार लुटाये न कोई भी याचक रह पाये
नगर में उत्सव नित नित नये हो रहे थे, तदनन्तर गये
भरत ननिहाल अनुज के साथ, पिता की सेवा में रघुनाथ
जुटे रहते थे लछिमन संग बड़े ही उत्तम थे सब ढंग
करत जो भी रघुवर, माँ बाप सकल पुर परिजन गुरु सन्ताप
न पावें ऐसा होवे काम हमारा, सदा सजग हो राम
सभी से करते थे व्यवहार, उचित पा प्यार और सत्कार
प्रजा परिजन सब करत बड़ाई, सिया के तो जीवन रघुराई

सकल सुत अवधपति के श्रेष्ठ, सबमें एक रघुराई।
कहत सुविचार पुर परिजन, मुदित जननी जनक भाई।।
इसे स्वीकारते थे सुर भी, नभ से फूल वरसाई।
अवध का नाम शुभ शान्ति सरलता और सुखदाई।।

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# चौथा पर्व

## युवराजराम

अवध – युवराज परम कमनीय
रूप, गुण राजोचित महनीय।
राज्य पाना सुन पाये कानन
धन्य विकृत नहिं सहज शुभानन।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १. राम राज्याभिषेक की तैयारी

राम विवाह उछाह को, गये बहुत दिंन बीति।
मन महुँ नृपति विचारेउ, सुन्दर सुखद सुनीति॥

सब विधि राम मोर भये लायक सो अब इनहिं करउँ जननायक
चौथेपन अब वसि गिरि कानन सब विधि करउँ धरम निज पालन
अस विचारि गुरु गृह नृप गयऊ चरण कमल रज निज सिर धरेऊ
'गुरुवर ! मोरि अरज सुनि लीजै अब युवराज राम को कीजै'
सुनि मुनि 'धन्य धन्य' अस भाषा 'सब विधि राउ ! नीति तुम राखा'
'अइसहिं करहु' कहे पुनि मुनिवर 'प्राण समान सबहि को रघुवर'
अगले दिवस 'अवध युवराज्ञा होइहिं राम' बाज अस बाजा

बहु विधि भाग्य सराहहीं, अवधपुरी के लोग।
मोरे राजा राम तो, तुच्छ स्वर्ग के भोग॥

बजन लागे चहुँ दिशि पुर में बाजा सजत सबही मंगल केरी साजा
कहत सब ही घड़ी आइल सुन्दर हमार राजा अब हो जइहें रघुवर

## २. कैकेयी का वरदान

मगर पुर में कुबरी ऐसी दासी विचार करती खुशियाँ कइसे नासीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोंचत अइसे पहुँची रानी द्वारे जहाँ कैकेयी सदन अति न्यारे
बइठ गइले कहि के 'दैव हारे' सुनत रानी ने बहुत फटकारें
मगर विपति टरती नाहिं टारे बदल दीन्हीं मति कैकेइ के रे
कहत कुबरी 'सुनहू महारानी कहल मान, नहीं पड़ी पछतानी
नृपति रघुवर तो भरत होइहें का तोहार लरिका रखवार दुअरे का'
सुनत रानी फुफुकारे जस नागिन सुहाग रानी के रहल नहीं दाहीन
कराइ दिहले कुबरी याद थाती 'वचन नृप से दुइ माँगि लेहु राती
भरत राजगद्दी हो राम वनवासी कठिन मुखड़ा हो तनिकहुँ न हाँसी
वरस चौदह राम वसें वन माहीं हतब प्राण हम जो करब रउरा नाहीं'
सिखाइ सीख गइले भवन साढ़साती गवनि कैकइ कोपगृह तेहि राती
इधर दिन बीतल करत राजनीति सुखद दुइ क्षण कैकइ धौरे बीती
विचारि राजा कैकइ धौरे गइले सहमि गइले देखि अब का इ भइले
पूछन लागे कहि कहि मृदु बानी 'कहहु रानी ! केहि हेतु रिसानी'

सकल सुवन वश तोर सुनयनी। कहि देहु बात तुमहिं जो कहनी ॥
पुरजन अरु परिवार जे अपने। नहिं विपरीत कबहुँ तव सपने ॥
मैं सब भाँति तोर सुखकारी। सत्य कहउँ नहिं वचन उधारी ॥
राम शपथ करि सम्मुख तोरे। कहऊँ अखिल विश्व वश मोरे ॥
जो कछु भाव सो मांगहु रानी। देउँ सकल सुख सम्पति खानी ॥
रघुकुल महुँ यह रीति पुरानी। छूटहिं प्राण वचन नहिं रानी ! ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राम शपथ जइसहिं सुनि रानी। दृढ़ भइ बात मनहिं अनुमानी ।।
पुनि दुहराइ शपथ केरि बाता। कहइ सुनहु जो मम हिय भाता ।।

**अवध नृपति होवें भरत, राम रहें वन जाई।**
**चौदह वरस बितावें पुनि, तापस वेष बनाई ।।**

सुनत बतिया नृप चिहुँके ले ऐसे बुझल विष में तीर लागे ले जैसे
सम्भाल अपना के कहन लगे राजा 'सकल सुत सम हैं भरत करिबे राजा
मगर राम कइले का तोहसे नदानी समझ नहीं पावौं बताइ देहु रानी !
कहत सब ही राम साधु हैं साधु तुम्हहु हिय सों प्रेम करती अगाधु
चुभी जो काँटा सुकुमार अंगवा में कइसे रहिहें तोर राम वनवाँ में
अनाथ होइ जाई अवध रजधानी जतन करि के कोई रखि लेहु रानी !'
सुनि जो विनती भरि बात भूपति के भड़क उठी रानी बिजली जैसे तड़के
'बहुत राम साधु सुनहु रघुवंशी ! तुम्हहु हमरे हो बहुत शुभशंसी
सबहिं को फल आज देऊँ मैं नीका करहु जो तुम रघुवर केरी टीका
हमार सुत के जो न राजा बनाइब जहर खाइ मरिबै अजस रउरा पाइब
हमहुँ के राजा ! ली अइलीं बिआही कहहु हमके कुछ चाही कि नाहीं
बहुत सच केरि शपथ रउरा खइलीं धरम के दुहाई बहुत विधि दिहलीं
मगर अब का तोहके हो गइले राजा ! करहु बात पूरी विचारि शुभ काजा'
परम व्याकुल भूपति रघुकुल का वचन बनि गइले जोखिम जीवन का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उधर निरखहु पुरजन समुदाई जगावत नृप को दुआरेहिं आई
इधर मन्त्री राजा धौरे आये सहमि गइले, कुछ समझ नहिं पाये
बताये सुमन्त्र जाइ राम तहँ आये जनक जननी के चरण सिर नाये
कहेउ 'मोसे पितु दुःख कहहु अम्बा ! लिये हैं काहे मही केरि अवलम्बा
कवन गलती हमसे हो गइले भारी पिता जेहि लागी हैं अतिशय दुखारी
वृथा दुनियाँ में है जनम हमारी जो सुत रहते पितु नाहीं सुखारी'
कहइ मझली माँ 'सुनहु रघुराई ! सकल बात तुझसे कहूँ समुझाई
नृपति पास मेरी थी बात दुइ थाती वही मांगा मैंने जो मोहे सुहाती
सुनत बात मोरी विकल भये भारी कहहु इसमें कौन गलती हमारी
वचन केरि साँचा हो जइहें नरनाहु बनाइ तपसी वेष तुम वन को जाहु
सुनत बात कैकइ के बोले रघुराई 'तनिक बात लागि जनक दुखी माई !
अबहिं वन ज़ाऊँ मैं मन हरषाई तनिक लूँ अम्बा के पद सिर नाई'

### ३. वनगमन के लिए कौशल्या से आशीर्वाद

श्रीराम विमाता आज्ञा पा निज मातु महल में आये हैं
शुभ चिन्तन सुत हित रख मन में माँ प्रभु में ध्यान लगाये है
यह देख राम कुछ सोंचे यूँ क्या अम्बा यह सुन पायेंगी
पितु आज्ञा है, यह जान भी लें तो क्या दुविधा नहिं लायेंगी
फिर शीश झुकाया चरणों में 'माँ! मेरे सिर पर कर डारो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जो राज्य दिया पितु ने मुझको यूँ कहो कि सुत सादर धारो'
देखा माँ ने नतमस्तक यूँ सम्मुख निज हिय के टुकड़े को
बोली 'बेटा! जुग-जुग जीओ कर प्राण समान प्रजाजन को'
फिर दे प्रसाद मस्तक सूँघी अरु बोली 'पितु ढिग जा झटपट'
तब निरख राम रुख मन्त्रिसुवन ने बात बताई सब अटपट
सुनि बात कौशिलां सहम गई रुकते-रुकते भी चीख गई
'क्या लाल मोर वन जायेगा वन की विपदा सह पायेगा
प्रियतम! तूँ ने क्या कर डाला घोला क्यूँ कैकई ने हाला'
यह जहर महल में ना फैले सोंची कौशल्या ही पी ले
इसलिये हलाहल सम पीकर बोली 'माँ है पितु से बढ़कर
इसलिए तात! वन को जाओ करि व्रत पालन वापस आओ
तब तक यदि मैं भी जी लूँगी मुख चन्द्र तुम्हारा देखूँगी
नहिं आगे जो भी मेरा हो हे तात! तुम्हारा मङ्गल हो'

### ४. श्रीसीताराम सम्वाद

सुन लीं सीता भी आइ तहाँ जननी ढिग थे प्राणेश जहाँ
सासु-चरणों में शीश धरीं यह सोंच आँख थी नीर भरी
ये कमलनयन वन जायेंगे मेरे प्राण यहीं रह पायेंगे
सिय मन को समझ गईं सासु बोलीं आँखों में भर आँसू
'यह भी वन जाना चाह रही हतभागिनी हूँ मैं राम! सही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रोको रघुनन्दन ! रोक इसे जैसे समझे समझा तैसे'
तब कहि वन-कष्ट अनेक विधि सिय को समुझावत दयानिधि
'तुमने दुःख देखा सुना नहीं वन अतिशय दुर्गम कठिन मही
गज व्याघ्र कहीं मृगयूथ कहीं वन-सूकर कपिन्ह वरूथ कहीं
छल रूप किये राक्षस समूह घूमत वन में जीना दुरूह
स्वास्थ्य के लिये होत प्रतिकूल पहाड़ी पानी जदपि फलमूल
सुलभ वन में, पर जो मन भाये नहीं निश्चित वह मिल हि जाये
दिवस दुस्तर पुनि लगे भयावनि बिना दीपक के वन में यामिनी
सो चलो नहीं वन रहो यहीं सुकुमारी तुम वन योग्य नहीं
दूजे वन जाने से हताश मेरे, माँ हों जब भी उदास
तब विविध कथायें कहि कहि के मन बहलाना सीता ! इनके
ये सब कारण हैं रहो यहीं दिन जाते लागत देर नहीं'
जो सोंच-सोंच थीं सिहर रही जब प्रभु ने वह ही बात कही
तब सीता का धीरज टूटा आँखों से जनु झरना फूटा
दृग पोंछ धीर धरि कहीं सिया 'हे नाथ ! आपने सीख दिया
जिसमें सब भाँति सुख हमार किन्तु मेरा यह दृढ़ विचार
वन जायेंगे यदि जीवनधन तो साथ चलूँगी मैं भी वन
बन वनवासी वन चले पिया तो परछाहीं मैं तोर सिया
रह सकती हूँ किस भाँति यहाँ तजि तुझे मोर अस्तित्व कहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


प्रभु ने सनेह वश बात कही मैं सुकुमारी वन योग्य नहीं
पर नाथ! मुझे मिथिला में ही ज्योतिर्विद ने थी बात कही
वन में तुझको है रहना ही वह घड़ी उपस्थित हुआ यही
रघुनन्दन! मुझसे कभी कहीं वन में होगा व्यवधान नहीं
जैसे भी हो वन में जीना जैसा जो हो खाना पीना
सब सुखदायी, पर जब वियोग प्रभु तोर, तुच्छ ये राजभोग

बाजे न वीणा तार बिनु, बिनु चक्र के रथ चलत ना।
शीतल मनोहर चन्द्र जैसे रात बिनु छवि लहत ना।।
तइसहिं सकल सुख साज में तिय पिय बिना सुख लहत ना।
मैं साथ चलिहौं प्राणपति! तोरे बिना गति मोर ना।।

मुझे यदि वन को अपने साथ न ले जायेंगे जीवननाथ!
तो जीअत पइहें मुझको नहिं' हुयीं मुर्च्छित सी, सिय यह कहि
राम ने जाना जनककिशोरी विरह में जीयेगी नहिं मोरी
प्रथम जननी को धीरज दिये कहे फिर सीता से 'हे प्रिये!
चलहु वन उपयोगी सामान महल के अपने देकर दान'
किये स्वीकार साथ ले जाना सिया ने नवजीवन हि माना
पकड़ कर सासु के श्रीचरण लगीं कहने सविनय मृदुवचन
'तजब जनि छोह दया करि माई! दीजिये आशिष अवधि बिताई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राणपति साथ अवध में आई करुँ इन चरणों की सेवकाई'
अङ्क में सिय को सासु भर लीं कहत 'ओ अरी मोर लाडिली'
सीख दीं आशिष दीं बहु भाँति छोड़ते जदपि फाटत छाती
पोंछ फिर दृग का बहता पानी स्वयं करि स्वस्ति वाचन रानी
बाँह पर बाँधी रक्षा सूत्र कहत 'मङ्गल हों तेरा पुत्र !'
सिया संग सादर रघुकुल कमल चले छू कर माँ का पदकमल
महल में दावानल सम बात पसर गयी कि इन्दीवरगात
जा रहे हैं वन, कोई दासी लगी कहने रो-रो, 'सुखराशि
राम तो जायेंगे हि कानन सिया भी नहीं रहेंगी भवन
अभी ही तीनों की बतकही सुनी मैं, भागी जब ना सही'

सिया वनवाँ में कइसे रहिहें हो रामा कहि देहु रघुवर
कमल समान चरण इन्हका कोमल कबहुँ न कठिन धरती पर डोलल
कइसे रहिहें धँसी कुश काँकर हो रामा कहि देहु रघुवर
वानर चित्रहिं देखि डेराती वन महुँ तो ये फिरत पाँति-पाँति
डरि केहि के अँचरहिं लुकइहें हो रामा कहि देहु रघुवर
लखि अति विकल भई जननी को समुझावत रघुवीर सिया को
रहि जाहु अम्मा के करनवाँ हो रामा बोले ले रघुवर
सुनि के पिया के बात सूख गइले सिया गात
प्राण बिनु शोभी कइसे तनवाँ हो रामा कहि देहु रघुवर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ९. लक्ष्मण-राम सम्वाद

मात ने किया राज रस भङ्ग लखन ने जाना दुःखद प्रसङ्ग
विलखते आये जहँ रघुराई लगे कहने पद से लपटाई
'चलूँगा वन भैया! मैं साथ आप ही एक हमारे नाथ'
राम ने कहा 'यहीं तुम रहो न वन जाने को भाई! कहो
तुझे ले जाऊँ यदि मैं साथ अवध होगा सब भाँति अनाथ'
विकल हो रो बोले सौमित्र 'न कोई इष्ट न कोई मित्र
न जानूँ पिता न जानूँ मात आप ही सब कुछ मेरे तात!
सम्हालूँ अवध ये मेरे वश का नहीं, मैं केवल अनुचर प्रभु का
सबहिं विधि सेवा वन में वहाँ करूँगा, रहा शेष क्या यहाँ
मुझे लरिकाई से ही आप सदा ही संग रखे निष्पाप!
अकेला छोड़ आज क्यूँ जाते कौन गलती क्यूँ ना बतलाते'
देखकर अनुपम प्रीति प्रतीति लखन से बोले श्रीरघुपति
'विदा माता से माँगो जाई चलो आओ संग मेरे भाई!
और हाँ, लखन! जाई गुरु गेह संग ले लो जो हमें विदेह
दिये थे धनु दो, दो तूणीर कि जिसमें रहते अक्षय तीर
वे सारे आयुध, वन में काम हमें देंगे' जब बोले राम
दरिद्री जैसे पारस पाये लखन तस हरषित, माँ पहँ आये
चरण में सिर धरि किये प्रणाम बताये फिर 'माँ! भैया राम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जा रहे वन भाभी के साथ आप मेरे सिर पर धरि हाथ
दीजिये आयसु आशिष जाई साथ में कर पाऊँ सेवकाई'
सुनत सुत की बातें सुख पायी सुमित्रा बोलीं 'तुझको जायी
धन्य मैं हुयी देखकर लगन चराचर वन्द्य राम में लखन!
संग वन जाओ, अब पितु मात तुम्हारे राम सिया ही तात!
जतन से करि के प्राण समान उन्हें रखना कि दुःख का भान
न होवे वन में, अवध विसार रहें दोनों, कर्तव्य तुम्हार'
वहीं उर्मिला पास थी खड़ी स्नेह संकोच मूर्ति सी गड़ी
दृष्टि श्रीलखनलाल की पड़ी उर्मिला पति रुख लागि अड़ी
नयन से ही बोले उर्मिला! रहे मुझसे तेरा उर मिला
प्रिये! रघुवर से निज उर मिला लवटिहौं विदा दे न उर्मिला!
समझ पिय की पग नाहिं डोला उर्मिला-नैनों ने भी बोला
जाइये प्रिय-तम प्रभु के साथ न बाधत सीता भगिनी सुनाथ
मिटा लछिमन के मन का पीर गये फिर गुरु गृह जस रघुवीर
दिये थे आयसु आयुध सारे लिये पहुँचे जहँ थे प्रभु प्यारे

## ६. मुनिवेष धारण एवं प्रस्थान

अनुज को देखत प्रभु ने कहा 'मुझे यह ही अभीष्ट था यहाँ
आ गये तुम ये सब सामान ब्राह्मणों को देकर के दान
तथा बाँटी निज आश्रित जन में करुँ प्रस्थान आज ही वन में'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


व्यवस्था लछिमन ने सब किया सभी को यथायोग्य दे दिया
विपुल धन करि के अति सम्मान किये फिर पितु समीप प्रस्थान
सिया लछिमन संग रघुकुलकेतु, कृपा जो सब पर करत अहेतु
राम को वनिता बन्धु समेत निरख नृप जो क्षण पूर्व अचेत
पड़े थे दौड़े किन्तु गिरकर हो गये मूर्च्छित, लछिमन रघुवर
उठा उनको पलंग पर लाये और जब भूप चेत में आये
राम ने कहा जोड़ कर हाथ 'पिताजी ! लखन सिया भी साथ
जा रहे हैं वन अब आशीष हमें दें तजि सन्ताप महीश !
आपके आशिष वन में हम सब सुखी होंगे' कैकेयी ने तब
तीन वल्कल लाकर दे दिये सहानुज राम पहन जब लिये
निरख मुनिवेष धरे प्रियतम को उठाईं सिय भी किन्तु उनको
बाँधना आता तो था नहीं करें क्या तब राघव से कहीं
'बतायें बाधूँ कैसे नाथ !' लगे पहनाने बढ़ रघुनाथ
दृश्य यह देख उपस्थित लोग लगे रोने कहि 'कठिन कुयोग'
कहे गुरु कैकेयी से 'रानी ! बहुत ही कर ली तूँ मनमानी
शील की सीमा तूँ ने पार कर दिया अब सुन बात हमार
राम को तो वन तूँ ने दिया बता पर कारण क्या जो सिया
करे धारण मुनियों के चीर तनिक भी तुझे होत नहिं पीर
पहन कर सौभाग्यालङ्कार सिया वन जायेगी' फटकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सहित कैकेयी को गुरु बोले, परम व्याकुल नृप आखें खोले
राम के साथ पहन मुनि चीर खड़ी सीता लखि अतिशय पीर
हुआ बोले 'दुष्टे! कैकेई! सामने से हट मुँह यह लेई
जनकतनया यह अति सुकुमारी कभी कुछ तो नहिं तोर बिगारी
राम को वन देकर ही घोर पाप कर ली अब और बटोर
रही हो पातक क्यूँ पहिराई सिया को वल्कल' तब रघुराई
बढ़े आगे बोले 'मन शान्त करें हे नृपमणि! वन में जात
हमें कुछ कष्ट नहीं प्रिय भरत राज्य पावें' सुख से यह कहत
पिता माता गुरु को करि नमन सियानुज संग किये वनगमन

राजा ने तो वही किया जो नृप का दस्तूर।
पर पूरा होने नहीं दिया विधाता क्रूर॥

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पाँचवाँ पर्व

# वनवासीराम

सिया शक्ति को लेकर साथ
चले वन राघव लखन सनाथ।
लखन सम राम चरण रति फले
कठिन होवे जीवन पथ भले।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सादा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १. श्रीराम वनगमन

वन चले राम रघुनाथ लिये लषन सिया को साथ
ये अवध के राजकुमार मुनि वेष लिये हैं धार
वल्कल ही है पीताम्बर हैं धनुष लिये दाहिन कर
कस लिये पीठ तूणीर यही भाँति लक्ष्मण वीर
श्रीराम के पीछे सीता शोभाखानि सुपुनीता
वल्कल बाँधे साड़ी पर आया क्या कठिन कुअवसर
सारी नगरी पछताती रोवत सब पीटत छाती
रानी तुझको क्या सूझा क्या किया तूँ ने अनबूझा
क्यों दाँत गड़ाया इन पर अब तक तो ना माँगा वर
माँ अरुन्धती समझाई फिर भी बुद्धि ना आई
की कान न गुरु की बानी निष्ठुरा हुयी महारानी
कही ठीक सुमन्त ने वाणी निज माँ सम हैं यह रानी
निज हृदयकालिमा के रंग रंग दिया भरत को भी संग
कौशल्या का धन छीना दूभर किया नृप का जीना
श्रीराम विरह दुःख भारी नृप सकिहें नाहीं सम्भारी
विधि क्रूर जो कुछ कर देगा नृपमणि को यदि हर लेगा
होंगे अनाथ फिर हम सब श्रीभरत राज्य लेंगे कब
भाई दौड़ो दौड़ो अब रोको रघुनन्दन को सब
मग माहिं हम पड़ जावें सिया राम लषन रुक जावें
रौदेंगे नाहीं कृपालु हैं अतिशय राम दयालु
ये परम प्रिय नहीं पुर में तब क्या रखा निज घर में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


ये सब ही के जीवन धन हम साथ चलें इनके वन
करें अवध राज्य कैकेई निज पुत्र भरत संग लेई
पुरजन रोते अति व्याकुल कर दिये राजपथ आकुल
तब बोले सबसे रघुवर 'वह ही होगा मम प्रियतर
जेहि काज अवध महिपाल रहें सुखी सदा खुशहाल
नगरी भी रहे सुरक्षित जब तक नहिं भरत से रक्षित
पितु आज्ञा अवधि बिताई मैं लौट आऊँगा भाई !'
वर दान में रख अनवस्था सेनायें भी थीं मगस्था
उनको भी कर परिलक्षित वाणी अति स्नेह से सिञ्चित
'हे सैनिक ! वीर अवध के तुम आस्थावान् रघुवर के
तो विंदा करो शुभ मन से फिर लौट मिलूँ मैं वन से'
ज्यों ही बोले रघुनन्दन सब शान्त हुये सेनागण
सबको समझाये श्रीराम 'श्रीभरत दया का धाम
उनको देना सब साथ कर जोर कहत रघुनाथ'
ताहि क्षण महल की ओर श्रीरघुवर दृष्टि छोर
गयी, देखे जननी तात आवत रोवत चिल्लात
रथ छत्र चवँर के योग्य सुख साज मान ही भोग्य
ये देव तुल्य पितु मात कस व्याकुल हैं विलखात
अङ्कुश पीड़ित गजराज सम व्यथित हृदय रघुराज
बोले सुमन्त्र से 'तात ! पितु मातु कष्ट अधिकात
रथ हाँक करें प्रस्थान नहिं बात बने विधि आन
श्रीराम कहत 'चलो आगे' पुरजन आवत सब भागे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहते 'सुमन्त्र! रुक जाओ मेरे राम को मत ले जाओ'
दुविधा में ऐसे मन्त्री संग शिथिल देह की तन्त्री
पर रामाग्रह पुर शोर सुन, रथ हाँके वन ओर

## २. दशरथ एवं परिजनों का विलाप

अन्तःपुर में कोहराम मच गया 'वत्स! प्रिय राम!
सब को करि दीन अनाथ वन गये सियानुज साथ
रघुवर रघुकुल के नीरज! व्याकुल मन धरे न धीरज
क्यों हुये निठुर महीपाल तुझको दिये देश निकाल'
बाहर पथ पर महाराज रट रहे 'राम रघुराज'
रथ भी अब दृष्टिगोचर नहिं होता संज्ञा खोकर
गिर गये भूमि पर नृपति तब रानी जिसको दुर्मति
थी व्याप्त कौशिल्या संग झठ थाम ली राऊ-अंग
जब नृपति आँखें खोले लखि कैकेई को बोले
'तूँ छू मुझको ना पापिन! पत्नी नहिं, तूँ है नागिन
मैं दशरथ तुझको छोड़ा वैवाहिक बन्धन तोड़ा

भरत भी तेरी मति अनुसार चलें, यदि गद्दी कर स्वीकार
सुखी हों, तो सुन लो यह बात किया उनका मुझको कुछ प्राप्त
नहीं हो पिण्ड श्राद्ध जलदान' राम हित दशरथजी का प्राण
विकल था, राजमहल में लाई शोक कातर रघुवर की माई
मिलत नहिं नृप को कइसहुँ चैन वरसते अविरल दोनों नैन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कुअँर सुकुमार मोर, दो भाई सिया संग रहिहें कस वन जाई
सोंच पुनि पुनि होते उद्विग्न तड़प उठते जिमि जल बिनु मीन
बड़ी मुश्किल से नृप ने बात कही 'हिय को अब शान्ति प्राप्त
होवे, सम्भव नहिं, कोइ आओ मुझे कौशल्या-गृह पहुँचाओ'
नृपति को राम जननी के सदन ले गये सेवक, पर ज्यों गगन
सुधाकर रहित दिखे श्री-हीन ताहि विधि लागत भवन मलीन
विलख नृप बोले 'रघुवर संग चली गई दृष्टि अब सब अङ्ग
शिथिल लगते, प्रिये ! मुझको थाम बताओ कहाँ लखन सिय राम'
'भवन में राम कहाँ ?' अकुलाती कहीं कौशल्या अति दुःख पाती
'अवसि पाछिल जनमों में पाप किया कुछ मैंने पिय ! जो आप
विजन वन में सुत मोर पठाये राम बिनु जीवन भी ना भाये
कौन दिन होगा वह सुखदाई सिया लक्ष्मण संग आ रघुराई
दिखायेगा श्रीमुख, हो निहाल कहूँगी, 'जुग जुग जीओ लाल'
कमल-कोमल सुत बन वनचारी गये वन संग गई जनकदुलारी
वज्र से भी यह कठिन हमारी फटी न छाती' तभी पधारी
सुमित्रा, वाणी स्नेह से पगी बोल, आश्वासन देने लगीं
'रामजननि ! अरी जीजी ! आप विकल होवें यूँ नहिं, सन्ताप
भूप को राम-विरह का भारी अपेक्षा इनको आज तुम्हारी
राम लक्ष्मण सिय लागि विषाद करें नहीं तनिक, करें तो याद
अस्त्र शस्त्रादिक गाधितनय राम लक्ष्मण को सब उस समय
दिये थे दिव्य, राम ने मारा सुबाहु को जब, राम हमारा
सुरक्षित रहेगा वन के मध्य बहन ! कुछ भी नहिं उसे अलभ्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सिया श्री सम नित सेवत जिन्हें असम्भव, दुर्लभ हो कुछ उन्हें
सुमित्रातनय धरे धनु हाथ सजग अनुचर है जिनके साथ
सिया संग नीरद वपु तव राम लौट अइहैं अवश्य निज धाम
धर्मरत रघुकुलमणि निष्पाप तपन भी दे सकते नहीं ताप
सत्य यह सत्य कथन मम मानी धरें धीरज' तब बड़की रानी
उठीं, लखि नृप को मूर्च्छा गहन सम्हालीं, बोलत अति मृदु वचन
उधर रथ पर चढ़ के रघुनाथ जा रहे सिया लखन के साथ
देख व्याकुल जन सब संग लागे वृद्ध ब्राह्मण थे उनमें आगे
मैथिली ! लक्ष्मण ! प्रभु सुखराशि ! न जाओ छोड़, कहत पुरवासी
विप्र कहते 'ओ अश्व महान्! तुम्हारे बहुत बड़े हैं कान
बात सुन हम सब की, उपवहन करो राघव का, यह अपवहन
उचित नहिं, राम ! लखन ! वैदेही ! रुको, लौटो, वन जाओ नहीं
और यदि जाओगे हि कानन चलेंगे संग हम सारे ब्राह्मण'
आर्त वाणी सुन भू-देवों की उतर गये तीनों जन रथ रोकी
चले पैदल दृढ़ निश्चयी धीर आ गये सब संग तमसा तीर

### ३. तमसा तीर विश्राम एवं जन्मभूमि को प्रणाम

लखन से बोले अवधविहारी 'निशा वनवास की प्रथम हमारी
कन्द फल आदि यद्यपि प्राप्त यहाँ हो सकते, पर यह रात
बिताऊँगा मैं जल ही पीकर उचित यह और आप मन्त्रिवर !
व्यवस्थित करें अश्व तम जानी डाल कर उनको चारा-पानी'
किया सबने ही सन्ध्यावन्दन बैठ तमसा तीरे रघुनन्दन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मातु पितु पुरजन भरत की बात करत लक्ष्मण से, पुनि अधिकात
निशा जानी मन्त्री तृण शैया डसाये, शयन किये रघुरैया
सिया संग, तरकस तीर कमान मध्य में सोहत साक्षी समान
तपस्वी जीवन के, उस ओर सकल पुरजन भी नींद विभोर
जागते लखन मन्त्रीवर, रात बीत चली, उठ के अम्बुजगात
लखन से बोले 'देखहु भाई! सटा पेड़ों से जन समुदाई
थका हारा सब सोया कैसा मानता मुझे प्राण के जैसा
इन्हें घर की भी नहिं परवाह हृदय में केवल मेरी चाह
अतः जब तक ये हैं निद्रा में यहाँ से चल दें हम कानन में'
सचिव से बोले फिर 'हे तात! आन विधि बनेगी नाहीं बात
प्रेमी पुरजन बातें मान छोड़ दें मुझे असम्भव, प्राण
छोड़ देंगे ये, रथ को घुमाई विविध विधि आगे पीछे चलाई
बढ़ें आगे' सुमन्त्र मन मार चले आगे आज्ञा अनुसार
हुआ प्रातः जागे पुरवासी दिखे जब नहीं राम सुखराशि
खोजने लगे विकल 'अति कष्ट खोज के साधन भी हैं नष्ट
ये रघुवर के हि रथ के निशान गया पर किधर, न पड़ता जान
करें क्या अब हम, कहवाँ जायें' विलखते सब जन वापस आये
पुरुष स्त्री बाल वृद्ध सब खिन्न विरह में प्रभु के अवध मलीन
मिलेंगे राम, हृदय विश्वास राखि, जीवित जन अवधि आश
जा रहा रघुवर का रथ उधर तीव्रतर गति से, जब सीमा पर
अवध जनपद के आये राम झुका सिर बोले 'पावनधाम!
अयोध्ये! आयसु दो वन जाऊँ लौट आऊँ, फिर दर्शन पाऊँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तुम्हारा और जनक जननी का' वेदश्रुति गोमती फिर स्यन्दिका
नदी लाँघत सुरसरि के तीर आ गये सिया लखन रघुवीर
सचिव, सब नमन किये पुनि स्नान मिट गयी मारग जनित थकान
पल्लवित पुष्पित इङ्गुदी तरुवर निरख गंगा तीरे अति सुन्दर
सचिव से बोले अम्बुजगात 'बितायें आज यहीं हम रात'

## ४. श्रीराम का गुह से मिलन एवं सुमन्त्र की वापसी

पास ही शृङ्गवेर पुर ग्राम जहां के राजा का गुह नाम
सुना जब अवधनृपति सुत आये विविध स्वागत का साज सजाये
संग लेकर सब बन्धु बान्धव चला मिलने गुह जहँ थे राघव
देख आवत गुह को रघुराई अनुज संग उठे बढ़े हिय लाई
प्रेम से मिले, देख वन वेष अवधपति सुत का व्यथित विशेष
हुये केवटपति बोले 'राम! आपका ही मेरा धन धाम
भाग्य से सुलभ आप सा पाहुन सुअवसर ऐसा पावा काहु न'
विविध वस्तुएँ राम पहँ आनी भक्ष्य अरु भोज्य लेह्य रसखानि
सुखद शय्या अश्वों का चारा रखे गुह बोले 'भाग्य हमारा
उदय है हुआ जो आप पधारे तुच्छ यह स्वागत, प्रभु! स्वीकारें'
प्रथम पूछे प्रभु गुह कुशलाई कहे फिर 'मीत! पयादे आई
यहाँ तक, मुझसे स्नेह दिखाये विविध वस्तुएँ भेंट भी लाये
स्नेह स्वागत सब है स्वीकार, बात पर मानहु एक हमार
वस्तुएँ सब ले जाओ वापस ग्रहण कर सकता नहिं नियम वश
धरम यह ही इस समय हमारा, खिलादो अश्वों को बस चारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अवध नृपति जो पिता हमारे उन्हें ये अश्व बहुत हैं प्यारे'
राम की आज्ञा जैसी पाये व्यवस्था गुह सब वही कराये
हुयी सन्ध्या, सन्ध्या करि राम किये तृण शय्या पर विश्राम
सिया लक्ष्मण संग प्रभु इन्दीवर-श्याम, रह गये मात्र जल पीकर
सुश्रुषा कर प्रभु की श्रीलखन धरे धनु हाथ बैठ वीरासन
जाग रहे संग में केवटपति खिन्न था मन दोनों का अति
लषन चिन्तित पितु मातु हेतु, सो रहे भू पर रघुकुलकेतु
जनकलली, देख व्यथित हो अति लगे कहने गुह कि 'दुर्मति
कैकयी ने वर जाल बिछाया फँसे जिसमें सिय संग रघुराया
लखन! देखहु इन्दीवर श्याम परम सुन्दर सबके प्रिय राम
सिया संग तृण कुश पात बिछाई सो रहे, धिक् दुःख सहा न जाई
जनकलली रघुकुल भूषण का भी समय था सुख पाने का अभी
अभी ही इन्हें बना वनवासी कैकई सबकी खुशियाँ नासी
पल्लवित पुष्पित तरु रघुवंश कुमति कुल्हाड़ी गहि दृढ़ अंश
कैकई ने इस तरह नसाया कि असमय में यह तरु मुरझाया'
लखन बोले 'यह बात न भाई! भोगते सब निज करम कमाई'
बहुत विधि शोक नसावन बात कहत समुझत जब हो गइ प्रात
राम जागे, किये प्रातः कृत्य और सब जन भी निज-निज नित्य
निबाही, रघुवर सम्मुख आइ बैठ गये तब बोले रघुराइ
'सचिववर! आप अवध अब जायें कुशल हम सब, पितु से बतलायें
मातु को बहुत भाँति समझाई विनय करि कहियेगा, रघुराई
कहा, कुछ क्लेश न वन में आये आप माँ तनिक नहीं घबरायें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अवधि बीते सीता संग आइ चरण-वन्दन करिहौं दोउ भाइ
पुनः करके अनुरोध विशेष जननि को कहियेगा सन्देश
भरत अब राजा हैं, अस जान उन्हें देना नृप सम सम्मान
भरत जब मातुल गृह से आवें, उन्हें मेरा सन्देश सुनावें
'सकल माताओं को सम जान मानना सबको जननि समान'
कहत सन्देश नयन जल छाये लखे लक्ष्मण यह सह नहिं पाये
तदन्तर नृप-प्रति कटुता सानी सुमित्रा-तनय रोषमयी वाणी
कहे ज्यों हि 'यह दुःखप्रद बात जाई कहियेगा नहीं तात'
बरज दिये प्रेम से बाहें थाम सचिव को, कोमलचित श्रीराम
कही रघुवर की सुन मृदु बात सारथि बोल उठे विलखात
'छोड़ तुझको जाऊँ केहि भाँति समझ में बात नहीं यह आती
चला था जब रथ लेकर वन में सिया संग युगल वीर थे रथ में
लौटने पर रथ सून निहार पूछिहें पुरजन, मात तुम्हार
'सारथि ! कहो कहाँ प्रिय राम ? जनकलली कहँ ? कहँ लखन ललाम ?'
कहूँगा क्या कटु सच यह बात गये बन आपके अम्बुज गात
दुखद यह, तो क्या कहिहौं जाई राम को मामा गृह पहुँचाई
आ रहा, यद्यपि है सुखदाई किन्तु यह झूठ बात रघुराई !
नहीं बोलूँगा, विरहाम्बुधि में डूबते उतराते परिजन में
आपके, जाइ दुसह दुःख सहूँ नहीं यह नहीं, विनय करि कहूँ
कृपा करि मुझे भी अपने साथ ले चलें आगे भी रघुनाथ !
भृत्य हूँ भृत्यजनोचित कार्य किया है सदा हि मैंने आर्य !
भक्तवत्सल ! स्वामी के तनय ! करूँ सेवा वनवास के समय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रसन्नतापूर्वक आयसु देहु मुझे रथ सहित साथ में लेहु
सुअवसर सेवा का जो पइहें तोर ये अश्व परमगति पइहें'
दीनता, विनय, भक्ति, अरु नेह सहित वाणी बोले सस्नेह
सचिववर जब, तब बोले राम 'आप हैं भक्त किन्तु इक काम
हमारा करना परमावश्यक इसी से भेज रहा रथचालक!
आपको, शीघ्र अवध को जायें देख रथ सून प्रतीति पायें
कैकयी माँ, हों चिन्तारहित राम वन गये सियानुज सहित
अगर लौटेंगे आप न तात! व्यर्थ सन्देह करेंगी मात
पिता पर, 'मिथ्यावादी नरेश' झूठ का जिनमें नाहीं लेश'
तभी गुह आये ले वटक्षीर बनाये जटा, लखन रघुवीर
देख मन्त्री बोले विलखात राम! लक्ष्मण! हे अम्बुजगात!
दृढ़वती! लौटोगे अब नहीं सुनो पर बात जो नृप ने कही
'मैथिली बहू मोर सुकुमारी सहेगी कैसे वन-दुःख भारी
राम से सिय हित विनय सुनाई सुमन्त्र! जैसे भी हो समुझाई
सिया को लाना, नाहीं मरण अवसि मोरा, सच मानहु कथन
सासुरे कबहुँ नैहर जाई रहेगी जबतक दिन दुःखदाई
राम-वनवास के बीत न जायें' सुमन्त्र जब सिय हित विनय सुनाये
राम बोले तब 'सुनु सुकुमारी! पिता माता पुर के नर नारी
विरह वश मेरे खिन्न अधीर, फिरो जो तुम कम होवे पीर'
पिया की सुन कर के मृदु वाणी भरा सिय की अँखियों में पानी
पोंछ दृग गिरा प्रेम से कातर कहीं 'हे रघुकुल कमल दिवाकर!
प्रभा रवि तजी चन्द्रिका चन्द्र छोड़, जाती नहिं रघुकुलचन्द्र!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विलग हो तन से तन की छाया रहत है का कबहुँ रघुराया !'
डाल फिर घूघुट मुख पर बोलीं सचिव से बात विनय रस घोली
'माननीय ! आप ससुर सम मेरे, भई सनमुख कुसमय के प्रेरे
क्षमा करियेगा' पुनि करजोरी कहीं, 'कहियेगा जनककिशोरी
विनय करि कही, पिता का भवन श्रेष्ठ सुखमय, अरु सुरपति सदन
सरीखा पूज्य ससुर का गेह सासुओं का मुझ पर अति नेह
परन्तु रविकुल रवि जहँ नाहिं वहाँ रहना नहिं तनिक सुहाहिं
कठिन वन भी प्रियतम के साथ, निभाऊँगी सुख से, धनु हाथ
धरे प्रियतम संग देवर प्यारे, न चिन्ता रत हों हेतु हमारे
पुनः कहियेगा सबको नमन' सुनत सिय मुख से कोमल वचन
हुये व्याकुल मन्त्रिवर ऐसे वणिक् कोउ मूर गवाँये जैसे
विकल लखि बहु विधि देकर धीर सुमन्त्र को विदा किये रघुवीर
विवश हो आज्ञा के रथ मोड़े सुमन्त्र जी, किन्तु रथ के घोड़े
हाँके बढ़ते नाहिं अवध को देख अकुलाते थे रघुवर को
आँख से अविरल बहते नीर बताते थे हिय में अति पीर
मुड़े जब प्रभु गंगा की ओर तो लगता था रथ-रज्जू तोर
पहुँच जायेंगे वे उस ठौर जहाँ हैं कोशलभूप किशोर
देख गति अश्वों की, सब लोग कह रहे दुस्सह राम-वियोग

## ९. केवट-प्रेम

इधर प्रभु आये गंगा तीर नमन किये परस के पावन नीर
कहत केवट से 'भाई ! लाओ नाव, उस पार हमें पहुँचाओ'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नेवढ़िया बोला दुइ कर जोर 'जानता हूँ हो अवधकिशोर
सुना यह भी कि पद रज पाकर आपका नारी बन गइ, पाथर
कठिन पत्थर से नाहिं हमार नाव यह, सो हे करुणागार !
सुनो, यह भी जो बन गइ नार करूँगा क्या, यह रोजी हमार
अगर है जाना पार-जरूरी तो कहिये धो दूँ पद की घूरि
उतारूँगा तबही मैं पार करो चाहे कुछ भी सरकार !'
देख निश्छल मति श्रीरघुराई विहँस कर बोले 'अच्छा भाई !
जो मन माने तूँ कर लो वही तुझे मैं रोक रहा तो नहीं'
मिली अनुमति जैसे हि केवट दौड़ कर कठवत ले आया झट
लेइ गंगाजल चरण पखारा कहत पुलकत 'बड़ भाग हमारा'
उतारा सिर का पाग अंगोछा भाव से नीलाम्बुज पद पोंछा
पखारि पद चरणामृत सिर पर चढ़ाया, पीया, सिंचवाया घर
सुरक्षित कर भावी भव पार उतारा प्रभु को सुरसरि पार
उतरि रेती पर रघुकुलमणि सोंचते क्या दूँ इसको बनी
समझ पिय हिय की जनककुमारी तुरत मणि-मुँदरी कर से उतारी
बढ़ाईं पिय को, श्रीरघुराई कहे केवट से 'लो उतराई'
प्रेम से प्रभु पद पकड़ नेवढ़िया लगा कहने 'भव पार करइया
मुझे मजदूरी देइ न टारो भवाब्धि से हे नाथ ! उबारो
बहुत ही की मैंने मजदूरी कृपा-दृष्टि कर आपनि भूरी
भक्ति भव रहत, मुक्ति भव पार जो देना ही है दो सरकार !'
सकल सुर नभ में चढ़ि निज यान देख यह दृश्य कहत सुख मान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रघुवंश भूषण राम देखो जाह्नवी तीरे खड़े।
सीय बायीं हैं दाहिन लषन केवट चरण माँहि पड़े॥
कहते प्रभु 'भाई! कहो उतराई तोरी होत का'?।
केवट कहा 'भव पार करने वाले तुम सों लेउँ का॥
तोरी जरूरत आ पड़ी तो पार सुरसरि कर दिया।
जब आऊँ प्रभु मैं घाट तोरे याद कर मेरी किया॥
आपनि कृपा की कोर सों प्रभु पार मुझको कीजियो।
उतराइ दूसर चाहिये ना दया कर यही दीजियो'॥

जगत्पति का यूँ पद प्रक्षालन और इस पार मधुर सम्भाषण
देखकर नभ पर सुर भी सिहाते 'धन्य यह' कहे फूल बरसाते
राम से केवट की जो बातें हुयीं भू पर सब सादर गाते

चरण पखारन कहि देहु रघुवर तबहिं चढ़ाइब आपनि नैया
एक अचरज मैंने सुनी सो सुनावऊँ रज के लगत भइ नारी अहिल्या।
पाथर से तो कठिन नाहीं प्रभु काठन्ह में होती कठिनैया।
रज पाइ तरणि जो बनी जाई घरनी जानउँ नहीं कुछ अउर कमैया।
भूखन्ह मरि जैहें घर मोरे घरनी बेटी-बेटा अउर हमार बाबा-मैया।
अवसि जो पार करन प्रभु! चाहहु कहि देहु अपनी पखारन पैयां।
देखी सरल मति बोलेले रघुपति 'निज मनमानी तुम्ह करि लेहु भैया!'
पानी परात ले पाँव पखारत निरखत अरु विहँसत रघुरैया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पाँव पखारी करत पार उनको जो दुर्गम भव पार करैया।
भागीरथी ओही पार भइल जब केवट तब खुँटियावत नैया।
उतरि के पार खड़े रेती पर सिय संग राम लखन दुनो भैया।

खड़ी सीता सुरसरि के किनारे हाथ जोरे सिर आँचल डारे
विनय की 'देवि ! अवधि बिताई पिया देवर संग मैं फिरि आई
नमन करूँ तुझे झुकाकर शीश सुयस विस्तारिणी ! देहु अशीष'
सुनत सिय विनय चीर कर धारा शब्द आया मनहर अति प्यारा
'अयि ! ओ साध्वि ! तूँ जगरानी विनय की किन्तु मोहे बड़ मानी
अत: दे वर, वाणी निज सफल करूँगी बात हो मेरी अचल
कुशल प्रिय अनुज व तेरे साथ अवध को लौटेंगे रघुनाथ'
सुनीं देखीं यह गाँव की नारी कहन लागीं आपस में सारी

नाव भइल जब पार सिया गंगा के किनार
ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना, ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
मंगनवाँ ना हो मंगनवाँ ना ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।

मैया ! सुनि लेहु मोर मैं तो विनती करुँ तोर

वनवास पूरी करके लौटुँ घरवा ना, वनवास पूरी करके लौटुँ घरवा ना।
घरवा ना हो घरवा ना वनवास पूरी करके लौटुँ घरवा ना

ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
माई ! दाया होइ तोर भाई संग राम मोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आवें फिरि इहाँ तो करूँ मैं पूजनवाँ ना,
आवें फिरि इहाँ तो करूँ मैं पूजनवाँ ना।

पूजनवाँ ना हो पूजनवाँ ना आवें फिरि इहाँ तो करूँ मैं पूजनवाँ ना

ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
धार धरती पे तोर मात पुरखा लइले मोर
एहि नाते वंश केर रखिह मनवाँ ना,
एहि नाते वंश केर रखिह मनवाँ ना।

मनवाँ ना हो मनवाँ ना एहि नाते वंश केर रखिह मनवाँ ना

ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
मात! लाली रे चुनरिया संग में पिअरी ओढ़निया
मैं चढ़इबो मैया मांग के सेनुरवा ना,
मैं चढ़इबो मैया मांग के सेनुरवा ना।

सेनुरवा ना हो सेनुरवा ना मैं चढ़इबो मैया मांग के सेनुरवा ना
ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
पुनि पुनि सिर नाइ सिया गंगा को मनाई
सुनि गंगा मैया बोलेली बचनवाँ ना,
सुनि गंगा मैया बोलेली बचनवाँ ना।

बचनवाँ ना हो बचनवाँ ना सुनि गंगा मैया बोलेली बचनवाँ ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
महरानी ! सुनु मोर सब सिद्धि कर जोर
दिन रात तोर करे ली सेवनवाँ ना,
दिन रात तोर करे ली सेवनवाँ ना।

सेवनवाँ ना हो सेवनवाँ ना दिनरात तोर करे ली सेवनवाँ ना

ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।
बड़ तोर नेवताई हमके दिहलु जो बड़ाई
अवसि लौट अइबु तीनों जन भवनवाँ ना,
अवसि लौट अइबु तीनों जन भवनवाँ ना।

भवनवाँ ना हो भवनवाँ ना अवसि लौट अइबु तीनों जन भवनवाँ ना

ठाढ़ होइ मांगे गंगा से मंगनवाँ ना।

### ६. *भरद्वाज दर्शन एवं वनवासियों का भाव*

किये राम गंगा पार फिर वन मार्ग पर आगे चले।
सुनि ग्राम वासी राम सिय सौमित्र सों आ-आ मिले ।।
सींचत सबहीं को प्रेम जल से आ गये अब प्रभु तहाँ।
वेदत्रयी सों श्रेष्ठ तीर्थ प्रयाग में संगम जहाँ ।।
किये स्नान मार्जन आचमन पुनि करि शिवार्चन बहुविधि।
कीन्ही दरश आश्रम महुँ जहँ भरद्वाज तपोनिधि ।।
मुनिभरद्वाज के चरण में श्रीराम ने निज सिर धरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पाछे लखन अरु मैथिली अनुकरण प्रभु की ही करी ॥
बड़ प्यार से प्रभु को उठा मुनि ने हृदय से लगा लिया ।
फिर कहा 'राम पधार कर आश्रम परम पावन किया' ॥
फल कन्द मूल जलादि मुनि ने भोग सादर जब दिया ।
सीता लखन संग अति सनेह दिखाइ प्रभु ने पा लिया ॥
मुनि भरद्वाज से पाई आयसु राम आश्रम से कढ़े ।
चले जात हैं चले जात हैं चले जात वन पथ पर बढ़े ॥
तीनों पयादे जा रहे कुश काँट काँकर झाड़ियाँ ।
लाँघते, यह देख कर बतिया रही थीं नारियाँ ॥

हे री सखि बन महँ देखहु धाई कुअँर दुइ आये री सखी ।
इक साँवर इक गोर वरण हैं संग इक नारी सुहात
रूप रति लाजत री सखी । हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
परम पुनीत अवध रजधानी दशरथ तहँ महीपाल
तीन पटरानी री सखी । हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
साँवर कुअँर कौशिला जायो तेहि कर राघव नाम
रानी संग सीता री सखी । हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
गोर कुमार सुमित्रा के हैं, जेठ वीर बेशुमार
लषन शुभ लच्छन री सखी । हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
कैकेयी सुत राज देन लगि इन्हें दियो देश निकाल
नृपति सुत न्यारो री सखी । हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
इन्ह सम सुअन निकारि घर से पिता मात परिवार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्वजन कस होइहें री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
वन वसि देव बहुत हम देखे दानव माया जाल
न अस छवि काहू के री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
ये वन माहिं फिरत बिनु पनही जटा-जूट किये भाल
जरत भुभुआरे री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
जो निर्मम इनहि दुःख दीन्हा वृथा रचे सुख साज
जगत में विधना री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
अस सुकुमार सहत दुःख ऐसे संग अनुज अरु नार
इनहिं संग लागहु री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
एहि विधि बतियावत आपस में पहुँची सब सिय पास
जोहारीं जाई री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई..
परम सरल ग्रामिनी सब पूछतीं साँवर गोर कुमार
नाते का लागे री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
सुनि मुसुकाइ सकुचि कहती सिय अति बड़ भाग हमार
सुनहु अब प्यारी री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...
गोर कुमार देवर लागत हैं साँवर का कहुँ मोर
समुझि लेहु आगे री सखी। हे री सखि बन महँ देखहु धाई...

सहानुज राम सिया का वेष वयस लखि सब दुःख लहत विशेष
सरलचित वनवासी जन आइ कहत राघव से नेह जताइ
'हमारे भाग्य आप वन आये आपको भाता क्या ? बतलायें'
विविध फल फूल जंगली पात रखत सम्मुख कहि कहि मृदु बात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कहत कोऊ 'नृप भल नहिं किये इन्हें वनवास बेसमय दिये'

## ८. वाल्मीकि-श्रीराम सम्वाद एवं चित्रकूट निवास

राम वन पथपर चलते चलते वहाँ जहँ वाल्मीकि थे रहते
पहुँच आये आश्रम, सत्कार किया मुनि ने, प्रभु कहत 'हमार
प्रश्न मुनिवर ! करि कृपा बतायें कहाँ हम अपना वास बनायें'

कछु दिन वास करौं एहि वन में
लेई सिया सौमित्र को संग में
कोई एक ठाँव बतावहु हो रामा
पूछत रघुवर

कस रघुवर पूछहु तुम्ह मोसे
ठाँव कवन अनदेख जो तोसे
कहि देहु ओहि बताऊँ हो रामा
अगम अगोचर

मैं तोहें ब्रह्म सगुन करि मानऊँ
जनकसुता माया तव जानऊँ
लखन सदा तोरे सहचर हो रामा
शेष महीधर

अस जिय जानि जो कहउँ निकेता
वसहु तहाँ सिय लखन समेता
पावन परम सुहावन हो रामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



घर अति सुन्दर

राम कथाम्बु नित नित पाये
पर नहिं श्रवण समुद्र अघाये
ताहि हृदय महुँ वसहु हो रामा
सिय संग रघुवर, पावन...

चातक सों छवि तोर ही जोहत
गुण मुक्ता हंसन्हि सम चूनत
तेहि हिय सुखप्रद वास हो रामा
तोरे लागि रघुवर, पावन...

तोहें अरपि भोजन पट भूषण
धारत, हाथ चरण तोरी पूजत
पग तीरथ तोरे जात हो रामा
तेहि उर रघुवर, पावन...

तरपन होम करत जे जन नित
राम को नाम जपत जिह्वा नित
तेहि कर हिय शुभ सदन हो रामा
तोर हे रघुवर, पावन...

गुरु को राम समान जो जानत
शुभ करि फल बस एक ही मांगत
तुम्हरे चरण महुँ प्रीति हो रामा
तहँ तुम्हरो घर, पावन...

काम न क्रोध न दम्भ न लोभा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


राग नहीं मन महुँ नहिं छोभा
दुःख सुख सम ही निबाहत हो रामा
सोइ तुम्हरो घर, पावन...
गुरु पितु मातु सुहृद बन्धुवर
तुम ही, नहिं मोरे कोउ दूसर
अस जो कहत ताही हिय हो रामा
नित रहहु रघुवर, पावन...
कबहुँ न काहु को अवगुन ताकत
राम भगत प्राणहि सम लागत
प्रभु केरि सहज सनेही हो रामा
निवसहु तेहि उर, पावन...
सत्य वचन केर होत जो पालक
करम वचन मन से तव सेवक
परनारी जननी समान हो रामा
निवसहु तेहि उर, पावन...
सुर गुरु द्विज लखि नावत सीसा
द्विजन्ह जेवाँई लहत आशीषा
दान विविध विधि देत हो रामा
नित रहहु तेहि उर, पावन...
जगवन्द्या सीता जग जननी
करे कृपा जहँ 'अहं' विनाशिनी
तेहि उर संग सौमित्र हो रामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



वसहु सियावर, पावन...

अब प्रभु कोशल राज कुमारा
वास कहउँ अवसर अनुसारा
चित्रकूट मनोहर हो रामा
सुखप्रद सुन्दर, पावन...

अस कहि मुनि सुस्थान दिखावा
राम लखन केरि मन अति भावा
रचि दीन्हीं कोल किरात हो रामा
कुटी अति सुन्दर, पावन...

एक रचेउ लघु एक विशाला
जो कि सुखद सब विधि सब काला
तेहि महुँ सिय संग रघुवर हो रामा
लषन धनुर्धर, पावन...

जहाँ श्रीसिया लखन रघुवीर विराजत मन्दाकिनी के तीर
कुटी वह लागे परम सुहावन बहत जल सम्मुख निर्मल पावन
राम जब चित्रकूट में छाये वहाँ रहने वाले सुख पाये
साथ ही फिरत बाज अरु लवा बाघ गज नेउर चक्षुश्रवा
पेड़ पालव भी ऋतु अनुकूल भूल, फल फलते फूलत फूल
ज्ञान वैराग्य भक्ति की बात सुअवसर पाये अम्बुजगात
लखन से करत, सरल मृदुबानी पार्श्व में बैठ सुनत सिय रानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ८. अवध-वृत्तान्त

उधर जब विदा राम से पाये विकल मन श्रीसुमन्त पुर आये
अवध का हाल न कहते बनत सभी रोवत, रो-रो यह कहत

राम सिया सौमित्र गये वन
छोड़ हमें, लागत नाहीं मन
स्वर्ग सरिस सुन्दर सुखदायी राजमहलिया में
सकल सुखखानी अयोध्या में
नारी सरग सम सुख की खानि
नरकमूल जब की मनमानी
ढाती विपत्ति अपनो परायो आई जो मति में
सकल सुख खानि अयोध्या में
हाल यही है अवधपुरी की
अग्रणि जो परलोक लोक की
इक रानी की मनमानी सब फँस गये दुर्गति में
सकल सुख खानी अयोध्या में
कीन्ही बहुत उपाय सचिव वर
पर लौटे नाहीं दृढ़ रघुवर
परछाई बन सिया, लषन बन अनुचर, गये वन में
सकल सुख खानि अयोध्या में
राम लषन सिय को वन छोड़ी
आये सुमन्त्र सूनि रथ मोड़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पाई खबर सब जन अति व्याकुल रोये महलिया में
सकल सुख खानि अयोध्या में
राजा की गति कही न जाती
उनको देखी फाटत छाती
बारहिं बार कहत विलखत हैं अब का जीवन में
सकल सुख खानि अयोध्या में
लषन जननी अति विकल सुमित्रा
राम मातु की सुमति विचित्रा
कहत सम्हालत राउ ! धैर्य पतवार विपत्ति में
सकल सुख खानि अयोध्या में
राऊ कहे सुनहु अब रानी
अन्ध-शाप मम जीवन जानी
राम सिया संग लाइ लषन, दिखलावहु अंतिम में
सकल सुख खानि अयोध्या में
राम राम की रेट लगावत
नृपति को यही नाम सुहावत
राम नाम हिय माहिं संजोई, चल गये सुरपुर में
सकल सुख खानि अयोध्या में

सिधारे दशरथजी सुरलोक अवध में मची चतुर्दिक शोक
राम वन लक्ष्मण उनके साथ पुरी सब भाँति हुयी अनाथ
वशिष्ठ अरु वामदेव, जाबालि, मृकण्डुसुत, गौतम तपशाली
महर्षि कश्यप अरु कात्यायन पधारे मौद्गल्यादि ब्राह्मण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नृपति शव तेल नाव रखवाई विचारत आगे क्या हो भाई
नृपति बिनु राज्य सुरक्षित नाहिं भरत सम्प्रति मातुल गृह माहिं
दूत केकय को भेजा जाये यही मत सबही को अति भाये
तुरत द्रुतगामी दूत बुलाये सुनत 'सिद्धार्थ' 'विजय' झट आये
साथ उनके 'अशोक' 'नन्दन' 'जयन्त' बोले 'आज्ञा मुनिजन !'
वशिष्ठजी बोले 'केकय जाओ भरत को आज्ञा मोर सुनाओ
अयोध्या आवें दोनों भाई मिलें निज माँ से जल्दी आई
अवध में हुये जो भी उत्पात भरत से कहना ना ये बात
परम्परा से जो होते आये संग उपहार भी केकय जायें'
वशिष्ठ से आज्ञा ज्यों हि पाये संग ही पाँचो धावक धाये
राह में नाल नदी की धार गहन वन पर्वत करते पार
लाँघते जनपद देश प्रदेश पहुँच गये अश्वपति के देश
मिले नृपति फिर राजकुमार, भरत के जिम्मे दे उपहार
कुशल मंगल के ही उपरान्त दूत ने कही भरत से बात
'अवध में बहुत जरूरी कार्य बुलाये शीघ्र पुरोहित, आर्य !'
भरत पूछत पुनि पुनि अकुलाई 'कुशल तो हैं पुर परिजन भाई !'
कहा तब दूत 'कुशल सब चलिये अवध को शीघ्र देर नहिं करिये'
तुरत नाना से आज्ञा पाई भरत ने गणपति गौरी मनाई
किया प्रस्थान अवध के लागि अश्व-रथ चले तेज गति भागि
मार्ग में बीत गये दिन सात विविध विधि सोंचत अरु अकुलात
भरत आ पहुँचे अब निज गेह सुनत जननी दौड़ी सस्नेह
आ गई सम्मुख ले आरती उतारी, सुत से यूँ बतियाती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


'भरत ! बेटा ! कह मेरे नैहर कुशल तो हैं सारे घर बाहर'
कहे 'हाँ वहाँ सबहि विधि ठीक मगर माँ ! यहाँ लगत नहिं नीक
कहाँ हैं पूज्य पिता गृहताज लषन क्यूँ दौड़ मिला नहिं आज
कहाँ मम प्राण सियावर राम शान्त क्यूँ महल, महल के काम
बताओं माँ ! जल्दी बतलाओ जरा तुम मेरे ढिग तो आओ
कहाँ तेरे चूड़ी सिन्दूर किया क्या अरे विधाता क्रूर'
सम्हाला माँ ने अपना लाल बताने लगी हुआ जो हाल
कही 'बेटा ! सब सवँरा काज दिलाया मैं ने तुझको राज
सहायक थी मन्थरा बिचारी गजब है बुद्धि की वह नारी
नृपति से कहकर एकहि साँस राम को भेजी मैं वनवास
साथ में बहू सिया भी गई लषन ने भ्रातृ प्रेम दिखलाई
मगर बिगड़ी बेटा यह बात जहाँ मैं खा गई थोड़ी मात
जनक तेरे सुरलोक सिधारे इसी से बेटा सब दुखियारे'
सुनत ही भरत हुये हतबुद्धि कहे 'क्या कर दी रे निर्बुद्धि !
नहीं तूँ जननी मेरी डाईन तूँ निज जातघातिनी नागिन
राम से बेटे को वन भेज दिया तूँ ने मुझको सुख सेज
पिता ! हा पिता ! किया क्या पाप छोड़कर चले गये जो आप
मुझे भैया को नाहीं सौंपे, राज्य क्यूँ मेरे सिर पर थोपे
हाय क्या नन्हा बाल मराल सुमेरु सकता कभी सम्भाल
सभी सुन लें यह मेरी बात नहीं यह अब से मेरी मात'
वहाँ से निकले यूँ चिल्लाते भरत अब कौशल्या पहँ जाते
बीच में हि मिल गइ वह कुबड़ी दृष्टि शत्रुघ्न लाल की पड़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पकड़ कर केश घसीटा, पीटा, कहत 'यह विपति नींव की ईंटा
दया उर आनि भरत छुड़ाये दोनों कौशल्या पहँ आये
दौड़ जा गिरे चरण के बीच 'मात! मैं भरत तुम्हारा नीच
अम्ब! अब किसकी गोदी दौड़ बैठूँ, पिता गये मोहिं छोड़
गये भेजे वन भैया कैसे लगाये कौन मुझे अब उर से'
मात कौशल्या विपदा मारी लखि यह भरत विकल है भारी
उठाकर बिठा लिया निज अङ्क 'लाल! तूँ मेरा रहित कलङ्क'
माँ ने माना मिल गये राम रो पड़ीं 'पुत्र! विधाता वाम'
कहीं फिर 'तेरा अग्रज राम चेहरे पर न रोष का नाम
जानकी और लषन के साथ सभी को सादर नाई माथ
किया वनवास हेतु प्रस्थान गये नहिं फिर भी पापी प्राण
पिता थे तेरे राम सनेही, सरिस नहिं उन सम कोऊ देही
कठिन अवसर है अस जिय जान धरहु अब धीर, करम गति मान
विकल है सारा अवध समाज नहीं कोऊ रखवाला आज'
पधारि तेहि अवसर गुरु ज्ञानी कहे 'हाँ ठीक कहत हैं रानी
भरत! धीरज का अवसर आज तुम्हारे आश्रित पितु का काज
नृपति आज्ञा पुनि सिर पर मानी करहु निज अवधपुरी रजधानी'
सुने जब माता की मृदुबानी समर्थक जिसके गुरु विग्यानी
भरतजी हो गये व्याकुल दीन मानहु जल से विरहित मीन
कुअवसर जानि पुनः सुविचार पिता का विधिवत कर संस्कार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ९. भरत-वनगमन

जुटाये माता, गुरु, पुरश्रेष्ठ, सैन्यपति, मन्त्री अरु जो ज्येष्ठ
सभी को सादर नाये माथ भरत बोले विनती के साथ
'पिता सुरपुर वन अग्रज राम करूँ मैं राज्य सहित आराम
कहें सब आप, यही क्या योग्य ? राज्य क्या मेरे हित है भोग्य ?
कुमाता से जनमा मैं हीन तथापि जान मुझे अति दीन
करें यह बात मोर स्वीकार मुझे दें आज्ञा, सब सुविचार
मैं जाऊँ सिया राम के पास जहाँ वन में करते हों वास
उहँइ गुरु तिलक करें उनका राज्य दे देवें है जिनका
करूँगा विनय, बोल मृदुबानी उन्हें ले आऊँगा रजधानी
अवध में अग्रज जो आ जावें पिता सुरपुर में ही सुख पावें'
सुनी सबहि ने भरत की बात कहे सब 'धन्य धन्य तुम तात'
कहे गुरुवर 'भूमण्डल माहिं भरत सम भाई कतहूँ नाहिं
बात जो कही सुधारस बोर, सबहि को सुखप्रद 'अनुमति मोर'
भरत गुरु आज्ञा सिर पर धारी लगे करने वन की तैयारी
कृषक, सैनिक और साहुकार कुशल जो थे उनपर दे भार
न होवे कोई बात अलीक व्यवस्था पुर की कर सब ठीक
भरत शत्रुहन दोनों भाई साथ कुछ सैनिक लिये बुलाई
तीन माताएँ भी थीं साथ, साथ पा गुरु का सभी सनाथ
और जो वन जाने के लायक, जो वन में बन सकते थे नायक
सभी संग भरतलाल के चले अयोध्या रुके वे भी थे भले
उन्होंने समझा निज को धन्य पुरी पर चढ़ ना आवे अन्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुरक्षा अत्यावश्यक जाने राम की थाती राम हि माने
भरत जब शृङ्गवेरपुर आये सभी गंगाजी को सिर नाये
संग है सेना गुह ने जाना भरत को राम विरोधी माना
लिया निज अनी बटोर भारी कहा पुनि 'सैन्य घेरहु सारी
सहानुज राम अकेला मान भरत चढ़ आये अब वन, जान
शूरो ! राम काज की बारी अमर हो जाओ भरत को मारि'
तभी पड़ गई बेतुकी छींक कहत कोउ वृद्ध 'नहिं यह ठीक
भरत शुभ हेतु यहाँ पर आये, हमारा ज्योतिष यह बतलाये
लगाओ पता गुप्तचर भेज' तुरतहिं दूत दौड़ गया तेज
बताया आकर 'यह है बात भरत संग ले सेना, गुरु, मात
लिवाने रघुनन्दन को जाते' जानकर गुह अतिशय पछताते
मिले फिर प्रेम सहित गुह आइ सभी को यथायोग्य सिर नाइ
किये विधिवत सबका सत्कार, उतारा सबको गंगा पार
बना फिर वही भरत का सहचर कहाँ किस भाँति ठहरे रघुवर
दिखाते हुये प्रयाग लाया सुगम वन हुआ जो वह आया
पहुँच मुनि भरद्वाज के पास नमन किये भरत, बिठाये पास
समझ मुनि भरत हृदय संकोच कहत समुझाइ 'तजहु सब सोंच
हुआ जो करम केरि गति मात्र न दोषी इसमें कोई पात्र
राम-प्रिय तुमसा नाहीं अन्य, धन्य तुम भरत ! धन्य अति धन्य'
पुनः मुनि नेवते राजसमाज 'भरत आतिथ्य तुम्हारा आज'
तपोबल से मुनि ने यह किया सबहि विधि सबही को सुख दिया
भरतजी चक ये आश्रम पिञ्जरा चकी सुख सेज वहाँ जो पसरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



धन्य रे लगन, चकी है पास विमुख चक रविकुलरवि की आश
प्रात लखि पावन परम त्रिवेणी नहाये, जो मुद मङ्गल देनी
आइ आश्रम पुनि नाये माथ कहे 'करि दाया हे मुनिनाथ!
दीजिये आशिष प्रभु पहँ जाउँ अधम निज शीश राम पद नाउँ
कहाँ है कितना दूर आश्रम कौन सा मार्ग वहाँ का सुगम'
नम्र कोमल यह वाणी सुनी कहे मुनि 'सरिता मन्दाकिनी
उसी के पार चित्रकूट गिरि वहीं प्रभु ने आश्रम निज करी
दूरी है बस ढाई योजन सियानुज संग जहँ दुखमोचन'
परम हरषित कैकेयीकुमार हमें मिल जइहें प्राण हमार
बड़े उत्साह से आगे चले सोंचते 'कब भैया मोहिं मिलें'
भरत के पग में नाहिं पनही धँसत कुश काँट तपत अति मही
पड़े पैरों में छाले ऐसे कमलदल पर हों हिमकण जैसे
राम लक्ष्मण सम रूप निहार निरखते दौड़ सभी नर नार
साथ में देख सैन्य बड़ भारी कहत कोई 'है राज सवारी'
ज्ञान से वृद्ध कोउ ग्रामीण कहत 'ले भाव हृदय में दीन
राम को लेने भरत हैं जाते धन्य इनसे भाई के नाते'
भरतजी यमुना तीरे आये श्याम रंग सलिल देख सुख पाये
मनहु प्रभु वदन निरख ही लिये वास तेहि निशि तहँ ही सब किये
प्रात करि पार चले जब आगे स्नेहवश गुह भी संग हि लागे

## १०. भरत-मनावन

उहाँ वेदिकासीन रघुराई सिया से वन शोभा सुखदाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वखानत, तभी निरेखे मृगगण परम व्याकुल, बोले 'हे लखन!
जरा देखो तो बात है क्या अहेरी कोई सज्जित ज्या
आ गया मृगया खेलन को, यही क्या भय कारण इनको'
लगाकर पता कहत सौमित्र 'भैया! बात बड़ी ही विचित्र
जानकर अपने ऊँचे भाग्य बनाने को निष्कण्टक राज्य
सहानुज भरत सैन्य ले साथ रणाङ्गन में देने निज माथ
आ गये हैं, सानुज वध करूँ अमर होऊँ मारूँ या मरूँ
आपके प्रति जो अस है दृष्टि रुकेगी नाहिं लखन-शरवृष्टि'
स्नेहवश मेरे, अनुपम वीर क्रुद्ध है समझ, कहत रघुवीर
'शान्त हो वीर! बात मम मान भरत में करो न बुद्धि म्लान
अवसि तुम मेरे वीर अगाधु भरत भी भाई मेरा साधु
विकल नेही हिय अति घबराई आ रहा मुझसे मिलने भाई!'
भरत लाला जननी गुरु छोड़ खोजते आश्रम चहुँ दिशि दौड़
पा गये कुटिया जब पावनी जहाँ पर राघव रघुकुलमणि
सिया संग राजत वेदी पर, खड़े सौमित्र तीर धनु ले कर
छोड़ कर के निषाद शत्रुहन भरतजी धाये, पाये जनु धन
याद कर माँ के कुत्सित कार्य चरण महुँ गिरे कहत बस 'आर्य!'
अनुज को उठा लगा कर उर से सींचते राम नयन के जल से
भरत हिय ताप हरण के हेतु बने हैं घन जनु रघुकुल-केतु
कुअँर शत्रुघ्न सिया पद छुये, कुशल लखि चिन्ता सब मिट गये
किये रिपुहन प्रणाम जब प्रभु को हृदय से लगा लिये प्रभु उनको
भरत सीता-पद वन्दन किये लखन श्रीभरत चरण रज लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मिले भाई दोनों हि जुड़वाँ प्रेमवश बेसुध हैं सब तहवाँ
किया गुह ने प्रणाम राघव को लखन ने हृदय लगाया गुह को
सिया को कर प्रणाम समझा कृपा इनकी उलझन सुलझा
भरत भाई को ढिग बैठाये पूछते प्रभु 'कैसे वन आये ?
कुशल से हैं पितु मातु गुरुजन सभी अनुकूल तो तेरे पुरजन ?'
भरत रोते बोले 'प्रभु सुन लें, सिधारे स्वर्ग पिताजी पहले
बाद में मैं केकय से आया आपको भी न अवध में पाया
रहूँ किसके बल कहिये पुर में, इसी से भागा आया वन में'
पिता का सुनत महाप्रस्थान लगे रोने प्रभु 'कष्ट महान्'
लोग जैसे निधि कोई खोते सिया सौमित्र विलख कर रोते
हुये जब शान्त तिलाञ्जलि दिये पिता हित प्राप्त कार्य जो, किये
भरत बोले 'गुरु, माता, लोग सभी आये हैं विकल वियोग'
सुनत सिय ढिग रिपुहन को छोड़ गये प्रभु लेने सबको दौड़
विलोके जाई माताओं को कि जैसे जल बिनु सरिताओं को
राम को देखत हि सब रानी लगीं रोने नहिं जात वखानी
सम्भाले बहुत भाँति समुझाई पुनः सबका पदरज सिर लाई
दण्डवत् किये गुरु को सनमानी, हुये रोमाञ्चित गुरुवर ज्ञानी
विराजे जब सब आश्रम आई चरण सासुन्ह के छुईं आई
सिया, यह उपवन कलि वन बीच रो रहीं सासु नयन जल सींच
सहत तीनो दुःख वन में भारी देख यह भरत अतीव दुखारी
राम के पार्श्व बैठ एक दिन भरत बोले 'हे प्रभु ! मैं दीन
राज्य मेरे वश का है नाहीं परम्परा से भी यह प्रभु का ही'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


समर्थन कर गुरु ने भी कहा 'सदा जेठा अधिकारी रहा'
राम बोले 'पितु आज्ञा मानी छोड़ दीन्हीं मैंने रजधानी'
दृढ़व्रत रघुवर को जिय जानि भरत कुश साथरी डाँसे आनि
'फिरेंगे अवध नहीं जो आर्य देइ धरना मैं मरूँ अनार्य'
ताहि अवसर बहु ऋषि मुनि आये भरत को भाँति-भाँति समझाये
'तुम्हारे वचन प्रेम से सधे राम भी पितु वचनों से बँधे
बात दोनों दोनों के लायक करो पर कहते जो रघुनायक'
सुनत ही उठ कैकेयीकुमार कहे 'मानहु यह अरज हमार
लवटिहें आप नहीं रजधानी संग लें मुझको अनुचर जानि
सबहि विधि लालन जोगू लखन दुलरुआ सबका यह शत्रुहन
अवध फेरि दोनों को दीजै कृपा मुझपर इतना हि कीजै
नहीं तो हम तीनों ही भाई रहेंगे वन, सुनहु सुखदाई !
अवध भाभी संग लवटि जायें मानहु नाथ ! हिया को भाये
करिअ प्रभु ! ना हि तनिक सँकोच आयसु दीजिये तजि सब सोंच'
जनक का दूत ताहि क्षण आया 'पधारे मिथिलाधिप' बतलाया
दूत से पूछे मुनि विज्ञानी 'कुशल है राज्य, राजा रानी ?'
'विधाता क्रूर किया जो घात गुप्तचर से जानी सब बात
मीत, मन्त्री अरु राजसमाज सहित आये विदेह महराज'
सुना जो भी विदेह का आना सभी ने मन में अति सुख माना
सोंच, संकोच, हरष अरु ग्लानि युत सुर, राम, नारीनर, रानी
मिले जब प्रभु से आई विदेह रही नहिं सुध, सच हुये विदेह
अवधपति केरी सुयश वखानी रुदन करतीं चारो हि रानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देखकर शोक समुद्र मगन जन, महर्षि कौशिक, कुलगुरु, मुनिजन
धरम, नीति, विराग की कही बात जब, सबने धीरज लही
वहाँ के कोल भिल्ल वनवासी लाये कन्दमूल फल राशि
देव पूजी निज इष्ट मनाये जिन्हें जो मन भाया सो खाये
चार दिन बीते जंगल आये लोग सब सुखी राम को पाये
एक दिन आई रानी सुनयना जहाँ पर कौशल्यादि सुवयना
यथा अवसर मिलकर सनमानीं शोक अरु स्नेह शिथिल सब रानी
भरत रघुवर की करत बड़ाई 'परस्पर प्रीति सहज सुहाई'
कौशिला कहीं 'राम बिनु भरत नहीं रहिहें, छिन अवसर लहत
राऊ सों कहब राखि के लखन पठावें भरत राम संग वन'
भरत पर कौशल्या का नेह सुनयना देख सोंचती गेह
धन्य, यह रानी अपने कुल की पताका जैसी मर्यादा की
रानी रघुवंशी सब जैसी, गेहिनी मिथिलापति की वैसी
निशा होने को आई जानी चलीं जब अपने थल को रानी
विनय करि 'सीता को ले जाऊँ' ले गईं 'बस अबहिं पहुचाऊँ'
सभी से बड़े नेह से सिया मिलीं, जब भूपति देखे धिया
तापसी वेष तो बोले 'सीते ! करी दोनों कुल पावन दुहिते !'
सकुच वश सिया, 'रात गहराई' समझ सिय हिय की तुरत पठाईं
महारानी बहु विधि सनमानि भरा था दम्पति के दृग पानी

एक बेरि ऋषि मुनि समुदाई जननी, जनक, भरत, रघुराई
सभा करि करते यही विचार भरत प्रेमोदधि अगम अपार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे तब राघव 'सुनहु भैया! सभी को कष्ट, कष्ट में भैया
मोर, तोरी, पितु पन भी रहे करूँ मैं, कहो जो मन तव कहे'
भरत ने राम सरलता जान कहा 'प्रभु तुम हो कृपानिधान
सभी का मन, पन राखन लागि सकल दुख सहते हो प्रभु! माँगि
नहीं निज मन की जन की करते सदा ही, सबका हि दुःख हरते
अवध जा फिर मैं क्यों नहिं रहूँ विनय बस एक सुनें, जो कहूँ
साथ में लाया देव! खड़ाऊँ चरण रखि इस पर दे दें जाऊँ
अवधि इसके बल काटूँ जाई, राज्य को देखेंगे लघु भाई
तुम्हीं रक्षक सबके सर्वदा कृपा गुरु की सबके सिर सदा'
इस तरह प्रीति, नीति की बात भरत जो बोले, अम्बुजगात
भरत के प्रेम विवश निज चरण रखे जब चरणपीठ पर शरण
मान अपनी लिये शीश चढ़ाई भरत तब लौटे, जनसमुदाई
धन्य ये धन्य कहे सुख पाये साथ हि सभी अयोध्या आये
भरतजी आये अब पुर माहिं व्यवस्था गड़बड़ तो कुछ नाहिं
विलोके, साधि सुदिन बहोरी बिठाये सिंहासन कर जोरी
राम का चरणपीठ जनु पाये सुआश्रय मन को अतिशय भाये
राज्य का रिपुसूदन पर भार दिये, निज राजस वेष उतार
धरे मुनिवेष गये गुरु द्वार कहे 'मुनिवर! अब विनय हमार
दीजिये आज्ञा नन्दीग्राम वसूँ मैं जपूँ नाम श्रीराम'
भावना अति उदात्त अरु वेष साधु का कुछ क्षण को अनिमेष
देखते रहे कहे फिर 'भरत! तुम्हारी कथनी करनि करत
भक्ति को दृढ़, मन वाणी कर्म तुम्हारा जैसे दूजा धर्म'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पाइ आयसु गुरु का श्रीभरत कुटी करि नन्दिग्राम में वसत खुदा थल जहँ था अपना स्थान वास का, क्या ही भाव महान कि प्रभु का सम्प्रति भू पर वास बराबर कैसे करूँ निवास धन्य है भरत चरित नहिं कहते बनत, बस सदा राम ही जपते अवधवासी नित देव मनावें कुशल फिरि रघुराई घर आवें

## ११. कौशल्या का विलाप

कभी कौशल्या हो अति विकल इष्ट चरणों मे गिर कर दृग जल बहातीं, कभी सखिन्ह के मध्य बैठ रोतीं सखि ! कठिन अरण्य राम, कुसुमोपम सीता, लखन कवन विधि वारिस हिम अरु तपन झेलते होंगे, उनका रुदन सुनत विधि क्रूर मूँदता श्रवण

केहि विधि हे री सखि ! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
चढ़ल अषाढ़ बदर घेरी आइल
सिर पर नाहीं कोऊ छान्ही रे छपरवा।
केहि विधि हे री सखि ! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
सावन झर-झर बूँद झरन लागे
भींजी अकुलात होई तीनों केर मनवाँ
केहि विधि हे री सखि ! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
भादो घटा घनघोर गरज सुनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


डरी जात होइ मोरी सिया केर मनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
आश्विन कोउ उपकरण न संग महुँ
केहि विधि करिहें राम देवी के पुजनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
कातिक कुलवधू जनकलली के बिना
हम न करब सखी आदित पुजनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
अगहन फल कन्द मूल खोजत राम
जब चहुँ दिशि उपजी गहले धनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
पूष मे राती के ओस परत अतिं
ठिठुरी ठिठुरी जात होई तीनों तनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
माघ मिरिगछाल करि के वसन सखि
केहि विधि होइहें बितावत दिनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
फागुन रंग बहार अवध नहीं
मोर रंग सून बिनु लाल के भवनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
चैत में वन जब टेसू फुलाइल
मोरा रे गुलाब नाहीं मोरे उपवनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
वैशाष बाँस कटाई सब घर छावे
हम रे अभागी मोरा वंश बसे बनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
जेठ कहुँ छाँह खोजहुँ नाहीं मिलेले
ऊपरे से झुलसत होई रे बदनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।
सबहीं ने दुःख सहे पर राम अस नाहीं
बरस चतुर्दश बारहो महीनवाँ।
केहि विधि हे री सखि! अति सुकुमार मोरे
दुनों रे ललन सिया संग होइहें बनवाँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १२. जयन्त की कुटिलता

अब करुँ सुमिरन अति प्रियशीला प्रभु की परम रुचिर नरलीला
दशरथनन्दन राम सियावर निज कर चूनि कुसुम अतिसुन्दर
बैठ सिया की वेणी सजावत, सो करि ध्यान भगत सुख पावत
पर जब दुर्गति की घड़ी आवत दुर्मति को प्रभु काज न भावत
अइसहिं था वह दुष्ट जयन्ता पहुँच गया प्रभु पास तुरन्ता
ये नरलीला के हि खिलाड़ी समझ सका नहिं बात अनाड़ी
जगजननी पर कीन्हीं प्रहारा किया नाहिं परिणाम विचारा
रुधिर प्रवाह देखि रघुवीरा साधे सींक बनाई तीरा
भागा सुरपति-पुत्र विकल अति पाछे-पाछे सायक द्रुतगति
सब लोकन्ह महुँ सब पहिं गयउ कोऊ नाहीं बइठन कहेउ
निज पितु भी नहिं दिये शरण जब देवर्षि तेहि समय आइ तब
कहेऊ 'मूढ़। राम पहिं जाई चरण शरण की करहु दुहाई
प्रभु अपराधी कोउ न रखिहें राखी को प्रभु सायक जरिहें'
सुनि नारद की बात, मूढ़ वह समझा गलती हुयी गूढ़ यह
गया राम के चरण माहिं गिर देख रहा था प्रभु का रुख, फिर
शरणागत पर रहित प्रतीति समझत भी राखे निज रीति
एक आँख ताकर प्रभु फोड़ी साधु प्रतीति माहिं मन मोड़ी
एहि भाँति कृपाल रघुराई दिये दण्ड भी सीख सिखाई
वसते चित्रकूट रघुनन्दन बैठ विचार करत मनहिं मन
'इहाँ मोहि जाने सब कोई दिन-दिन भीड़ बहुत ही होई
अवधहुँ से सब अइहें जइहें विघ्न तपस्या में मुनि पइहें'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अस विचारी आगे रघुराई चले संग सीता लघु भाई
आई गये प्रभु अत्रि आश्रम किये नमन, मुनि कहे 'धन्य हम
तुम कृपालु अति हो रघुनन्दन ! शिव वन्दित, सेवित ऋषि मुनि जन
सुन्दर परम काममद मोचन भव भय भंजन सरसिजलोचन
नर वपु धारक लक्ष्मी के पति अनुज प्रिया संग शोभित छवि अति
तुम हो भुक्ति मुक्ति के दाता दरश तोर बड़भागी पाता
तोरे चरण कमल की भक्ति करूँ भ्रमर बन, दो प्रभु ! शक्ति'
विनती भरी अत्रि की वाणी सुनि सकुचाये प्रभु धनुपाणी

## १३. श्रीसीता अनुसूया मिलन

कुटी में भीतर थीं अनुसूया गईं उनके समीप जा सिया
चरण वन्दन कीं, अति हरषाई कहीं वे 'सीता ! तुम वन आई
पिया संग यह जो तेरा कर्म सिखायेगा सबको पतिधर्म'
कहीं फिर, 'सुनु सिय बात हमार जगत में पतिव्रता की चार
श्रेणियाँ उत्तम, मध्यम, नीच तथा भय और कुअवसर बीच
फँसी बच जाती परपति रति से अधम वह, फिर भी अच्छी उससे
जो अपने पति को धोखा देती जगत में जीअत अपयश लेती
मरे पर रौरव नरकहिं जात, करत परपति रति नाहिं लजात
सिया ! जग में अनेक हितकारी जदपि तदपि उनके बल नारी
तरत नाहीं भवसागर पार, कहत मोरी मति दृढ़ आधार
यही बस एक पतिव्रत धरम छोड़ छल पति की सेवा करम'
सुनीं सीता मन से हरषाईं, उठीं अब अनुसूया ले आईं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दिव्य उबटन पट भूषण हार उन्हें पहिराईं कहि उपहार
समझ फिर रात्रि अब हो आई सिया को रघुवर पास पठाई
रात बीती जब आज्ञा माँगे अत्रि से, राम चले तब आगे

## १४. विराध-वध

जगतरक्षक पावें नहिं शूल तपन अरु पवन भये अनुकूल
परन्तु सदा देव विपरीत कार्य करना राक्षस की रीत
आ गया सम्मुख दुष्ट विराध आक्रमण किया सिया को साथ
भगा सिय को लेकर वह दुष्ट धनद शापित तुम्बरु पापिष्ट
राम हो क्रुद्ध किये आघात तजा सिय को गहि दोनों भ्रात
चला ले आगे जब वन बीच सिया रो कहतीं 'तज दे नीच'
'करुँ क्या' सिय रोतीं घबराई दुष्ट को मारे यूँ रघुराई
बाँह काटे वेधे सब अंग खोद गड्ढा भाई के संग
गाड़ डाले उसमें ही निशिचर शस्त्र से था अवध्य वह, पा वर

## १५. शरभङ्ग के आश्रम में श्रीराम

सियानुज संग राम गतत्रास गये जब शरभङ्गाश्रम पास
विलोके, यहाँ देवगण आये मगर क्यूँ सोंची अनुज बुलाये
कहे 'भैया ! सौमित्र ! घड़ी भर सिया को देखो, पता लगा कर
आ रहा मैं है क्या यह बात चलूँगा तब मुनि धौरे तात !'
टहलते जब तक प्रभु तहँ आये सुरों के संग सुरेश सिधाये
लोक अपने, लखि के रघुनाथ सिया लक्ष्मण को लेकर साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


गये, शरभङ्ग चरण में शीश झुकाये, लखि निज इष्ट मुनीश
प्रफुल्लित गात कहे 'विधि-धाम जा रहा था मैं, पर हे राम!
सुना तुम इस वन में ही आये हुये हो, दर्शन आश लगाये
रुका था तोरी श्यामकिशोर! कृपा करि अब तुम मेरी ओर
निहारो तब तक हे रघुवीर! कि जब तक मेरा जीर्ण शरीर
योग-अग्नि में होवे शान्त, जाइयेगा इसके उपरान्त
नयन फलदायक अतिथि इष्ट आप मेरे 'कहि हुये प्रविष्ट
योग-अग्नि में मुनि, तदनन्तर बढ़े राघव आगे वन पथ पर
चले जब आगे श्रीरघुराई साथ में था ऋषिमुनि समुदाई
देखकर मग में अस्थि समूह राम जब पूछे 'क्या यह थूह ?'
कहा मुनियों ने 'राक्षस आते साधुओं को वध कर खा जाते
वही अस्थि समूह है पड़ा, वीर! यह कष्ट हमें है बड़ा'
दुःखी हो गये सुनत रघुवीर किये प्रण 'हरिहौं सज्जन पीर
राक्षसों को मारी भूमण्डल करूँगा सुखी सुनें मुनिमण्डल!'
राम का प्रण सुनकर सब हरषे गगन से फूल राम पर वरसे

## १६. सुतीक्ष्ण के आश्रम में श्रीराम

जा रहे हैं आगे रघुनन्दन बीच में सीता पाछे लक्ष्मण
रुके आगे प्रभु सिय सौमित्र देख कर आश्रम परम पवित्र
उसी में राम भगति में मस्त एक मुनि थे गुरु जिनके अगस्त
कहा करते 'मैं साधनहीन कृपालु हैं मेरे प्रभु प्रियदीन'
समझ मुझको भी अपना दास जो अइहें प्रभु पूजेगी आश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सोंच अस मगन मनहिं मन होते कभी हँसते गाते कभी रोते
देखकर उनको प्रेम अधीर गये सम्मुख सानुज रघुवीर
साथ में सिया थीं शोभाखानी दण्डवत किये महामुनि ज्ञानी
विनय प्रभु की फिर करने लगे 'आज तो भाग्य हमारे जगे
नील अम्बुज सम सुन्दर श्याम किये मुनिवेष सदा सुखधाम
धनुष ज्या सज्ज दाहिने ओरी बायें श्रीमिथिलेशकिशोरी
पार्श्व में अनुज लखन जेहि नाम वसहु मम हिय में ऐसे राम'
घूमते फिरते आते जाते मुनिन्ह से मिलते थे सुख पाते
राम, सिय अनुज संग अति हरष बिताये समय वहाँ दस वरष
सुतीक्ष्ण से बोले इक दिन राम 'तपोनिधि दीर्घायु शुभकाम
सुना है इस वन के ही मध्य कहीं रहते मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य
चाहता दर्शन उनके करूँ अनुज पत्नी संग सेवा करूँ
परन्तु वन विशाल कस पाऊँ कहाँ है आश्रम कैसे जाऊँ'
सुनत रघुनन्दन की ये बात सुतीक्ष्णजी बोले हर्षित गात
'हमारे गुरुवर पूज्य अगस्त्य लालसा मन में प्रायः नित्य
हो रही थी सो राघव! बोले चलूँगा मैं भी संग हि चलें'

## १८. अगस्त्य-दर्शन

बढ़े अब आगे अम्बुजनयन पार करके वह कानन गहन
अगस्त्यजी के भाई के आश्रम गये, नाये सिर हरषित परम
'हमारे कुलगुरु के ये ज्येष्ठ सबहिं विधि पूज्य मोर मुनिश्रेष्ठ'
निशा वह वहीं बिताये राम चले प्रातः करि मुनि को प्रणाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चलत पहुँचे रघुराई तहाँ महामुनि कुंभज रहते जहाँ
लखन से भेजे मुनि को सन्देश 'चरण वन्दन करुँ पा आदेश'
सुने मुनि ज्यों हि अति हरषाते राम से मिलने को हैं आते
राम ने देखा ये मुनिराज आ रहे, जटा ही जिस पर ताज
शीश, मुनि चरण माहिं रख दिये चरण रज सिया लखन भी लिये
लगाया उर से मुनि ने प्रभु को दिये फिर आशिष लखन सिया को
बहुत विधि सनमानि मुनिराय दिये शस्त्रास्त्र अनेकों लाय
कहे फिर मुनि 'सुनहु श्रीराम! कहूँ तुझसे ही हे जितकाम!
रूप जो तेरा अनुभवगम्य वखानूँ, जानूँ, पर हे रम्य!
सगुन यह रूप जो तेरा सोहे निरख, हिय मेरा वरबस मोहे'
पूछते सस्मित अब रघुराई 'बतायें मुनि! कहँ कुटिया छाई
रहूँ' मुनि से सुन सुन्दर नाम पञ्चवटी गवन किये श्रीराम
बीच में गीध जटायु मिले प्रेम से मिल प्रभु आगे चले
पहुँच कर पञ्चवटी में राम अनुज संग रचि के सुन्दर धाम
वसे तहँ, मुनिजन को सुख देते जानकी लखन राम को सेते

श्रीराम पञ्चवटी विराजत संग लछिमन जानकी।
करते सुअवसर पाई चर्चा भक्ति ज्ञान विराग की॥
सत्संग भक्तिमूल, भक्ति देत है रति राम की।
यह राम-वाणी जान मन शरणागति गहो राम की॥

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# छठाँ पर्व

# वीरराम

पीठ पर बाण भरा तूणीर
लिये कर में धनु राघव वीर।
खोजते सानुज खल संहारत
उबारत दीन दुःखी अरु आरत।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १. पञ्चवटी में श्रीराम

श्रीराम पञ्चवटी आश्रम में बैठे कुछ सोंच रहे मन में
श्रीलखन गये फल लेने वन जानकी सींचती निज उपवन
तभी सिय से बोले रघुनाथ 'प्रिये! नरलीला में दो साथ
करूँ मैं जबतक निशिचर नाश करो तुम पावक मध्य निवास'
सुनीं ज्योंहि सिय पिय की वाणी चरणरज सिर धरि वह्नि समानि
छोड़ दीं तहँ आपन परिछांहिं रूप गुण शील अन्यथा नाहिं
देख यह रघुवर अति सुख माने हुयी यह बात, लखन नहिं जाने
सिया लछिमन को ले नित साथ नहाते गोदावरी रघुनाथ
एक दिन मग में जाते लखन कहे राघव से 'सरसिजनयन!
आपको जो है अति प्रिय तात! सुखद यह ऋतु हेमन्त सुहात
शीत है प्रबल, अवध में वहाँ भरत भैया भी प्रातः नहा
कर रहे होंगे प्रातः कर्म कि जिनका जीवन ही व्रत धर्म
भरत सम सुत नहिं समता आज अवधपति पति दशरथ महाराज
वही कैकेयी मैया छोटी करी कैसे मति आपन खोटी'
सुनत ही रोक कहे रघुराई 'नहीं, यह कहो न ऐसे भाई!
मुझे भी आज भरत की याद सतावत, उनकी वे आह्लाद-
दायिनी बातें...' कहि रघुवीर हुये आकुल जस, बह गये नीर
कहत बतियावत यूँ जा स्नान किये फिर आ गये अपने स्थान
वखानत ज्ञान भक्ति वैराग राम, सीता लछिमन के भाग
सुनत, दोनों प्रभु का रुख पाई जतन से करते थे सेवकाई
भगति वैराग ज्ञान मुख जोहें तीनहुँ आश्रम में अस सोहें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



अब एक दिवस की यह घटना प्रातः का नियम निभा अपना
बैठे थे तीनों एक संग जानि वसन्त रति अरु अनंग
रावण की बहिनी शूर्पनखा आई बन विपदा की रेखा
वह परम कुरूपा विकराला बन गई एक सुन्दर बाला
आखें तिरछी मुख मन्द हास बोली प्रभु से लेकर उसाँस
'हो परम मनोहर श्यामलतन ! पर यह नारी 'उहँ', गोर वदन
वह कौन तुम्हारा ? धनुष धरे देखो हम लोक अनेक फिरे
पर मिला न कोई मनचाहा रह गई कुआँरी, आज यहाँ
तुझे निरख प्रथम हि मान गई तुम ही हो मेरे, जान गई
विधना मेरी जीवन डोरी तेरे संग में ही है जोरी'
रघुवीर समझ कर सब मन में सिय को इङ्गित कर कुटिया में
बोले 'सुन्दरि ! वह लघु कुमार माने मन तो तूँ कर विचार
जा उसके पास मदनचेरी ! नहिं कोई सौत वहाँ तेरी'
सुन बात, गई वह लखन पास की प्रणय याचना, कहे 'दास
मैं प्रभु का, नहिं तोरे लायक जा वहीं जहाँ रघुकुलनायक
फिरि आई, प्रभु के पास सिया बैठी थीं, झट आक्रमण किया
असली निज रूप प्रकट करि के खा जाऊँ इसे निश्चय करि के
अति क्रोध सहित ज्यों हि झपटी हुङ्कार किये प्रभु, दूर हटी
'कर दो कुरूप' रघुनायक ने आदेश दिया जब, लछिमन ने
जो था समीप लघु खड्ग लिये बिनु नाक कान का उसे किये
नासिका कान रहिता रोती आँसू के संग लहू पीती
जा पहुँची खर के दरवाजे बोली 'तुम बजा रहे बाजे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


श्रीराम लखन दशरथ कुमार छाये बैठे घर में तुम्हार
तुझको कुछ पता नहीं भ्राता तुझ जैसा है जिसका त्राता
फिर भी गति कैसी यह मेरी धिक्कार वीरता को तेरी'
सुन बात बहन की देख गति खर नामक राक्षस दुष्टमति
समझाया, चौदह वीर दिया ले चली और आक्रमण किया
पर पल में ही चौदहो मरे प्रभु शर से सब भव पार तरे,
फिर क्रूरा आई खर द्वारे बतलायी 'सभी गये मारे'

### २. खर-दूषण वध

चौदह सहस्र ले सैन्य संग आया खर, अद्भुत युद्ध ढंग
देखा रघुनन्दन को उसने कहा 'खूब किया कौशल तूँ ने
पर ले सम्हाल यह वार मोर नासमझ! यही है मौत तोर'
रघुनन्दन ने काटा प्रहार फिर घड़ी तीन में सैन्य मार
दूषण का वध कर दिये राम त्रिशिरा को दे परलोक धाम
अब खर की ओर मुड़े, सायक अति तीक्ष्ण धनुष पर रघुनायक
जोड़े छोड़े हर लिया प्राण खर का जिसने, प्रभु बलनिधान
समराङ्गण में सोहत ऐसे छँटने पर बादल शशि जैसे
ऋषि मुनि ने की वन्दना वहाँ कहि 'सफल वास आपका यहाँ'
लछिमन ले आये जनकलली सब हैं प्रसन्न कि विपत टली
खर मरा दण्डकारन निर्भय सब बोले 'वीर राम की जय'

### ३. मारीच वध एवं सीताहरण

अब शूर्पनखा विपदा रेखा ने लंका नगरी तरफ देखा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रोती रावण सम्मुख जाकर बोली अतीव ही झुझलाकर
'मेरी दुर्गति तो दूर रही खर मरा और तुझे पता नहीं
कैसी तेरी है राजनीति अरु मुझ दुखिया बहना से प्रीति
निज बल पौरुष अब मत गाना' डाँटा रावण 'चुप रह बहना !
ऐसी बातें तूँ नाहीं कह बतला किसने दुर्गति की यह'
बोली 'रघुवंशी दो कुमार अपने संग ले सुकुमारी नार
दण्डक बन छाये बैठे हैं निज बल पौरुष से ऐठे हैं
यह स्थिति ठीक नहीं लगती है पर नारी मुझको जँचती है
उसको यदि तूँ हर लायेगा मानो जग की निधि पायेगा'
सुनकर सोंचा जो है खरारि नहिं और कोई वह दैत्यारि
बन आया है दशरथ कुमार हर लूँगा अवसि उसकी नार
ऐसा निज मन में कर विचार मारीच पास आ उदधि पार
बोला 'सहायता की तोरी है मुझे जरूरत सुन मोरी
हरना है मुझको रामप्रिया नहिं कठिन अगर तूँ साथ दिया'
मारीच हुआ हक्का बक्का जैसे फिर काल दिया धक्का
अति कोमल स्वर में समझाया जो बीती निज पर बतलाया
पर वह दम्भी कुछ ना समझा उलटे बड़ जोर बिगड़ उलझा
मारीच विचारा, हठ वाला यह खल कामी है मतवाला
अपनी करनी का फल पा ले मुझको रघुवर के तीर भले
यह सोंच स्वर्णमय हिरण वेष धरि, आया अवसर उचित देख
जहँ सिय संग राम खरारि थे कुछ दूर लखन धनुधारी थे
सिय ने देखा सुन्दर हिरना बोलीं 'प्रियतम ! वधि आनहु ना !'
लालसा देख सिय की भारी बोले द्विज देवन्ह सुखकारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


'लक्ष्मण ! सिय की रक्षा करना जबतक मैं आश्रम लौटूँ ना'
अस कहि के मृग के पाछे चले वह धन्य जो ऐसी छवि भज ले
आगे भागत है स्वर्ण हिरण पाछे हैं प्रभु नीलाम्बुज तन
छल करत दूर प्रभु को लाया फिर सन्मुख आकर शर खाया
करता पुकार लछिमन ! लछिमन ! मन में राखे था रामचरण
मर कर परलोक सुधार गया पर प्रभु पर विपदा डाल गया
सुन लछिमन-लछिमन की बोली सीताजी लछिमन से बोलीं
'जाओ भैया ! भैया के पास निश्चय यह कोई विपति वास'
लक्ष्मण जाना नहिं चाह रहे पर जब सिय ने कटु शब्द कहे
तब रक्षा हेतु खींच रेख बोले भाभी का चरण देख
'माँ ! इसको पार नहीं करना इस सीमा के भीतर रहना'
यूँ कह कर लछिमन चले गये 'भिक्षां देहि' के शब्द हुये
गार्हस्थ्य धर्म का कर विचार ले भीख आईं कुटिया-दुआर
यति देख रेख वह गुर्राता बोला 'मैं ऐसे नहिं लेता
यह कैसी यहाँ करी छलना बाहर आकर के दो ललना !
यदि नाहीं तो मैं जाता हूँ ले शाप दिये भी जाता हूँ'
सुन बात शाप की डर सीता बाहर आईं जब भय भीता
वह दुष्ट उन्हें तब उठा लिया अम्बर पथ से प्रस्थान किया
जैसे निर्दय कोई कसाई जाता हो ले कपिला गाई
नभ पथ में सीता हैं जाती रोवत वेवश अति विलखाती
'अप्रतिमवीर रघुकुलनन्दन ! वैदेहीशरण खलदल भंजन
केहि कारण दया विसार दिये यह दुष्ट मुझे यूँ जात लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देवर ! लछिमन ! नहिं दोष तोर कटु शब्द कही दुर्भाग्य मोर
था पास छिपा, बीती विसार भैया ! इस खल से लो उबार
अयि ओ कनेर ! चम्पा ! जूही ! मेरे प्रभु से कहना तूँ ही
राघव ! जो तोरी प्राणप्रिया सीता, रावण ने चुरा लिया
गोदावरी मैया ! तुझे नमन करती हूँ, मेरे जीवन धन
से शीघ्र बता देना, छल कर रावण ले गया सिया हर कर
वन देव ! लता ! पादप ! प्राणी ! मिल जायें ज्यों ही धनुपाणि
कह देना थी असहाय सिया जब राक्षस रावण हरण किया'
सीता का सुनकर करुण रुदन व्याकुल थे सारे जड़ चेतन
किन्तु सब रह गये शान्त सन्न रावण राहु से लगा ग्रहण
पर था इक ऐसा भी प्राणी जो सुना रुदन, स्वर पहचानी
वह पक्षी गीध जटायु था श्रीराम भक्त पूर्णायु था
बोला 'रावण ! ये रामप्रिया तूँ जिन्हें काल वश चुरा लिया
तुझको ये कइसहुँ नहीं सुलभ ये पुरोडाश सम तूँ गर्दभ
तज दे नाहिं सह वार मेरा हर लूँगा प्राण यहीं तेरा'
कहि करि करि पंखों से प्रहार मारि चोचन्हि दिये तन विदार
पंजों से नोचत केश वस्त्र रावण के सारे अस्त्र शस्त्र
रथ, छत्र, धनुष, तूणीर, तीर कर दिये नष्ट, जर्जर शरीर
होने से क्षण भर को अचेत होकर के भू पर सिय समेत
गिर गया परन्तु तुरत होश में आया फिर तो बड़े रोष
से गीधराज पर किया वार था अतिशय दुखदायी प्रहार
कट गये पंख दोनों उनके तब राम नाम सुमिरन करके
गिर गये भूमि पर, दरश आश बस अँटका था तन मध्य साँस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नीच का पथ था अब निर्विघ्न हुआ, पर जनकलली अति दीन
भाव से दौड़ इधर से उधर रो रहीं थीं 'हैं राघव किधर'
तभी खल ने फिर लिया उठाई चला नभ पथ से लंका लाई
प्रलोभन भाँति-भाँति का दिया वखानी बल वैभव, पर सिया
निहारीं तक नहिं उसकी ओर कहीं 'तूँ पापी निर्लज चोर
किया छल मुझको हर ले आया परन्तु सुन रे खल! रघुराया
परम सुन्दर दूर्वादल श्याम कौशिलानन्दन प्रियतम राम
पता जो पइहें कइसहुँ मोर घेर कर यह गढ़ लंका तोर
जगत विश्रुत वे श्रेष्ठ धनुर्धर समर के बीच तुम्हारा वध कर
करेंगे रक्षा राम हमारी' कहत भर गई आँख कजरारी
सीता से सुन फटकार नीच सोंचा अशोक वाटिका बीच
रख दूँ इसको, उपवन मनहर इसलिये वहीं उनको रख कर
राक्षसी घोर अतिशय क्रूरा का उन पर लगा दिया पहरा
श्रीराम विरह में अति दीना प्रभु चरण कमल में लवलीना
श्रीसिया 'राम' ही जपती थीं बैठी अशोक तर रहती थीं

## ४. श्रीराम विलाप एवं जटायु मरण

इहाँ मारीच वध उपरान्त लौटते हुये राम, कुछ श्रान्त
अनुज को देख कहे 'तूँ यहाँ सिया को छोड़ अकेली वहाँ
आ गये भाई! बोलो कैसे' लखन बतलाये आये जैसे
राम ने सुनी अनुज की बात समझ गये कि कोई आघात
दुष्ट जन ने है किया जरूर सिया को ही कर दे ना दूर
सोंचते यूँ मन में अकुलाते आ गये आश्रम में घबराते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देख आश्रम है सिया विहीन विलपने लगे मनहुँ अति दीन
'अरे ओ आश्रम के पशु पक्षी संग रहते थे, थे तुम रक्षी

शशक ! हिरणि ! वह जनककुमारी
कहाँ हैं ? दृष्टि पड़ी तुम्हारी
बता शुक ! पिक ! कपोत ! कि मोरी
गई कहवाँ मिथिलेशकिशोरी'

सामने देख अशोक अनार
'सिया कहँ' पूछत बारम्बार
'उसे थे प्यारे बड़े कदम्ब !
तुम्हारे फूल बता अविलम्ब

कहीं क्या देखा तुमने उसको
सिया को मेरी प्राण प्रिया को ?
निम्ब ! कटहल ! अशोक ! लघुलता !
तुझे कुछ है सीता का पता ?'

देख गोदावरी जल में मत्स्य
पूछते 'लघु सफरी कहि सत्य
बता दे, गई कहाँ है सिया
भूमिजा जनकलली मम प्रिया'

आम्र ! बकुल ! मौलश्री ! बोलो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अयि ओ चम्पा ! तुम मुँह खोलो
तुम्हें सींच कर थक गइ है क्या, कहीं विरम दो घड़ी
खड़ी है वह सुकुमारी बड़ी ?

सुनो कबूतर ! शुक ! पिक ! मैना !
कहाँ गई मृगशावक नैना ?
तुम सबने क्या उसे छिपाकर, मुझसे खेल किया
कहाँ गई प्रिया विदेह धिया ?

ओ मदमाते गज की टोली !
गजगामिनी सिया वह भोली
तुम सब अपनी प्रिया चाल की समझ इसे चोरी
छुपाये हो क्या जनककिशोरी ?

मृगशावक ! तूँ बैठा कैसा
तूँ उसके प्रियसुत के जैसा
जा उसकी आँचल धर ले आ, क्यूँ है मान किया
कहाँ है मेरी प्यारी सिया ?

रुक जाओ भ्रमरों की पाँति
क्यों जाते हो तुम इस भाँति
क्या तुमसे भी बिछड़ गयी है, प्यारी तोर अलि
कहीं देखे तूँ जनकलली ?

बोलो भैया लक्ष्मण ! बोलो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कहाँ तोर भाभी हैं बोलो
हरी किसी निशिचर ने बन्धु, क्या रघुवंश वधू ?
पता पाऊँ तो उसको वधूँ।

चरित करते संसारी जैसे कहत 'सीता बिनु रहिहौं कैसे'
पूछते इत उत पता न पाये लखनलाला बहुविधि समझाये
बढ़े आगे देखत गिरि खोह कहीं तो मिले सिया का टोह
गीधपति पड़े मिले मग माहिं दुष्ट रावण ने मारा जाहि
गोद में उठा राम ने लिया फेरि कर तन पर अति सुख दिया
किये फिर प्रश्न 'आपकी दुर्गति करी किसने ? कौन वह दुर्मति'
कहे पुनि 'जनकनन्दिनी नहीं मिल रही है, हैं देखे कहीं ?'
जटायु बोले 'लंका अधिपति चुरा ले गया सिया को रघुपति !
सिया हित खेद करें नहिं आप दूर जल्दी होगा सन्ताप
चुराया मैथिली को जब धूर्त 'विन्द' नामक था श्रेष्ठ मुहूर्त
इसमें स्वामी का खोया धन निश्चित मिलता है रघुनन्दन
सिया यह रोने से पहचान छुपाया उन्हें झपट मैं आन
हुआ फिर उसका मेरा समर सकल आयुध चुक गये थे मगर
बचा था उसे एक तलवार उसी से पाँखें मोर उतार
उठा सिय को पुनि दक्षिण ओर गया वह रावण तिरिआ चोर
रुके थे प्राण दरश के हेतु चलन चाहत अब रघुकुलकेतु !'
राम ने कहा 'रखहु तन तात !' गीध बोले 'यह अवसर प्राप्त
हुआ, नहिं पावत सिद्ध मुनीश सामने हों अखिलेश्वर ईश
बनेगी फिर क्या ऐसी बात, साँवरे गोरे दोनों भ्रात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अन्त में मिलो, कहो अब जाऊँ, कृपा करहु प्रभु ! तव पद पाऊँ'
राम बोले 'परहित मन माहिं आपको दुर्लभ कुछ भी नाहिं
विनय करि कहूँ आपसे तात ! दुःखद यह सिया हरण की बात
पिता से कहियेगा नहिं जाई, कहेगा रावण ही तहँ जाई'
अमर हो गीध गये सुरधाम, क्रिया पितु सम करि उनकी राम

## ५. *कबन्ध-उद्धार*

कठिन वन में पुनि आगे चले खोजते कहीं तो सीता मिले
हुयी राक्षस कबन्ध से भेंट जिसे दो बाहें थीं अरु पेट
राम को सानुज पकड़ लिया तो दोनों ने भुज काटि दिया
असुर बोला 'रवि डूब न जावे तभी तक मुझको मार जलावें
सिया के मिलने की तब विधि बताऊँगा मैं करुणानिधि !'
बताये थे कबन्ध ने जैसे सहानुज राम किये सब वैसे
तुरत धारण कर दिव्य शरीर कहा 'सुनिये हे राघव वीर !
जाइये पम्पासर रघुराई ! वहाँ गिरि ऋष्यमूक सुखदाई
शिखर पर उसके है इक कन्दर उसी में रहते हैं कुछ बन्दर
सबों के राजा हैं सुग्रीव उन्हें वाली से कष्ट अतीव
करें उनसे जा आप मिताई सियान्वेषण में बहुत सहाई
बनेंगे धर्म-बुद्धि वह वानर अनेको सद्गुण के हैं आकर'
कहा फिर 'श्रीसुकण्ठ मतिमान राक्षसों का सब वासस्थान
जानता है' कहि के सुरधाम गया तब रघुकुल-भूषण राम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ६. शबरी आश्रम में श्रीराम

सहानुज करि मतङ्गवन पार गये श्रीशबरीजी के द्वार
'आ गये राघव मेरे द्वार' कहत पाथर इक अँचरहिं झार
बिठाई धरि कर-कमल 'विराजो करो स्वीकार देव! इहवाँ जो'
उमगि सादर पद-पदुम पखार कही पुनि 'जागा भाग हमार'
खिलाई मीठे-मीठे बेर रखी थी जो जंगल से हेर
नहीं कोई उपकरण न नेम निहारी निश्छल मति अरु प्रेम
बिके थे प्रभु भिलनी के हाथ वखानी स्वाद खात रघुनाथ
प्रफुल्लित शबरी बोली 'तोर करूँ क्या स्वागत अवधकिशोर
अपावन निपट गवाँरी नार' तुरत बोले प्रभु राम उदार
'अपावन तुम नहिं, दीन मलीन न नारी होने से हो हीन
भगति भामिनि! जो उर में तोरे बहुत प्रिय लागत मन को मोरे
भगति रूपी जल में अवगाहन किया जिसने वह प्राणी पावन
भगति वह नवधा' उसे सुनाई सिया सुधि पूछे पुनि रघुराई
कही शबरी 'है वानर एक नाम जिसका सुकण्ठ अति नेक
हृदय का, ऋष्यमूक पर रहता सिया का वह निश्चय ही पता
लगा लेगा जा करें मिताई' दिदृक्षा जानि जा दिखलाई
मतङ्गवन, मुनि मतङ्ग का स्थान कही फिर 'अब हे कृपानिधान!
दया करि दीजिये आयसु जाऊँ आपके धाम ठौर तहँ पाऊँ'
कहे राघव 'जा चारुभाषिणि!' योग अग्नि के बीच तपस्विनी
छोड़कर देह गई साकेत चले प्रभु आगे बन्धु समेत
गये जब पम्पा रघुकुलराज चतुर्दिक फैला था रितुराज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


देखकर शोभा श्रीरघुराई खिन्न से हुये, सिया सुध आई
लखन से कहि वसन्त-श्री राम कहे 'विरही दुःखदायी काम'
अनुज ने कहि समयोचित बात कहा 'नहिं शोक कीजिये तात !'

## ७. नारद-श्रीराम मिलन

'राम करि शाप मोर स्वीकार सहत श्रीसिया-विरह दुःख भार
चलूँ दर्शन ऐसे में करूँ ब्रह्म-नरलीला लखि सुख भरूँ'
विचारी ऐसा हरि हरि गाते चले देवर्षि, उनको आते
विलोकि प्रभु सानुज अभिवादन किये, कहि 'बइठहु' देकर आसन
करत समयोचित बात विचार कहा नारद ने 'नाम तुम्हार
यद्यपि सब के सब श्रेयष्कर परन्तु सब नामों से बढ़कर
होवे 'राम' नाम अघहारी कृपा करि यह वर देहु खरारि !'
'एवमस्तु' बोले श्रीराम हरषि के नारदजी विधि-धाम

## ८. हनुमान-श्रीराम मिलन

गये जब, अनुज सहित रघुराई बढ़े फिर ऋष्यमूक निअराई
विचारन लगे शिखर पर कैसे चलें हम, तभी निरख ऊपर से
युगल धनुधारी अति अकुलाई इशारे से निज पास बुलाई
केसरीनन्दन से सुग्रीव कहे 'जा देखहु ये दो जीव
कौन काहे फिरते व़न माहीं ये वाली प्रेरित तो हैं नाहीं'
तुरत भिक्षु का वेष बनाये पवनसुत रघुराई पहँ आये
पूछने लगे 'आप हैं कौन ? मुझे उत्कण्ठा रहें न मौन
नयन सुखदायक, कोमल, वीर फिरत काहे वन गहन गभीर ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



वहाँ रहते कपिपति सुग्रीव उन्हें वाली से कष्ट अतीव
उन्हीं का भेजा मैं हूँ आया' पवनसुत ने जब यह बतलाया
लखन भी उनसे तब बतलाये 'उन्हीं से मिलने हम हैं आये'
सौम्य ये युगल वीर छविधाम समझ कपि हरषे, बोले राम
'अयोध्यानृप का दशरथ नाम उन्हीं का ज्येष्ठ तनय मैं राम
वीर यह मेरा छोटा भाई साथ में पत्नी भी थी आई
यहाँ वन बीच चुराया कोई खोजते उसे विकल हम होई'
राम का परिचय सुन हनुमन्त कहे 'प्रभु ! लीला तोर अनन्त
दास मैं तेरा कपि हनुमान क्षमा करिये न सका पहचान'
तुरत दोनों को पीठ चढ़ाई शिखर पर लाये अति हरषाई

## ९. सुग्रीव-श्रीराम मैत्री

बताये कपिपति से जा बात कौन काहे ये अम्बुजगात
फिरत वन-वन सानुज, झट चलिये मित्रता चलकर इनसे करिये
सुने सब, हरषि उठे सुग्रीव कहत 'यह तो सौभाग्य अतीव
हमारा' आये जहँ रघुनन्दन बिठाये सादर करि अभिनन्दन
तभी हनुमान काठ से मथकर प्रकट कर दिये अनल, साक्षी कर
मीत हो गये राम सुग्रीव मित्रता की यह सुदृढ़ नींव
शिखर पर बैठ गये सब साथ कहे तब श्रीसुकण्ठ 'रघुनाथ !
यहीं पर एक दिवस हम साथ विराजे थे कि कहि 'हे नाथ
राम रघुवीर लखन धनुधारी बचाओ' विलपत कोई नारी
गिराई वस्त्र और आभूषण गुफा में है वह, रघुकुलभूषण !
सिया के हों शायद दिखलाऊँ' कहत कन्दर में गये कि लाऊँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दिखाये ला सारे सामान, प्रिया के ही हैं ये पहचान
विकल से हुए राम अरु बोले 'देखहु लखन! देखहु तो ले
हार ये बाजुबन्द ये कंगन लखन ने कहा 'करत पदवन्दन
विलोका है मैं ने बस नूपुर उन्हीं में थे यें सुन्दर घुंघुर'
कहा कपिपति ने 'कोशलराय! सियान्वेषण हित सकल उपाय
करूँगा, दिशि दिशि कीस पठाई करें मन खिन्न नहीं रघुराई!'
मुड़ी फिर बात, राम ने कहा 'बताओ सखे! कि काहे यहाँ
वसे हो' कपिपति ने बतलाया कवन विधि वाली वैर बनाया
'हरण कर लिया कोष पुर नार रोष के साथ बहुत ही मार
निकाला किष्किन्धा से, शाप विवश आवत नहिं इहवाँ, आप
जानकर मुझको अपने शरण उबारें' राम मीत का लक्षण
सुनाई कहे 'मित्र! अपकार शत्रुता का लक्षण, उपकार
मित्रता के हैं फल, वध करिहौं दुष्ट का, संकट तेरा हरिहौं'
प्रतिज्ञा भी प्रभु ने कर लिया परन्तु कपिपति का मन भिया
त्रस्त था, बहुत समय से ऐसा नहीं कोई वाली के जैसा
इसी से बैठी मन में नहीं बात जो रघुनन्दन ने कही
विहँसि बोले लछिमन कि 'पास खड़े हैं प्रभु, जैसे विश्वास
आपको हो, कहिये वह करें आपके मन का संशय हरें'
दुन्दुभि-अस्थि तब दिखलाई कहा 'यदि इसको श्रीरघुराई
फेंक देवें तो मैं यह मानूँ वधेंगे वाली को यह जानूँ'
सुनत पग के अंगूठ से दूर फेंक डाले प्रभु, पर भरपूर
तोष उनके मन को नहिं आया कि वाली ने जब इसे उठाया
देह था वह, यह है कंकाल एक दिन मेरा भी वह काल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बनेगा सोंच सिहर कर कहा 'परीक्षा मैं ना ही ले रहा आपकी, पर मैं उसकी ताकत जानता हूँ इसलिये न आवत प्रतीति, मन में अम्बुजगात! अतः करि दया देखिये सात वृक्ष जो टेढ़े-मेढ़े खड़े साल के अति विशाल अरु बड़े इन्हें यदि एक बाण हि मार गिरावें तो हे राजकुमार! मान लूँ वाली मर ही गया मिलेगा मुझको जीवन नया' तीक्ष्णतम तीर धनुष पर जोड़ लक्ष्य पर दिया राम ने छोड़ संग हि सातो पादप गिरकर धराशायी हो गये, 'धनुर्धर जगत के श्रेष्ठ आप रघुराई!' चरण गहि बोल पड़े कपिराई

### १०. *वाली-वध*

कहे पुनि 'कष्ट मोर अब हरो आज ही वाली वध प्रभु! करो' शरण सुखदायक राम सुजान मीत को मेरे कष्ट महान विचारी, ले सुकण्ठ को साथ चले वाली वध को, थे साथ अञ्जनिसुत भी अरु सौमित्र पहुँच किष्किन्धा बोले 'मित्र! बढ़ो तुम और उसे ललकारो समर में डटो न हिम्मत हारो' स्वयं छिप गये पेड़ की ओट दूसरे तरु तले भाई छोट गया सुग्रीव जाइ ललकारा भिड़ा वाली से लेकिन हारा किया था वाली मुष्टि प्रहार प्राण घातक जनु वज्र प्रहार भगा कइसहुँ मतंङ्ग वन जाई रुका, तब तक सानुज रघुराई पहुँच गये तो सुकण्ठ ने कहा 'कदापि लड़ने उससे वहाँ न जाता मैं वह काल हमार, गया था मानि बात तुम्हार छिपे पर आप देखते रहे और हम उससे पिटते रहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहो प्रभु ! ऐसा तुम क्यों किये' राम तब उसको उत्तर दिये
'एक ही रूप एक ही रंग समर में सभी एक सा ढंग
विलग तुम दोनों की पहचान तनिक नहिं हुयी, चलाता बाण
कहो कैसे, यदि वध हो जाता मित्र ! तेरा तो क्या मैं करता
तुम्हारा आश्रय मैंने लिया अभय वरदान तुझे मैं दिया
तुझे शर लग जाता तो सारी बिगड़ ही जाती बात हमारी
विचारी ये सब बात न खिन्न करो मन मित्र ! अभी ही भिन्न
बना पहचान समर को जाओ पुनः, मन में शङ्का मत लाओ'
कहत यूँ पुष्प-माल पहिराये बड़े ही नेह सहित सहलाये
वदन जब, कपि के तन का पीर मिट गया समर जनित, रणधीर
राम, सुग्रीव, लखन, हनुमान, नील, नल, वानर वीर महान
चले किष्किन्धा मारग मध्य सप्तजन आश्रम पावन रम्य
मिला, सुग्रीव महत्व बताये वहाँ का, सानुज प्रभु सिर नाये
पहुँच किष्किन्धा सरसिज नयन सबों के संग देख वन गहन
छिपे, कहकर सुकण्ठ से 'जाओ गर्जना करि ललकार बुलाओ
समर में वाली को पुनि, बाण हमारे हरेंगे उसके प्राण'
नया उत्साह नया बल तेज रोष पहले का संग सहेज
गर्जना भीषण जब कपिराई किये तब सुन अतिशय घबराई
उठा वाली कि 'अभी पछारा इसे फिर आया कैसे' तारा
चरण गहि बोली 'सुनिये नाथ ! सुना मैं ने सुकण्ठ के साथ
अवधनृप दशरथ के सुकुमार साँवरे गोरे सुघर अपार
तनय दो हैं अजेय धनुधारी लखन लघु, राघव श्रीअसुरारि
अतः अब वैर अनुज से छोड़ समर की भाषा से मन मोड़,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लगा लें जाकर उनको गले राम से भी आदर से मिलें
इसी में सब विधि कन्त ! भलाई' बहुत भाँति तारा समझाई
परन्तु काल विवश नहिं भाया कथन उसका उसको वह आया
निकल बाहर, दोनों भिड़ गये दिखाते कला युद्ध के नये
एक दूजे को डालें मार इसी दृष्टि से करत प्रहार
लगे पड़ने सुकण्ठ कमजोर निहारत पुनि-पुनि प्रभु की ओर
राम ने देखा 'मीत हमार बहुत है पीड़ित, शत्रु प्रहार
अनवरत करता ही जा रहा मुष्टिका अब वाली ने जहाँ
दिया कि हो जायगा अन्त' विचारी सायक एक तुरन्त
निकाले साधे, अनुपम तीर चला वाली के हिय को चीर
दिया, गिर गया वहीं बलवान् न अब तक था जिसका प्रतिमान
समरभूमि में लहुलुहान जहाँ था वाली, कृपानिधान
वहीं आकर सम्मुख थे खड़े उठाकर सीस पड़े ही पड़े
कहा वाली कि 'छिपकर तीर आपने ही मारा, रघुवीर !
कवन कारण था ? क्या था वैर ? अनुज क्यूँ प्यारा ? मैं क्यूँ गैर ?
आपकी मति क्यूँ अस संकीर्ण ? आप तो धरम हेतु अवतीर्ण
हुये हो, वधे, वधत जिमि व्याध बताओ प्रभु ! क्या था अपराध ?'
बहुत कुछ कहकर जब वह वानर हुआ चुप तब राघव करुणाकर
लगे कहने 'जो तुमने कही बात वह तेरे लायक नहीं
जानते नहीं धर्म का मर्म किये जीवन भर निन्दित कर्म
चपलता वश मुझको उपदेश दे रहे हो, अब सुनो विशेष
दोष जिसके कारण वध तेरा हुआ, यह काम धर्ममय मेरा
अनुज की पत्नी सुता समान उसे निज अन्तःपुर में आन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


काम वश तूँ ने गले लगाया उसी का फल, हे शठ ! यह पाया
अवध के शासन से सुन सारा जगत शासित है अतः हमारा
धरम था यही कि जो तूँ पाप किया, दूँ दण्ड तुझे निष्पाप
बनाऊँ क्षत्रिय-धर्म हमारा न तुम हो गैर न वह है प्यारा
दूसरा दोष सुनो यह तोर अनुज सुग्रीव शरण है मोर
जानकर भी मेरा अपमान किये तूँ बात न स्त्री की मान
आ गये लड़ने तो मैं रक्षा करूँ इनकी यह हुयी अपेक्षा
अतः मैंने तुझको यूँ मारा रोष के कारण दोष हमारा
न देखो' अब उसकी मति विमल हो गई, बोला 'रघुकुलकमल !
आपने बातें जो जो कही ठीक सब, संशय तनिकहुँ नहीं
कहा जो भी प्रमादवश मैंने क्षमा कर दो प्रभु !' तब राघव ने
सीस पर कर सरोज रख दिया अभयपद वाली ने पा लिया
बड़ी ही सहज सरल वाणी से जोर दोनों कर बोला प्रभु से
'न चिन्ता मुझको नाहीं भय मरण से किन्तु यह है विनय
नहीं है चिन्त्य, पत्नी तारा उसे पद-पदुम तुम्हारा प्यारा
परन्तु अङ्गद पुत्र हमार जिसे मैं ने अति प्यार दुलार
सहित पाला, है वह गुणवान् हमारे जैसा ही बलवान्
आज से रक्षक उसके आप' कहा प्रभु ने 'हरीश ! सन्ताप
करो नहिं इसे न होगा त्रास रहेगा सुख से मेरे पास'
सुना फिर भावसहित कर जोड़ कहा हे राम... कि तन को छोड़
सिधाये प्राण, पीटती माथ आ गई तारा कहती 'नाथ !
छोड़ कर मुझे अकेली कहाँ गये, अब कौन हमारा यहाँ'
कही फिर प्रभु से 'हे रघुवीर ! अभी तरकस में तोरे तीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बहुत हैं बाकी, एक चलायें जहाँ पिय मोर मुझे पहुँचायें
मिलूँगी जा मैं पति से, पाप आपको होगा नहिं निष्पाप!'
विकल अति देख राम समझाये 'विधाता ने सब नियम बनाये
वही नियति ही सबका कारण मरण या जन्म कार्य या कारण
काल पर स्वयं काल का जोर न चलता, काल विवश ही तोर
समर विजयी बलशाली पति आज यह पाया है सद्गति
मानती हो किसको तुम वाली गया जो कर इस तन को खाली ?
नित्य है वह, तो फिर यह रुदन तुम्हारा क्यों ? देवि ! यदि वदन
आपका वाली, तो है आगे पड़ा हि, फिर विषाद केहि लागे
वीरपत्नि ! विचारि यह बात प्राप्त जो काज करो, नहिं गात
वीर का हो जायेगा व्यर्थ बचाने में नहिं कोई समर्थ'
पीटती छाती खोले केश रो रही थी जो, सुन उपदेश
राम का, सीस धरा पर धरे कही 'प्रभु ! आप अविद्या हरे'
बुलाकर अन्त समय में निकट कहा था वाली 'भाई ! विकट
नियति की चाल कि होइ अभिन्न दूर थे हम दोनों' सो खिन्न
खड़े थे श्रीसुकण्ठ, रघुराई पास आये बहु विधि समझाई
कराये वाली का संस्कार और फिर उनके सिर पर भार
दिये किष्किन्धा का, कपिकुल का, बने अङ्गद युवराज वहाँ का
सुखी थे अब सुकण्ठ धन धाम रुमा को पा, रक्षक जो राम
किये नेतृत्व लखन, हनुमान साथ थे सब में, अब भगवान

### ११. वर्षा-वर्णन

राम रघुवीर जगत् के आश्रय बिताने को वरसा का समय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मनोहर सुखदायी अति सुन्दर सजल भी और सुरक्षित कन्दर
प्रस्त्रवन पर विलोकि हरषाये वहाँ ही सानुज वास बनाये
गुफा के द्वार शिला चौकोर उसी पर बैठे अवधकिशोर
कहत भाई से 'देखहु तात ! तुङ्गभद्रा जो छहरत जात
किनारे पादप इसके खड़े पल्लवित पुष्पित सोहत बड़े
नदी इन सब से लगती ऐसी सहित सिंगार यौवना जैसी
जहाँ पर रहते वानर मीत दूर वह भी नहिं, क्योंकि गीत
नृत्य बाजे की ध्वनि सुनाई पड़ रही साफ यहाँ से भाई !'

जगह तो मिली बहुत अनुकूल बिताने को पावस, पर शूल
जानकी विरह जनित रह रह के व्यथित करता था, हिय को प्रभु के
न भावत पुरवा जब झकझोर बहत कहते 'सीता किस ठौर
कवन विधि होगी' सरसिजनयन सजल हो उठते थे, तब लखन
उन्हें समझाते 'धीरज धरें बिता वरसा ऋतु, उद्यम करें'
'बजत जैसे मृदङ्ग आवाज मेघ का, संग उसी के साज
बजे ज्यों दादुर की टर्राहट जोर से वारिस की है आहट
देख बादल, करि केका रोर नाचते पर पसार के मोर
थिरकती केकी चारो ओर उसी के, विवश काम के जोर
वरसने लगी घटा घनघोर अन्त हो गया ग्रीष्म का दौर
धरा की धूल हो गयी शान्त उल्लसित मिलते कान्ता कान्त
भ्रमर रूपी वीणा झङ्कार करत कतहुँ, कतहुँ जलधार
गिरत झरने का, लगत सुहावन चतुर्दिक छाया वन में सावन
प्रफुल्लित पादप विरुध लतायें उमड़ नदियाँ सागर को जायें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तिमिर से घिरती सभी दिशायें मेघ पावस का ऐसा छाये
पपीहा का जग विदित पिआस तृषित वह प्रिय पयोद के आश
उसे जब नीर जलद ने दिया रटत वह हर्षित 'पिउ पिउ पिया'
झरत झर-झर रस बूँद गजेन्द्र चलत वन में मदमत्त, गवेन्द्र
विचरते आनन्द मगन, मृगेन्द्र पराक्रम प्रकटत फिरत, नगेन्द्र
बड़ा ही सुन्दर लगत, नरेन्द्र विरत हैं रण से और सुरेन्द्र
साथ में लेकर के घन घटा खेलते हैं" यह अनुपम छटा
वखानत लछिमन से रघुराई 'प्रकृति पोषक, पावस ऋतु भाई !'

## १२. शरद्-वर्णन

'प्रौष्ठपद भी आश्विन भी बीत गया, प्रारम्भ हो गया शीत
ये पर्वत नदियाँ अरु आकाश स्वच्छ हैं, जलाशयों के पास
कर रहे क्रीड़ा चकवा सारस हंस भी, जो तजि आये मानस
चन्द्रमा की किरणें भी निर्मल हो गई हैं, सब नदियों के जल
वेग को छोड़ सिमट गये, घाम देह को देता अब आराम
धूप लगकर अब हुये विनष्ट राह के कीचड़ जो अति कष्ट
दिया करते थे, गमनागमन हो गया चालू शीतल पवन
लगा बहने यह सब पहचान शरद ऋतु का, खेतों में धान
पक गये, प्राप्त हुआ यह अवसर नृपतियों को करने का समर'
कहत सीता-वियोग दुःख जगा 'पता अब तक कुछ भी नहिं लगा
मिला वन मुझको पर सुख सारे अवध के छोड़ जगत से न्यारे
आ गई थी वन चकवी जैसे करत अनुसरण, यहाँ वह जब से
चुरा ली गई, न मुझको चैन लगत युग के जैसा दिन रैन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



इधर ये बीते चारो मास और अब तक मिलने भी पास
न आये कपिपति, नहिं उद्योग देखते उनका कुछ हमलोग
सियान्वेषण का उसने वचन दिया था, भूल गया क्या ? लखन !
अभी तुम किष्किन्धा को जाओ सुकण्ठ से मिलो उसे समझाओ
उसे बतलाना रोष हमार प्रतिज्ञा कर क्यों दिये विसार
गया है जिस मारग से वाली खुला है वह अब भी, नहिं खाली
हमारा बाणों से तूणीर समझ कर इसको वानरवीर !
करो नहिं वाली का अनुसरण, सियान्वेषण का जो हो जतन

## १३. *किष्किन्धा में लक्ष्मण*

करो' कहि राम उन्हें समझाये लखन किष्किन्धा कदम बढ़ाये
जगत के जितने जीव महान सुबुद्धि में, सब में हनुमान
श्रेष्ठ, समयोचित करि के काम ज्ञानियों में भी पहला नाम
धराये, वही केसरीनन्दन विचारे बैठ, राम रघुनन्दन
कीसपति का तो सारा काम कर दिये, पा दारा धन धाम
खो गये उसमें ही सुग्रीव भूल कर कि प्रभु काज अतीव
जरूरी है, सो आये वहाँ विराजे थे वानरपति जहाँ
मनोरम युक्ति सङ्गत बात कहे 'यश राज्य आपने प्राप्त
कर लिया बढ़ भी गया खजाना परन्तु शेष अभी अपनाना
मित्र को, अतः राम का काज पूर्ण कर करें सुरक्षित राज
यद्यपि राघव सर्व समर्थ परन्तु रख मिताई का अर्थ
बिताये पावस चारो मास प्रस्रवन पर, उनका विश्वास
डिगे नहिं, करिये ऐसा काम मीत हैं अति उत्तम श्रीराम'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे सुग्रीव 'सदा सहयोगी रहे तुम, अवसर से उपयोगी
दिये सत्परामर्श हनुमन्त! पठाई दूत विशेष तुरन्त
बुलाऊँगा चहुँ दिशि से वानर सहस्त्रों की संख्या में आकर
सिया की खोज करेंगे वे सब' किये फिर वही कहे जैसा, तब
आ गये लखन करत ज्या-घोष पुरी के द्वार, बढ़ा था रोष
कहे 'मैं अभी पुरी को जार बना दूँगा पल भर में क्षार'
रोष के कारण रूप भयङ्कर हुआ था, पुर रखवाले बन्दर
काँपते हुये वहाँ से भागे आ गई तारा सम्मुख, आगे
किये अङ्गद को कहि 'रघुराई हमारे रक्षक' शीश झुकाई
देख कर तारा को, नतमस्तक हो गये लछिमन, जिनका अबतक
रोष के कारण तेज असह्य हो रहा था, बोले 'कर्तव्य
मित्र के प्रति क्या होत भुलाकर विषय भोगों में पत्नी पाकर
लिप्त हैं वानरेन्द्र सुन तारा! उसे कुछ भी नहिं सोंच हमारा'
'यद्यपि है सुकण्ठ की जात वानरों की विषयी, पर बात
नहीं ऐसी कि प्रभु का काज भुला बैठे हैं वानरराज
बुलाने को वानरदल भेज दिये हैं चर कई, समय सहेज
कृपा करि तजिये रोष कुमार! आज ही सम्भवतः वह वार
चतुर्दिक् से जब सारे वानर पधारेंगे, फिर दिशि दिशि जाकर
करेंगे सिय की खोज' बताई सभी बातें फिर लेकर आई
महल में उनको तारा वहाँ रुमा संग श्रीसुकण्ठ थे जहाँ
रमणियों में घिर क्रीड़ासक्त, निहारी कपिपति को प्रभु भक्त
लखनलाला बहु विधि फटकार सुना बोले 'सुन बात हमार
सत्यवादी कुलीन अरु धीर इन्द्रियजयी दयालु वीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नृपति ही, जग में है यश पाता परन्तु जो नहिं वचन निभाता
मित्र को दिया हुआ वह क्रूर अधर्मी नृप, यश उससे दूर
बनो नहिं वानरराज ! कृतघ्न सियान्वेषण का शीघ्र प्रयत्न
करो, नहिं प्रभु के तीखे बाण तुम्हारे भी हर लेंगे प्राण'
कहा कपिपति ने अब 'नरश्रेष्ठ ! हमारे प्रतिपालक हैं ज्येष्ठ
आपके, सब विधि समरथ राम मुझे देकर सहाई का नाम
किये कृतकृत्य, कहाँ मैं वानर कहाँ वे प्रभु त्रैलोक्य उजागर'
देखकर विनयशीलता लखन कहे 'सुग्रीव ! आपके वचन
बड़े ही उत्तम युक्तिसङ्गत वीर होकर भी विनयावनत
आप हैं, प्रभु के योग्य सहायक हमारी बातें जो दुःखदायक
हुयी हों, उसे क्षमा कर आप चलें जल्दी जहँ प्रभु निष्पाप !'

## १४. प्रस्रवण पर सुग्रीव-राम सम्वाद

प्रस्रवन पर अब दोनों साथ आ गये जहँ प्रभु कोशलनाथ
चरण में सिर धरि किये प्रणाम कीसपति, तब बोले श्रीराम
'धरम आदि का सेवन जो जन समय का करके उचित विभाजन
किया करते हैं वही महान् परन्तु जिसने काम प्रधान
किया, उस पर यह बात प्रयुक्त कि तरु की शाखा पर वह सुप्त
जागता गिरने के पश्चात् धरम अरु अरथ काम फल प्राप्त
तभी होता जब इन्हें निभाते समय से हम' कह इतनी बातें
कहा राघव ने 'आया अवसर सियान्वेषण का मीत ! सुहृदवर !
बनेगा कैसे काम हमार वानरों से मिल करें विचार'
कहा कपिपति ने 'प्रभु ! उपकार आपका मुझपर, प्रत्युपकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



करूँगा मैं क्या, सेवा हेतु रहूँ चरणों में आप अहेतु
कृपा करने वाले हो नाथ! देखिये ये वानर दल साथ
हमारे जाम्बवान, शतबलि, रुमा के पिता, ये अनुपम बली
केसरी, तारा-पिता सुषेन सबहि के संग अगणित कपिसेन
असम्भव सबके नाम बताना अभी प्रारम्भ हुआ है आना
सभी दुर्गम वन बीहड़ ज्ञाता लाँघते जल, थल, नभ सुरत्राता!
उचित जो हो करिये निर्देश' तभी चहुँ दिशि वन प्रान्त विशेष
घोष से गूँजा 'प्रभु की जै हो समर्पित हम हैं, जो भी कहो'
कहा कपियों ने, सुन रघुराई दया दृष्टि चहुँ ओर घुमाई
विलोके, समझे सारे वानर किये प्रभु नेह पास में आकर
प्रहर्षित सब, तब बोले राम 'मित्रवर! तुम तो मेरा काम
जानते भली-भाँति निर्देश करो तुम, तुम हो विज्ञ विशेष'
परम सौहार्द्र और विश्वास पूर्ण थी बात, कीसपति पास

## १९. सीता की खोज में सिन्धु तट पर वानर सैन्य

खड़े जो विनत नाम के वानर भली-भाँति उनको समझाकर
कहे 'तुम पूरब दिशि में जाओ सदल बल, सिय का पता लगाओ'
दखिन दिशि अङ्गद, पश्चिम ओर पठाये श्रीसुषेन को और
शतबलि को उत्तर में भेज दिये, करना क्या उन्हें सहेज
जा रहे थे जब सारे वानर कहाँ क्या कैसे पथ बतलाकर
सबों से वानरेन्द्र ने कहा 'सभी जन एक माह में यहाँ
लौट आयेंगे' यूथप चारो गये, थे संग सहाय हजारो
दखिन दिशि को जब सब प्रस्थान कर रहे थे कपि, तब हनुमान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गमन से पहले आइ प्रणाम किये जब रघुवर को, तब राम
कहे 'यदि तुम सीता के पास पहुँच भी गये किन्तु विश्वास
करेंगी वह कैसे, इसलिये इसे लो' कह अंगूठी दिये
लिखा था जिस पर उनका नाम सकल भव रुज नाशक श्रीराम
हुये हर्षित कपि नाई शीश चले कहि 'जयति कोशलाधीश'
सबों के जाने के पश्चात् मीत से अपने श्यामलगात
कहे 'यह अचरज की है बात समचे भूमण्डल का ज्ञात
आपको है भूगोल, बतायें कहाँ से परिचय सारा पाये'
कहे सुग्रीव 'सुने रघुराया! कि कैसे परिचय मैंने पाया
कभी वाली के भय से डरकर समूची पृथ्वी का मैं चक्कर
लगाने को था विवश पुरुषवर! मिला था तभी मुझे यह अवसर'

पठाये जो सुगण्ठ ने वानर पूर्व पश्चिम उत्तर में जाकर
सबों ने बहु विधि पता लगाया परन्तु कोई पता न पाया
अवधि भी जो सुग्रीव प्रदान किये थे बीता, वास-स्थान
मिला नहिं उस राक्षस का जिसने किया था सिया हरण तब सबने
विचारा, 'चलो लौट' पुनि आये मिलीं नहिं वैदेही बतलाये
दखिन अङ्गद संग जो हनुमान तार अरु जामवन्त बलवान
सरिस कपि रीक्ष हजारो गये सियान्वेषण में ही मन दिये
खोजते फिरते थे गिरि कानन इसी क्रम में अगस्त्य का पावन
परम सुन्दर आश्रम जो दूजा यहाँ था मिला, विनत हो पूजा
किये सब, फिर जब आज्ञा मांगे 'बढ़ें हम और दखिन में आगे ?'
दिये मुनि आशिष 'कारज सफल करोगे तुम सब' तुरतहि उछल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बढ़े कपि विन्ध्याटवी बनाये खोज का थल, पर पता न पाये सिया का, आगे किये पयान जहाँ, वह अति दुर्गम सुनसान देश था, पर अदम्य उत्साह युक्त थे कपिगण यद्यपि राह कठिन था, देखत झाड़ी शिखर गुफायें गिरि की पादप लतर घने जो, सब में खोजत सिया अचानक असुर आक्रमण किया एक कोई, तब रावण जान उसे अङ्गद ने मुक्का तान वक्ष पर मारा, गिरकर वहीं मरा वह 'पर यह रावण नहीं' कहत सब आगे को चल दिये बहुत भाँति अन्वेषण किये मिली नहिं सिया, थके अरु हारे विकल हो क्षुधा प्यास के मारे सभी वानर बैठे मन मार कहीं नहिं जल फल का आसार विचारत, सूख रहा है गला बढ़े अब आगे अञ्जनिलला देखने लगे पेड़ पर चढ़कर दिखे जो कतहुँ कूप सरोवर तृषा हो शान्त, दिखाई पड़ा गुफा सा भूमि में विल बड़ा विविध जल पक्षी उसमें जाते निकलते जो कुछ पंख सुखाते जलाशय है ऐसा अनुमान हुआ, फिर सबको ले हनुमान गये, था जहाँ गुफा का द्वार भयङ्कर था, था बड़ा अन्हार न हिम्मत हारे किये प्रवेश विवर में, जहाँ हुआ पथ शेष चतुर्दिक था प्रकाश, निर्मल सर भरे थे जल से, बहु विध तरुवर फूल फल युक्त, भवन भी भव्य उपष्कर सहित बहुत ही रम्य परन्तु सून, तनिक दूरी पर बनी थी वेदी उसके ऊपर तपस्या रत थी वृद्धा नारी तेज से दीपित वल्कलधारी नाम था स्वयंप्रभा, अति विनय सहित उससे ही अञ्जनितनय किये जा प्रश्न 'दिव्य उद्यान भवन सब स्वर्णिम किसका स्थान ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बहुत ही हैं हम सभी पिआसे पियें जल' आज्ञा मांगे उनसे
तुरत हि वृद्धा नारी बोली शब्द में जैसे मिसरी घोली
'भवन सर स्वर्णिम वन उद्यान मयासुर का यह सब निर्माण
अप्सरा हेमा से जब प्यार किया उसने करि वज्र प्रहार
भगाये इन्द्र यहाँ से उसको, यहाँ का सब वैभव हेमा को
दे दिये सृष्टिकर्ता फिर वह गई विधि लोक, मुझसे यह कह
'सुरक्षा करना इसकी आलि!' तभी से करती हूँ रखवाली
पिओ जल, मीठे फल हैं खाओ पुनः मेरे समीप जब आओ
बताना तब अपनी सब बात' गये सब वानर हरषित गात
पिये जल और मधुर फल खाये थकावट मिटी वहीं फिर आये
जहाँ वह तापसी तप में लिप्त पूछने पर उत्तर संक्षिप्त
दिये कपि 'सीता रघुवर-प्रिया उन्हें वन बीच चुरा है लिया
असुर कोई, हम खोजन आये उन्हीं को, कपिपति हमें पठाये
छानते गिरि कानन हम विकल बहुत ही थे पिआस से, जल
कहीं नहिं मिला, विवर में आये पिओ जल कहकर प्राण बचाये
आपने सबके, प्रत्युपकार करें क्या कहिये' तब वह नार
तापसी बोली 'मुझे प्रयोजन नहीं कुछ से बस अम्बुजलोचन
राम मेरे उपास्य, पर जाना विवर से दुष्कर, जैसे आना
कठिन था, पर अपने तप बल से निकालूँगी सबको, निज कर से
मूँद लो अपनी आँखे' तुरत किये सब आँख बन्द, पल गिरत
विवर से बाहर कपिगण आये सामने गरजत सिन्धु पाये
स्वयं फिर गई जहाँ रघुराई दरश करि प्रभु के अति हरषाई
गई बदरीवन आज्ञा पाकर राम से, सिन्धु तट पर वानर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हुये बड़े चिन्तित, वालितनय कहे 'जो कपिपति हमको समय दिये थे बीत गया, सुधि पाये नहीं हम सीता का, फिरि जायें अगर किष्किन्धा, वानरराज वधेंगे निश्चित क्योंकि काज हुआ नहिं पूरा अतः यहीं अब तजूँगा प्राण' भयातुर थे सब सभी ने अङ्गद का अनुकरण किया 'हम सब भी अब आमरण करेंगे अनशन' कहि चहुँ ओर बिछा कुश बैठे, तब सुन शोर 'मरूँगा' का निकले सम्पाति जटायु के अग्रज, थी जाति गीध की जिनकी बोले 'वानर मरेंगे क्रमशः इनको खाकर भरूँगा पेट, दैव आहार दिये मुझको कुछ कर्म हमार अवसि अच्छे थे' उनकी बात सुने सब वानर तत्पश्चात् पवनसुत से अङ्गद ने कहा 'गीध ही तो था वह भी वहाँ दण्डकारण्य बीच जो प्राण दे दिया प्रभु हित, जीव महान् जटायु था, हमसे तो कुछ भी बना नहिं मरणोन्मुख हैं' तभी जटायु का सुन प्यारा नाम कहा सम्पाति ने कि 'काम नहीं अब भय का मुझसे, आओ जरा मेरे समीप बतलाओ जटायु को किसने क्यूँ मारा ? अनुज था मुझे प्राण सम प्यारा कौन तुम ? कैसे आये यहाँ ? मरण को उद्यत हो क्यों ?' कहा पुनः उस खग ने 'हूँ लाचार यहाँ से मुझको आप उतार बतायें मुझसे सब वृत्तान्त कहूँगा मैं भी अपनी बात' उतारी अङ्गद सारी कथा ज़टायु-वध की, प्रभु से यथा वानरों की है हुयी मिताई तथा काहे यह कपिदल आई यहाँ है मरणोद्यत, बतलाये गीध को सिन्धु-तट पहुँचाये जला पर, कैसे सकल कहानी सुना खग दिये अनुज को पानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पुनः अपना सारा वृत्तान्त कहे 'मैं भी तब निज प्राणान्त चाहता था करना कि आये निशाकर मुनि, मुझको समझाये 'करो नहि चिन्ता तेरी आँखें ठीक हो जायेंगी अरु पाँखें निकल आयेंगे, कब ? ये बात सुनो, सब लोकों में विख्यात अवध भूपति दशरथ के ज्येष्ठ तनय होगें राघव नर-श्रेष्ठ मिलेगा वन उनको, रघुराई सियानुज के संग वन में आई रहेंगे, वहीं सिया की चोरी करेगा असुर, मित्रता जोरी वानरों से अन्वेषण हेतु सिया के कपिदल रघुकुलकेतु पठायेंगे जो, वानर सारे यहीं आयेंगे उदधि किनारे उन्हें तुम सिय का पता बताना, जमेंगें पंख, कहीं नहिं जाना' निशाकर मुनि ने जो जो कहा सुना सम्पाति बोले 'यहाँ तभी से तुमलोगों की आश देखता था उर में विश्वास लिये, अब सुनो असुर वह नीच चुरा कर सिय को लङ्का बीच रखे है तरु तर मुझे दिखाई यहीं से पड़ता है, पर भाई ! दिखा सकता तुझको तो नहीं परन्तु मुनि की बातें कही पड़ी परतीत मुझे, तुम साहस करो तो अन्वेषण का सुयस मिलेगा तुम सब को ही' कहकर उड़े गये सम्पाति, तब बन्दर बैठ कर सागर तीर विचार लगे करने ज़लनिधि के पार निशाचर की नगरी में जाये कवन, सब निज-निज गति बतलाये कहे फिर बढ़कर भालूपति 'छलाँगे भरने की अब गति शेष है नब्बे योजन मेरी नहीं बल पहला, जबकि फेरी किया इक्कीस, त्रिविक्रम रूप किये थे हरि वामन सुरभूप' बताये बल निज वालिकुमार 'चला जाऊँगा मैं तो पार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परन्तु ताकत तन में यही वापसी में हो निश्चय नहीं'
कहे झट जाम्बवान 'युवराज ! बना दल का अगुआ कपिराज
पठाये हैं तुम प्रेष्य हमारे नहीं हो सकते, पवनदुलारे

## १६. हनुमान का समुद्र-लङ्घन

अभी हैं बाकी देखो शान्त वहाँ बैठे वे लहि एकान्त
उन्हीं के वश में कपियों का हित' किये फिर जाकर के उत्साहित
पवनसुत को 'तुम साधे मौन यहाँ क्यों बैठे, कारज कौन
कठिन तुझको, तुम तो बड़भागी जनम तेरा प्रभु कारज लागी
उठो कर जाओ सिन्धु पार सिया-सुधि लाओ, कपि-दुःखभार
हरो, देखों ये सारे बन्दर देखते मुँह तेरा' तदनन्तर
हुआ बल याद, राम का चरण सुमिर हनुमान बड़ों को नमन
किये, जब ले ले कर अंगड़ाई बढ़ाये तन विराट् कपिराई
किलकने लगे देख सब वानर गरज बोले कपि 'क्या यह सागर
अभी में इसे लाँघ कर जाऊँ उपारी लङ्का ही ले आऊँ
यहीं, वधि रावण को कुछ क्लेश मुझे नहिं करें उचित उपदेश
कहे तब जामवन्त 'हे वीर ! वधेंगे खल को श्रीरघुवीर
करो इतना बस लङ्का जाओ सिया-सुधि लेकर वापस आओ'
शिखर पर चढ़ि तब गर्जन किये वहाँ से ही छलांग भर दिये
परम प्रिय नाम राम हिय जपत पवनसुत उदधि ऊपर उड़त
चले जब सागर किया विचार 'सगर ने किया मोर विस्तार
उन्हीं के वंशज, प्रभु का काज जा रहे हैं करने कपिराज
तथा अतिथि भी आज हमार अतः कर्तव्य करूँ सत्कार'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तुरत ही जो जल के ही मध्य छिपे थे गिरि, उनको करि लक्ष्य
कहा 'मैनाक ! उठो दो स्थान इन्हें' गिरि बढ़ बोले 'हनुमान !
आपको सागर ने सम्मान किया यह, मारग जनित थकान
मिटालें क्षणभर रुक कर यहाँ' परस करि कपि ने उनसे कहा
'बिना प्रभु कारज किये थकान मुझे नहिं तनिकहुँ गिरिवर ! मान
तुझे भी यह' बोलत कपिराई बढ़े जब सम्मुख सुरसा आई
पठाये थे सुर, कपि को थहाऊँ अतः आ बोली 'तुमको खाऊँ'
कहे कपि 'जनकलली का पता लगा, पुनि रामचन्द्र से बता
अवसि अइहौं तव मुख में मात ! न रोको मुझे अभी तुम जात'
न मानी मुख अपना फैलायी हुये कपि दूने खा नहिं पायी
बढ़ायी मुख पुनि पवनकुमार बढ़ाये तन, क्रम बारम्बार
चला यह, सौ योजनपर्यन्त बढ़ी जब, तब लघु रूप तुरन्त
किये कपि, मुख के अन्दर जाकर निकल आये अरु माथ नवाकर
विदा माँगे सुरसा तत्काल कही 'बल बुद्धि तोर विशाल
केसरीनन्दन ! जल्दी जाओ सिया को प्रभु से शीघ्र मिलाओ'
चले फिर आगे सिंहिका मिली पकड़ ली छाया जल में छली
हुयी गति मन्द तो किये विचार महाकपि, अब यह कौन हमार
बना पथ बाधक ऊपर नीचे निहारे इत उत, जल के बीचे
दिखी निशिचरि भयङ्कर तन था समझ गये कि इसकी ही कथा
सुनाये थे सुग्रीव, तुरन्त किये घातक प्रहार और अन्त
कर दिये उसका, ऊपर उठकर वेग से बढ़े तो जितने नभचर
वहाँ थे, सब ने ही सत्कार किया उनका, करि जै जै कार
कहत 'वधि इसको जग का भला आपने किया अञ्जनिलला !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दक्षता, धृति, मति, दृष्टि उत्तम तुम्हारी, निश्चय तेरे कदम सफलता चूमेगी' यह सुनते पवनसुत अम्बर-पथ पर उड़ते

## १८. लङ्का-प्रवेश

पहुँच गये, सागर के उस पार दखिन तट पर, गिरि शृङ्ग निहार एक उत्तुङ्ग, महाबलधाम खड़े हो गये बोल 'श्रीराम' वहीं से रावणपुरी निहार विचारे क्या कर्तव्य हमार हुयी जब रात रूप लघु धरी पहुँच गये लङ्का, तब निशिचरी लङ्किनी बोली 'सुन रे बन्दर जा रहा है क्यों कैसे अन्दर यहीं पर जबकि मैं हूँ खड़ी' हने मुक्का भू पर गिर पड़ी चोट से व्याकुल थी वह फिर भी कही 'ब्रह्मा ने मुझसे कभी कहा था 'खा बन्दर से मार विकल हो जाना तब संहार समझ लेना है होने वाला शीघ्र हि असुरों का' विधि वाला कथन वह सच होने को आया प्रतीति हुयी मुझे कपिराया ! नियम विधि के नहीं टारे टरे चाहते हैं जो करना करें बड़ी बड़भागिनि मैं कि पाई दरस तोरी, अब श्रीरघुराई सुमिर पुर पइठो' सुन हनुमन्त वहीं से कूदे और तुरन्त पहुँच गये पुर में लाँघि हाता खोजने लगे, कहाँ हैं माता इसी क्रम में क्या कैसा कहाँ उन्होंने देख लिया सब वहाँ पुरी पूरी, मन्दिर मग गली विलोके पर नहिं सीता मिली दशानन का वह सुन्दर भवन नारियों के संग निद्रा मगन जहाँ था भी देखे, वैदेही मिली नहिं उन सब में थीं नहीं मनोहर भव्य एक पर्यङ्क वहाँ था, जिस पर रहित कलङ्क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चन्द्रमा जैसी शोभाखानि नींद में रावण की पटरानी
पड़ी थी साभरणा, हनुमान उसे ही क्षणिक जानकी मान
हरष उठे किन्तु, तुरत विचार किया कपि ने यह मात हमार
नहीं हैं, क्यों ? रविकुल रवि जहाँ नहीं, खिल सके कमलिनी तहाँ
सिया नामक, यह सम्भव नाहिं कहाँ फिर ? प्रश्न विविध मन माहिं
लगा उठने, क्या उनका अन्त हो गया' तब कपि को अत्यन्त
खिन्नता हुयी सोंच यह बात वहाँ से निकले तो अब प्रात
हो रहा था, वे आगे बढ़े भीत पर 'राम-राम' अस पढ़े
वेदियाँ कई पास थीं बनी लगी थी जिनमें तुलसी घनी
वहाँ कपि एक ओर हो खड़ा सोचने लगे 'भवन यह बड़ा
मनोहर, देवालय भी हरि का बहुत ही सुन्दर, पर यह लंका
असुर नगरी, हरि पद अनुरक्त यहाँ है कैसे कोई भक्त'
अनुज छोटा रावण का तबही जगा श्रीराम राम यह कही
सुना कपि ने जब प्यारा नाम समझ गये इससे मेरा काम
सधेगा, द्वारे जाकर टेर लगाये तुरत, हुयी नहिं देर
विभीषणजी दरवाजा खोले बड़ी मीठी वाणी में बोले
'कहो भैया ! तुम कैसे आये ? कवन हो ?' कपिवर तब बतलाये
'भगतजन मन रञ्जन का दास तुझे हरि-जन जानी मैं पास
तुम्हारे आया' सुनत विभीषण बिठाये बोले 'कपिकुलभूषण !
असुर-तन तामस, प्रभु पद प्रीति न पावन मन में, बस परतीति
लिये भजता हूँ प्रभु को कीस ! दया करि दरश कोशलाधीश
अवसि देंगे, जीवन यह धन्य बनेगा' कह कपि 'भाव अनन्य
लिये जो जन हैं प्रभु को भजते कृपालु उसे शरण में रखते'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


करत प्रभु चर्चा, सीता कहाँ कवन विधि हैं, लङ्का में यहाँ पहुँचना उन तक सम्भव कैसे विभीषण बतलाये, तब उनसे

## १८. सीता-हनुमान सम्वाद

विदा माँगी अशोक वन गये वहाँ पर माँ का दर्शन किये शिंशपा तरु तर बैठी थीं वह बड़ा दुस्सह था प्रभु का विरह मलिन थे वस्त्र, अनवरत नीर बह रहे थे, कनकाभ शरीर बहुत ही कृश था, चारो ओर भयङ्कर निशिचरियों का शोर हो रहा था 'तुझको खा जाऊँ असुर-पति की जो आज्ञा पाऊँ' वहाँ वह फिर भी शोभाधाम दिखायी देती थीं, श्रीराम एक ही ध्येय गेय थे उनके बड़ी श्रद्धा से सादर माँ के चरण में कपि ने किया प्रणाम दूर ही से, फिर वे बलधाम बहुत हि सघन डाल में छिपकर विलोके, मुझसे जो जो रघुवर बताये थे सारे पहचान इन्हीं में हैं, इनके तो प्राण राम हैं, बस दरशन की आश ढो रही हैं ये अपने साँस हुआ दृढ़ निश्चय ये हैं सीता नारियों की आदर्श पुनीता कवन विधि जाऊँ उनके पास कि ये कर लें प्रतीति, हूँ दास राम का, तभी स्त्रियों को साथ लिये सीता समीप दशमाथ आ गया बोला 'सुन्दरि ! बात सुनो मेरी, वह मानुष जात यहाँ आ सकता कबहूँ नहीं तुम्हारा राम, मान ले कही रखा ही क्या है उसमें सीता ! मनुज वह हीन राज्य से रीता सुमुखि ! सुश्रोणि ! भीरु ! हेर मुझे बस उठा नजर इक बेर इन्हें देखो ये सब हैं रानी बनो इन सब पर तूँ पटरानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नहीं तन तेरा दुःख के जोग अतुल सम्पत्ति अनुपम भोग तुझे दूँगा' तब जनककुमारी तुरत तृण भू से एक उपारी करीं खल के अरु अपने बीच तथा फटकारत बोलीं 'नीच! निशाचर! अधम! पर-स्त्री हर्ता! जिन्हें तूँ कहा मनुज, वे भर्ता परम प्रिय मेरे, रविकुल-रवि राम, तेरी जुगनू सी छवि देख कर कुटी सुन हर लाया मुझे तूँ, पर ज्यों ही रघुराया सुनेंगे मैं हूँ लङ्का मध्य अगम सागर भी होगा गम्य वधेंगे तुझको आकर यहाँ" सिया ने ज्यों ही ऐसा कहा डपटते हुये खींच तलवार बढ़ा खल 'तुझे अभी ही मार किये देता हूँ किस्सा अन्त तुम्हारा, समझाकर अत्यन्त थका मैं' तब बोलीं फिर सिया 'परिश्रम विरथा तूँ ने किया अतुल सुख साधन युत पितु गेह, ससुर-गृह जहँ निधि वरसत मेह जगत विश्रुत दोनों ही धाम तजी मैं, क्योंकि कोटिन्ह काम लजावनहारे रघुकुलचन्द, चकोरी उनकी मैं रे मन्द! समर्पित तन मन उनके लिये उसी मुझ सीता को तूँ दिये प्रलोभन, धिक् धिक् रे दशशीश! सुनो प्रभु-भुज ही मोर उसीस मिलेंगे यदि नहिं वे चितचोर हरे तब यह कृपाण ही तोर विरह प्रभु का' कहि के वैदेही हुयीं चुप तब बोलत 'नहिं नहीं' रोक ली मन्दोदरी कि 'नाथ! उठायें आप न इन पर हाथ' विविध बातें कहि उसे निवारी गरज बोला पुनि पापाचारी 'अरी राक्षसियो! जैसे भी हो डरा समझा कर इससे कहो करे स्वीकार हमारी बात नहीं तो एक माह पश्चात् अवसि वध दूँगा' कहि मनुजाद गया निज गृह को, इसके बाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विकट राक्षसियाँ आँख तरेर डराने लगीं सिया को घेर
डराकर कहती थीं सब यही 'अरी तूँ असुरेश्वर की कही
न मानी बात, तुझे हम अभी चबा जायेंगी कच्चे' तभी
आ गई त्रिजटा, वह निशिचरी बड़ी थी नेक विपत्सहचरी
सिया की, उसने आकर कहा 'अरी निशिचरियो ! आओ यहाँ
अभी देखा है मैंने सपना नगर यह सोने का जो अपना
इसे कपि कोई दिया जलाय रो रहे हैं सब करि के हाय
विखण्डित हुयीं भुजायें बीस असुरपति की, वे मुण्डित सीस
दखिन दिशि को कर रहे पयान, यहाँ पर आया एक विमान
जुते हैं जिसमें सुन्दर हंस उसी से हंस वंश अवतंश
पधारे राम अनुज के सङ्ग सोहते जनु रितुराज अनङ्ग
विभीषण के हाथों में देकर यहाँ का राज्य, सिया को लेकर
गये उत्तर दिशि को रघुवीर अतः अब कटु वचनों से पीर
इन्हें दो नहीं, सत्य ये सपना अगर मन से भल चाहो अपना
चरण में गिर कर मांगो क्षमा क्षमाशीला अनुपम ये रमा'
डरीं सब, गिर गिर सिय के चरण गईं जब, रावण के दुर्वचन
सिया के हिय को अतिशय पीर लगे देने, मन हुआ अधीर
लगीं रोने 'इस तन का काम रहा क्या अब, प्रियतम ! श्रीराम !
आ रही हूँ चरणों में छोड़ इसे' यह देख अञ्जलि जोड़
सीस से, बोले पवनकुमार 'स्वजन रक्षक श्रीराम उदार'
श्रवण में राम नाम की ध्वनि अमिय सम पड़ी विरुद से सनी
तथा फड़के भी शुभप्रद अङ्ग हुयीं दोनों बातें इक सङ्ग
हरष कुछ, कुछ भय से अकुलाई सिया ने कहा 'कौन हो भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लिया किसने यूँ प्रभु का नाम, हुये अथवा फिर से विधि वाम'
सिया की देख अपरिमित व्यथा बड़ी कोमल वाणी में कथा
राम की अथ से अब तक सारी सुना कपि बोले 'मुझे खरारि
पठाये हैं, आया हूँ पास आपके, मानहु माँ! विश्वास'
उतर तरु से वानरकुल दीप आ गये जब जानकी समीप
सशङ्कित होकर आपद्गता मुड़ गईं, तब अपनापन जता
कहे कपि 'माँ! प्रभु रविकुलकेतु चला जब मैं प्रतीति के हेतु
दिये हैं, यह मुद्रिका उतार स्वयं निज कर से, इसे निहार
तजें भ्रम, मैं सेवक हनुमान राम का, तब प्रभु का प्रिय जान
फिरीं वैदेही कपि ने दिया अंगूठी प्रभु की, पाकर सिया
हुयीं हर्षित मुख अम्बुज खिला मानहु पिय का दर्शन मिला
पूछने लगीं पुनः 'कपिवीर! कुशल से तो हैं श्रीरघुवीर
अनुज के साथ, मुझे भी याद कभी करते हैं?' तब सम्वाद
कहे कपि, प्रभु का 'तुझ बिनु सीते! कहूँ क्या कस दिन रैना बीते
तुम्हारे बिन जग लागत सून मनोहर किसलय विविध प्रसून
कभी जो देते थे आह्लाद तुझे, अब उनको देख विषाद
मुझे तेरे वियोग से होता, कुशल से हूँ पर मन है रोता'
विरह विकला सिय को अकुलात लखे कपि, बोले 'अम्बा! बात
सुना हूँ सब, खल ने जो अवधि दिया है पर वह परमावधि
उसी के जीवन की है, धीर धरें अब बस कुछ दिन, रघुवीर
यहाँ आयेंगे खल को मार करेंगे शीघ्र तोर उद्धार'
कहे आगे 'माँ! मुझको भूख लगी है बड़ी जोर, ये रूख
फले हैं यदि आज्ञा दें, जाऊँ उछल तोड़ूँ फल मीठे खाऊँ'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



'भयानक महाकाय बलशाली असुर इस उपवन की रखवाली
सदा करते हैं' बोलीं सीता परन्तु मन में थी यह चिन्ता
'छुधित सुत क्या मैं इसे खिलाऊँ फले फल पर किस भाँति पठाऊँ
बहुत प्यारा यह तन से छोट विकट निशिचर सब मति के खोट'
समझ कर मनोभाव हनुमान विचारन लगे मुझे लघु जान
अम्ब हैं असमञ्जस में पड़ी अतः यह ही है समुचित घड़ी
दिखाकर दानव दलन शरीर हरूँ जो मन में स्नेहिल पीर
उठा है, तुरत खड़े ही खड़े हो गये पर्वत जैसे बड़े
विलोकि कपि पुङ्गव को सीता कहीं 'सुत ! जाओ तनिकहुँ चिन्ता
मुझे अब नहीं तुझे जो इष्ट मधुर फल खाओ, लहो अभीष्ट'

### १९. लङ्का-दहन

तुरत सिय-पद-रज राखे सीस चले, कहि 'जयति कोशलाधीश'
उछरि तरु पर चढ़ि पवनकुमार अभी खाये थे फल दो चार
तभी आ उपवन रक्षक घेर लिये, बोले 'ले लगुड खदेर
भगाओ, देखो वह है वानर सुनत कुछ असुर उठाये पाथर
उठाये कुछ अपने हथियार लगे करने कपिवर पर वार
जगा तब रोष, पेड़ की डाल तोड़, असुरों को अञ्जनिलाल
हताहत कर डाले, दो एक बचे जो भागे, जा सिर टेक
कहे रावण से 'रक्षा करें हमारी, बाकी सारे मरे'
कहा रावण ने 'सारी बात बताओ पहले, यह उत्पात
मचाया किसने ?' सारी कथा सुना जब, उसको अतिशय व्यथा
हुयी, आखों से आँसू बहा बुला फिर वीरों को वह कहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


'अरे ओ किङ्कर नामक वीर ! सभी अस्सी सहस्र रणधीर
अभी जाओ, प्रमदावन घेर पकड़ लो वध दो कपि को देर
करो नहिं' झट असुरों ने जाकर बगीचा घेर कहा 'रे वानर !
दिखा आ शौर्य सामने' सुनकर उठा इक परिघ लौह का कपिवर
लगे करने भीषण संहार, गरज पुनि पुनि 'श्रीराम हमार
सदा विजयी, विजयी हैं लखन तथा विजयी कपीश जो शरण
राम के हैं, जग में प्रतिमान नहीं राघव का, मैं हनुमान
पवनसुत, शत्रु सैन्य निहन्ता सदा रघुवर की सेवा करता
समर में एक नहीं इक साथ अगर आये दश शत दशमाथ
टिकेगा नहीं, हजारो हजार शिला से तरु से जबकि प्रहार
करूँगा मैं, पुनि लङ्का पुरी समूची रौंद, सिया पद धूरि
चढ़ाई सिर पर सकल अभीष्ट साधते हुये, जहाँ हैं इष्ट
चला जाऊँगा, सबके आछत' करत यूँ गर्जन सेन संहारत
महाकपि ने कर डाला नष्ट चैत्यप्रासाद, सुना जब कष्ट
हुआ रावण को, क्रमिक पठाया असुर बहुतेरे किन्तु सफाया
किया कपि ने अब अक्षय वीर आ गया, था यद्यपि रणधीर
परन्तु उसका भी जब नाश हुआ तो मेघनाद को पास
बुला बोला रावण 'सुत ! जाओ पकड़ उस वानर को ले आओ'
चला तब सुरपतिजेता आया जहाँ प्रमदावन में कपिराया
मचाये थे भीषण उत्पात निशाना साधि-साधि आघात
लगा करने, पर पवनकुमार विफल कर डाले सारे वार
चलाया फिर सारे दिव्यास्त्र क्रमिक पर विरथा, जब ब्रह्मास्त्र
निकाला तब कपि किये विचार 'जदपि इससे कुछ अहित हमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



न होगा, फिर भी इसका मान रखूँगा' ज्यों ही सोंचे बाण लगा आ झटिति 'कोशलाधीश आपकी जै हो' कहि के कीस धरा पर इस भाँति गिर गये मानहु बन्धन में फँस गये निरख यह निशिचर सब नजदीक पवनसुत के आकर निर्भीक-मना कसि-कसि रस्सी से बाँधे, विवश जस थे वे चुप्पी साधे सहत असुरों की गाली मार उधर वह राक्षस राजकुमार खड़ा था खिन्न 'असुर ये मेरे किये पर मेरा पानी फेरे चला ब्रह्मास्त्र इसे तो मैंने बनाया था बन्दी, इन सब ने मंगा साधारण रज्जु पुनः इसे जो बाँधा इस कारण वह हुआ निष्फल, लेकिन यह ज्ञान नहीं है कपि को, अपना गात बँधा उस दिव्य अस्त्र से जान पड़ा है, इसका यह अज्ञान हमारे लिये बहुत उपयुक्त' इधर कपि जदपि अस्त्र से मुक्त हो गये थे पर निर्बल भाव बनाये थे, क्यों ? उन्हें प्रभाव देखना रावण का था इष्ट, इसी से सब व्यवहार अनिष्ट सह रहे थे, राक्षस खल नीच घसीटत उन्हें सभा के बीच ले गये कपि ने जाइ विलोका अहं, मद, वैभव लङ्कापति का बड़ा हि मूल्यवान सिंहासन सुसज्जित देखे जिस पर रावण सभा में दशसिर का यूँ सोहे अनेकों शिखर युक्त मन मोहे बड़ा कोई गिरि, चारो ओर मचा जिसमें हो हिंसक शोर वहाँ पर, निर्भय अपनी नजर घुमा चहुँ ओर इधर से उधर देखता है सबको, यह देख तनी दशमुख की भृकुटी रेख कहा 'पूछो प्रहस्त ! तुम इससे कवन यह वानर आया कैसे यहाँ लङ्का में ? बाग उजारा कवन कारण असुरों को मारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हमारे ?' तब हनुमान बताये पूछने पर प्रहस्त के, 'आये यहाँ हम बन राघव का दूत नाम हनुमान पवन का पूत अञ्जना देवी मेरी मात हमारी बन्दर की है जात क्षुधित था देख सुरस फल खाया तुम्हारे सैनिक निशिचरराया ! मुझे मारे मैं अपनी रक्षा किया उनसे लड़ और दिदृक्षा मुझे थी तोरी हे असुरेश ! इसी से बाग तुम्हार विशेष उजाड़ा मैं, यह तेरा तनय मुझे बाँधा, जाना निज विजय बँधा पर मैं नहिं हूँ दशगात ! सुनें स्थिर करि मति मेरी बात. समझिये उसमें हितकर अर्थ, सहानुज रघुवर सर्व समर्थ तथापि श्रीसुकण्ठ कपिराज पठाये मुझे 'राम का काज तुझे करना है, अतः सुरारि ! भला अपना सब भाँति विचारि जगत-जननी सीता को मान, चलो जहँ रघुवर कृपानिधान इन्हें लौटा दो' सुनतहिं क्रूर गरज बोला 'दृष्टि से दूर इसे कर दो, मुझको यह वानर सिखाता है, वध दो ले जाकर' विभीषण रावण के लघु भाई वहीं थे, तत्क्षण आगे आई कहे 'यह नहीं नीति अनुरूप दूत है, यह अवध्य हे भूप ! इसे कुछ और दण्ड दें आप बहुत से हैं शारीरिक ताप' कहा तब रावण 'तेरी बात अचित है, माना' तत्पश्चात् दिया आदेश 'न जाये भाग जकड़ कर बाँध, पूँछ में आग लगा दो' सुनत निशाचर कपड़े बटोरे, फटे पुराने चिथड़े लपेटे कपि की पूँछ में नीच भली विधि तेल डाल के सींच दिये, फिर उसमें अग्नि जोर बजा बाजे व तालियाँ शोर लगे करने 'अब तो यह जला' निरखि तब इत उत अञ्जनिलला,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



धधकती पूँछ चतुर्दिक फेर निकल गये बाहर, ऊँच मुड़ेर
विलोकि चढ़ गये, पवन सहाई हुए फिर क्या था घर घर जाई
समूची लङ्का दिये जलाय विभीषण का घर एक बचाय
इधर सीता समीप जा एक आसुरी भू पर माथा टेक
कही 'देवि! जो था बतिआया आपसे वानर नगर जलाया'
सुनीं श्रीसीता सारा हाल विनय कीं कर जोरी तत्काल
अनल से 'अग्निदेव! सन्ताप न देवे, कपि को आपका ताप'
उधर पग-पग पर हाहाकार मचा था पुर में 'किसके द्वार
कहाँ जायें सब कुछ तो नष्ट हमारा हुआ, हाय अति कष्ट'
पुरी सोने की थी, क्यूँ जली सबों में चर्चा यह ही चली
कहत कोई 'नहिं होत अन्हेर विधाता के घर, कुछ हो देर
भले ही, संस्कृति जब लाचार सिसकती सिय सी, अत्याचार
जगत् पर जब नृप कोई ढाता तभी अस अघटित घट हि जाता'
कहा दूजा कि 'कोषागार न कह कहिये काला भण्डार
भरे था रावण, जल जाना ही उचित था, कहिये कबहुँ कहीं
किसी ने देखा होते धर्म कहीं परमारथ या शुभ कर्म
निबहते उससे, द्विज देवार्थ नहीं था वह उससे बस स्वार्थ
दशानन का था' कोई अन्य कहा 'है धन्य पतिव्रत धन्य
सिया का, उनका तेज जलाय दिया सोने की नगरी, हाय
दुःखी मन से जो बरबस निकल गया तो होता ना ही विफल'
विचारे थे जो पवन दुलारे हुये थे पूर्ण काज वे सारे
जली भी लङ्का भली प्रकार निरख उदधि में पवनकुमार
बुझाये कूद पूँछ की आग पुनः आ गये शिंशपा बाग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कुशल लखि प्रमुदित किये प्रणाम सिया को बोले 'अब तो काम
हुए सब यहाँ, अम्ब ! पहचान दीजिये कुछ कि दयानिधान
जहाँ हैं जाऊँ, सब सन्देश कहूँ प्रभु से वे आवें, क्लेश
मिटे तोरी' सुन हुयीं उदास कहीं 'सुत ! आये जब तुम पास
तनिक कम था दुःख, सन्ध्या प्रात वही फिर दुःखद दिवस अरु रात
मुझे, कपि ! कैसे राखूँ प्राण बीतते हैं क्षण कलप समान
पवनसुत ! प्रभु से प्रथम प्रणाम हमारा कहि कहना सुखधाम !
दशानन एक मास की अवधि दिया है, तदुपरान्त मुझे वधि
करेगा प्रातराश हे नाथ ! आपकी सीता आज अनाथ
विलपती है, लङ्का में आयें झटिति आकर के मुझे बचायें'
तदन्तर चूड़ामणि निकाली पवनसुत की अञ्जलि में डाली
कहीं 'यह प्रभु को दे कपिनायक बताना कुश को हि प्रभु सायक
बनाये थे, लखि कष्ट हमार किया था जब सुरपति-सुत वार
रखा नहिं कोई द्रोही तोर अमित तेजस्वी प्रियतम मोर !
कहाँ वह नेह, करम मन वाणी सभी से गति तुम ही धनुपाणि !
विरह श्रीचरणों का रघुवीर ! बड़ा ही दुस्सह हरिये पीर'
कहत सन्देश विलख कर सिया रो पड़ीं, कपि ने धीरज दिया
'न रोयें माँ ! कुछ दिन ही और बचे हैं, वीरों के सिरमौर
यहाँ आयेंगे, खल को मार करेंगे शीघ्र तो उद्धार
चलूँ मैं अब दें मुझे असीस' कहत सिय चरणों में धरि सीस
चले हनुमान किये प्रतिप्लवन गरज कर 'जैं हो सीतारमन'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## २० लङ्का से वापसी

आ गये जब सागर के पार उत्तरी तट पर, उन्हें निहार
प्रतीक्षारत सब वानर भाल कहे 'सुस्वागत अञ्जनिलाल !'
सबों से जथाजोग हनुमान मिले, फिर मारग में व्यवधान
कहाँ क्या था, सीता कस मिलीं कवन विधि लङ्का नगरी जली
कथा सब सविस्तार बतलाये वहाँ से चलि किष्किन्धा आये
रुके पहले मधुवन में आकर जहाँ थे रक्षक दधिमुख वानर
पके थे फल मीठे सब खाये विपुल मधु के छत्ते थे छाये
वहाँ पर, सबकी इच्छा जान पवनसुत बोले 'जा मधुपान
करें, सब की रक्षा का काम करूँगा मैं, फिर जहँ श्रीराम
चलेंगे, सुन सब वानर धाये शहद पी-पी उत्पात मचाये
मना करने जो भी रखवारे वहाँ आये सबको वे मारे
गये दधिमुख कपीश से जाई बताये, दक्षिण का दल आई
समूचा मधुवन दिया उजार चला जब कुछ वश नहीं हमार
यहाँ आये, सुन कहे कपीश 'करें नहिं मामा ! उन पर खीस
अवसि करि आये हैं प्रभु काज नहीं तो मधुवन में युवराज
न जाते; ना हि करें मधुपान सबों से कहते यह हनुमान'
पुनः कपिपति ने उनसे कहा 'पठायें जा झट सबको यहाँ
अवसि यह काज केसरीनन्दन का है किया' कहत रघुनन्दन
विराजे थे जहँ जा प्रणिपात किये, कहि 'जै शुभदर्शनगात !'
पहुँच मधुवन दधिमुख ने कहा 'हमारे रखवारों ने यहाँ
किया जो भी औधत्य विसार क्षमा कर दें, अब बात हमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुनें कपिपति सस्नेह बुलाये सभी को हैं, सब जल्दी जायें'
सफलता ने सबका उत्साह बढ़ाया था, सब यह ही चाह
रहे थे, कब प्रभु दर्शन पायें सिया मिल गइ, सन्देश सुनायें

## २१. हनुमान-श्रीराम सम्वाद

अतः नभ पथ से वानर वीर उछलते आ गये 'श्री रघुवीर!
आपकी जय हो, सुधि हम पाये सिया की' मुदितमना बतलाये
कहे अब हनुमान कर जोर 'कृपा का सम्बल ले प्रभु तोर
उदधि शत योजन का करि पार गया मैं लङ्का, प्राणाधार
आप ही जिनके, जनकदुलारी मिलीं, पर जस तुषार की मारी
कमलिनी की श्री शोभा नष्ट हो गई हो तस देखा, कष्ट
बहुत है, राक्षसियों से घिरी सदा रहतीं हिरणी सी डरी
दशानन के अन्तःपुर मध्य बगीचा है, अति रम्य अगम्य
उसे सब ही अशोक वन कहते बड़ी मुश्किल से छिपते-छिपते
पहुँच जब गया अम्ब के पास विचारा तब, कैसे विश्वास
दिलाऊँ इनको, मुझे खरारि पठाये हैं, झट गज्झिन डारी
विलोकी छिपा, वहीं से सारी कथा रविकुल की भवभयहारी!
सुनाया, कहा मुझे रघुराई पठाये हैं, तन छोट बनाई
गया सम्मुख, फिर भी घबराई बइठ गयीं पीठ फेर अकुलाई
कहीं 'नर वर वे दोनों भ्रात तथा तेरा यह वानर गात
करूँ कैसे प्रतीति' आख्यान मिताई का कपिपति से वखान
सुनाया, जब मैं मुँदरी दिया लिये करतल पर माता सिया
हुयीं पुलकित जनु मिल गये आप, क्षणिक कम था मन का सन्ताप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जनकदुहिता तब गत सन्देह कुशल प्रभु ! सानुज तोरी नेह सहित पूछीं, फिर कहि निज क्लेश कहीं 'कपिवर ! यह बात विशेष बताना प्रभु को बस इक मास बचा है जीवन मेरे पास कथा वायस वाली फिर याद दिलाना कहना यह मनुजाद नहीं है नाथ ! आपको भारी उबारहु सङ्कट से असुरारि !' दिया फिर कपि ने चूड़ामणि कहा 'यह दे माँ रघुकुलमणि ! कहीं हैं श्रीचरणों में नमन' विलोकी प्रभु के अम्बुजनयन वरस गये, सिय फिर आ गई याद कहे कपि आगे, क्षण भर बाद 'असुर पालित सोने की पुरी अतुल अनुपम सम्पत्ति भरी विलोका मैं, फिर मुझको चाह हुयी रिपुबल का भी कुछ थाह लगालूँ, सो मैं बाग उजार दिया, निशिचर गण जो रखवार बने आये, कुछ को तो मार भगाया बाकी का संहार किया, तब आ रावण-सुत जेठ शूरमा बलवानों में श्रेष्ठ पकड़ ले गया सभा के मध्य जहाँ रण दुर्मद असुर अंसख्य भरे थे, लगा दी गई आग पूँछ में मोर, अनल अब जाग उठे थे, चारो ओर नगर में मैं बस फैलाया घर-घर में अवज्ञा वश माँ के पुर जला तनिक वश असुरों का नहिं चला' कहे अब राघव 'पवनकुमार ! किये जो तुम, मैं प्रत्युपकार करूँ क्या, क्या दूँ समझ न आये उठो आओ तुझे हृदय लगायें' मिला आलिङ्गन जब हनुमान हुये अति आनन्दित 'पर स्थान हमारा इन चरणों के पास सदा स्वामी प्रभु, मैं तो दास आपका' कहि फिर बोले 'विनय आपसे कपिपति से भी, समय सजग होने का रिपु को मिले पहुँच जायें हम, इसके पहले'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## २२. लङ्का के लिये ससैन्य प्रस्थान

कहे तब कपिपति 'रघुकुलमणि! आपकी सेवा में यह अनी
वानरों की दोनों कर जोर खड़ी हैं प्रभु! बस इङ्गित तोर
चाहिये' बोले कृपानिधान 'अभी ही इनको ले प्रस्थान
करेंगे हम, मुहुर्त यह जयद फड़कते भी हैं सारे शुभद
हमारे अङ्ग' लखन ने कहा 'उचित यह, भैया! देखें वहाँ
मृगों का झुण्ड दाहिनी ओर उछल शुभ कहत, गगन की ओर
विलोकें, नीलकण्ठ अरु चील श्वेत जो कहत सगुन, ये नील
हमारे सेनप, आज्ञा हेतु निहारत प्रभु-मुख रविकुलकेतु!'
सुमिर तब गणपति को श्रीराम पराशक्ति को किये प्रणाम
किये ज्यों हि पग लङ्का ओर गगन में गूँज गया यह शोर
विजय हो राम आपकी विजय लखन की जै, सुकण्ठ की जय
फड़क गये सिय के शुभप्रद अङ्ग भुजा बायीं व नैन इक संङ्ग
कहे जनु, प्रभु आवत इस ओर वहीं लङ्का में चारो ओर
लगे होने अपशकुन पताका अकारण जबकि राजमहल का
गिर कर टूटा 'दुःखप्रद योग सुनिश्चित' कहत रो पड़े लोग
इधर कपि सैन्य लिये रघुवीर अनवरत बढ़ते सागर तीर
पहुँच बोले 'अदम्य उत्साह आपका वीरो! दुर्गम राह
किये तय हम, अब यहीं पड़ाव कीजिये, यूथप सारे ठाँव
देख लें निज दल के अनुकूल तथा हे मीत! कन्द फल मूल
जिन्हें जो भावे वानर पावें रहें पर सब सतर्क, बतलावें
हमारा शत्रु छली निशाचर तनिक भी अनवधानता पाकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करे कुछ हम पर गुप्त प्रहार असम्भव नाहीं' पवनकुमार
तभी कोमल पत्ते ले आये सुखासन प्रभु के लिये बनाये
विराजे राघवेन्द्र, श्री लखन खड़े पीछे, दाबत श्रीचरन
पवनसुत अङ्गद, दोनों ओर रीछपति वानरपति, चहुँ ओर
वानरों का असंख्य कपिसेन द्विविद, केसरी, नल, नील, सुषेन
अनेकों यूथप सब दुधर्ष वीर, सन्निधि पा प्रभु की हर्ष

## २३. *लङ्का में अपशकुन*

मगन थे, वहाँ जलधि के पार असुर पुर में जिसको कपि जार
दिये थे, जन जन है बेचैन विविध असगुन होते दिन रैन
सुनि मन्दोदरी पा एकान्त कही पति से समझी जब शान्त
'असुरपति ! राजन् ! मेरे प्यारे ! कहूँ जो, मानहु नाथ हमारे
उपद्रव जब से कपि ने आई किया, चिन्तित हैं जन समुदाई
न जाने कौन घड़ी में आई सिया, लङ्का में विपदा लाई
इन्हें पहुँचा दें, जहँ रघुराई स्वयं या आपन सचिव लगाई
सुना मैं ने, कपि सेन बटोर राम रघुकुल के भूप किशोर
पहुँच गये प्रियतम ! सिन्धु तीर सुनी यह भी सब अनुपम वीर
सदल बल खर को हते खरारि अतः पिय मानहु विनय हमारी
बयर रघुकुलमणि से प्रभु ! तजो सुखी निज इष्टदेव को भजो'
परम हितकर पत्नी की बात सुना रावण, पर कालवशात्
उलट उसको यह समझा दिया 'न कुछ भी होगा उनका किया
राम से रामानुज से मुझे तनिक भी भय नहिं, ना ही तुझे
सोहता डरना, करना शोक मेरे डर काँपत तीनों लोक'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


समझ गई पत्नी उसकी, काल उलट डाला है मति की चाल
पुरी में असगुन नित-नित नये देख, रावण समीप अब गये

## २४. विभीषण की शरणागति

विभीषण, सादर बोले 'भाई ! सिया जब से लङ्का में आई
निरन्तर असगुन हैं हो रहे डरत सब प्रजा, कौन आ कहे
विषय कथनीय जानकर कहा सिया लङ्का हित विपती महा
अतः जाकर सादर लौटायें विपत्ति से पुर प्रजा बचायें'
विभीषण की सुन सारी बात गरब से हँस कर के दशगात
कहा 'भय मुझे न दीखता कहीं राम को सीता दूँगा नहीं
सहायक बन सुरपति भी आवें, असम्भव राम सिया को पावें'
विदा यूँ बोल अनुज को किया सभा में दशमुख जब आ गया
प्रहस्त को पुर रक्षा का भार दिया, बोला चहुँ ओर निहार
सिया को हर कर मैं ले आया परन्तु अभिमुख नहिं कर पाया
व्यथित करता है मुझको मार उधर वह राम सिन्धु के पार
आ गया वानर-सैन्य बटोर जदपि कुछ कर सकता नहिं मोर
तदपि मैं पूछूँ सबकी राय सदा तुम सब ही रहे सहाय
सभी अपना-अपना वक्तव्य कहें, अब क्या हमार कर्तव्य'
कहा तब कुम्भकर्ण 'महाराज ! परस्त्री हरण ये अनुचित काज
'करूँ' यह राय न पहले लिये कुफल होगा विचार नहिं किये
मुझे नहिं दिखता तेरा त्राण हरेंगे राम तुम्हारा प्राण
लड़ूँगा फिर भी रिपु के साथ तुम्हारे, कई बन्दर इक साथ
पकड़ खाऊँगा, सबको मार विजय दिलवाऊँगा, संहार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मचायी' महापार्श्व ने कहा 'सिया तो अपने वश में यहाँ करें जो मन चाहत है वीर !' सुनत रावण कुछ हो गम्भीर कहा 'तुम कहे यद्यपि नीक परन्तु होगा यह नहीं ठीक दिया ब्रह्मा ने मुझको शाप 'परस्त्री रमण रूप जो पाप करोगे बलपूर्वक दशशीश उसी क्षण, सौ टुकड़ों में शीश तुम्हारा हो जायेगा अधम !' इसी डर से ही विरत हैं हम' तभी जोड़े हुए दोनों हाथ दशग्रीव से विनती के साथ विभीषण बोले 'सुनिये राजन् ! सिया विषयक इच्छा हि नागन डँसे नहिं जबतक तब तक फेरें वचन हितकारी मानहु मेरे आप हों या घटकर्ण प्रहस्त साथ में आसुर सैन्य समस्त लिये यह सुत भी, जिसने जीत लिया है सुरपति को, नहिं जीत सकत राघव को' सुन यह बात इन्द्रजित कहा व्यङ्ग भरी बात 'हमारे ये छोटे पितृव्य रहित बल वीर्य पराक्रम धैर्य जनम इस कुल में भी डरपोक हुये कैसे, यह ही बड़ शोक इन्द्रगज ऐरावत का दाँत उखाड़ी फेंका भू पर तात ! वही मैं इन्द्रजयी, वह राम लड़ेगा मुझसे, लें नहिं नाम' विभीषण फिर भी उसे समझाये 'अभी हो बच्चे समझ न पाये राम शर ब्रह्मदण्ड यमदण्ड कहो जो भी, मूरख ! उद्दण्ड ! न कोई सकता उसको झेल इसी से कहा, कि कर लो मेल पिता सम मेरे अग्रज ! आप बयर प्रभु से केवल सन्ताप इसी से कहता हूँ पहुँचाई सिया को, सुख से रहिये भाई !' उभय लोकों के लिये यथार्थ विभीषण का जिसमें नहि स्वार्थ वचन सुनकर रावण हो क्रुद्ध कहा 'मति ही नहिं इसकी शुद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वसत सुख से यह मेरे राज्य सदा गावत रिपु गुण, है त्याज्य
बहुत है उन पर तेरी प्रीति वहीं जा समझाओ निज नीति'
कहत अस भरी सभा के बीच किया पद से प्रहार वह नीच
विभीषण बोले 'मैं हूँ जाता परन्तु फिर भी हूँ दुहराता
बयर प्रभु से विसराई तात! मिताई करें, भले की बात
यही है' लङ्का से चल दिये वहाँ का सुख सुहाग सब लिये
पहुँच गये जब सिन्धु के पार गगन में उड़ते, उन्हें निहार
लगे कहने वानर 'यह छली आ गया कोई, पर है बली
अकेला ही यह हमको जाँच रहा है' अन्य कहे 'हैं पाँच'
तदन्तर दखिन ओर से आया असुर कोई सुन के कपिराया
वहाँ आये, जहँ जोरे हाथ गगन में चार सचिव के साथ
विभीषण थे, कपिकृत सम्मान विलोकि स्वयं उन्होंने जान
लिया निश्चय हैं यही कपीश अतः बोले 'हे वानराधीश!
शरण अशरण के करुणागार दयालु प्रभु से विनय हमार
निवेदन कर दें, रिपु का भाई शरण में आया है रघुराई!'
विभीषण की सब बातें जाई बताये राघव से कपिराई
कहे फिर यह भी 'सरसिजगात! छली होती है निशिचर जात
बना कर बन्दी इसको यहीं रखें, अपनाना जँचता नहीं'
हुये चुप कपिपति जब यह कही कहा प्रभु ने 'कहते हो सही'
कहे पुनि राघव 'यहाँ विचार उपस्थित है, उससे व्यवहार
करें क्या, कपिपति ने जो अभी कहा है सुना आपने सभी
उचित क्या और, कहें जन अन्य' तभी सब बोले 'प्रभु! हो धन्य
त्रिलोकी में कुछ ऐसी बात नहीं जो हो न आपको ज्ञात,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परन्तु हम सब को दे मान पूछते हैं यदि कृपानिधान
कहेंगे हम सब अपनी राय करें जो भावे, कोशलराय !'
कहे युवराज 'मुझे यह भाये परीक्षा कर के ही अपनायें
इसे हम' कहे शरभ 'रघुनाथ ! लगा के कोई गुप्तचर साथ
समझ लें, कैसा इसका भाव कहीं यह पाकर कोई दाव
करेगा तो नहिं हम पर वार' कहे तब मैन्द 'मधुर व्यवहार
बना कर धीरे-धीरे बात पूछनी चहिये, तत्पश्चात्
उचित जस लगे, रखें या त्यागें' कहे तब जाम्बवानजी आगे
'बड़ा ही पापी रावण, पास उसी के था ही इसका वास
तथा यह समय और यह स्थान उचित नहिं आने का, अस जान
सशङ्कित रहना ही है ठीक' सुने सब पवनपुत्र पर नीक
लगी नहिं उनको सबकी बात, शरणसुखदायक श्यामलगात
कहे 'सबकी बातें अनुकूल नीति के, असुरवृत्ति प्रतिकूल
सदा हमको, यदि बलाभिमान लिये आया होगा तो बाण
धनुष से जोड़ेंगे ज्यों लखन जगत के सब असुरों का मरण
निमिष में होगा, पर छल कपट लिये कोई भी मेरे निकट
कभी भी आये यह सम्भाव्य नहीं, खल भरी सभा के मध्य
इसे त्यागा कर के अपमान अतः अब यहीं सुरक्षित स्थान
समझ यह आया मेरे शरण सुनो हे मीत ! सदा से परण
यही मेरा, जो मुझे पुकार लिया मैं लेता उसे उबार
तजूँ शरणागत यह नहीं कर्म शरण आये की रक्षा धर्म
विभीषण को अब मैं ने अभय दिया' यह सुन कर अञ्जनितनय
हुये हर्षित विशेष, कपि वीर सभी बोले 'जै हो रघुवीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आपकी, आप जगत् के आश्रय शरण अशरण के सदा दयामय'
तुरत दौड़े अङ्गद हनुमान विभीषण को अतीव सम्मान
सहित राघव समीप ले आये दरश चिरवाञ्छित प्रभु का पाये
विभीषण, गिरे दण्डवत् भू पर कहत 'हे राम ! पाहि करुणाकर
अधम मैं मेरा असुर शरीर सुजस सुनि आया' तब रघुवीर
अकल्मष मन जानि अपनाये लखन भी बढ़कर गले लगाये
बिठा सादर इन्दीवरगात कुशल पूछे, बोले 'दिन रात
रहे उन असुरों में, छल छद्म सदा जीवन जिनका, पर धर्म
विरत नहिं हुये, न कम यह तप से मिला मैं आज इसी के फल से
जँचे जो अब वर माँगो आप तनिक भी यहाँ नहीं सन्ताप'
विभीषण बोले 'जब था चला बहुत अभिलाषा थी पर मिला
दरश जब इन चरणों का शेष नहीं कुछ, हाँ करि कृपा विशेष
यही दें, मन मधुकर पद-कमल तजे नहिं भक्ति होवे अमल'
दयानिधि ने वर देकर कहा 'लखन ! सिन्धु-जल लाकर यहाँ
अभी ही लङ्कापति के पद पर विभीषण का अभिषेक यहीं कर
बना दो लङ्केश्वर' झट लखन किये जैसा था प्रभु का कथन
तदन्तर सबने साधुवाद दिया राघव को, इसके बाद
कवन विधि सागर को हम पार करेंगे, जब यह उठा विचार
विभीषणजी बोले 'यह सागर उपकृत रविकुल से है, आकर
करेगा निश्चित ही सहयोग करें जो रघुपति यह उद्योग
सरित्पति हैं रघुकुल के श्रेष्ठ शरण लें इनका राघव ज्येष्ठ'
तुरत सुग्रीव और हनुमान गये जहँ थे सानुज भगवान
विभीषण की सब बात बताये कहे प्रभु 'मुझको भी यह भाये'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परन्तु रोष सहित कुछ लखन कहे 'ये अखिल विश्व के शरण
शरण लें सागर की यह बात मुझे नहिं भावत, कहिये तात !
उदधि से पथ लेते कत देर लगेगी' तुरत कमल-कर फेर
कहा प्रभु ने 'तेरा ही कहना करूँगा' कहि सिन्धु तट धरना
दिये तजि भोजन पानी नींद सजग थे लछिमन वानरवृन्द
इसी में हुयी एक यह बात विभीषण के पाछे दशगात
पठाया था दो दूत विशेष बनाकर जो वानर का वेष
छिपे थे, कपि सेना का भेद लगालूँ, पर लखि प्रभु को खेद
हुआ अपने पर 'अपनी काया अधम कैसी, ये रघुकुलराया
सरल कितने' मुख से यह बोल निकलते ही दोनों का पोल
खुला, पर एक पकड़ में आया, भगा जो शुक का वेष बनाया
गगन में जाकर कहा 'कपीश ! कहे हैं तुझे राक्षसाधीश
किया नहिं कुछ भी मैं अपकार तुम्हारा, तुम भी अहित हमार
किये कुछ नहीं और मतिमान् ! अनुज वाली के हो यह जान
मुझे तुझ पर विशेष है नेह अतः कहता हूँ अपने गेह
चले जाओ'..... कहता कुछ और तभी कपि कोई पाँख मरोर
उसे नभ में ही लिया दबोच उतर आया नीचे, पर नोंच
लिये होता कि वह चिल्लाई लगा कहने 'श्रीराम दुहाई
मुझे मत मारें, बस सन्देश कहा मैं, जो मुझसे लङ्केश
कहे थे' तबतक कपिगण पीट बहुत ही, लाये उसे घसीट
जहाँ थे राम, दयाघन मना किये 'मत मारो' बन्दी बना
उसे सब रखे वहीं, तदनन्तर गये दिन तीन जलधि के तट पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## २९. सेतुबन्ध एवं रामेश्वर की स्थापना

हुआ सम्मुख नहिं उदधि मन्द कुपित तब बोले रघुकुलचन्द
'सरलता क्षमा शान्ति मधुबोल न गुणहीनों में इनका मोल
क्षमा युत देख मुझे यह अर्थ लगाया सिन्धु, हूँ असमर्थ
अहं इसका मैं अब ही हनुँ लखन ! लालो मेरे शर धनु'
किये प्रभु राम धनुष टङ्कार सभी जीवों ने हाहाकार
किया, पुनि प्रभु जब खींचे डोर लखन ने विनय किया कर जोर
उदधि को नष्ट करें प्रभु ! नहीं, गगन में भी गूँजा 'नहिं, नहीं'
पयोधि की लहरें तट छोड़ बढ़ीं योजन भर, तब कर जोड़
प्रकट हो सागर ने सिर नाई कहा 'मैं शरण तोर रघुराई
धरा, जल, तेज, वायु, आकाश सभी निज-निज स्वभाव में वास
सदा करते, मर्यादित राह न तजते, मैं भी अगम अथाह
इसी से हूँ' तब श्रीरघुवीर कहे 'कहिये धनु से जो तीर
जुड़ा, इसको मैं छोड़ूँ कहाँ' कहा सिन्धु 'उत्तर दिशि जहाँ
वसत आभीर जाति, नित नीर करत अपवित्र मोर, बड़ पीर
हमारा हरिये, कोशलराय ! बताता हूँ, अब श्रेष्ठ उपाय
कवन विधि करि के मुझको पार बढ़ेगी यह कपि-अनी अपार
सुनें, सुरशिल्पी-सुत गम्भीर नाम नल जिनका है रघुवीर !
पिता सम निपुण, सेतु निर्माण करेंगे ये, कपिगण सामान
इन्हें दें, गिरि पादप प्रभु ! पाथर परस इनके हाथों का पाकर
न डूबेंगे जल में, यह शाप दिये इनको मुनिजन, निष्पाप
लड़कपन था जब, राजकुमार ! सुयश गायेगा सब संसार'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बता यह उदधि अन्तर्धान हुये, कपि वीर सभी सुख मान
लगे लाने गिरि वृक्ष महान करत नल सेतु का निर्माण
प्रथम दिन चौदह योजन दूर किये निर्माण सेतु कपि शूर
दूसरे दिवस तेज किये काम बीस योजन बन हो गई शाम
तीसरे दिन योजन इक्कीस रचे सब, देखत सिद्ध मुनीस
चउथ बाइस पचवें तेईस योजन सेतु रचे सब कीस
बना शत योजन का वह सेत उदधि पर विस्तृत मन हर लेत
तभी क्षण भर कुछ किये विचार कहे राघव सुख शोभागार
'उमापति मेरे नाथ अनन्य यहाँ मैं थापुँ धरणि हो धन्य'
बहुत से ऋषि मुनि विप्र बुलाई किये शिव-थापन श्रीरघुराई
किसी ने पूछा 'इनका नाम जगत विश्रुत क्या होगा राम!'
कहे प्रभु 'भोलानाथ महेश्वर सनातन सत्य राम के ईश्वर
अतः रामेश्वर' त्यों ही ध्वनि हुयी उस लिङ्ग से 'रघुकुलमणि
राम, जिसके ईश्वर रामेश्वर वही मैं उमानाथ शिव शङ्कर'
कहे तब ऋषि मुनि 'सबको इष्ट राम शिव दोनों शक्ति प्रविष्ट
यहाँ इनमें, 'रामेश्वर' नाम सुमङ्गल दायक हो शिव! राम!'
पुनः विधिवत पूजा करि राम कहे 'शिव अति प्रिय मुझे अकाम
यहाँ आये, जो दर्शन करे कृपा शिव की भवसागर तरे'
चले अब राम लखन कपिपति वानरी अनी आगे, छवि अति
हुये धीरे-धीरे उस पार गूँजता था नभ में जयकार
शिविर किये प्रभु सुबेल पर, 'स्थान उचित यह' बोले जब हनुमान
बना व्यूह सेना को प्रभु खड़ी किये जब दृष्टि शुक पर पड़ी
दयालु ने झट उसे छुड़ाया छुटा सारण भी पुर में आया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दशानन ने पूछा जब हाल कहे दोनों 'कपि सैन्य विशाल
पकड़ कपि वध मेरा कर जाते कृपालु यदि नहिं हमें छुड़ाते'
कहा सारण फिर 'बल के धाम अमित तेजस्वी हैं श्रीराम
अपरिमित सेना भी है साथ अतः सन्धि उत्तम है नाथ!'
पुनः कपिपति क्या कहे सुनाई कहा 'सन्देश दिये रघुराई
'भरोसे जिस बल के ओ नीच! सिया हरि जन-स्थान के बीच
यहाँ लाये हो, शक्ति सारी दिखाना रण में, मौत तुम्हारी
निकट है, जो तेरे सहयोगी बनेंगे मृत्यु सबकी होगी'
तदन्तर लखन दिये जो पाति दिया शुक, किन्तु थाम कुभाँति
'पढ़ो' देकर प्रहस्त को कहा पढ़ा वह पर इतना ही कहा
'अशिष्टतापूर्ण पत्र महाराज! अतः मैं तो पढ़ने से बाज
रहा' निज नृप को लौटा दिया लिखा था उसमें 'पूज्या सिया
सहित आओ, पकड़ो प्रभु-चरण मानहु बात हमारी रावण!
भलाई इसमें ही सुरद्रोही! नहीं, प्रभु निश्चय वधिहें तोहीं'
पढ़ा पाति रावण खिसिआया चरण गहि शुक सारण समझाया
'सिया लौटा दें, मङ्गल हेत' 'निकला जा पुर से' आयसु देत
उछल दोनों नभ पथ से आये जहाँ थे रंघुवर, शीश झुकाये
हुये दोनों ही अब निष्पाप मिटा मुनिवर अगस्त्य का शाप
पठाया पुनि रावण शार्दूल गुप्तचर समझ परम अनुकूल
गया किन्तु वह भी पकड़ाया किये प्रभु कृपा छूट कर आया
बताया उसने जो जो आकर प्रतीति उस पर किया निशाचर
राम का शील, क्षमा अरु दया, सैन्य-बल वर्णन जिसने किया
उसे अपमानित कर फटकार तुरत ही रावण ने नहकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



दिया, फिर चढ़ ऊँची परकोट विलोकी कपिसेना मतिखोट
समझ तो गया सभी हैं शूर सोचने लगा करूँ क्या, क्रूर
तुरत आ गया सिया के पास जहाँ थीं वह तरु तले उदास
कटा प्रभु का सिर माया रचित दिखाया; देखत विपदा-ग्रसित
लगीं रोने 'हा हा रघुराई' गया जब रावण, सरमा आई
बहुत भाँति सिय को समझाई असुर की माया है बतलाई
'अखिल ब्रह्माण्ड विधायक राम वधे यह उन्हें, असम्भव काम
शौर्य तो प्रभु का सोंच से परे, कहा खल कि वे ही हैं मरे
तुम्हारे दुःख के दिन वैदेही! गये अब बीत, मरेगा यही
आ गये वे सिन्धु इस पार करत कपि सैन्य सुनो हुङ्कार
सुना तो भगा यहाँ से नीच भरोसा प्रभु की रखें हिय बीच
वधेंगे राघव इसे सरोष समर में' सिय कुछ पायीं तोष
दशानन के नाना का भाई नाम था माल्यवान्, समझाई
कहा वह भी रावण से 'तात! तजो हठ मानों मेरी बात
चतुर्दश विद्याओं में निपुण सुशिक्षित नीति में, ये गुण
रखत जो नृप पुनि समय विचारि करत सन्धि या रार सुरारि!
वही रिपु को वश में कर पाता उचित यह बात तुझे बतलाता
हूँ मैं, यदि रिपु-शक्ति समान लगे या लगे अधिक बलवान
जरूरी उसके संग है मेल, समर रघुपति से ना ही खेल
धरम में राघव का अनुराग, विजय चाहत ऋषि मुनि सुर नाग
सभी उनका, तेरा जो पाप सबों के लिये बना सन्ताप
जगत् रक्षक हरि नर का वेष बनायें हैं, यह मानी द्वेष
तजो उनसे, जिस हेतु आये सिया ही वह, लौटाओ जायें'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बहुत समझाया, पर ना माना कहा उलटे 'तूँ द्वेषी नाना'
सुना आक्षेप माल्यवन्त गया दशानन अन्तःपुर आ गया
वहाँ माँ कैकसी समझायी न समझा मृत्यु थी निअरायी

व्यवस्थित करि सेना को राम कपीशादि संग लीलाधाम
सहानुज चढ़ि सुबेल के शिखर निहारन लगे, थी लङ्का जिधर
बहुत ऐश्वर्य युक्त पुर शोभ रहा था, कपिपति के मन क्षोभ
उठा, देखे जो ऊँचा गोपुर उसी पर है प्रभु-द्रोही असुर
उसी क्षण उछल गये आकाश पहुँच गये, वे रावण के पास
दिये परिचय पुनि झट लिये भींच मुकुट माथे का फेंके खींच
कुपित बोला दुर्जय दशग्रीव 'अभी तक तो तूँ था सुग्रीव
न जबतक मेरे सम्मुख आया किये देता हूँ ग्रीवा सफाया'
कहत यूँ कपिपति से भिड़ गया मल्ल युद्ध दोनों मे छिड़ गया
कभी रावण तो कभी कपीश अभी उन्नीस अभी थे बीस
दशानन सोंचा माया करूँ परन्तु श्रीसुकण्ठ थे गुरु
उछल का आ गये जहँ रघुपति सशङ्कित थे, प्रसन्न हो अति
कहे प्रभु 'साहस प्रिय ! अति वीर सुहृद तुम, पर संशय गम्भीर
मुझे था, जब तक तूँ नहिं आये कुशल तो हो' कहि गले लगाये
'नृपति को दुस्साहस का काम न करना चहिये' बोले राम
हो गइ थी सन्ध्या मन-हारी सभी को साथ लिये दनुजारि
दिखाये देखे पुर भलिभाँति यहीं विश्राम करें एहि राति
किये निश्चय सब से, पुनि उधर विलोके जहँ था लङ्का शिखर
विभीषण से बोले रघुराई 'गगन में तो बदरी घिर आई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सखा ! देखहु न चमकत दामिनी गुफा में सुखकर होगी यामिनी
मेघ करता है ध्वनि गम्भीर भींग जइहें सब मेरे वीर'
विभीषण बोले 'नाहीं घटा, मल्लशाला दशसिर की छटा
विखेरत, मन्दोदरी कनफूल चमकता है चपला सम झूल'
लखन बोले चरणहिं सिर नाई 'दशानन दर्प रहा दिखलाई'
कहत अस दिये धनुष प्रभु हाथ बईठ वीरासन में रघुनाथ
निकाली त्रोण से छोड़े तीर बन्द हुयी ध्वनि मेघ-गम्भीर
चमक मिट गइ चपला के जैसी डरे सब वहाँ, बात ये कैसी
महारानी के ये कनफूल गिरे कैसे, क्यों लोटे धूल
असुरपति के सिर से ये मुकुट गिरे कैसे धरणि पर टूट
कठिन दुदैव वार ये किया हुयी चिन्तातुर मय की धिया
कहा रावण कि 'कैसा अशुभ, गिरे सिर भी हमार होता शुभ
मुकुट गिरना कैसे नहिं ठीक' लगी नहिं बात किसी को नीक
गई रानी अन्तःपुर अपने किया अनुसरण संग हि उसने
बहुत हि समझायी मय-दुहिता 'अभी भी नाथ ! नहिं कुछ बीता
राम से लड़ने में न बड़ाई असुरपति ! सन्धि कर लें जाई'
कहा शठ 'डरती काहे प्रिया ! जतन सब जीत की मैं ने किया'
त्रियामा बीती करते बात हुइ सुजनन्ह को सुखद प्रभात
निरीक्षण कर गिरि से रघुवीर उतर आये, संग सारे वीर
शिखर से देखे थे जो हरि विचारे मन ही मन नरहरि

## २६. अङ्गद-रावण सम्वाद

'सुखी यह पुर प्रसन्न अति लोग समर का पाकर घोर कुयोग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लाल बिनु मातायें विलखइहें सुहागिन से सेनुर छिन जइहें
बहन से भाई नहिं मिल पइहें नहीं शुभ रक्षण बालक पइहें
असुरपति की जो खोटी मति सभी के लिये दुःखद है अति
युद्ध की विभीषिका टल जावे सुखी सब रहें कष्ट नहिं पावें'
विचारी यह करुणानिधि राम कहे 'अङ्गद ! हे सुधि ! अस काम
करो तुम असुर सभा में जाई टले जिससे यह दुःखद लड़ाई
सिया लौटा दे दशमुख वीर ! तूँ कहना बोले हैं रघुवीर'
मिली आज्ञा वाली-सुत चला पुरी प्रविसत रावण-सुत मिला
हुआ दोनों में वाद विवाद लात मारन चाहा मनुजाद
पकड़ पग नभ में उसे घुमाई पटक जब दिये, असुर समुदाई
भगे जहँ तहँ सब कहते ऐसे पुनः आये कपि पहले जैसे
सुना बुलवाया राक्षसराज सभा में, आये जब युवराज
असुरगण उठ गये आसन त्याग निरख रावण को लग गई आग
कहा 'तूँ कौन है ? रे बन्दर !' कहे कपि 'राम-दूत दशकन्धर !
पठाये तव हित लगि रघुराई विनय करि कहूँ बात सुखदाई
जनम तव ऊँचे कुल में वीर ! हमारे पितु के मीत तपधीर
सभी लोकों को तुमने जीता परन्तु हर लाये क्यूँ सीता
लिया तुझको नृप-मद ने घेर पड़ी सुमति पर तोर अन्हेर
इसे छोड़ो, अब ले संग सिया चलो प्रभु ढिग, कहना 'जो किया
क्षमा कर दो सब, शरणहिं आया' क्षमा करिहें निश्चय रघुराया'
कही अङ्गद की सुनकर बात क्रोध से तड़प कहा दशगात
'कवन तूँ किसका है रे तनय ? मिताई मोर किससे, किस समय ?'
कहे अङ्गद 'वाली मम बाप सुमिर लें, मिले थे उनसे आप'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नाम सुन वाली का सकुचाया कहा 'कुल नाशक सुत वह पाया
कुशल तो कह उनकी रे दुष्ट ! वे कपि क्या तुझसे है सन्तुष्ट ?'
कहे तारा-सुत 'सुन दशगात तनिक रुक जा, कुछ दिन उपरान्त
पठाई देंगे कोशलाधीश जहाँ हैं वाली पूर्व कपीश
तुम्हारे मीत, असुर ! कुशलात उन्हीं से हो जायेगा ज्ञात
बना मैं राम-दूत कुल घाला अरे शठ ! यह कैसे कह डाला'
परुख वाणी सुन रावण कहा 'विचारी धरम, बात कटु सहा'
कहे अङ्गद 'यह धरम बड़ाई ही है, पर तिय लिये चुराई
वीरता तोरी कहूँ वखान तीन ही रावण मेरे जान
एक को बलि बाँधे घुड़शाल दूसरा सहसबाहु जेहि पाल
रखा था, बालक खेल बनाये पहुँच गये मुनि पुलस्त्य छुड़वाये
तीसरा वाली दाबे काँख कहो रावण ! सच तजि के माँख
कवन हो तीनों मे तूँ वीर ? समर करि तुझसे श्रीरघुवीर
सुयश का पइहें, अधम शृगाल ! सिंह सम मेरे अवधभुआल'
कहा तब रावण निज़ बल कथा करन्हि कैलास उठाया जथा
पुनः बोला 'कोई तो नाहिं लड़े जो मुझसे कपि ! रण माहिं
परन्तु कपि की जात हि ऐसी जो पाले उसको मान हितैषी
नाचते गाते हैं गुण गाई सुनों फिर, तेरा जो रघुराई
पिता ने उसे दिया वनवास प्रिया-विरहित वह परम हताश
सुकण्ठ से तो मैं मिल ही चुका भगा मेरे सम्मुख नहिं रुका
रीछपति बूढ़ करेगा क्या, लखन लरिका हो सज्जित ज्या
अगर आयेगा रण में तेरा वधेगा उसे इन्द्रजित् मेरा
जो बाँधे पुल, शिल्पी नल नील कहीं लें खोज काम फिर मिल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जायेगा, हाँ वह जो वानर जलाया जिसने लङ्का आकर
तुम्हारी सेना में है वीर वधूँगा मैं उसको, रणधीर
जो होते रे वानर! रघुनाथ सुलह की बात हमारे साथ
न करते, सुर भरते हैं नीर हमारा, मैं हूँ ऐसा वीर
हवन जो किया काट निज सीस, तुम्हारे राघव क्या रे कीस!
भुजा मोरी मेरु कैलास उठाया, तजो जीत की आश'
सुनत हरि-निन्दा वालिकुमार गरज उठे भू पर मुक्का मार
धरा गई काँप, असुर भहराये दशानन सम्हला, पर गिर आये
मुकुट उसके भू पर, ले चार पठाये प्रभु पहँ वालिकुमार
चमकते चारो नभ पर आये विलोकी वानर सब घबराये
कहे प्रभु 'अङ्गद ने हैं फेंके उछल हनुमान तुरत हि टेके
वहाँ असुरेश बहुत रिसिआई कहा 'कपियों को मारो धाई'
कहे कपि 'प्रभु आज्ञा नहिं दिये बहुत था मैं ही तेरे लिये
जमा फिर भू पर बोले पाँव छुड़ा दो मही अगर, तो दाव
लवटि जायेंगे सिय-सुखधाम मैं हारुँगा, अङ्गद मम नाम'
मिली आज्ञा पग टारत शूर हिला नहिं सके, टारना दूर
टला नहिं पग सब ही ने टाला बढ़ा तब आगे दश सिर वाला
झुका, अङ्गद-पद गहना चाहा कहे अङ्गद 'सुन निशिचरनाहा!
पकड़ने से पग मेरा तोर भला नहिं, कहा मान यह मोर
चरण राघव के गह लो जाई सबहि विधि इसमें तोर भलाई'
सुना रावण श्रीहत हो गया, गया सिंहासन पर गिर गया
कहे अङ्गद कई सुन्दर बात नहीं समझा वह काल वशात्
'राम लक्ष्मण सुकण्ठ की जीत नियत खल! यही धरम की रीत'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहत तारा-सुत वापस आये किये प्रभु प्रश्न 'मुकुट कस पाये'
कहा कपि ने 'ये नहिं सिरत्राण सहज गुण नृप के जैसे प्राण
उदारता, शौर्य, न्याय, ऐश्वर्य नहीं ये उसमें रघुकुलवर्य!
इसी से श्रीचरणों में आये कहें नहिं कि हम पाये, पठाये'

## २८. युद्ध आरम्भ

सबहि विधि रिपु बल गति विधि जान कहे सबसे श्रीराम सुजान
'रहूँगा साथ न कोई डरे मनुज का रूप न वानर धरें'
आक्रमण कौन करेगा कहाँ बता के राम सभी को तहाँ
दिये आज्ञा 'कर दो आक्रमण' हुआ आरम्भ, अति भीषण रण
मात खाने लगे राक्षस वीर हुयी पर जब रात्री गम्भीर
वानरी दल पर राक्षस जोर पकड़ने लगे, मचा अति शोर
असुरगण मिल कर धावा बोले चलाये सायक प्रभु, जनु शोले
भगे सब दुष्ट, बचा निज प्राण निरख प्रभु को कपि पाये त्राण
कीस-दल उत्साहित हो बढ़ा उधर से इन्द्रजित अब चढ़ा
विधाता से उसको वरदान मिला था, होकर अन्तर्धान
समर में शर-वृष्टि खल किया पराजित पर अङ्गद ने किया
उसे, था क्षुब्ध हुयी थी हार अतः आसुर-माया विस्तार
सहानुज प्रभु को नाग के पाश असुर बाँधा, कपि हुये उदास
राम लक्ष्मण को देख अचेत दु:खी थे वानर नृपति समेत
पवनसुत प्रभु को लखि अकुलाये विभीषण सबको धीर बधाये
उधर वह मेघनाद अति दुष्ट बताया निज करनी, सन्तुष्ट
दशग्रीव सुत के सिर को चूम बुला दासी को बोला 'तुम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सिया को ले समराङ्गण जाओ उसे मृत राम लखन दिखलाओ
गई राक्षसियाँ सिय को लेकर कहीं 'मृत ये तेरे पति देवर'
विलपने लगीं सिया 'दुःख भारी गइ मैं हाय सबहि विधि मारी
कभी तन-लक्षण के विज्ञानी मुझे शुभ लक्षण युक्त वखानी
कहे थे श्रेष्ठ ज्योतिषी एक तुम्हारा पति के संग अभिषेक
होगा, हुयी बात सब झूठ शुभद सब योग ही गये रूठ
रणोत्साही ये दोनों भ्राता सभी दिव्यायुध के थे ज्ञाता
किये ना ही प्रयोग, हत दिया नींद में, हाय दुष्ट छल किया
अवध में मोर तपस्विनी सास देखती होंगी सुत की आश
कठिन विधि ! तूँ ने यह क्या किया करेगी क्या हतभागा सिया'
विलपती सिय से त्रिजटा बोली 'करो चुप देवि ! बहुत हि रोली
मरे ये नहिं सानुज रघुनन्दन बताती हूँ मैं, तुझको लक्षण
अगर निर्जीव प्रभु-तन होता ये पुष्पक दिव्य, तुझे नहिं ढोता
सहज कान्ति युत दोनों भाई' बहुत समझावत लङ्का आई
बँधे थे नाग पाश रघुराई परन्तु जब कि चेतना आई
विलोके, मूर्च्छित है यह वीर हुये प्रभु बन्धु हेतु अधीर
कपिन्ह के मन चिन्ता, क्या करें कवन विधि सङ्कट इनके हरें
तभी देवों ने गरुड़ पठाये मुदित मन श्रीहरि-वाहन आये
उन्हें देखत ही भागे नाग सहानुज प्रभु उठ बैठे जाग
गरुड़ किये परस वेदना दूर हुयी, जस दृष्टि पाये सूर
खुशी हो, तस वानर हरषाये कहे सब 'हम नव जीवन पाये'
विदा पाये सुपर्ण निज धाम गये, कहि 'जै सानुज श्रीराम'
इधर रावण जाना रिपु स्वस्थ हुये, तब वह मन से अस्वस्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुआ, धूम्राक्ष समर में आया हजारो असुर संग में लाया
पवनसुत ने सब वीर पछार वधा धूम्राक्ष, शत्रु जब हार
गया, आ वज्रदंष्ट्र ललकारा उसे अङ्गदजी ने संहारा
अकम्पन को तब रावण भेजा इधर प्रभु ने हनुमान सहेजा
मिली आज्ञा धाये कपिशूर महाबली ये थे, वह था क्रूर
क्रूरतापूर्ण युद्ध आरम्भ किया, शर वरसत जैसे अम्भ
उखाड़े पादप सिर पर मार किये वध उसका पवनकुमार
बचे जो राक्षस रण से भागे पवनसुत भी जा प्रभु पग लागे
किये उनका सत्कार अतीव विभीषण राम लखन सुग्रीव
अकम्पन वध से रावण दुःखी कहा 'अब तो प्रहस्त ! मुझे सुखी
बना सकते हो तुम ही वीर ! लड़ो जाओ, हो शत्रु अधीर
नगर कपियों से चारो ओर घिरा है' किया युद्ध अति घोर
समर में मचा दिया खलबली असुर ने, था वह दुर्जय बली
नील को अगुआ करि कपि बढ़े नये उत्साह से रिपु पर चढ़े
कपिन्ह के दाँत, लात अरु मुक्के अस्त्र थे, छूटे रिपु के छक्के
नील से क्षुब्ध हुआ, शर वरसा लगा करने प्रहस्त, तब सहसा
बड़ा इक शिला खण्ड ले मार नील ने किया शत्रु संहार
प्रहस्त के मरते राक्षस नीच विरत रण से भागे पुर बीच
मरा मन्त्री सुन कर गुस्साया असुरपति, रण में आगे आया
महोदर, महापार्श्व, अतिकाय साथ थे कुम्भ, निकुम्भ सहाय
निरख सब को पूछे श्रीराम विभीषण से 'कहहु क्या नाम ?'
विभीषण सबका परिचय कहा, कहा पुनि 'वह लङ्काधिप रहा'
'बड़ा सौभाग्य' कहे रघुराज 'आ गया तो खल सम्मुख आज'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


डँटे थे राम रणस्थल मध्य सहानुज संग हि वीर असंख्य
समर में मिला यहाँ दशग्रीव लगे लड़ने उससे सुग्रीव
बिता कुछ समय हि घायल हुये भगे वानर, प्रभु-शरण लिये
कहे प्रभु लछिमन से 'जा वीर!' चले पद रज धरि सिर रणधीर
तभी बढ़ कर सरोष हनुमान दशानन को थप्पड़ इक तान
मारे, चक्कर वह खा गया सम्हल कर वार जोर से किया
कहा 'तूँ धन्य कि तोरे मार हुआ विचलित' कपि कह 'धिक्कार
वीरता को मोरी जो प्राण तुम्हारे रह गये रे अघखान!'
रोक फिर कपि-दल लक्ष्मण पास पहुँच दशशीश रोष से साँस
खींच बोला 'रे गोर कुमार बड़े हो वीर, तो सहो प्रहार'
छोड़ता था वह जो जो तीर काटते थे सब लक्ष्मण वीर
निरख निष्फल निंज सकल प्रहार ब्रह्म से मिली शक्ति का वार
कर दिया, शक्तिशाली लखन हुये मूर्च्छित न कर सके सहन
तुरत आया नजदीक उठाऊँ भुजा में भरि लङ्का ले जाऊँ
भुजा-बल मेरु तोलनहार हिला नहिं सका, थे जगदाधार
उसी क्षण आ सरोष हनुमान हने मुक्का खल को जो तान
नाक से मुँह से निकला रुधिर तड़पने लगा, धरा पर वह गिर
दशानन रण में आज अचेत मुदित ऋषि मुनि सब देव समेत
तदन्तर सुहृद भक्त हनुमान लखन को विष्णु अंश ही मान
भुजा भरि सादर लिये उठाई पहुँच आये जहँ थे रघुराई
कृपा करि ताके बस सुखसिन्धु तुरत ही बैठ गये उठि बन्धु
कहे फिर प्रभु से पवनकुमार 'अनघ! हो मेरे पीठ सवार
दीजिये दण्ड निशाचर पति को वधे थे हरि जैसे दैत्यों को'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनुष कर लिये राम यूँ बढ़े कि बलि पर वामन ज्यों थे चढ़े
कहे रावण से 'रुक जा दुष्ट ! चलाई शक्ति लखन को कष्ट
दिया तूँ, उसका बदला भरूँ न भागोगे तो वध ही करूँ'
लगे करने राघव शर वृष्टि निरख टिकती थी ना ही दृष्टि
वार थे उनके दुस्सह अति पराक्रमी अद्भुत कोशलपति
नष्ट हो गये उसके रथ छत्र हाथ से छूट गये शस्त्रास्त्र
मुकुट भी काट गिराये राम, रहा नहिं तनिक तेज का नाम
कहे प्रभु 'लौट नगर में जाओ करो विश्राम, पुनः कल आओ
देखना पुनः हमारा तूँ बल' समर से लज्जित हो भागा खल
देव दानव व नाग गन्धर्व आज तक हारे ही थे सर्व
अवध के कोमल राजकुमार बताये, उसे होत क्या हार
व्यथित था आज बहुत अघखान राम-शर ब्रह्मदण्ड सम जान
विवश सोंचा अनरण्य की बात कहा था 'मेरे कुल का जात
वधेगा तुझे शाप हूँ देत' वही शायद यह रघुकुलकेत
किया था मैं ने जब दुष्कर्म हुआ था नष्ट वेदवती-धर्म
वही क्या बदला लेने आई राम-पत्नी बन के दुःखदाई
उमा, ब्रह्मा, नन्दीश्वर शाप दिये, नल-कूबर पा सन्ताप
कहे थे 'पर नारी के साथ बिना उसकी इच्छा दशमाथ
करोगे रमण अगर तूँ कभी मरोगे निश्चय रे शठ ! तभी'
लगत है होगा हि फलीभूत दशानन हूँ पर मैं, यमदूत
करेगा क्या मेरा, है यहाँ असुर कोई, आ जलदी यहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## २८. कुम्भकर्ण-वध

जगाओ कुम्भकरण को जाई बुलाते तुझको तेरे भाई'
सुनत आज्ञा, निशिचर कई गये साथ बहु मद्य मांस ले गये
असुर सब मिल कर उसे जगाये न जागा, भेरी ढोल बजाये
न तब भी, शूल परिघ से मार जगाने लगे, न जागा, हार
हजारों गज दौड़ाये गये वदन पर, नींद खुले इसलिये
जगा ज्यों, सूअर महिष अनेक लगा भछने कच्चे, नहिं सेंक
हजारों घड़ा रक्त पी गया हुआ चैतन्य खड़ा तब भया
चला जब वह रावण के पास बढ़ाता डग, तो ज्यों आकाश
नापने को नारायण चले निरख कपि डरे, भाग ही चले
भागते हुये देख निज अनी साचरज पूछे कोशलधनी
'विभीषण ! कहो कौन यह शूर वृहत् तन से, यद्यपि है दूर
दीखता पर ज्यों भूधरध्वजा अङ्ग है सब आभूषण-सजा
पुरुष है, राक्षस है या असुर ? डर गये देख इसे कपिशूर'
विभीषण कहे 'दशग्रीव-अनुज महातनु निद्रा प्रिय यह दनुज
लड़कपन में हि भूख के कारण हजारों जन खा गया, प्रजा जन
दुःखी हो, गये इन्द्र के पास बताये 'दिया बहुत यह त्रास'
वज्र से वज्री किये प्रहार कठिन लागा इसको वह वार
क्षुब्ध हो ऐरावत का दाँत उखाड़ा तेज किया आघात
पुरन्दर आहत हो गये, तभी देवता ऋषि मुनि चिन्तित सभी
गये, ब्रह्मा से विनती किये 'असुर दुःखदायी सबके लिये
परायी नारी का अपहरण, प्रजा भक्षण, करता सुर धर्षण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपस्वी जन का वास उजार करत, प्रभु रक्षा करो हमार'
पितामह सुने इसे बुलवाये निरख इसको, वह भी घबराये
कहे 'जग नाशन को ही जनम दिया है जनक तुम्हारा अधम !
अतः अब शाप हमारा मान सदा ही सोओ मृतक समान'
सुना ज्यों शाप वहीं गिर गया निरख यह रावण को दुःख भया
बहुत विधि किया दशानन विनय जगे भी कभी, इस हेतु समय
कराया नियत, कि सो छठ मास बितावे, जगे एक दिन, त्रास
न पावें निरपराध जन इससे चला यह ही क्रम रघुवर ! तब से
वही यह दुष्ट, इसे बड़ भाई जगाये हैं, प्रभु से भय पाई'
कहा प्रभु ने 'सेनापति नील ! बढ़ो कपि दल से तुरत हि मिल
कहो, पुर में चहुदिशि डट जायें मुख्य पथ पर अधिकार जमायें'
उधर वह कुम्भकर्ण अति वीर बहुत सारे असुरों से घिर
पहुँच, रावण को किया प्रणाम तथा पूछा 'आया क्या काम ?
जगाया गया मुझे क्यूँ भ्रात ?' 'मुझे रघुवर से भय है प्राप्त
हुआ, वह बाँध सिन्धु पर सेतु लिये कपि सेन, विजय के हेतु
सहानुज चढ़ि आया है पुर पर, लगत कपि जल जैसे पुर सागर
हुआ प्रायः निशिचर का नाश' कहा रावण पुनि 'है अति त्रास
मुझे तुझसे ही है अब आश समर करि करो शत्रु का नाश'
सुना सब रावण ने जो कहा ठठाई हँसा और फिर कहा
'अर्थ तत्त्वज्ञ व नीतिमान मन्त्रियों की ही बातें मान
स्वयं को हितकर हो जो काम करे नृप, तभी सुखद परिणाम
सुनत आपातरमणीय बात नृपति जो तुष्टि है पा जात
तथा बिनु सोंचे दुष्कर कार्य निरत होता, वह नृपति अनार्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


छिद्र यह रिपु लेता पहचान क्रौञ्चगिरि-छिद्र विहग ज्यों जान
उपेक्षा रिपु की जो जन करत अवसि वह दुर्गति को है लहत
बहुत हि तुझे समझायीं भाभी न माने राय विभीषण का भी
सभा में मैं ने भी था कहा तुझे तब तनिक होश नहिं रहा
रहे तुम फूले निज बल-दर्प डँसेगा अब वह ही बन सर्प'
कही जो कुम्भकर्ण ने बात सुना असुरेश्वर, क्रोधवशात्
कहा 'गुरु सम उपदेश वखानि न समझाओ तूँ लाभ व हानि
किया जो मैंने किया, वह बीता राम को मिले न कइसहुँ सीता
अगर मुझसे करते हो प्रेम सहायक बनो, प्रीत के नेम
विपत्ति मेरे ऊपर आई विपत सहयोगी होता भाई'
समझ रावण को अतिशय क्रुद्ध कहा घटकर्ण 'न होओ क्षुब्ध
हो रहे हो तूँ चिन्तित काहे किसे शक्ति जो तुझको डाहे
निराशा का लो तनिक न नाम सिया देखेगी मृत है राम
निहत्था भी यदि रण में जाऊँ टिकेगा कौन, समझ नहिं पाऊँ
गदा, शक्ति न खड्ग नहीं तीर मसल दूँ कर से इन्द्र सा वीर
लखन या राम जिसे मैं पालूँ पकड़ कर तुरत मसल हि डालूँ
चबा जाऊँ यदि विश्व समेट भरेगा फिर भी नहिं यह पेट
मजे से करिये मदिरा पान करें नहिं शोक, न काज महान'
महोदर तेहि अवसर तहँ रहा सुनी जो बात तो उसने कहा
'जदपि हो ऊँचे कुल के जात बोलते हो नीचों जस बात
कहे असुरेश किये अन्याय, बनोगे कैसे कहो सहाय
अकेले ही तुम रिपु का दमन करोगे, कर लोगे सच कथन ?
चतुर्दश सहस असुर अति वीर वधे जो, हैं अजेय रघुवीर',

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा पुनि रावण से 'सुनु मोर सधेगा काम नीति से तोर
वितर्दन, मैं, द्विजिह्व, संह्रादि लिये कर कुम्भकर्ण शस्त्रादि
रक्त से लिप्त, सिया के पास चलें, यह कहत राम का नाश
किया मैं ने, आज्ञा दें आप 'महोत्सव हो, बीता सन्ताप'
न मिलिहें राम प्रतीति होगी उसे, वह बचपन से सुख भोगी
अत: कर लेगी ही स्वीकार' डपट बोला घटकर्ण 'गवाँर !
तुम्हारी नीति कैसी खोटी इसी से चूक गई निधि मोटी
मान कर तुझ जैसों की राय विपत सागर में राक्षसराय
किन्तु ये मेरे जेठे भाई करूँगा इनके लिये लड़ाई
राम का, लक्ष्मण का बन काल विषम सङ्कट मैं दूँगा डाल'
उसे दशसिर रण हेतु सजाया समर में कुम्भकर्ण तब आया
निरख उसे भागे वानर वीर कहे अङ्गद 'यूँ हुये अधीर
कहाँ जाओगे वीरो ! मेरे चतुर्दिक तुझको उदधि घेरे
न मानो इसको अपना काल असुर माया से रूप विशाल
बनाये है, लौटो भिड़ जाओ मरो, मारो जयकार मनाओ'
मिला उत्साह कीस गण लौटे सभी थे वीर, बड़े वा छोटे
शिला गिरि वृक्ष अनेक उपार असुर पर कपिगण करत प्रहार
मगर लागत नहिं उसको चोट चबाने लगा कपिन्ह को खोट
पसारी भुज समेट था लेता गुफा जैसा था मुख भर देता
पईठ मुख में कानों से निकल विहँसते कपि, कुछ होते विकल
तदन्तर रम्भ, तार अरु कुमुद साथ ही ऋषभ, शरभ, नल, द्विविद
बहुत आसुरी सैन्य संहार दिये, करि करि प्रभु का जैकार
परन्तु दावानल सम दुष्ट किया सन्तप्त दिया अति कष्ट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उठे तब नभ पर पवनकुमार किये गिरि शिखर उठा कर मार
कर दिये कुम्भकर्ण को व्यग्र हुआ वह और अधिक तब उग्र
तुरत कर में इक शूल उठाई पवनसुत को करि लक्ष्य चलाई
दिया, हिय को विदार्ण कर डाला हुये पीड़ित तब अञ्जनिलाला
निरख यह ऋषभ, शरभ अरु नील गन्धमादन, गवाक्ष सब मिल
किये आक्रमण असुर के ऊपर मसल कर फेंका सबको भू पर
बढ़े आगे तब वाली-कुमार किये उस पर अति तीव्र प्रहार
क्रुद्ध हो उसने मुक्का मारा, गिरे भूमि ही मिला सहारा
बढ़े अब कपिपति करत लड़ाई कोऊ काहु से कम नहिं भाई
'कपिश्वर का वध हि कर डालूँ हमारे वश होंगे कपि भालू'
विचारत शूल भयङ्कर फेका पवनसुत ने बीचहि में टेका
तोड़ कर उसे फेंक जब दिये, मुदित कपि सब जैकारा किये
पुनः खल मलय शिखर से मारा कपीश्वर को अचेत कर डारा
उठाया अरु पुर में ले चला मुदित था काम हुआ यह भला
बीच में मूर्छा टूटी वीर उछल गये, आये जहँ रघुवीर
छुटे जो कपिपति, था वह क्रुद्ध प्रलय सा मचा दिया हो क्षुब्ध
पकड़ कई कपियों को इक साथ चबाने लगा, तो 'कोशलनाथ !
करें रक्षा' ध्वनि सुन रणधीर लखन ने सात एक संग तीर
चलाये, पुनि-पुनि मारंत बाण कठिन था पर राक्षस का प्राण
विकल हो जाता था पर अटल कहा 'वज्री भी आकर सदल
हमारे आगे ना ही टिके धन्य हो वीर! जो तूँ हो रुके
परन्तु मैं तो खोजता राम मिटाना है उसका ही नाम'
लाँघ लछिमन को जब बढ़ गया राम-रौद्रास्त्र उसे विंध गया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभीषण सम्मुख तब ही आये बड़ा भाई था, शीश झुकाये
कहे 'निष्कासित दशसिर-अनुज नमन करता है तुझको दनुज !
बड़ी ही अद्भुत विधि की गति विपक्षी मैं' वह बोला 'सुमति !
भगति प्रभु पद में तोर अनन्य निशाचर कुल में तुम ही धन्य
हुये' फिर गरज फिरा उस ओर जिधर थे कोशलभूप किशोर
विकल कर दिया राम ने मार हाथ से छूट गये हथियार
चलाने लगा हाथ और लात व्यथित कर डाला क्रोध वशात्
कपिन्द्र को, फेंका गिरि का शिखर राम पर, चूर्ण कर दिये रघुवर
कहे फिर 'अब नहिं करो विषाद तुम्हारी मृत्यु दो घड़ी बाद'
चलाये राम अस्त्र वायव्य बना रिपु का दहिना कर लक्ष्य
चला ऐन्द्रास्त्र वाम भुज छाँटे दुई शर मार युगल पद काटे
किया चीत्कार जो मुँह फैलाई उसे भी भर दिये बाण चलाई
पुनः प्रभु-भुज प्रेरित ही बाण हर लिया कुम्भकर्ण का प्राण
मुदित सुरगण वरसाये फूल कहत 'यह था धरणि का शूल
अभय सब हो गये इससे आज विजय हो तेरी रघुकुलराज'
उसी क्षण सिर उसका पुर द्वार गिरा जा, राक्षस हाहाकार
लगे करने, रावण से कहे 'कुम्भकर्ण दुनियाँ में नहिं रहे
पराक्रम किये यद्यपि भारी परन्तु वध दिये उन्हें खरारि'
सुना रावण तो रोने लगा 'अनुज तूँ मुझे छोड़ के भगा
तेरे बल जीता मैं सुरलोक वही तूँ मुझे दे गया शोक
जगत् में विरथा मेरा जीना रहा जब जगति में तूँ ही ना'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## २९. वीर राक्षस समूह का वध

विलपता रावण ज्यों असहाय नरान्तक, देवान्तक, अतिकाय
त्रिशिर अरु महापार्श्व भी आये महोदर भी आ धीर बधाये
दशानन का सौतेला भाई महोदर, महापार्श्व दुःखदाई
नरान्तक, देवान्तक, अतिकाय त्रिशिर सब जुटे समर में जाय
सभी थे काल विवश रणधीर नरान्तक वधे वालिसुत वीर
त्रिशिर देवान्तक वध हनुमान किये, जो नील महाबलवान
महोदर को रण खेत सुलाये, उधर भीषण उत्पात मचाये
हुये था महापार्श्व खल नीच उसी की गदा उसी से खींच
ऋषभ ने किया जोर से वार हृदय पर, यमपुर गया सिधार
मरे ये पांच, असुर असहाय हुये, तब बढ़ गरजा अतिकाय
'गरजता कौन असुर रण माहिं सहस हय है जोते रथ माहिं
बढ़ा आता है मेरी ओर' सविस्मय पूछे अवधकिशोर
विभीषण बोले 'रावणतनय इसी के बल से लङ्का अभय
धान्यमालिनिनन्दन यह वीर तुरत वध आवश्यक, रघुवीर !'
विभीषण बता रहे थे इधर तबाही मचा दिया वह उधर
रौंदते कपि दल को बढ़ आया सामने आया, प्रभु को सुनाया
'धनुषधारी मैं सम्मुख तोर हो साहस, करो सामना मोर'
'बड़ी गर्वीली तेरी बात' कहे लक्ष्मण इसके पश्चात्
धनुष टङ्कार किये जब घोर क्रुद्ध हो वाणी परम कठोर
कहा 'मेरे बाणों की चोट नहीं सह सकते, जाओ लौट
नहीं यदि खड़े रहे धनुधारी पठा दूँगा यमपुर हि मारी'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे सौमित्र 'दुरात्मन् ! बात करो नहिं, केवल कर आघात
मुझे समझो ना ही तूँ बाल समझ लो मैं हूँ तेरा काल'
तभी छिड़ गया भयङ्कर युद्ध असुर रण दुर्मद, लछिमन क्रुद्ध
दिव्य अस्त्रों की वरसा करते सभी सायक खल-शर से कटते
'ब्रह्म से प्राप्त किया वरदान कवच से रक्षित इसका प्राण
इसी से गरज रहा अतिकाय' पवन बोले धीरे से आय
'धनुष पर दूसर शर मत धरें इसे ब्रह्मास्त्र साध वध करें'
सुने सौमित्र पवन की बात चला ब्रह्मास्त्र किये आघात
कटा मस्तक भू पर गिर गया असुर दल में विषाद छा गया
हुये हर्षित वानर समुदाई कहे 'जै लक्ष्मण, जै रघुराई'
'मरा अतिकाय' ये रावण सुना 'गया यह भी' कह कर सिर धुना
सोंचने लगा दशानन वीर 'पराक्रमशाली हैं रघुवीर
शूरमा रण मदमत्त हमारे असुर जो, चुन-चुन कर वे मारे
इन्द्रजित नाग पाश भी साधा उबर गये, पाकर वैसी बाधा
दिव्य अस्त्रों के जाननहार रणकुशल दोनों राजकुमार
शोक रोगादि रहित वह श्रेष्ठ अवसि नारायण लक्ष्मण-ज्येष्ठ
रही लङ्का अजेय सर्वदा वहीं अब भय से फाटक सदा
बन्द रहते हैं' पुनः पुकार कहा 'निशिचरो ! रहें होशियार
सभी, दिन सन्ध्या प्रातःरात कवन कब आवत, कब है जात
गुप्तचर रिपु का आ नहिं जाये यहाँ का भेद न अरि दल पाये'
निशाचरपति था बहुत अशान्त आज तन मन दोनों से क्लान्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ३०. लक्ष्मण-शक्ति

इन्द्रजित् तेहि अवसर आ बात कहा 'यूँ चिन्ता करें न तात !
जी रहा यह सुत सुरपति जयी आप हों दुःखी बात है नयी
जा रहा मैं युद्धस्थल माहिं समझ लें, राम लखन हैं ना हिं'
कहत अस रथ पर हुआ सवार लिया संग में सारे हथियार
छत्र था तना श्वेत सिर ऊपर झले जा रहे बाजू में चँवर
सुवर्णाभरण अङ्ग पर सजे चला ज्यों ही रणभेरी बजे
पिता ने उत्साहित कर भेजा कहा 'सुत ! आशिष मेरा ले जा'
पिताशिष सादर सिर पर धार लिये संग सैनिक पारावार
पहुँच रण में, रणभूमि माहीं किया स्थापित वह्नि क्षण माहीं
फूल ले लाल, लाजा, चन्दन, समन्त्रक पूजि राक्षसनन्दन
दिया आहुति अग्नि को जभी प्रतीति हुयी विजय की तभी
बढ़ा अब संग ले निशिचर जाति पराक्रम करता भाँति-भाँति
अनगिनत वानर सैनिक मार बिछाया भू पर, कपि लाचार
सैन्यपति भी हताश, सब वहीं दीखता काहू को कुछ नहीं
लड़ें किससे, पर खल वह त्रस्त कर दिया बाणों से ढँक पस्त
गड़ाया राम लखन पर दृष्टि अनवरत वरसावत शर वृष्टि
कहे प्रभु देख अनुज की ओर 'प्राप्त कर ब्रह्म-अस्त्र का जोर
हो अन्तर्हित करता है वार, इसे हम कैसे सकते मार
किया घायल कपि सरसठ कोटि सभी हैं निष्क्रिय भू पर लोटि
शोभता वानर दल नहिं, अहो अनुज ! तजि घबराहट सब सहो'
करत शर वृष्टि खल अविराम निहारा, मूर्च्छित सानुज राम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खुशी का उसे ओर ना छोर गरजता गया दशानन ओर

विभीषण हनुमत लिये मशाल देखते फिरते, रण का हाल
कपीश्वर आदि वीर असंख्य सभी मूर्च्छित थे बन शर-लक्ष्य
विभीषण पूछे देख रीछेश 'बोलिये, जीवन तो है शेष ?'
कहे भालूपति 'राक्षसराज ! अत्यधिक घायल हूँ मैं आज
परन्तु कहो अञ्जनालाल जी रहे हैं कि हैं बेहाल ?'
विभीषण बोले 'अचरज आज न पूछे, कैसे रघुकुलराज
अनुज संग, कैसे हैं सुग्रीव पवनसुत पर ही प्रेम अतीव ?'
कहे तब जाम्बवान् 'सुन वीर ! केसरीनन्दन अतुलित धीर
अगर हैं जीवित वह बलवान बचेगा निश्चित सबका प्राण'
रीछपति की सुन ऐसी बात पवनसुत बोले करि प्रणिपात
'कहें क्या मेरे लायक काम सुखी होंगे कैसे श्रीराम ?'
कहे भालूपति 'लङ्का जाओ चिकित्सक तहँ सुषेन, ले आओ'
मिली आज्ञा कि वीरवर चले पइठ गये पुर में, वैद्यजी मिले
विचारे 'संग चलें ना चलें उपारि भवन इन्हें ले चलें'
लिये आये सगेह, तब देख भिषक् बोले 'है जीवन शेष
अगर सञ्जीवनी कोई लाये सभी हों स्वस्थ प्राण बच जाये
दूर उत्तर हिमगिरि के पास द्रोण पर्वत पर, जहँ कैलास
सुवर्णकरिणी, विशल्यकरिणी तथा सन्धानी, सञ्जीवनी
नाम की औषधि होती प्राप्त' कहे तब जामवन्तजी 'तात !
तुम्ही हो सक्षम इसमें जाओ उगे नहिं सूर्य, लौट कर आओ'
सुनत भालूपति-आयसु वीर उड़े नभ पथ पर हनुमत धीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दशानन सुना गुप्तचर-बात सजीवन लेन पवनसुत जात
कहा वह कालनेमि से 'जाओ पवनसुत को पथ में विलमाओ
बिता दो रात, काम बन जावे करो माया, न औषधि आवे'
कहा तब कालनेमि 'हे नाथ! कठिन है माया उसके साथ'
किन्तु जब क्रुद्ध हुआ दशमाथ विचारा वह 'मृत्यु कपि हाथ
भली है' तब मारग में जाई रचा आश्रम सुन्दर सुखदाई
वहीं साधु का वेष बनाये हुये, बैठा माया फैलाये
लगी माया वश कपि को प्यास अतः मायावी मुनि के पास
पहुँच, सादर उसको पग लागे 'पिऊँ जल' सविनय आज्ञा माँगे
परन्तु छेड़ दिया हरि कथा रसिक यह भक्त, विरम रहे यथा
दिया जल पात्र 'पीजिये ये जल' कहे कपि 'सर समीप हि निर्मल'
चतुर यह कीस, जान मुनि कहा 'तूँ अब तक दीक्षा बिनु हि रहा'
बिना दीक्षा के जो जाओगे औषधि दिव्य, नहीं पाओगे'
कहे कपि 'सर-मज्जन जलपान प्रथम कर लूँ फिर सन्त महान!
लूँ दीक्षा' कहि जा सर में घुसे गही पद मकड़ी, मारे उसे
दिव्य तब रूप तुरत ही धरी कही वह 'कपटी मुनि है हरि!'
बहुत इङ्गित था उनके लिये गये, जा गुरु दछिना ही दिये
प्रथम, पद पकड़े पटके भू पर मरा वह राम नाम ही लेकर
वहाँ से चल वानरकुलदीप पहुँच गये जब गिरि द्रोण समीप
'औषधि कितनी, कैसी चहिये न जानूँ, गिरि ही कर पर लिये
चलूँ' अस सोंच उठा गिरि द्रोण लवटि चले, हिय हरि सुमिरत मौन
अवधपुर ऊपर पवनकुमार उड़ रहे थे जब, उन्हें निहार
भरत ने सोंचा 'वृहदाकार असुर यह चाहत, फेंक पहार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरी को कर दूँ नष्ट भ्रष्ट मरे कुछ प्रजा, लहे कुछ कष्ट'
तुरत लघु सायक एक उठाये पवनसुत को करि लक्ष्य चलाये
लगा शर ज्यों कपि कहि श्रीराम गिरे, श्रीभरत दुःखी 'हे राम
काम यह मैं ने क्या कर दिया भगत यह तो कोई शुभ हिया
हुआ संज्ञा विहीन, है रात करूँ क्या' फिर बोले विलखात
'वचन, मन, करम से प्रभु का दास अगर मैं, तो यह कपि गत त्रास
अभी उठ बैठे' झट कपिराई कहत श्रीराम राम रघुराई
बैठ गये, भरत प्रफुल्लित गात किये कई प्रश्न 'वा़नर गात
कवन हो भैया ! जिनका नाम लिये तुम, कहाँ हमारे राम ?
कहाँ प्रिय लखन ? कहाँ सिय माई ? पता है, बतलाओ कुछ भाई !'
कहे कपि 'नाम मोर हनुमान कहें पर आप कौन ? श्रीमान् !
परम सुन्दर इन्दीवर श्याम वदन, जैसे मेरे प्रभु राम'
'भरत मैं रामानुज, नरवीर कहाँ हैं, सिया संग रघुवीर ?
कवन विधि भाभी कैसे लखन रहत वन में ? सब सरसिज वदन'
बताये हनुमान सब कथा मचा रण लङ्का में है यथा
लखन बेहोश आज रण बीच किया घायल है इन्द्रजित् नीच
सभी मूर्च्छित थे, जब मैं चला तनिक चैतन्य राम थे भला
मुझे जाने दें, होगी देरी विक़ल मन भरत कहे 'सुनु मेरी
अवध में गुरु को, माँ को नमन चलो करलो, दुःख होगा शमन'
तुरत दोनों जन पुर में आये नमन करि, समाचार बतलाये
कहीं माँ बड़ी 'सुनों हनुमान ! राम से कहना, रघुकुल भान !
लखन को संग लिये वन गये अवध आना तो संग हि लिये'
सुमित्रा बोलीं 'सुत रिपुसूदन ! अकेले रघुवर, विपदा गहन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हुआ क्या, लखन जो मृत्यु सेज समर में कम नहिं तेरा तेज
अकेले राम रहेंगे ना ही सुमित्रा पुत्रवती जग माहीं,
कहे कैकेई के दुःख कौन यहाँ, उन संग कवि सारे मौन
लिये यह भाव, पलट विधि वाम अवसि आयेंगे सानुज राम
उर्मिला रघुकुल की मरजाद कही धीरे 'नहिं तनिक विषाद
हमारी चूड़ी अरु सिन्दूर अभग्ना, दीप्त, वहाँ वे शूर
स्वस्थ होंगे प्रभुवर के गोद विपत्ति कैसी, मनावें मोद'
तभी गुरु बोले भावी द्रष्टा जनक जिनके हैं जग के स्रष्टा
'दशग्रीव को वधि निश्चय विजय लहेंगे, रण बाँकुरे कुअँर द्वय'
प्रतीति गुरु पर सब की महान नमन करि पुनः कहे हनुमान
'मुझे आज्ञा दें गुरुवर ! मैया ! तथा प्रभु के प्रिय दोनों भैया !'
भरत बोले 'अञ्जनिसुत ! वीर ! चढ़ो बैठो तुम मेरे तीर
तुम्हें पहुँचा दूँ क्षण में लङ्का' हुयी कपि के मन में कुछ शङ्का
'सहेगा गिरि संग सायक भार' सुमिर प्रभु-महिमा किये विचार
भरत ये भगत, असम्भव नाहीं कहे कर जोर 'तुरत प्रभु पाहीं
पहुँच जाऊँगा, दें आशीष' वहाँ लङ्का में कोशलाधीश
लखन से लिपट रो रहे ऐसे बिना पर कातर पंछी जैसे
'बीत गई अब तो आधी रात न आये पवनपुत्र, प्रिय भ्रात !
अवध में तज परिजन, माँ, बाप हमारे संग कठिन सन्ताप
सहे वन का, हे दुःख के साथी ! कहो न, ऐसी जल्दी क्या थी
गये तुम छोड़ मुझे क्यूँ लखन ! सदा ही करते थे अनुसरण
अवध जाने पर धावत आई विकल हो पूछेगी ही माई
'न आया साथ, कहो श्रीराम ! कहाँ है तेरा लखन ललाम ?'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्हें समझाऊँगा मैं कैसे तनिक बतलादो, बोलो मुझसे
कहूँगा क्या उर्मिल से जाकर सिया हित आया अनुज गवाँ कर
भवन, जन, जाया, सुत, सम्पदा जगत में सभी जगह सर्वदा
सुलभ, आते जाते कई बार, सहोदर भाई सा उपहार
जनक जननी का दिया हुआ मिलत तब, जब प्रभु करते दुआ
तुम्हारे बिन मैं हूँ असहाय' रुदन सुन प्रभु का कपि समुदाय
विकल था, तभी अञ्जनालाल पहुँच बोले 'जै अवधभुआल'
रखे गिरि प्रभु को किये प्रणाम 'न तुमसा प्रिय कोऊ' कहे राम
भिषक् ले औषधि किये उपचार तुरत उठ बैठे छोट कुमार
गन्ध से ही औषध के तभी स्वस्थ हो, उठ बैठे कपि सभी
दिया सञ्जीवनी सबको प्राण विशल्यकरिणी से निकले बाण
सुवर्णकरिणी ने व्रण सब भरे लगा सन्धानी, अस्थि जुरे
पवनसुत फिर वह औषधगिरि जहाँ से लाये थे, तहँ धरि
लवटि आये, किये सबको नमन सभी बोले 'जै सद्‌गुण सदन'

## ३१. मकराक्ष-वध

उधर वह दुष्ट निशाचरपति सोंच कर, असुर मरे कस कति
न देखें पुरजन, सो उठवाई नित्य ही उदधि देत फेंकवाई
इधर कपिपति की आज्ञा पाये जला कपिगण मशाल ले आये
किये धावा लङ्का पर सभी जली धूँ-धूँ कर नगरी तभी
जलत पुर की छाया को पाकर हो गया लाल वर्ण का सागर
धधकते थे मशाल कपि हाथ, असुर दल अस्त्र शस्त्र के साथ
जूझ थे रहे, मचा रण भारी विकल सब, हा हा हेति पुकारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


असुर कम्पन, प्रजङ्घ, यूपाक्ष, तनय घटकर्ण के, शोणिताक्ष
सदल बल मर गये, यत्र तत्र चतुर्दिक गज, वाजि रथ, छत्र
असुर कपि रुण्ड, मुण्ड, हथियार, गदायें, शूल, तीर, तलवार
कटे टूटे पादप गिरि खण्ड बताते थे रण होत प्रचण्ड
कहीं घायल वानर थे लस्त असुर अगणित कतहुँ थे पस्त
कहा असुरेश्वर 'सुन खरतनय! समर में आगे बढ़ इस समय
पकड़ सारे कपियों को खाओ लखन रघुवर को ग्रास बनाओ
सुनत मकराक्ष अस्त्र कर गहा बढ़ा ज्योंहि रण को, ध्वज ढहा
किया परवाह नहीं कुछ क्रूर असुर, था बल के मद से चूर
दिया कपियों को अति सन्ताप बढ़े तब रघुकुलभूषण आप
बड़ी सुन्दर शोभा कमलाक्ष दूसरी तरफ दुष्ट मकराक्ष
देव, दानव, किन्नर, गन्धर्व निरख रहे समर, साचरज सर्व
काटता खल सब मेरे बाण अतः अब हर लूँ, इसके प्राण
विचारी प्रभु उसको रथ रहित कर दिये, होकर अतिशय कुपित
किया मकराक्ष शूल से वार कहत 'अब जाओ यम के द्वार'
शूल वह था शङ्कर का दिया विखण्डित पर राघव ने किया
तान मुक्का जब प्रभु पर बढ़ा राम का आग्नेयास्त्र तब कढ़ा
छुटा धनु से ज्योंही वह तीर विदारा हिय को, धरणि पर गिर
मर गया असुर, कीस सब कहे 'विजय श्रीराम आपकी रहे'

## ३२. मेघनाद-वध

मरा खरतनय, सुना दशमाथ पीसता दाँत क्रोध के साथ
कहा 'सुत मेघनाद! रणधीर! बली क्या तुझसे भी रघुवीर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाबलवान इन्द्र को जीते राम लक्ष्मण फिर क्यों हैं जीते
इन्हें जैसे भी हो वध डालो विजयश्री अपने गले लगालो'
सुना पितु वचन क्रोध भी जगा आभिचारिक मख करने लगा
निहारा चिह्न विजय के जभी किया प्रस्थान युद्ध को तभी
बइठ रथ पर, हो अन्तर्धान लगा करने शर वृष्टि महान
कुपित हो बोले लक्ष्मण लाल 'सभी असुरों का बनकर काल
करूँगा मैं ब्रह्मास्त्र प्रयोग असुर सब, इसकी करनी भोग
मरें' प्रभु बोले 'अनुज! विचारो न इसके कारण सबको मारो
समर से विरत, छिपा, शरणागत तथा विक्षिप्त, पीठ दे भागत
वधे ऐसे को यह नहिं उचित न साधो ब्रह्म अस्त्र, ये अनुचित
जदपि यह है मायावी नीच छिपा अपने को रण के बीच
कर रहा है प्रहार, पर भाई! मरेगा निश्चय, सुर-दुःखदाई'
अनुज को समझावत यह बात किये प्रभु चहुँ दिशि दृष्टिपात
समझ कर दोनों के दृढ़ भाव विचारा मेघनाद कि दाव
खेल लूँ माया से, तेहि समय प्रकट होकर वह रावणतनय
वहीं माया-सीता रच लिया पीटने लगा उन्हें, वध किया
बैठ कर रथ पर, रण के बीच गरजने लगा, असुर वह नीच
गरज सुन मेघनाद का, सभी भागने लगे कीसगण, तभी
रोक सबको हनुमत ने कहा 'रुको सब, भागे जाते कहाँ'
निरख कर पवनपुत्र को आगे पुनः वानर सारे संग लागे
किये अञ्जनिसुत भीषण युद्ध आसुरी सैन्य हुआ अवरुद्ध
पवनसुत ने पर रोकर कहा 'अम्ब का जीवन ही नहिं रहा
लड़ाई काहे को अब लड़ें चलो चलकर प्रभु चरणन्हि पड़ें'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पहुँच गये हनुमान प्रभु पास सभी को लेकर, बहुत उदास
चरण गहि बोले 'हद कर दिया पातकी, माँ का वध कर दिया'
सिया अब नहीं सुने रघुवीर 'हा प्रिये' कह कर हुये अधीर
बहुत भाँति समझाये लखन 'कठिन निश्चय सत्पथ पर गमन'
लगाये हिय से प्रभु को लखन खिन्न थे, वरस रहे थे नयन
व्यवस्थित कर सेना को तभी विभीषण आये, जहाँ थे सभी
तुरत पूछे 'ये बातें कैसी ? नहीं कुछ, जब कि खिन्नता जैसी'
हुयी जो हनुमान से प्राप्त लखन बतलाये सारी बात
विभीषणजी ने कहा तुरन्त 'असम्भव है, सीता का अन्त
सिया पर रावण की है प्रीति न होने देगा ऐसी अनीति
बना माया की सीता मारा कथन यह मानें सत्य हमारा
तजें प्रभु शोक, करें मन स्वस्थ' सुने तब राम हुये आश्वस्त
विभीषण कहे बात पुनि गूढ़ 'युद्ध से लौट इन्द्रजित मूढ़
निकुम्भिला के मन्दिर में जाई सम्प्रति होम निरत, रघुराई !
विजय हेतु वह यज्ञ अपावन करत खल, गो द्विज देव सतावन
अगर सविधि पूरा कर लेगा दुःखद होगा, नहिं शीघ्र मरेगा
लखन को आज्ञा दें रघुनाथ ! वानरी दल ले जावें साथ
वहाँ कर विघ्न, करें कपि युद्ध अपावन मख होवे अवरुद्ध
करेगा उठकर समर अवश्य हतें तब लखन उसे, वह वध्य'
'उचित सम्मति' बोले रघुनाथ 'कपीश्वर संग सेन ले साथ
करो जा युद्ध दुष्ट संहारो अनुज ! अब मेघनाद को मारो'
राम ने आज्ञा ज्यों ही दिया तुरत लक्ष्मण ने पद रज लिया
कहे 'तव आयसु सिर पर धार अवसि आऊँगा उसको मार'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किये परदछिना प्रभु की वीर लिये संग सुग्रीवादि रणधीर
निकुम्भिला मन्दिर को चल दिये विभीषण भी उनके संग गये
पहुँच कर वहाँ लखन हो खड़े विलोके, राक्षस रण को अड़े
विभीषण बोले तत्क्षण उनसे 'करो आक्रमण, कहें कपिगण से
बड़ा व्यूह जो असुरों का, आप करें भेदन झट, हे निष्पाप!
दिखेगा तब वह राक्षसतनय क्रूरकर्मा मख रत इस समय'
सुने ज्यों अमित पराक्रमी वीर लखन ने जोड़ा धनु से तीर
मची फिर तो शरवृष्टि महान जुरत छूटत नहिं पड़ता जान
सुना तब मेघनाद रिपु आया मेरे असुरों का किया सफाया
कुपित सुरपति जेता दुर्धर्ष समर में आया, सहित अमर्ष
भिड़े उससे पहले हनुमान लगा वरसाने उन पर बाण
विभीषण बोले 'सुनें कुमार! परम मायावी असुरकुमार
अस्त्र घातक वह छोड़े नहीं तभी तक उसे रोक दें वहीं
सामने बरगद वृक्ष समीप न आवे, तब तक जीवनदीप
बुझादें, बात हमारी मान कठिन होगा नहिं तो, लें जान'
इन्द्रजित् देखा खड़े विभीषण लगा कहने अतीव दुर्वचन
'ये चाचा मेरा, अपने जैसा लखन से बात कर रहा कैसा
जनम कर राक्षस कुल में नीच! बईठ गये, जा रिपुओं के बीच
न समझे रे दुर्मति! निज कर्म कलङ्कित किये तूँ राक्षसधर्म
स्वजन तुझसा, कोई है अन्य करे जो ऐसा काज जघन्य'
कहा जब ऐसे असुरकुमार विभीषण किये तुरत प्रतिकार
'पराया धन करके अपहरण, परायी नारी के संग रमण
सुहृद जन के प्रति करि के शङ्का, नष्ट होने वाली है लङ्का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


द्विजों का वध अरु देव विरोध, धरम प्रतिकूल काम, अरु क्रोध
राक्षसाधिप में ये सब दोष तुझे भी तो है नहिं कुछ होश
नहीं है रुचि अधर्म में मोर निकाला घर से मुझे, पितु तोर
लिया मैं ने आ प्रभु का शरण, हो रहा है अब काहे जलन
कहो जो भी कहना है आज तुझे वध कर, सुर मुनि प्रिय काज
करेंगे ये रघुकुल के वीर, दिखाले निज पौरुष, रणधीर !'
हुआ फिर लखन इन्द्रजित् समर न कोई कम लागे, ना बढ़कर
वरसते शर जस होती वरसा शरों से दोनों के, नभ सहसा
व्याप्त हो जाता था, क्षण माहिं मिलेगी किसे विजय, किसे नाहिं
कठिन कहना, किन्तु रामानुज हते सारथि को, क्रोधित दनुज
प्रलय का रूप खड़ा कर दिया, लखन ने समुचित उत्तर दिया
वदन दोनों के लहू लुहान सोहता किंशुक कुसुम समान
लखन ने काट दिया ध्वज छत्र असुर का मरा अश्व, निःशस्त्र
विखर गये तीर ढाल तलवार गदा आदि, वह असुरकुमार
किया तब आसुर अस्त्र प्रयोग लखन माहेश्वरास्त्र संयोग
किये धनु पर, काटे सब वार चतुर्दिक अद्‍भुत हा-हा कार
पितर भी ऋषि मुनि अहि गण घेरे पहुँच गये नभ पर सुर बहुतेरे
लखन की विजय मनाते सभी, भयङ्कर परम दिव्य शर तभी
धरे धनु पर अरु किये प्रणाम 'अगर निरुपम पौरुष युत राम
धरमरत, सत्यव्रती हैं वीर तो धनु से छूटत ही, हे तीर !
करो तुम रावणसुत का अन्त नमन करता मैं तुझे अनन्त'
छूटते ही वह उत्तम बाण हर लिया मेघनाद के प्राण
मुकुट संग सिर कट भू पर गिरा सैन्य था शेष जो लङ्का फिरा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'सुमित्रानन्दन जयी हमार' लगे करने कपि जै जैकार
मरा खल शान्त हो गई धूल वरसने लगा गगन से फूल
मनाये सुर भी नभ पर खुशी कहत 'अब निर्भय गो द्विज ऋषि'
विभीषण इत्यादि के साथ आ गये लक्ष्मण जहँ रघुनाथ
झुकाये प्रभु चरणों में शीश साथ में अति प्रसन्न सब कीस
'मरा प्रभु ! मेघनाद दुःखदाई वधे उसको, ये आपके भाई'
विभीषण हर्षित बोले आकर, 'मरा रावणसुत जेठ निशाचर'
कहत राघव बढ़ गले लगाये अनुज को, नेह सहित सहलाये
वदन सब, और सूंघ कर माथ कहे हर्षित तन श्रीरघुनाथ
'दुसह था दुर्जय था वह वीर असाध्य था, साध लिये रणधीर !
दशानन की दाहिन भुज काट सुगम कर दिये, विजय की बाट'
कहे फिर श्रीसुषेन से राम 'सबों को जैसे हो आराम
करें झट आप वही उपचार स्वस्थ हो जायें वीर हमार
बहुत क्षत जर्जर सारे वीर अनुज भी मेरे ये रणधीर
दिवस अरु रात तीन, अविराम समर में किये हैं दुष्कर काम'
किये तब कपि सुषेन उपचार हुये सब स्वस्थ, उठे अङ्ग झार
निकल गये सबके तन से तीर तनिक नाहीं काहू को पीर
वहाँ रावण से बोला सचिव 'निशाचरपति ! है दुःखद अतीव
बात, यह कहते होती खेद विभीषण बतलाये सब भेद
वीरतापूर्ण अन्त तक लरे इन्द्रजित लछिमन हाथों मरे'
सुनत सुत वध की दारुण बात तुरत लङ्केश्वर शोक वशात्
हुआ मूर्च्छित, कुछ देरी बाद गई जब मूर्च्छा, सहित विषाद
लगा रोने 'ऐ प्राण हमार किया कस, लछिमन तव संहार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


दिखाया यम ने आज महत्व जमाकर तुझ पर अपना स्वत्व
हुयी कवनि विधि यह अनहोनी तुम्हारे बिनु दुनियाँ ही सूनी
किये नहिं अन्तिम क्रिया हमार उलट निज भार मेरे सिर डार
मात, पितु, पुर, पत्नी तजि आज कहाँ गये, हे मेरे युवराज !'
असुरपति सुत वध से विक्षिप्त उसी क्षण रोष हो गया दीप्त
धुआँ युत अग्नि मुख से बाहर निकलने लगी, क्रूर वह निशिचर
बड़ा ही दारुण निश्चय किया 'विपत्ति मूल राम की प्रिया
इन्द्रजित् तो माया-कृत सिया मार कर रिपु को धोखा दिया
करूँगा सुत कृत छल मैं सत्य वधूँगा सिय को आज अवश्य'
रोहिणी पर जैसे ग्रह क्रूर करे आक्रमण, ताहि विधि शूर
दशानन, झपट उधर चल दिया जिधर थी तरु तर बैठी सिया
कुपित हैं आज निशाचरपति निरख भयभीत हुए सब अति
कहा बढ़ कर सुपार्श्व 'रणधीर ! न सोहत तुझे, नारी वध वीर !
आप वेदज्ञ, पुलस्त्य के पौत्र तथा दानव कुल के दौहित्र
निहारें, सिय का रूप अनूप समर करि जीत लीजिये भूप !'
हवा की हल्की सी हि झोंका मोड़ती जैसे रुख मेघों का
रुका तैसे हि वह सुरद्रोही कोसने लगा बैठ निज को ही
विलपता लङ्कापति इस ओर उधर अन्तःपुर में भी रोर
पतिव्रता मेघनाद की प्रिया सुलोचना ने भी सब सुन लिया
मरे रण में मेरे प्राणेश रखा सिर उनका जहँ अवधेश
ससुर ढिग जाकर किया प्रणाम कही 'जाती हूँ जहँ श्रीराम
दयालु हैं, वे कोशलाधीश मांग लाऊँगी पति का शीश
सती होऊँगी, यह हि सद्गति समर मख रुके न, लङ्कापति !'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गई वह वहाँ, विभीषण मिले उसे देखे, आँसु बह चले
कहे प्रभु से 'सुलोचना आई मांगने शीश', उठे रघुराई
दिलाये सादर उसको शीश कहे सब 'धन्य कोशलाधीश'
चितारोहण कर पति के साथ गई पति लोक, सभी ने माथ

## ३३. अहिरावण-वध

झुकाया, उधर सोंचता रावण 'तनय अब एक शेष अहिरावण
समर में दे उसकी आहुति, करूँगा अपनी पूर्णाहुति'
किया फिर उसने तन्त्रप्रयोग तुरत हो, अहिरावण से योग
उसे उत्कण्ठा जागी मन में 'चलूँ मैं अभी आज लङ्का में
पिता पद में चलि शीश नवाऊँ विपत्ति में सहाई बन जाऊँ'
पहुँच झट पितु को किया प्रणाम कहा 'कुछ कहें मुझे भी काम'
दिया आशिष फिर बोला 'वीर! बने जैसे, सानुज रघुवीर
पकड़ ले जाओ तुम अहिलोक मरेंगे वानर सब, करि शोक
जुगाते नाग नागमणि जैसे घेर रहते हैं कपिगण तैसे
राम को, अनुपम सारे बन्दर समझ कर जाना, कारज दुष्कर'
कहा अहिरावण 'करें न खेद समझ में आया सारा भेद
विभीषण मिले शत्रु से जाई वही तो मुझे आज सुखदाई
बनाकर उनका ही मैं रूप उठा ले जाऊँगा नर-भूप
गगन में देखें जब आलोक, समझ लें शत्रु गया अहिलोक'
बात कर गया असुर पुनि तहाँ लगी थी खेमा प्रभु की जहाँ
निशाचर ने माया फैलाया सकपि सानुज सोये रघुराया
वहाँ हनुमान पूँछ की बाड़ बना, थे सजग द्वार पर ठाड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बना खल निज पितृव्य का वेष विचारा, कैसे पाऊँ प्रवेश
कहा जा सम्मुख 'खोलो द्वार मुझे जाने दो पवनकुमार !'
कहे कपि 'बीती इतनी रात कहाँ थे ? कहें विभीषण ! बात'
कहा खल 'जाकर सिन्धु तीर किया सन्ध्या वन्दन फिर वीर !
गया पुर में कि पता लगाऊँ तथा आकर प्रभु से बतलाऊँ
मरा है मेघनाद, तदनन्तर विचारत आगे क्या दशकन्धर'
पवनसुत फिर पूछे 'इस निशि का कहें 'सङ्केत शब्द' हम सब का'
सम्हल बोला 'मैं था हि कहाँ किया सुस्थिर प्रभु ने जब यहाँ'
विगत शङ्का कपि दिये प्रवेश गया खल, जहँ सानुज अवधेश
आसुरी माया वश थे अचेत नींद में वानर भालू समेत
उठा दोनों को भागा जभी प्रभा फैली अम्बर पर तभी
दशानन समझा, पूरण काम गया अहिरावण अपने धाम
असुर के जाते ही अहिलोक छँटी माया, व्यापा अब शोक
जगे सुग्रीव, निरख उस ओर शयनतल पर नाहीं प्रभु मोर
उठे झट, पूछे 'कहें रीछेश ! कहाँ हैं सानुज श्रीअवधेश ?'
विभीषण, रीछपति, युवराज न जानत कोऊ, कहँ रघुराज
शयन में थे सानुज रघुवीर कहाँ गये, कपि सब हुए अधीर
पवनसुत से पूछे सब जाई 'सहानुज गये कहाँ रघुराई ?'
कहे कपि 'जब से हुआ अन्हेर पूँछ की परिखा से अनि घेर
सजग मैं, सावधान हूँ बैठा विभीषण के अतिरिक्त न पैठा
समझ कर उचित बात अरु वेष दिया था मैं ने इन्हें प्रवेश'
विभीषण सुन बोले अकुलाई 'समझ में बात हमारे आई
बनाकर रूप छली वह मेरा सका नहिं लाँघ आपका घेरा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


झूठ तब बोला, भेजा रावण, न कोई वह, निश्चय अहिरावण
विलम्ब से होगा घोर अनर्थ तुम्हीं हो सब से श्रेष्ठ समर्थ
पवनसुत ! करो शीघ्र यह काज चले जाओ उस खल के राज
उदय हों रवि न, अञ्जनालाल ! लिये आओ प्रभु को' तत्काल
पता पाते चले पवनकुमार मिला अहिलोक, नगर के द्वार
द्वार का द्वारपाल कपि एक खड़ा हो गया द्वार को छेंक
पवनुसत बोले 'निर्भय तो हो कहो पर किसके बालक हो ?'
कहा 'हनुमान राम के दूत सुने हो, उनका ही हूँ पूत'
चिहुँक बोले 'तू ने क्या कहा सदा हि ब्रह्मचारी मैं रहा
कवन विधि तूँ मेरी सन्तान बताओ अपना जनम वखान'
कहा तब उसने जन्म की कथा सुना था नारद जी से यथा
कहा फिर यह भी बात वखान 'हमारे स्वामी असुर महान
नाम अहिरावण, लङ्का जाई लिये आये, सुन्दर दो भाई
पुरी में खुशहाली है छाई पड़ेंगे बलि, आज रघुराई'
कहे कपिवर 'जाऊँ मैं तहाँ असुरपति तोर करत बलि जहाँ'
न जाने दिया, ढीठ वह बन्दर हो गया लड़ने के लिये तत्पर
पटक उसके ही पूँछ से बाँध घुसे पुर में कपिवर निर्बाध
मिला चामुण्डा देवी-मन्दिर विलोके, अविकल सानुज रघुवर
नमन मन ही मन उनको किये रूप देवी का ही धर लिये
खड़ा हो गये देवी थल जाई नमन करि, देवी भूमि समाई
विविध विधि कर पूजन शृङ्गार असुर ने पूजा असि की धार
कहा राघव से 'सुमिर ली इष्ट क्षणिक जीवन तेरा अवशिष्ट'
कहे रघुनन्दन 'पवनकुमार' उठा असि चाहा कर दूँ वार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


गरज उठे खड्ग पकड़ हनुमन्त 'अरे खल ! अब तेरा है अन्त'
तुरत ही काट खड्ग से शीश उसी की बलि कर दिये कपीश
असुर थे जितने सबको मारे कहत 'चिरजीवी राम हमारे'
पुनः दोनों को पीठ चढ़ाई चले लङ्का सुमिरत रघुराई
द्वार पर मकरध्वज फिर मिला उसे खोले, पर वह नहिं हिला
दयालु पूछे 'कौन कपि वीर ?' बताये कपिवर, तब रघुवीर
कहे 'आसुर स्वभाव नहिं गहो जनक सम परमारथ रत रहो
करो तुम अब इस पुर पर राज' हरष बोला 'जै हो महाराज !'
लिये सानुज प्रभु को हनुमान पहुँच आये, सब कहे 'महान
कार्य दुष्कर यह तुमने किया सबों को जीवन ही है दिया'

## ३४. राम की शक्ति-पूजा

लवटि अहिलोक से रघुराई मन हि मन सोंचे 'रिपु दुःखदाई
प्रबल है, मायावी भी संग में विजय पर मुझे चाहिये रण में
अतः पुजूँ दुःख हरने वाली असुरदलिनि माँ दशभुजवाली
ब्रह्म वेला की थी शुरुआत लखन से बोले अम्बुजगात
'भवाब्धि में जब जीवननैया उलझ जाये, नहिं मिले खिवैया
अमल मन से जो करे पुकार दयामयी दुर्गा लेत उबार
उन्हें ही हम भी अनुज ! पुकारें विजय दें माँ दाया विस्तारें'
सुनत लक्ष्मण व कपिसमुदाई जगत् जननी की ध्यान लगाई
बइठ गये श्रीरघुवर के साथ जुड़े थे सबके दोनों हाथ
नहीं थे पूजा के उपकरण भाव से जगजननी का स्तवन
किये आरम्भ जभी असुरारि गगन में सम्मुख सिंह सवारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किये, आईं माँ आद्याशक्ति जिन्हें है प्यारी निर्मल भक्ति
कान्तियुत जगजननी का देह वरसता था नयनों से नेह
सजा शशि लेखा से था माथ वरदमुद्रा में दक्षिण हाथ
लाल चुनरी लहराते केश चमकते अङ्गाभरण विशेष
चरण की कोमलता, अरुणाई निरख सरसिज भी जात लजाई
निहारे प्रभु, जगदम्ब पधारीं मानसिक विधि से पूजि खरारि
अवनि पर शीश टेक अविराम भाव से बोले 'अम्ब ! प्रणाम'
जगज्जननी बोलीं 'हे राम ! तुम्हारे मर्यादित सब काम
सुकर्मों को, करने को स्थापन बना लेते हो करतब आपन
नहीं तो भृकुटी टेढ़ तुम्हारी निरख, असुरों की सेना सारी
भस्म हो पल में, हे पथद्रष्टा ! जगत में शुभ मारग के स्रष्टा !
चाहते हो मुझसे पाना वर समर में विजयी होओ रघुवर !
दशानन को तेरा हि आश्रय इसी से रहता सबसे निर्भय
मिटा दो उसका असुर शरीर सदा विजयी हो तुम रघुवीर !'
पराम्बा वाणी की यह ध्वनि ध्वनित ही थी कि तेज से सनी
प्रभा वरदायिनी कर से निकली बढ़ी रघुवर से आकर मिली
लखन संग सारी वानर सेऩ ध्यानरत थी, मूँदे निज नैन
सभी देखे, आयीं जगदम्ब वरस गई उनकी कृपा कदम्ब
सबों को ही यह अनुभव भया जगा गईं माँ मुझमें बल नया
एक हि बात समझ नहिं आई कवन वन्दित, माँ कि रघुराई
काहे, की अतिशय सुख मान किया माँ ने भी प्रभु गुणगान
जगज्जननी हो गईं अदृश्य छिपित हो गया मनोरम दृश्य
नयन खोले वानर समुदाई, निहारे लक्ष्मण, जेठे भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आज हैं तेजीदीप्त महान दयामयी दे गई थीं, वरदान

## ३६. रावण-वध

गगन में अभी छिपे थे तारे किये जै जै प्रभु का, कपि सारे
सुना रावण कुशली रघुनाथ बीस भुज से पीटा दश माथ
तनय वध से दारुण दुःख लहि कुपित था, फुफुकारत जिमि अहि
बचे थे सेना में जो शूर कहा उनसे कर जोरी क्रूर
'गदा, तलवार, तीर, त्रिशूल, परिघ, पट्टिश, भाला अरु शूल
गहो शस्त्रास्त्र, अश्व गज चढ़ी रथी पैदल सैनिक सब बढ़ि
घेर राघव को मारो आज' बढ़ा आज्ञा पा असुर समाज
तुमुल रण हुआ असुर कपि बीच रक्त से रणभूमि गई सींच
असुर करते शस्त्रास्त्र प्रहार, भालू कपि वृक्ष शिला से मार
दाँत से नख से काट विदार लगे करने रिपु का संहार
असुरगण लिये गदा, तलवार, शूल, फरसा शस्त्रादिक मार
वानरों को व्याकुल कर दिये भगे बन्दर रक्षा के लिये
विकल अनि देख सुजनसुखधाम बढ़े आगे रण में श्रीराम
कमलमुख पर सस्मित मुस्कान पदाम्बुज था विरहित पदत्राण
कमलकोमल कर तीर कमान लिये, वरसाते रिपु पर बाण
जलद का वश रवि पर ना चले उमड़ वरसे, धरती पर भले
तइसहिं थी वह निशिचर अनी तपन सम तपते रघुकुलमनी
हो रहे खल प्रभु शर से दग्ध, निरख रण कौतुक सुर भी मुग्ध
हवा जब तेज चलत वन माहिं उखाड़त वृक्ष, दिखे पर नाहिं
लगे मरने तस राक्षस वहाँ, नहीं दिखते, हैं राघव कहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शवों से पटी हुयी रणभूमि लगत ज्यों रुद्र की क्रीड़ाभूमि
यक्ष, गन्धर्व, देव, ऋषि, मुनि कहत 'जै जै जै रघुकुलमणि'
अमित बलशाली प्रभु श्रीराम किये रणकौतुक आधा याम
अनगिनत असुर मरे, रणधीर निहारत रण, जो बच गये वीर
निशाचर, व्याकुल डर के भागे विलपते जा नारिन्ह के आगे
सुनि राक्षसियाँ गति विधि रण की लगीं रोने ले ले कर सिसकी
किसी ने कहा 'एकदम बुढ़िया कुरूपा राक्षसी सुपनेखिया
मदन अभिलाषा से राघव ढिग गई कैसे शरमायी नहिं, धिग्'
कही दूजी भी रोती हुयी 'दशग्रीव की मति मारी गयी
बहन की कही बात में आकर गये, सिय को ले आये हरकर
सिया दशमुख की होंगी नहीं मरेंगे अब तो असुरेश्वर ही
न माने बात विभीषणजी की अतः आ गई, घड़ी दुर्गति की

राक्षसियाँ रोती हैं घर-घर यह बात सुना जब दशकन्धर
टेढ़ी भृकुटी कर आँख लाल अत्यन्त क्रुद्ध ज्यों प्रकट काल
बोला उससे जो था समक्ष 'जा बोलो सबसे विरूपाक्ष!
रणधीर महोदर! महापार्श्व! अनगिनत सैन्य ले अपने पार्श्व
मेरे निशाचरो! कूच करो मैं आज तेरे संग नहीं डरो
झट मेरा भी स्यन्दन लाओ रणभेरी रण के बजवाओ'
आज्ञा पाते ही सकल काज हो गया और आसुर समाज
निज-निज वाहन चढ़, आगे बढ़ा रावण भी रथ पर आइ चढ़ा
खलबली मची वानर दल में 'आ रहा दशानन चढ़ रथ में
सिय-चोर, दुराचारी, कामी, सुरगण द्वेषी, पापी नामी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आता रघुनन्दन से रण को धरि मारो सब काटो खल को'
फिर महाघोर संग्राम छिड़ा रिपु जहाँ मिला, सब वहीं भिड़ा
रावण का रथ जिस ओर घुमा कपि सैन्य उधर धरती चूमा
'यद्यपि भालू, कपि सभी शूर पर यह निशिचर जो परम क्रूर
अनगिनत वीर मेरे मारी, दे रहा त्रास सबको भारी'
देखे, सोंचे, बोले सुग्रीव 'आ मुझसे भिड़ रे दशग्रीव!'
कपिपति ने कर में वृक्ष लिया असुरों पर धावा बोल दिया
गिरि शिखर फेंक करते थे वार दुस्सह रिपु को भीषण प्रहार
कपिपति कृत भीषण लगी चोट जैसे ही, निशिचर भूमि लोट
मर जाते थे, तड़पत कोई भागे कुछ युद्ध विमुख होई
अब कपिपति से विरुपाक्ष भिड़ा दोनों में भयङ्कर समर छिड़ा
बलशाली थे दोनों हि शूर करते प्रहार, रिपु-अस्थि चूर
कर दूँ, किन्तु कपिपति महान मारे थप्पड़ बड़ जोर तान
वह थप्पड़ था जिमि वज्र वार गिर गया असुर धरती पे हार
मुख, नाक, कान से रुधिर चला जैसे झरना ही बह निकला
विरुपाक्ष-प्राण तन से छूटा धीरज निशिचर गण का टूटा
कपि असुर सभी उद्वेलित थे ये मन से थे, वे बेमन थे
रावण तब कहा महोदर से 'हे वीर! आश अब है तुझसे'
'खाया मैं अन्न दशानन का अवसर है यही चुकाने का'
अस सोंच महोदर परम वीर बढ़ गया, जिधर सुग्रीव धीर
दो साँढ़ क्रुद्ध लड़ते जैसे भिड़ गये दोनों रण में वैसे
ले गदा परिघ मूसल प्रहार कभी करते थे खड्गों से वार
फिर बाहु युद्ध करने लागे कभी ये आगे, कभी वे आगे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मुक्कों से थप्पड़ से प्रहार घूसों लातों से करत वार
दोनों ने खड्ग उठाय लिया निशिचर ने पहले वार किया
था खड्ग यद्यपि तीक्ष्ण धार पर फँसा कवच में, व्यर्थ वार
चाहा खल खीचूँ खड्ग जभी कपि कर दिये भीषण वार तभी
सिर लिये मुकुट लोटा भू पर, कपि उछल कहे 'विजयी रघुवर'
तब महापार्श्व रण में आगे बढ़ गया, प्रलय जैसे जागे
मरने लागे कपि भालू वीर वानरी सेन हो गई अधीर
दुस्सह प्रहार निशिचर करता कपि शीश अवनि पर यूँ गिरता
जैसे वृन्तों से फल झरते अति तीव्र हवा झोंका लगते
वह राक्षस अतिशय क्रोधित था कपियों के शीश, पग, बाहु तथा
धड़ काट-काट कर फेंक दिया बहुतों को रण से विमुख किया
यह देख दशा निज सेना की भृकुटी तन गई वालिसुत की
ले लौह परिघ अतिशय भारी बड़ वेग सहित रिपु पर मारी
घायल कर दिये, असुर मूर्च्छित गिर गया नीचे, सारथि सहित
फिर शिला लिये गिरि शृङ्ग समान फेंके रथ पर श्रीजाम्बवान्
मर गये अश्व, रथ हुआ चूर पा तनिक होश, उठ गया क्रूर
अरु जाम्बवान को कर लक्षित मारा शर, भालूपति पीड़ित
यह देख दशा वालीकुमार अति क्रुद्ध, परिघ से किये वार
निशिचर के कर से धनु छूटा सिर त्राण गिरा भू पर टूटा
भिड़ गया असुर वाली-सुत से कोई भी कम, नहीं किसी से
ताहि क्षण मुष्टिक वज्र समान मारे अङ्गद हिय बीच तान
फट गया हृदय उस निशिचर का, कपि बोले 'जै हो रघुवर का'
कपि कृत जै का वह महानाद सुन रावण पाया अति विषाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बोला सारथि से 'सुनो सूत! मेरे सब मन्त्रीगण व पूत
शुभचिन्तक हितसाधक मेरे मर गये रण में, कपि पुर घेरे
सभी का कारण रघुवर राम करूँगा उससे मैं संग्राम
बढ़ाओ रथ मेरा उस ओर जहाँ वह कोशलभूप किशोर'
कहा यूँ रावण, रण को चला चराचर जीव जगत का दहला
किया खल तामस अस्त्र प्रयोग, होने लगे भस्म कपि लोग
अस्त्र तामस ब्रह्माकृत रहा इसी से वेगशाली था महा
निरख यह बलसुखशोभाधाम अनुज संग डँटे समर में राम
सहानुज ऐसे लगत नरेन्द्र कि जैसे अवरज संग सुरेन्द्र
धनुष टङ्कार किये रघुवीर पसर गइ ध्वनि रिपु-हिरदय चीर
लखन रोके रावण का वाट परन्तु सब शर उनके काट
दशानन पहुँचा राम समीप खड़े थे अविचल रघुकुलदीप
लगा वरसाने उन पर तीर काटते थे प्रहार रघुवीर
हुआ शर से आच्छादित रवि राम की श्याम घटा सी छवि
तभी वह बीस हाथों वाला, राम के सिर पर शर की माला
धनुष से रावण के जो छूटी नील आभा जिससे थी फूटी
बड़ी तत्परता से पहनाया, हुये नहिं विचलित श्रीरघुराया
किये अब रोष महाबलधाम चलाये रौद्र अस्त्र श्रीराम
छुटे जब प्रभु के कर से तीर, विकल होकर वह भी रणधीर
चलाया आसुर संज्ञक अस्त्र, प्रकट हुये रण में यत्र तत्र
नाचने वाले भूत पिशाच हाथ में लिये हुये नाराच
खोपड़ी मानव की भी लिये धरो मारो खाओ का किये
शोर, जब नभ से वरसा बालू हुये व्याकुल वानर अरु भालू

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


प्रकट हो गया चतुर्दिक आग बचाने लगे प्राण कपि भाग
विखर गये सूअर, गदहे, बाज विविध विधि के बहु जीव समाज
हुये आवृत जब श्रीरघुवीर चलाये आग्नेयास्त्र से तीर
प्रकट हुये रवि, शशि, ग्रह, नक्षत्र सरिस दीपित सायक सर्वत्र
तुरत मिट गई आसुरी माया, राजते कपि गण में रघुराया
मयासुर रचित भयङ्कर अस्त्र चलाया फिर वह, तो सर्वत्र
भयङ्कर दुःखदायी उत्पात निहारी, प्रभु नीलाम्बुजगात
चला गान्धर्व अस्त्र बड़ तेज किये खल कृत प्रहार निस्तेज
असुर से असुरारि का समर चकित देखत नभ से सब अमर
सुमित्रानन्दन बीचहिं आये सात शर एक हि संग चलाये
ध्वजा जो रथ पर थी अति सज्जित खोपड़ी से मनुष्य के चित्रित
कई टुकड़ी उसकी कर दिये पुनः शर दूसर कर में लिये
उसे साधे सवेग जब तान हर लिया वह सारथि का प्राण
चले फिर पाँच बाण अति पैने धनुष रावण के काटे जिसने
विभीषण उछले अब बड़ जोर गदा से वार किये अति घोर
दशानन के रथ के सब घोड़े धरा पर गिर गये, जीवन छोड़े
अनुज का करतब रावण देखा क्रोध से तन गई भृकुटी रेखा
उछल कर रथ से भू पर आया भयङ्कर शक्ति कर में उठाया
विभीषण को चाहा वध डारें तभी शर तीन लखन ने मारे
शक्ति वह बीचहिं में कट गई, विभीषण बचे खुशी छा गई
विफल हो गया वार सो रुष्ट दूसरी शक्ति ले वह दुष्ट
मयासुर की माया से निर्मित भयङ्कर शत्रुघातिनी निश्चित
उठाकर बोला 'बचो विभीषण' सुनत यह, आगे आये लक्ष्मण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विभीषण को अपने पीछे कर शक्ति वह झेल लिये सीने पर
सत्य वाणी के रक्षक रघुवर कहे तत्क्षण शक्ति लक्षित कर
'प्राण लोगे, प्रयास यह तेरा विफल हो, अनुज मरे नहिं मेरा'
गिर पड़े भूमि पर जब लक्ष्मण बहुत हि व्यथित हुये रघुनन्दन
कहे फिर कुपित राम 'कपिवरो! यहीं लक्ष्मण की रक्षा करो
अनुज यह मुझे प्राण से प्यारा बिना इसके सूना जग सारा
दशानन दुष्ट सिया का चोर सुजन दुःखदायी पापी घोर
अनवरत वरसाता जो बाण, पराक्रम देखे मोर महान'
कहत अस शरवृष्टि अविराम लगे करने रावण पर राम
वदन पर अगणित शर जब लगा दशानन समराङ्गन से भगा
पड़े थे लक्ष्मण लहू लुहान धरा पर, व्यथित हुये भगवान्
विविध विधि करने लगे विलाप कहे तब श्रीसुषेन 'प्रभु! आप
दुःखी नहिं होवें ना हि निराश हृदय गति ठीक, ठीक है साँस'
पवनसुत से फिर भिषकराज कहे 'वह ही औषधि फिर आज
चाहिये सञ्जीवनी, वह स्थान विदित तुझको, लाओ हनुमान!'
सुने कपिवर नहिं देर लगाये गये और लिये औषधि आये
वैद्य ने किया तुरत उपचार लखन उठ बैठे, उन्हें निहार
द्ररिद्री पारस जैसे पाये अनुज को तस प्रभु हृदय लगाये
तथा बोले अति नेह जताई 'मरण के मुख से लौटे भाई!
बड़ा सौभाग्य हमारा तात! मुझे तुझ बिन नहिं जगत सुहात
विजय, धन, धाम, जानकी, जीवन नहीं चाहिये कुछ तुझ बिन लखन!'
लख़ने बोले 'मेरे हित आप करें नहिं शोक, आर्य! निष्पाप!
प्रतीज्ञा किये असुर के वध का विभीषण को लङ्का देने का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आज ही सूर्य-अस्त से पहले करें रावण वध, विनती सुन लें
प्रार्थना सफल कीजिये मोरी उबारें जल्दी जनककिशोरी'
लखन की कही बात को सुनकर धनुष टङ्कार किये जब रघुवर
विभीषण प्रभु सम्मुख तब आये विनय पूर्वक यह वचन सुनाये
'रथी असुरेश, आप प्रभु भू पर समर असमान, बड़ा हि दुष्कर'
विभीषण स्नेही मन से चिन्तित निरख यह बोले, राघव सस्मित
'धीरता, शौर्य पहिया रथ का शील, सच्चाई ध्वजा पताका
विवेक, बल, दम, परहित हो घोड़ा क्षमा, समता, दाया से जोड़ा
सारथि जगदीश्वर का भजन, पाप से रहित रथी का मन
धरम मय अस रथ पर चढ़ि मीत ! किसी को कोई सकता जीत'
तभी रावण चढ़ि दूसर रथ पर समर में आया, युद्ध भयङ्कर
लगा होने, तब सुरगण सारे एकत्रित नभ पर हुये, विचारे
'दशानन रथी राम भूमि पर समर दोनों का नहीं बराबर'
सुने सुरपति सारथि बुलवाये तुरत रघुवीर समीप पठाये
कहे 'कहना प्रभु ! अरज हमार समर में रथ कर लें स्वीकार'
मातलि भूतल पर अब आये युगल कर जोरी विनय सुनाये
'कवच संग शक्ति, धनुष अरु बाण पुरन्दर प्रभु को किये प्रदान
साथ यह स्यन्दन भी हैं दिये समर में विजय प्राप्ति के लिये
बनूँगा सारथि मैं प्रभु तोर, वधें यह खल सुरद्रोही घोर'
हुआ अब द्वैरथ रण प्रारम्भ वरसने लगे बाण, जस अम्भ
चलाया असुर ने जो शस्त्रास्त्र देव, गान्धर्व, राक्षसी-अस्त्र
बीच हि में थे सब कट जाते राम तक कोई पहुँच न पाते
दशानन तब होकर अति क्रुद्ध किया सुर-सारथि को अवरुद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मार कर तीक्ष्ण अनगिनत तीर दिया मातलि को बहुत हि पीर
तदन्तर कुपित कोशलाधीश हुये, मानहु हों कालफनीश
तीक्ष्णतम शर खल पर वरसाये कवन समरथ जो उन्हें गिनाये
कुपित लखि प्रभु को जग थर्राया उदधि में भी तुफान सा आया
बड़े पर्वत भी डगमग डोले, देवता प्रभु की जै जै बोले
अमित तेजस्वी प्रभु के आगे प्रकट सब आयुध होवन लागे
हरष उत्साह सहित श्रीराम किये पीड़ित उसको अविराम
अनगिनत बार भुजा सिर छीन किये रण कौतुक राम प्रवीन
तीक्ष्णतम थे राघव के सायक रह गया रावण नहिं रण लायक
गिर गया घायल हो रण बीच तुरत सारथि उसका रथ खींच
ले गया, रणभूमि से दूर अतः बच गया दशानन क्रूर
हुआ चैतन्य, बहुत गुर्राया 'मुझे तूँ रणभूमि छुड़वाया
रखे क्यों नहीं, वहीं रथ रोक बहुत ही कायर हो, डरपोक!
विनय पूर्वक सारथि ने वचन कहा 'अति जर्जर था तव वदन
चूक जाते थे आपके लक्ष्य किया जो, सारथि का कर्तव्य
थके भी थे ये घोड़े सारे, नहीं भागा मैं भय के मारे'
सुना वह जब सारथि की बात तनिक गत रोष हुआ दशगात
भगा फिर निज गुरु के गृह गया सुरक्षा हित उपाय निज नया
पूछ झट आया निज पुर माहिं किया मख शुरु अन्तःपुर माहिं
विभीषण जान गये यह बात, कहाँ पर यज्ञ निरत दशगात
कहे राघव से 'हे रघुवीर! भेजिये हनुमन्तादिक वीर
कर रहा यज्ञ दशानन बैठ करें सब वाधित, सदनहिं पैठ'
मिली प्रभु आज्ञा वानर धाये भवन में दशकन्धर के आये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विलोके मख रत निशिचर यहाँ जपाहुति विधि विशेष कर रहा
तुरत उपकरण सकल छितराये कहे 'खल ! अब बक ध्यान लगाये
यहाँ बैठे हो, रण से आकर न लागत तुझको लाज मुखागर !'
कहत वानर भालू लंगूर महल दिये ढाह, चढ़ि कंगूर
लगे करने कुछ अति उत्पात तभी अङ्गदजी मारे लात
दशानन को, तनिकहुँ नहिं हिला करत जप अचल, कि जैसे शिला
गये फिर कपि नारिन्ह के पास बकोटी, नोच दिये अति त्रास
लगीं सब रोने जब अकुलाई खरी खोटी भी उसे सुनाईं
उठा आसन से तब खिसिआई, सफल श्रम कपि भागे हरषाई
दुःखी रावण कि कपि करि तङ्ग कर दिये अनुष्ठान को भङ्ग
पुनः मन्दोदरी समझाई 'बयर रघुवर से पिय ! विसराई
करें सन्धि, सिन्दूर न छूटे कोख तो लुट गइ, मांग न लूटे'
कहा रावण 'सुन लो हे प्रिये ! कही कई बार, सन्धि के लिये
परन्तु सब सुत अरु प्रिय भाई हमारे मरे, समर में जाई
बचे कोई भी नहिं जब शेष सभी को मारे अवधनरेश
कहो क्या बदला लूँ मैं नहीं, मुझे ही मिली वीरगति कहीं
तनिक भी नहीं मानना क्लेश तूँ देना संग, करि चिता प्रवेश'
जदपि जीवनकी रही न आश क्रुद्ध हो रण को रघुवर पास
दशानन रथारूढ़ जब चला अनेकों असगुन मग में मिला
टूट गिरी राजसदन से ध्वजा फड़क गइ उसकी बायीं भुजा
सियारिन सम्मुख बोली ऐसे निरख उसको हि रोवत जैसे
विविध असगुन हो गये मग बीच, न समझा काल विवश वह नीच
विलोकी भी दारुण उत्पात चला रण को, ले असुर जमात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अशोकवन जो लङ्का में बाग जहाँ जानकी निरन्तर जाग
ध्यान में प्रियतम के थीं उदास सुहृदया त्रिजटा आयी पास
समर में क्या हो रहा, बताई 'भिड़े हैं अब रावण रघुराई
चला अनगिनत बार शर तीस भुजा सिर काटे, कोशलाधीश
परन्तु सब फिर हैं उग आते निरख यह कपि व्याकुल घबराते'
सुनि सीता अतिशय अकुलाई कहीं 'दुर्भाग्य हमारे माई !
अभी नहिं हुये शेष, वह पापी तभी जीवित है, सुर सन्तापी'
कही त्रिजटा सीता पग लाग 'असुर का तुझमें अति अनुराग
इसी से हिय में तुझको धारे तथा हिय तोरे, नाथ तुम्हारे
सदा रहते, सारा संसार वसत जिनमें, प्रभु करुणागार
अगर ऐसे में देंगे मार इसे, मर जायेगा संसार
विचारी यह हि रघुकुलनायक अनवरत मार रहे हैं सायक
तीक्ष्णतम, प्रभु-शर की खा चोट विकल हो तुझको जब मति खोट
विसारेगा, रघुवर के बाण तभी हर लेंगे उसके प्राण
मिटेंगे सुर, गो, द्विज, तव पीर समय अत्यल्प, देवि ! धरु धीर'
कही धीरज की बहु विधि बात गई त्रिजटा घर, बीते रात
दशानन से करते हुये सभर श्रमित प्रभु थे विचार रत इधर
मरेगा राक्षस कवनी विधि गगन पथ से तत् क्षण तपनिधि
पधारे मुनिवर पूज्य अगस्त्य कहे 'हे राम ! सनातन गुह्य
पवित्रतम, रिपुहन्ता, सुखकारी, विजयप्रद रण में, मङ्गलकारी
स्तोत्र 'आदित्यहृदय' हिय धरो अधिक नहिं, तीन बार जप करो
चित्त सुस्थिर करि, हे निष्पाप ! विजय पाओगे निश्चय आप'
बताये मन्त्र और मुनि गये आचमन तीन बार प्रभु किये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


निहारत रवि मण्डल की ओर स्तोत्र का जप किये, अवधकिशोर
हुयी तब रविमण्डल से वाणी 'असुर वध शीघ्र करो धनुपाणि !'
विलोके ज्यों प्रभु दशसिर आया फड़कने लगी आँख भुज दायाँ
शकुन शुभ हुये विजय के दाता प्रसन्न अति आज भरत के भ्राता
हुये अब रथारूढ़ श्रीराम सवाँरन गो द्विज सुर के काम
चले तब मातलि से यूँ बोले वचन जैसे अमृत रस घोले
'हाँकते आप अमरपति का रथ बताना अधिक आपको व्यरथ
आ रहा रिपु-स्यन्दन इस ओर, थामिये दृढ़ हो रथ की डोर
करें अश्वों को अपने वश में चले रथ द्रुतगति से जब रण में
चित्त सुस्थिर होवे, मन निडर बढ़ें आगे, यह अन्तिम समर'
सुनत रघुनन्दन की यह बानी मातलि ने अतिशय सुख मानी
दशानन का रथ करके दायें सारथि रिपु सम्मुख रथ लाये
किये फिर भीषण रण शुरुआत राम रणपुङ्गव अरु दशगात
विजय की रघुवर को विश्वास असुर का मन अत्यन्त निराश
मारना मरना निश्चय जान छोड़ते थे दोनों शर तान
असुर सब कपियों के संग भिड़ा समर वह अनुपमेय था छिड़ा
पराक्रम निज-निज करते प्रकट असुर कपि, पा प्रतिद्वन्द्वी निकट
हताहत हुये निशाचर सारे बचे जो भागे भय के मारे
बइठ रथ में सायक वरसाते राम रावण अस शोभा पाते
कि जैसे नभ से जलधर श्याम उतर झर लाये हैं अविराम
देखकर रण का भीषण दृश्य राम रावण का अनुपम कृत्य
सभी थे चित्रलिखे से खड़े न करते वार, अचम्भित बड़े
वक्र गति कबहुँ, कबहुँ तिरीछे कभी आगे तो कबहुँ पीछे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सारथि दोनों, रथ को चलाते रथी संग रण कौशल दिखलाते
गदा, मूसल, परिघों की ध्वनि छूटते सायक की सनसनी
तीव्र ऐसी की उदधि सारे हुये विक्षुब्ध, व्यथा के मारे
उनमें रहने वाले जीव तथा दानव उद्विग्न अतीव
देव, गन्धर्व, सिद्ध, ऋषि, किन्नर, निहारत रण सुस्थिर हो अम्बर
कहे 'राघव रावण का युद्ध अनन्वय अलङ्कार की शुद्ध
बनेगी परिभाषा जग माहीं समर अस हुये नहिं, होंगे ना ही'
काटते थे पुनि पुनि रघुनाथ दशानन के सब सिर अरु हाथ
उपज जाते थे फिर वे नये निरख यह चिन्तावश प्रभु भये
'परीक्षित शर अमोघ अति तेज आज इस खल पर क्यूँ निस्तेज'
तभी मातलि राघव से कहे 'असुर से क्रीड़ा क्यूँ कर रहे
साधिये असुरारि ! वह बाण अगस्त्यजी ने जो किया प्रदान'
निहारे राम विभीषण ओर विभीषण बोले 'अवधकिशोर !
अमिय इस खल के नाभि बीच इसी से मरता नहिं यह नीच'
तनिक मुसकाये रघुकुलराया दशानन वध का अवसर आया
यशस्वी रघुकुल अरु सुरलोक निमिष में होंगे अभी विशोक
कनकभूषित सुपङ्ख से युक्त अमित शक्ति व वेग संयुक्त
वानरी सेना को सुखदायी असुर कुल हेतु अति दुःखदायी
किया विधि ने जिसका निर्माण धनुष पर प्रभु साधे वह बाण
असुर वध को उद्यत असुरारि डोलने लगी धरा यह सारी
कान तक प्रत्यञ्चा को तान चलाये सायक राम सुजान
हने शर एक कोशलाधीश लगे रावण को बन इकतीस
सुखा नाभि को, सिर भुज काटा दशानन तन भूमि पर पाटा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



समाया शर तरकस में आई ध्वनि गूँजी 'विजयी रघुराई'
निकल गये प्राण दशानन तन से धनुष अरु बाण छूट गये कर से
शमित हुयी रणभूमि की धूल, गगन से सुर बरसाये फूल
गरजते हर्षित हो कपि वीर 'मरा रावण, विजयी रघुवीर
असुर वध का प्रण करके पूर्ण किये भय रहित लोक सम्पूर्ण'
सुरों की दुन्दुभियाँ बज उठीं दिशायें मनहर आज अनूठी
गगन निर्मल प्रकाश छा गया, मिला गो द्विज को जीवन नया
विभीषण, अङ्गद अरु सुग्रीव, लखन, कपिगण को हरष अतीव
घिरे स्वजनों से कोशलपति राजते जनु सुर में सुरपति
दशानन था जस वृक्ष महान, हवा सम रौंदे रघुकुलभान
गन्धहस्ती सम राक्षसराज, सिंह सम हते जिसे रघुराज
साँढ़ सम था निशिचर कुलपति, व्याघ्र ज्यों मारे कोशलपति
निरख अग्रज मृत भू पर पड़े विभीषण व्याकुल हो रो पड़े
बहुत विधि समझाये श्रीराम 'करें अब समय प्राप्त जो काम'
तभी मन्दोदरी आदि रानी वहीं आई मृत प्रियतम जानी
लगीं करने बहु भाँति विलाप 'असुरपति ! भू पर लेटे आप
आपके अतुलित बल के आगे सदा सब डरे, इन्द्र भी भागे
काल भी हरदम रहा अधीन वही तुम आज, अवस्था दीन
दानवों के नृप पिता हमार इन्द्रजित सुत जानत संसार
लोक विजयी पति हैं दशगात मुझे कुछ चिनता की नहिं बात
वही मैं, आज शोक अभिभूत व्यथित हूँ, मृत जिसके पति पूत
समर में खर को वधे खरारि तथा हनुमत ने लङ्का जारी
तभी हम सब ही जान अनर्थ बहुत समझाये, निज को समर्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मानने वाले आप न माने जगत्पति को मानव ही जाने
उसी का है यह फल, हे नाथ ! दयालु अतिशय ही रघुनाथ
पतिप्राणा हैं जनक किशोरी दिये दुःख उनको, करके चोरी
इसी अघ से प्रियतम ! तुम हारे, समर में वधि प्रभु तुझको तारे
सिया को लाये जब तुम हर कर 'असुर वध का ये आया अवसर'
विभीषण ने भी कहि समझाया किसी की सुने न निशिचरराया !
बनाये वैरी अवधभुआल उचित ही हुआ आज यह हाल
बचा नहिं कोई रोने वाला' विभीषण ने झट आइ सम्हाला
बधाये धीर क्रिया सब किये और्ध्वदेहिक, रावण के लिये
नारियों को पुर में पहुँचाये पुनः रघुराई सम्मुख आये

इन्द्र का दिया धनुष अरु बाण कवच संग त्यागि रोष महान
विराजे राघव सरसिजवदन सभी के साथ, बोल मृदु वचन
सुसादर मातलि को श्रीराम पठाये सरथ पुरन्दर-धाम
पुनः कपिपति को हिय से लाई कहे 'तेरे बल जीते, भाई !'
लखन से कहे 'अनुज तुम जाओ विभीषण का अभिषेक रचाओ
असुरपति होंगे अब ये शुभमति खुशी होगी मुझको इसमें अति'
विभीषण बोले 'पुर पग धरें असुरपुर को प्रभु ! पावन करें'
कहे श्रीराम 'मीत ! तुम जाओ तथा झट मङ्गल घट भरवाओ
पिता आज्ञा पुर में नहिं जाऊँ अनुज ये अपना रूप पठाऊँ
पवनसुत, अङ्गद, कपिपति, नील करें सम्पन्न काज' सबहि मिल
गये पुर में, अभिषेक रचाये विभीषण लङ्काधिप कहलाये
आ गये सब हरषित प्रभु पास कहे प्रियवाणी रमानिवास,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


'विभीषण अब लङ्का के अधिपति पवनसुत ! इनसे लेकर अनुमति
जहाँ हैं सिया अभी हि जाओ कुशल पूछि, मम कुशल सुनाओ
'दशानन मरा, हुई निज विजय नहीं अब उससे कोई भी भय'
तुरत उनका लेकर सन्देश लवटि आओ' कहि जै अवधेश

## ३६. सीता की अग्निपरीक्षा

गये हनुमान जहाँ वैदेही, नमन किये 'राघव विजयी' कही
कहे पुनि प्रभु सन्देश वखानी सुनि सीता अतिशय सुख मानी
तनोरुह युत तन, बोल न आये नयन में अतिअनन्द जल छाये
कहीं फिर वाणी करि के थीर 'परमप्रिय समाचार कपि वीर !
सुनाये, पर मैं समझ न पाऊँ तुझे क्या देकर तुष्टि पाऊँ
जगत में ऐसा कुछ भी नाहीं सुखद सन्देश सरिस कहूँ जाही'
सिया की सुनकर मीठी बात पवनसुत बोले पुलकित गात
'मुखाम्बुज के ये मीठे बोल जगत में माँ ! सबसे अनमोल
कुशल हैं, विजयी भी श्रीराम इसी से मैं हूँ, पूरणकाम'
कहे पुनि 'आसुरियाँ ये दुष्ट दिया है सबने आपको कष्ट
कहें माँ ! केवल 'हाँ' वध डालूँ बहुत है इन पर रोष, निकालूँ
सिया बोलीं 'परवश थीं ये सब नियति भी टेंढ़ हमारी थी तब
इसी से ये सब मुझे सताईं न इनके दोष कहो कपिराई !'
कहे कपि 'धरणि-सुता तूँ धन्य क्षमा जो तुझमें, कहीं न अन्य
कहें माँ ! अब प्रभु को सन्देश झटिति जाऊँ, जहँ अवधनरेश'
सिया बोलीं 'जा प्रभु से कहो दरश दें जल्दी जैसे भी हो'
गये हनुमान जहाँ रघुराई वहाँ की बातें सब बतलाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे 'माँ कहीं विनय के साथ दरश अब शीघ्र दीजिये नाथ !'
विभीषण से बोले श्रीराम 'करें अब आप शीघ्र यह काम
कराके सिय को सिर से स्नान दिव्य आभूषण अरु परिधान
करायें धारण, फिर ले आयें' सुनत प्रभु कथन विभीषण धाये
महल में जा रानिन्ह को भेजे कहे प्रभु थे जस बात सहेजे
गये तदनन्तर जहँ थीं सिया झुकाई सिर अभिवादन किया
कहे 'देवि ! झट हों तैयार बुलाये प्रभु दुःखमेटनहार'
सवारी में फिर उन्हें बिठाये विभीषण रघुपति पहँ ले आये
खड़े थे लखन, कीसपति, कपिवर, बइठ ध्यानावस्थित से रघुवर
विचारे 'जदपि सिया निर्दोष परन्तु, लोक रहित परितोष
कहे यदि 'सिया असुर घर रहीं न मानेंगे, पतिव्रत निरवहीं'
दूसरे मुझ नृप का अनुकरण करेगी प्रजा, ये अनुचित चलन
त्याग दूँ, साध्वी है अति कष्ट सही है, जीवन ही निज नष्ट
करेगी, उचित सिया हित नहीं, बनूँगा मैं कठोर क्या कहीं'
हुये दृढ़, यह सिय की परछाहीं तिरोहित हो, जो पावक माहीं
प्रकट हो मैथिली, इसके लिये राम जितकाम कठिन उर किये
विभीषण आये तब सिर नाई हरषि बोले 'श्रीसीता आईं'
तटस्थ आदेश राम ने दिया कहो 'आवें विदेह की धिया'
देखने को रघुनन्दन-प्रिया सभी ने भीड़ वहाँ पर किया
शिविका रक्षक बेंत चलाकर हटाते थे, मगस्थ जो आकर
मची अति कोलाहल 'सब हटो' 'सिया आ रहीं' 'राह से छँटो'
निरख उद्वेग कहे रघुवीर 'इन्हें इस भाँति देकर पीर
अनादर क्यूँ कर रहे विभीषण ! असुर, कपि, भालू मेरे प्रिय जन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विपत्ति, तन, मन की पीड़ा में स्वयम्बर, रण, मख की बेला में
स्त्रियों का दिखना अनुचित नहीं, सिया इस समय विपत्ति में ही
भवन, परदे व चहारदिवारी न छिपती इन चीजों में नारी
प्राप्त अपने पति से सत्कार, शील, सु-चरित्र, शुद्ध आचार
आवरण होते कुल वधुओं के, कही यह वाणी मेरी सुन के
सिया को शिविका से नहिं लावें सभी देखें, वे पैदल आवें'
वचन कुछ रूखे प्रभु के जान व्यथित लछिमन, सुकण्ठ, हनुमान
उधर शिविका तजि जनकदुलारी चलीं, सिर सबके झुके निहारी
आ गईं राजत जहँ अवधेश निरख मुखचन्द्र कहीं 'प्राणेश !'
अभी आगे कुछ कह नहिं पाईं नहीं पद धूलि सिर रख पाईं
तदन्तर बोल उठे श्रीराम 'मैथिली ! मुझे न तुझसे काम
अकेले समझ कुटी में तुझे दशानन चुरा लिया था, मुझे
दैव वश दोष हुआ था प्राप्त असुर वध से वह हुआ समाप्त
असुर ने तिरस्कार था किया मनुष्योचित बदला मैं लिया
कराता मुक्त तुझे यदि नहीं सभी जन कहते मुझको यही
हुआ असुरेश राम को भारी असुर गृह में हैं इनकी नारी
इसी से सेतु उदधि पर रचा यहाँ आकर रण भीषण मचा
उबारा तुझे, सुयस विस्तारा जगत् में रघुकुल श्रेष्ठ हमारा
अगम सागर लाँघे हनुमान कपीश्वर उत्तम मित्र समान
साथ दे, किये पराक्रम भारी, विभीषण ने ली शरण हमारी
सफल सब हुआ दशानन वध से किन्तु तुझ पर, पर घर रहने से
चरित्र पर आरोपित सन्देह मुझे अब तुझसे नाहीं स्नेह
नयन के रोगी को जिमि दीया न भावत, तैसे ही सुनु सिया !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आज तुम मुझको भाती नहीं जहाँ चाहो, चल जाओ वहीं'
हृदयवल्लभा राम की सिया किन्तु, दुदैव वार था किया
कठिन लोकापवाद के भय से परुख वाणी बोले प्रभु सिय से
सुनीं जो बात पिया की सिया व्यथित हो लज्जा अनुभव किया
नयन से बह चली अश्रुधार दिया दुदैव यहाँ भी मार
पकड़ आँचल मुख पहले पोछीं कहीं फिर धीरे से 'यह ओछी
वाणी, कहे आप अवधेश! पाप का तनिक न मुझमें लेश
हृदय में दूजे का नहिं स्थान आप ही जीवन, आप हि प्राण
दशानन बरबस मुझे उठाई यहाँ लाया पुर में रघुराई!
न इसमें मेरा था कुछ दोष, कवन कारण यूँ बात सरोष
कह गये अनुचित रूक्ष कठोर, वचन मन कर्म सदा ही मोर
रमण प्राणेश! आपमें किया, इसे प्रभु ने महत्व नहिं दिया
'त्याग दिये' कहला देते आप पठाये थे जब कपि, सन्ताप
समर का व्यर्थ नहिं यह होता, विरह भी प्राण न मेरा ढोता
कहे कैसी बातें निष्पाप! नहीं सामान्य व्यक्ति हैं आप
सदा मैं रही आपके साथ· बढ़ा अनुराग साथ ही नाथ!
विआही बचपन में ही लाये मुझे, फिर भी क्या समझ न पाये
कहत सब मुझे जनक की धिया किन्तु, जब पितु ने था मख किया
हुयी तब मैं उत्पन्न धरा से तौल कर मुझे नीच नारी से
भुला जब दिये नाथ! सब नेह करूँ क्यों धारण अब यह देह'
विलपती देवर ओर निहारी कहीं 'भैया! सुनु बात हमारी
मुझे मेरे स्वामी ने त्यागा सभा में, अरु कलङ्क भी लागा
जीऊँ जग में अपमान सहूँ, नहीं अब जीवित ही नहिं रहूँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिता कर दो मेरी तैयार यही इस दुःख की दवा हमार'
दुःखी थे सिय के दुःख से लखन, विलोके पर जब प्रभु के नयन
सजाये चिता, रो रहे खड़े सभी कपि, भालू व्याकुल बड़े
वहीं सीतापति खड़े उदास प्रदक्षिण करि सिय अग्नि पास
आ गईं, हाथ जोर यह वचन कहीं 'यदि कर्म, वाणी अरु, मन
सदा मेरा प्रभु का अनुसारी करें तब रक्षा अग्नि! हमारी
हृदय मेरा निशि दिन अविराम रमा हो प्रभु में, वाणी राम
जपी हो, मन में भी प्रभु ध्यान हमारे, तो हों मलय समान
हुताशन, साक्षी बन कर मेरा सुनें रवि ! शशि ! निशि ! दिवस ! सवेरा !
हवा ! माँ वसुधा ! सभी दिशायें ! अगर हूँ निष्कलङ्क, सन्ध्यायें !
अगर मति की गति राम हमार जगत साक्षी अग्नि! सुविचार
समझते हों, मुझमें नहिं पाप करें तब सब विधि रक्षा आप'
कहत यह पावक को करि नमन हृदय के बीच रखे प्रभु-चरण
भूमिजा अग्नि बीच समाईं चतुर्दिक लहर शोक की छाई
असुर, वानर सब हा हा कार कर उठे, चीखीं निशिचर नार
'कनक की कान्ति वाली सिया शरण अग्नि में देखो लिया'
पितर, सुर, ऋषि, मुनि सब ने देखा सभी चुप, प्रबल भाग्य की रेखा
तदन्तर सुरगण विधि के साथ वहीं आये जहँ थे रघुनाथ
राम कर जोरे शीश झुकाये खड़े थे, सुर गण विनय सुनाये
अमर बोले सादर 'श्रीराम ! सुरों में श्रेष्ठ विष्णु तव नाम
आपकी सत्ता कबहुँ न नसी स्वयं विभु आप, नेत्र रवि शशि
अनादि अरु अनन्त भगवान आप, साधारण मनुज समान
उपेक्षा सिय की क़रिये नाहीं, करें रक्षा जो पावक माहीं'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहे रघुनन्दन 'मैं इस समय स्वयं को जानूँ दशरथतनय
मुझे मैं जो हूँ जहाँ से आया बतायें' बोले जब रघुराया
कहा विधि ने 'रघुवर! तुम हरि पालते जग को, सृष्टि करि
प्रलय के कारण भी हो राम! तुम्हारे तो अगणित हैं नाम
स्वयंप्रभु, अविनाशी, सुखकारी तथा जड़ चेतन सत्ताधारी
आप ही हो उपेन्द्र, मधुसूदन अभी बन करके रघुकुलनन्दन
वधे रावण को, था दुःखदाई पराक्रम तव अमोघ रघुराई!
आप हैं ब्रह्म सिया हि माया, पुरुष तुम ये प्रकृति रघुराया!
अभिन्न शक्ति ये आपकी प्रभु! सकल जग पावनकारिणी, विभु!'
परमसुखदायी सुन्दर शुभकर विधाता की ये बातें सुनकर
चिता से हव्यवाह भी निकले पिता सम सिय को अपने संग ले
सिया जब अग्नि में न समाईं ठीक वैसी ही, सजी सजाई
उदयकालीन सूर्य सम रङ्ग सजे आभूषण से सब अङ्ग
केश सिर पर घुंघराले काले रेशमी आंचल सिर पर डाले
तनिक नहीं सुमनहार कुम्हलाये सिया ऐसी, रघुवर पहँ लाये
कहे पावक 'सुनिये श्रीराम! नहीं इनमें है दोष का नाम
दण्डकारन में आश्रम बीच अकेली हैं, यह जानी नीच
दशानन ने था इन्हें चुराया, कड़े पहरे में रखा सताया
प्रलोभन भाँति-भाँति दिलवाया डरा राक्षसियों से धमकाया
तदपि मन रहा आपमें रमा न कोई पतिव्रता इन समा
सकल शुभ लक्षण वाली सती आपमें ही बस इनकी रति
वचन, बुद्धि, मन, नैनों द्वारा कहीं लीं आश्रय, न हि निहारा
सर्वथा जनकलली निष्पाप इन्हें स्वीकार कीजिये आप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न कहिये, इनको बात कठोर हे रघुकुलनन्दन! आज्ञा मोर'
हरषि बोले रघुवीर 'हुताशन! चुरा लाया था इनको रावण
रखा दश मास इन्हें निज पुर में, विवश थीं फिर भी थीं पर घर में
जदपि नहिं इनमें कमी जरा सी परन्तु जग है छिन्द्रान्वेषी
परीक्षा इनकी, शुद्धिविषयक जगत् हेतु थी अति आवश्यक
परीक्षा यदि मैं ना ही करता मुझे जग कामी, मूरख कहता
पतिव्रत से अपने ये रक्षित करे मनमाना रावण किञ्चित्
असम्भव था, जस तट सागर से अलंघ्य तस सीता पामर से
समझता हूँ मिथिलेश किशोरी वचन, मन, कर्म से, केवल मोरी
आप सब देवों की भी आज्ञा करेगा रघुवंशी न अवज्ञा'
कहत राघव बढ़ि आगे आये सिया को कर धरि पास बिठाये
सिया सुख पाईं राम सुख पाये, सुमित्रानन्दन दौड़े आये
गहे पदकमल, वीर हनुमान, कपीश्वर, कीस, भालू, सुख मान
चरण रज लेने को सब धाये सुमन सुरगण नभ से वरसाये
तभी प्रभु सम्मुख शिव आ गये लखन, सिय, राम तुरत उठ गये
किये तीनों सादर पद वन्दन कहे शिव 'प्यारे रघुकुलनन्दन!
दशानन जनित त्रास अरु भय घोर तम सा था, सब थे सभय
आप रण में रावण को मार किये सुरकाज, सुखी संसार
आप अब अपने पुर को जायें, भरत को मिलकर सुखी बनाये
सहत प्रभु! तोरी विषम वियोग व्यथित सब, मात सुहृद पुरलोग
मिलें सबकें मन को दें मोद, तपत भू पर जिमि वरस पयोद
विविध मख करें, राज्य सिर धरि वंश विस्तारें, हे नरहरि!
विलोकें कोशलभूपकिशोर! जरा नभ पथ पर तो उस ओर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मिला जिनको सुरपति का धाम धन्य जिनसे जग में पितु नाम
आ रहे नृप दशरथ महराज आपके स्नहे विवश रघुराज !'
बोल यह भोले बाबा शंकर गये ज्यों हि, देखे श्रीरघुवर

### ३७. दशरथ का आगमन

धरा पर उतरा एक विमान विराजित जिसमें नृपति महान
सहानुज नमन राम ने किया नृपति ने बाहु में भर लिया
हरष विह्वल बोले नृप 'तात ! विलग तुझसे नहिं स्वर्ग सुहात
भेजने को तुझको वनवास कैकई कृत वह अनुपम त्रास
तथा उसकी वह वाणी कड़ी अभी भी उर को शालत बड़ी
कुशल तुझे निरख वधू के साथ शान्ति पाया, मैं अब रघुनाथ !
हुआ मालूम सुरों से आज विष्णु ही करने को सुर काज
किये हैं धारण मनुज शरीर तुम्हीं हो वह, मेरे रणधीर !
दशग्रीव-वध कर डाले राम ! हुआ सम्पन्न सुरों का काम
अवधपुर को अब बेटा ! जाओ भरत से मिलो, राज्य निज पाओ
निहारूँ सिंहासन पर तुझे लालसा यह ही उर में मुझे
सुखी हो कौशल्या अब तात !' कहे कर जोर राम तब बात
'भरत संग मझली माँ को आप 'त्याग करता हूँ' यह जो शाप
दिये हैं, उनको वह ना लागे पिताश्री ! रघुवर यह वर माँगे'
तुरत 'ऐसा ही होगा' कहकर स्नेहपूर्वक बोले फिर नृपवर
'लखन ! तेरा हो सुयश महान राम-पद सेवा सरबस मान
जगत में तूँ ने सब पा लिया' विलोकी, खड़ी विनत मुख सिया
कहे 'बेटी ! तूँ जग में धन्य उपेक्षा पतिकृत तोर नगण्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तुम्हारे अपयश मार्जन हेतु कहे जो कुछ भी रघुकुलकेतु
कुपित मत होना तूँ वैदेही! तुझे उपदेश हमारा यहीं'
दिये तीनों को आशीर्वाद गये दशरथजी, इसके बाद
पुरन्दर आइ कहे 'श्रीराम! कहें कुछ मेरे लायक काम'
कहे राघव 'जो वानर वीर तजे मेरे हित रण में शरीर
अमरपति! आप इन्हें करि दया तुरत ही जीवन दे दें नया
और ये जग में जहाँ भी रहें फलें फल, निर्मल नदियाँ बहें'
तुरत मघवा ने मानी बात जिये सब, स्वस्थ सभी के गात
मुदित मन उस दिन सबके साथ बिताये यामिनी श्रीरघुनाथ

## ३८. विभीषण द्वारा श्रीराम का सत्कार एवं अवध के लिये प्रस्थान

हुआ प्रातः रघुवर जब जागे विभीषण खड़े जोर कर आगे
कहे 'रघुनायक! कृपानिधान! कृपा करि सविधि कीजिये स्नान
सभी उपकरण उपस्थित यहीं' कहे प्रभु 'नहीं मित्र! यह नहीं
कहें कपिपति से, कर लें स्नान वानरों को भी देकर मान
विविध विधि से उनका सत्कार कीजिये, यह नृप नीति उदार
मुझे तो याद आ रहे भरत, न जाने कइसे होइहें रहत
बहुत करते मुझसे अनुराग निहारत होइहें मेरा मार्ग
नहाना, वस्त्राभूषण, भोग न भाते मुझे, भरत से योग
झटिति हो, कीजिये कोई यत्न' विभीषण बोले 'हे नररत्न!
धनद का पुष्पक नामक यान दिव्य तेजस्वी श्रेष्ठ विमान
धनाधिप को परास्त कर रण में छीन लाया था रावण, उसमें
विराजें, अवधपुरी को जायें विनय पर मेरा, कुछ रुक जायें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


ये लङ्का, लङ्का की सम्पदा सकल प्रभु का, मैं सेवक सदा
सिया संग करूँ आपकी पूजा मात्र सत्कार, भाव नहिं दूजा'
विभीषण की सुन ऐसी बात प्रेम से बोले सरसिजगात
'वीर ! तुम सुहृद व उत्तम सचिव बने, पूजे, सत्कार अतीव
किये, अब कहता हूँ मैं यथा सुनो; मानो ना ही अन्यथा
अनुज वह चित्रकूट तक आये लवटि चलूँ मैं, पुनि पुनि दुहराये
कही उनकी मैं ने नहिं मानी फिरे वह, भरि आँखों में पानी
मिलूँ उनसे जा गले लगाऊँ, जननी के, गुरु के, पदरज पाऊँ
यहाँ तो पूर्ण हुये सब काम ठहरना ठीक नहीं, अविराम
चलूँ मैं, सब दीजिये अनुमति' कहे जब यूँ प्रभु कोशलपति
विभीषण लाये पुष्पक यान विविध विधि के उपहार-समान
गगन चढ़ि सारी वस्तु लुटाये जिसे जो भाया, कपि अपनाये
विभीषण कृत सत्कार विशेष निरख हर्षित थे अवधनरेश
तभी लङ्काधिप अरज सुनाये 'आ गया पुष्पक, प्रभु ! अपनायें'
कनकभूषित विमान वह दिव्य देखने में मनहर अरु रम्य
चमकते हीरे, मोती, नीलम फटिक के फर्श दीखते अनुपम
शीश पर पीत श्वेत ध्वज तने बहुत से कोष्ठ थे भीतर बने
कोष्ठ के भीतर माणिक जड़े कीमती सिंहासन थे पड़े
वेदियाँ जहाँ तहाँ थीं बनी चँदोवा चाँदनी जैसी तनी
आस्तरण सब ही पर थे सुन्दर छुद्र घण्टिका युक्त थे झालर
देखने में विशाल वह ऐसा शिखर गिरिवर का होवे जैसा
रुके नहिं, कहीं भी उसकी गति निरख सम्मुख खुश सीतापति
सिया लछिमन को ले रघुराई चढ़े उस पर, वाणी सुखदाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कीसपति लङ्कापति से बोले मधुर ऐसा, जस मिसरी घोले
'सखे ! सुग्रीव ! सुहृद का जैसा होत कर्तव्य, किये तुम वैसा
वानरी सैन्य तोर, बन मीत किया मित्रोचित सारी रीत
सभी ने मेरे हित दुःख सहे, कहें अब ये निज घर जा रहें
सभी से कहना मेरा, दुःख हो कभी भी, तो सङ्कोच रहित हो
बताना मुझे, राम मैं तेरा अवध का करते रहना फेरा
मीत ! तुम भी अपने पुर जाओ व्यवस्था देखो अरु सुख पाओ
विभीषण ! आप राज्य सञ्चालन करें निश्चिन्त प्रजा का पालन
अवधपुर को मैं भी प्रस्थान करूँ, सब अनुमति दें, सुख मान'
मधुर वाणी सुन बोले कपिपति विभीषणजी भी कि 'हे रघुपति !
हमें भी साथ आप ले चलें, समझ लेंगे कि भाग्य हैं भले
जननी के गुरु के पद सिर नाई अवधपुर देखेंगे सुखदाई !
निरख अभिषेक आपका जीवन सुधारेंगे फिर सीतारमन !
कहेंगे जो, आज्ञा अनुसार सम्हालेंगे निज-निज घर द्वार'
कथन सुन उनके श्रीरघुराई कहे 'यह अति उत्तम है भाई !'
सचिव संग अपने लङ्कानाथ तथा भालू, बन्दर ले साथ
बइठ गये पुष्पक में सुग्रीव मुदित मन सबका, आज अतीव
'चलो' पुष्पक से कृपानिधान कहे ज्यों, नभ पर उड़ा विमान
कहे पुनि सिय से 'जनककुमारी ! इधर देखो लङ्का छवि न्यारी
उधर वह भी देखो रण-भूमि रक्त अरु मांस, कीच सम जमी
दशानन सुर गो द्विज विद्रोही मरा मेरे सायक से यहीं
यहाँ मैं कुम्भकर्ण को मारा लखन ने मेघनाद संहारा
मैथिली ! मेघनाद था छली जेठ सुत रावण का अतिबली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सुराधिप को उसने था जीता जिसे वध दिये अनुज ये, सीता !
यहीं पर वीर निशाचर सारे कपीश्वर, अङ्गद, हनु ने मारे
प्रहस्त, मकराक्ष, यहीं सब मरे वीरता सबकी वर्णन परे
उदधि पर देखहु सिय ! यह सेतु बँधाया मैं जो तुम्हरे हेतु
विविध विधि के रत्नों का आकर गरजता कैसे यह रत्नाकर
कला नल-नील की यह अनुपम, सकुच दोनों कपि बोले 'प्रभु हम
हो गये थे असफल, यह सागर बहा ले जाता था सब पाथर
रचा है नाम आपका सेतु सुयस पाये हम रघुकुलकेतु !'
बात बदले प्रभु 'यहाँ विभीषण मिले थे आकर, हम शिव थापन
किये थे, 'सेतु बन्ध' अति पावन बनेगा तीरथ, कल्मष नाशन'
उतारि यान, उतर गये राम सिया संग, सादर किये प्रणाम
अचानक जोरे हाथ विभीषण खड़े थे सम्मुख, रघुकुलभूषण
कहे 'क्या कहनी है कुछ बात कहो, काहे तुम हो सकुचात'
सभी साचरज खड़े थे वहाँ मिले थे यहीं, आज फिर यहाँ
कवन कारण यूँ सम्मुख खड़े कि जैसे लिये समस्या बड़े
किये उत्साहित रघुकुलकेतु विभीषण बोले 'तव यश केतु
फहर रहा, त्रिभुवन में हे राम ! जलधि पर सेतु का क्या काम
पुरी लङ्का असुरों का वास, वहाँ सब प्राणी बिना प्रयास
पहुँच जायेंगे, राक्षस दुष्ट सदा होते पर दुःख से तुष्ट
कहें क्या गो द्विज को ये त्रास नहीं देंगे प्रभु ! पाकर पास'
राम कहने नंहिं आगे दिये बढ़े पैदल धनु कर में लिये
साथ ही चले विभीषण लखन मन हि मन सोंचत, 'कारण कवन'
पहुँच कर सेतु पर एक ओर कहे वे जेठे अवधकिशोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'विभीषण ! कथन आपका सही जरूरत सेतु की अब नहीं'
कहत यह धनु की नोक धसाये शिला बस एक मात्र, खसकाये
राम के मनोभाव को जान उदधि ने क्षण में सेतु महान
कर दिया दृष्टि-पथ से दूर हुये वापस, सिय पूछीं 'शूर !
ये विग्रह ?' 'हनुमदीश्वर नाम इन्हें भी सादर करो प्रणाम'
मैथिली से बोले रघुवीर 'इन्हें स्थापित किये, हनुमत् वीर'
चढ़े फिर सब विमान में जाई राम ने बीती बात बताई
'तुझे है याद प्रिये ! उस समय प्रतिष्ठा हेतु विश्रवा-तनय
तुझे लाये रथ में बैठाकर समय से शिव-विग्रह नहिं पाकर
तुम्हारे कर से बालू-निर्मित शिवस्थापन करवाये, विस्मित
सभी थे, तुझको वापस भेजे दक्षिणा आपन मुझे सहेजे
गये लङ्का, तब हनुमत आये लिये शिव-विग्रह, पर घबराये
हो चुकी थी सम्पन्न प्रतिष्ठा उधर कपि मोर कथन में निष्ठा
रखे थे, 'शिव से विग्रह पाना तभी लेकर के वापस आना'
पहुँच बोले हनुमन्त 'विलम्ब हो गया, पर आकर के अम्ब
चली गईं, खल लङ्का ले गया क्षोभ यह दूजा, मुझको नया'
कहा मैं 'तुझको है यदि कष्ट हटा दो स्थापित विग्रह, रुष्ट
न होओ' कपिवर जोर लगाये बहुत, किन्तु वह हटा न पाये
हुये जब श्रान्त, तो मैंने कहा 'तूँ लाये जो विग्रह, वह महा-
विशिष्ट है, स्थापित होगा यहीं' प्रतिष्ठित कपि से विग्रह वही
पहुँच गये हम देखो किष्किन्धा यहाँ हि वाली नामक योद्धा
रहता था, वध मैं ने किया, नगर यह अति सुरम्य है सिया !'
विदेहजा प्रभु से बोलीं तभी 'नाथ ! ये वानर यूथप सभी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

पत्नियों को अपने संग ले लें रुमा, तारा आदि सब चलें'
कहे राघव 'यह बात तुम्हारी बहुत ही उत्तम जनकदुलारी!'
उतारे पुष्पक कोशलराज कहे कपिपति से 'हे कपिराज!
आप यूथप वीरों से कहिये 'अवध को सभी सपत्नीक चलिये'
आप भी रुमा तथा तारा को संग ले चलिये, शीघ्र अवध को'
पवनसुत भी प्रभु-आज्ञा पाये जननी से मिलने हेतु धाये
निरख सुत को मन में अति मोद हुआ, जननी बैठा ली गोद
अभी अम्बा वात्सल्य विभोर कहें कैसे, हनुमत कुछ और

कहीं हैं सियजू प्रेम वशात् 'चलो सब' सुन सुकण्ठ की बात
विविध विधि का लेकर उपहार सिया ढिग आयीं, वानरनार
रुमा, तारा सारी हि आयीं जानकी सब को गले लगायीं
लिये सबको पुष्पक आकाश उड़ा, पहुँचा जहँ अञ्जनिवास
बताये हनुमान अब 'अम्बा! आ रहे प्रभु, साथ जगदम्बा
लखन अरु लङ्कापति भी आये' 'दशानन ?' 'नहिं माँ! वे तो नसाये'
पुनः हनुमान समूची कथा बताये, राम-विजय हुयी यथा
विफर गइ माँ 'यह छोटा काम गये इसके लिये लङ्का राम
लजाया दूध, कहाँ बल तेरा' पवनसुत बोले 'दोष न मेरा
मुझे थी जाम्बवान् की आज्ञा उचित नहिं था, कि करूँ अवज्ञा'
कहीं माँ 'दुःख पाये प्रभु तोर' पहुँच गये श्यामल गोर किशोर
सभी संग, सबने किया प्रणाम परन्तु निरखत लखन ललाम
बड़े अचरज से अञ्जना ओर, कहीं वे 'छोटे अवधकिशोर!
तुझे सुन बात हमारी अटपट लगी' कहि वदन घुमा लीं वे झट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा स्तन से वे दूध जो गारीं अचानक हुयी वहाँ ध्वनि भारी
चूर गिरि शिखर, वीर घबराये झुके लछिमन पग में, सिर नाये
सभी थे स्तब्ध कहे रघुराई 'जगत धन तुझसे, धन तूँ माई !'
अञ्जना बोली 'रघुवर ! तोर करूँ क्या स्वागत जग में मोर
यही सरवस, बेटा हनुमान इसे अपनाओ सेवक जान'
कहे प्रभु 'दास नहीं माँ ! भक्त सदा ही यह मुझमें अनुरक्त
विदा दो माँ !' कह प्रभु चढ़ि यान वहाँ से किये आगे प्रस्थान
दिखाये ऋष्यमूक गिरि शिखर मनोहर, निर्मल पम्पासर
'मिली थी भीलनी शबरी यहाँ तथा वह देखो मैथिली ! वहाँ
लखन के संग कबन्ध ने पकड़ रखा था बाहु बीच में जकड़
काट कर भुजा किये हम नाश, आ गया देखो गीध निवास
पिता सम पूज्य थे पक्षी-प्रवर, वहाँ वह देखो सेना संग खर
मरा था, आ गई पञ्चवटी राजती कैसी प्रकृति नटी
नदी गोदावरी की यह धार बड़ी निर्मल, वह कुटी हमार
सुरक्षित अब भी, कदली का वन तथा यह कुम्भज आश्रम पावन'
सुतीक्ष्ण, शरभङ्ग, अत्रि के वास दिखावत, चित्रकूट के पास
आ गये, रघुवर रविकुलरवि जहाँ रहते मुनि आदि कवि
'श्याम सलिला यमुना ये, सीता ! धवल धारा युत ये सुरसरिता'
सभी ने सादर शीश झुकाये कहत 'अति भाग्य कि दर्शन पाये'
अवध जब दृष्टि पथ में आया हुये पुलकित सानुज रघुराया
सिया से बोले हरषि श्रीराम 'मैथिली ! सादर करो प्रणाम
अयोध्या मुझे बड़ी हि प्यारी पावनी सरयु निर्मल वारी
निहारें आप सभी जन नीचे पुरी गुह की, सुर सरिता सींचे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लड़कपन से गुह मीत हमारे वसत वन में, पर हिय के न्यारे'
दिखायी पड़ा सामने सङ्गम हरषि बोले श्रीराम 'सिया हम
पहुँच गये, जहँ मुनिवर भरद्वाज निवसते, किन्तु पञ्चमी आज
अवधि वनवास की अन्तिम यही' समझ रुख प्रभु का, पुष्पक वहीं
उतर जब गया, त्रिवेणी जाई किये मार्जन, सब संग रघुराई

### ३९. हनुमान का अयोध्या के लिए प्रस्थान

पवनसुत से बोले फिर राम 'सौंपता हूँ तुझको यह काम
अभी हि वीर ! अवधपुर जाओ कुशल सब हैं न, पता लगाओ
बीच में शृङ्गवेरपुर जाना वहाँ गुह से मिल कुशल बताना
खुशी होगी सुन अतिशय उन्हें अवध का सुगम मार्ग भी तुम्हें
बतायेंगे, फिर भरत से मिलना पूछ कर कुशल, 'कुशल हम' कहना
आ रहे राम, सिया सौमित्र साथ लङ्केश कपीश्वर मित्र
समझ कर भरत की सब गतिविधि तुरत वापस आना बलनिधि !
राज्य में लिप्सा होगी उनको अगर, मैं फिर जाऊँगा वन को'
पवनसुत आज्ञा पाये चले राम मुनि भरद्वाज से मिले
नमन करि मुनि को रघुकुलमणि विनय से पूछे 'हे तपधनी !
अयोध्या का मुनिवर ! कुछ हाल जानते हैं, है वहाँ सुकाल ?
सुनत आशीष दिये हरषाई कहे मुनिवर कि 'हे रघुराई !
अयोध्या में सब ही विधि कुशल परम प्रिय अग्रज का हि प्रतिपल
प्रतीक्षा करते रहते भरत पादुका पूजि आपकी, करत
उसी के अधीनस्थ पुर काज कुशल जननी सब, कोशलराज !
प्रवृत्ति नामक अन्तेवासी अवध आता जाता, सुखराशि !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उसी से मिलता है सब हाल अयोध्या में सब भाँति सुकाल
सिया सौमित्र सहित हे राम! धरे मुनिवेष बने निष्काम
विपिन में हि करने को डेरा यहाँ आये थे जब, मन मेरा
व्याप्त था करुणा से निष्पाप! फिरे तुम, देख मिटा सन्ताप
सहे अति कष्ट किन्तु मुनिजन का सफल तप किये, दशानन सिय का
किया अपहरण, आप खर मारे, मिताई कपि से, उदधि किनारे
किये शिव थापन, सेतु रचाये, दशानन वधे, देवगण आये
तपस्या के प्रभाव से अपनी यहीं से देखा, रघुकुलमणि!
चाहता मैं भी दूँ वरदान कहें कुछ भी, मन में सुखमान
दूसरी बात कि रात बितायें यहाँ ही प्रातः होते जायें'
प्रसन्न राघव बोले कि 'तोर बात सिर आँखों पर मुनि! मोर
कृपा यह ही करिये, तरु सारे मिलें जो मारग मध्य हमारे
सभी फल वाले हों भरपूर सुखी हों सब मेरे कपि शूर'
कहे मुनि ज्यों हि 'ऐसा ही हो' बिना ऋतु के भी वृक्ष हरे हो
विविध फल फूलों से लद गये, उधर कपि शृङ्गवेरपुर गये
मिले गुह अतिशय प्रेम दिखाई खुशी जस निधि दरिद्र ने पाई
पहुँच गये कपि अब नन्दीग्राम जहाँ श्रीभरत बैठ कर राम-
राम ही जपते थे दिन रात, आज पर रहि रहि के अकुलात
विचारत अवधि हो गई पूरी कठिन विधि अब भी प्रभु से दूरी
किया कम नाहीं, अतिशय विकल हो रहे, युग सम लागे पल-पल
विरह की अवधि बीती सारी बीतता आज नहिं दिन भारी
कहीं मेरे मन में ही कपट नहीं तो आ हि जाते प्रभु झट
कुटिलता, राज्य हेतु लोलुपपन समझ कर ही मेरे जीवनधन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नहीं आ रहे, वे परमोदार मुझे करते हैं प्रेम अपार
'भरत ले राज्य, मैं वन में फिरूँ' सोंच लें अग्रज यदि, क्या करूँ
नहिं, नहिं, नहीं, नहीं यह नहीं किया यदि प्रभु ने ऐसा कहीं
भरत तज देगा पापी प्राण सुनें सब जन, कल होत विहान'
तभी हनुमान मनुज का देह धरे आये, देखे सस्नेह
राम के लिये हि बैठ विसूरत अनुज हैं ये, या प्रेम की मूरत
कहे कर जोरी कपि 'निष्पाप ! विरह वश जिनके, व्याकुल आप
वही दनुजारि श्रीरघुनाथ सिया लक्ष्मण को लेकर साथ
आ रहे हैं वापस रणधीर मिटा सुर, मुनि, गो, द्विज का पीर'
भरत जी प्रेमाधिक्य के कारण हुये मूर्च्छित से, पुलकित था तन
हुआ कुछ होश, कहे अकुलाई 'कहाँ से आये, कौन हो भाई ?
तथा आतप से व्याकुल पथिक लहे जल जैसे तुमने ठीक
उसी विधि से सन्देश सुनाये तुझे क्या दूँ, कुछ समझ न आये
लाख गौएँ, सौ उत्तम ग्राम सुसज्जित सोलह कन्या, नाम
तुम्हारे किया, समझ उपहार तुच्छ यह भेंट करो स्वीकार
कहो फिर सिय संग मेरे राम कहाँ ? कहँ मेरा लखन ललाम ?'
कथा कपि सारी कहे वखान भरतजी सुने परम सुख मान
भरतजी प्रेम पयोधि अपार राम पद प्रीति बनकर ज्वार
मारता था जब हिय में हिलोर बोल पड़ते थे 'रघुपति मोर
आ रहे, आवत लछिमन भ्रात तथा आ रहीं मैथिली मात
मनोरथ पूर्ण हुये, रिपुसूदन ! अवध में कहं दो, सारे पुरजन
मनाओ मोद, बजाओ बाजा आ रहे आज, अवध के राजा
सजाओ शिविका, रथ, गज, अश्व आ रहे भरत-भाग्य सर्वस्व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सजाओ राज सदन फूलों से सिंचाओ गली, सुगन्धित जल से
आरती सुत की मात उतारें आ रहे, रघुकुल के उजियारे
कहो जाकर, प्रणाम करि गुरु से आपकी कृपा फिरे प्रभु वन से

### ४०. अवध में श्रीराम के स्वागत की तैयारी

अवध में उधर मन्त्रिवर जाई कहे गुरुवर से 'हे मुनिराई!
जनक़लली, लक्ष्मण, रामलला आ रहे, यह सनेश नहिं मिला
महामुनि! पल-पल बीतत रात न आये यदि प्रभु होत प्रभात
दृढ़व्रती भरत लाल को कौन रोक सकता है, मुनिवर! मौन
रहें ना, कृपा दृष्टि विस्तारें' कहे मुनिराई 'यूँ मन मारे
बैठिये नहिं, सज्जित रजधानी करावें, करने को अगवानी
कहें, सब बढ़ें अयोध्यावासी आ रहें हैं प्रातः सुखराशि
मन्त्रिवर! साधु भरत का त्याग राम पद में अनुपम अनुराग
प्रबल है, खींचे अइहें रघुवर कवन अवरोधक शक्ति इतर'
ब्रह्म की रेख सरिस गुरुवाणी समझ के श्रीसुमन्त्र रजधानी
व्यवस्था करने तुरत सिधाये तभी उल्लसित शत्रुहन आये
प्रथम गुरु चरणन्हि शीश झुकाई बताये, आवत श्रीरघुराई
गये अन्तःपुर में हरषात जहाँ पूजा गृह में थीं मात
विनयरत बैठी, यह ले हेतु मैथिली, लक्ष्मण, रघुकुलकेतु
कुशल सब लौट अवध को आवें, भरत शत्रुघ्न अवध सुख पावें
चरण में रिपुसूदन सिर टेक कहे 'माँ! समाचार अति नेक'
परन्तु माँ हो प्रेम विभोर कहीं 'कह लाल! लाल! कह मोर
गई है जबकि इतनी रात तूँ आये काहे? कुशल तो तात!'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वे गिर हि जातीं, लिया सम्हाल माण्डवी ने, तब छोटे लाल
बताये 'सानुज बड़के भैया आ रहे भाभी के संग, मैया!'
सुनत बोलीं 'सीता संग राम आ रहा ? संग में लखन ललाम!
कहीं, सिर टेकीं, हे हरि! मोर सुन लिये, ऋणी सदा मैं तोर'
पुनः रिपुसूदन से वे बोलीं मधुर वाणी अमृत रस घोली
'ललन! बोलो, इन्दीवरगात सिया संग कहाँ ? लिये लघु भ्रात'
कहे वे 'सानुज प्रभु सिय मात बिता तीरथपति में यह रात
पधारेंगे कल निज पुर माहीं अम्ब! अब चिन्ता करिये नाहीं'
गये फिर, जहँ मन्त्री मतिमान कवन विधि हो, प्रभु की अगवान
व्यवस्था मिल कर सकल बनाये प्रात मझली माँ के गृह आये
चरण रज सिर धरि सुख सम्वाद सुना बोले 'नहिं करिये विषाद
आज मध्याह्न भाभी के साथ आ रहे सानुज श्रीरघुनाथ'
कैकयी स्वयं गवाँई निधि पा गई हों जिमि ताहि विधि
मुदित मन सबसे बोलन लागीं 'नहिं, अब मैं नहिं रही अभागी
राम रघुवर इन्दीवरगात पुकारेगा, कहि मुझको 'मात'
मिला यह समाचार कस ? तात!' 'पवनसुत आये थे' सब बात
बता रिपुसूदन बोले 'अम्ब! आप तैयार होवें अविलम्ब
लिवा मैं चलूँगा नन्दिग्राम, चलूँ जननी को करूँ प्रणाम'

माण्डवी, श्रुतिकीरति, उर्मिला वधू तीनों ही हिय से सरला
एक के पति तप त्याग के मूरत दूसरी के जन रक्षण में रत
तीसरी के पति हैं वनवासी सबों का जीवन श्रेष्ठ उदासी
परन्तु आपस में अति स्नेह एक ही प्राण विलग बस देह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



विचार गृह-विषयक एकाकार सभी के, मानो सङ्गमधार
इसी से उत्तम राजसमाज जगत में जैसे तीरथराज
माण्डवी कौशल्या-परिचर्या लगन से करती थी वधूवर्या
उर्मिला कैकेयी की आज्ञा मानती थी कि तनिक अवज्ञा
न हो जाये, रहती थी सजग, कठिन पति जैसा हि करतब मग
वधू श्रुतिकीरति सासु चरण लगी, पुनि संगहि करने नमन
गई, कौशल्या पहँ भिनुसारे वहीं रिपुसूदन राजदुलारे
तुरत उठ माँ का पद रज लिये सन्देशा प्रभु आवन का दिये
देत आशीष प्रफुल्लित मात सुमित्रा बोलीं 'शुभप्रद गात
फड़कते हैं, अवसि रघुराई सिया संग अइहें, दोनों भाई'
उर्मिला भी ताहि क्षण वहाँ आ गई, बड़की माँ थीं जहाँ
स्वजन सब थे, सबका अभिवादन करी, फिर की सासु पग वन्दन
सुनी जब जेठ जीजी आ रहीं तथा संग... तब यूँ आगे कही
'भवन पर कागा बोलत' मैया कहीं कैकेयी 'मोर रमैया
लवटि वन से निश्चय ही आज आ रहा, साजी मङ्गल साज
सजाओ, यह है सुखद सवेरा जेठ सुत राजा होगा मेरा
आ रही है विदेह की लली कुलवधू-रत्न हृदय से भली
आ रहा लखन राम के साथ अवध अरु तुम दोनों हि सनाथ
बनोगी, भाग्य हमारे श्रेष्ठ अवधपुर का राजा कुलज्येष्ठ'
कहे रिपुसूदन 'पुर में बहार बहुत, जन-जन को मोद अपार
भवन, गली, द्वार, सभी के सजे विविध मङ्गल के बाजे बजे
सबों के द्वार हेम-घट भरे थम्भ कदली के सोहत हरे
सदन पर सबके ध्वज लहराते, गीत मङ्गल नारी नर गाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सभी खुश हैं कि रघुकुलमणि आ रहे, सुनें गीत की ध्वनि'

आज वन से लवटि राम घरे अइहें ना।
दधि, दूब, अच्छत, हरदी, सोपारी सखी
सोने के थरिअवा में साजि लेहु ना। आज...
फल, फूल, पान बीड़ा, लवङ्ग डोभाई सखी
व्यञ्जन विविध बनाई लेहु ना। आज...
रामलला के माथे रोचना लगाइब सखी
सिया के सुहाग सेनुर लेई लेहु ना। आज...
सोने के दिअना कपूर के बाती सखी
रघुवर के आरती उतारी लेहु ना। आज...
हँसेली सुमित्रा रानी बिहँसे कैकेयी सखी
कोशिला के मन में अनन्द भरे ना। आज...
चढ़ि-चढ़ि अटन्ह निरेखे पुरजन सखी
सुन्दर सुघर जोड़ी कब देखूँ ना। आज...

हुयीं मातायें सब तैयार आ गये रिपुसूदन अब द्वार
लगत पुर की शोभा अति भली अवध के राजमार्ग अरु गली
हुये आकुलित भीड़ के मारे कहे रिपुसूदन राजदुलारे
'आज वन से रघुवर रजधानी आ रहे, आप सभी अगवानी
करें चल कर के नन्दिग्राम बोल कर 'जै हो सीताराम'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम
सुखद सुन्दर यही एक नाम
सीताराम सीताराम
अयोध्या के दुलारे राम
सीताराम सीताराम
लजाते देख के रति काम
सीताराम सीताराम
सदा जपते शिवा शिव नाम
सीताराम सीताराम
सुजन सुखदायी मेरे राम
सीताराम सीताराम
असुर संहारी वीर वर राम
सीताराम सीताराम
भरत के भैया राजाराम
सीताराम सीताराम
लवटि के आ रहे निज धाम
सीताराम सीताराम
गये सब गावत नन्दिग्राम
सीताराम सीताराम

*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# सातवाँ पर्व

# राजाराम

सिया संग सिंहासन पर राम
विराजत सुर नर मुनि गुण-ग्राम ।
वखानत अखिल लोक के स्वामी
सदाशिव वन्दित राम ! नमामि ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## १. भरत के पास हनुमान का आगमन

अवध उल्लसित आज रघुराई आ रहे, ले भूसुर समुदाई
चले मुनिवर वशिष्ठ चढ़ि स्यन्दन सजाये गज वाजि क्षत्रिय जन
मातं सब शिविका में असवार वैश्य गण लिये विविध उपहार
आ गये सब, ज्यों उदधि अपार उमड़ता राका शशि को निहार
भरत जी देखे अवध निवासी आ गये पर मेरे सुखराशि
नहीं आये, अतिशय दुःख लहत होइ आतुर कपिवर से कहत
'चित्त से चञ्चल होते वानर इसी गुण से प्रेरित हो, आकर
आप मुझसे यह तो नहिं कहे लौट वापस रघुवर आ रहे
होने वाला है अब मध्याह्न आगमन का कतहुँ से भान
हो नहीं रहा', कहे कपिवीर 'परम प्रिय प्रभु के आप, अधीर
हो रहे क्यूँ, वह तेज महान देखिए नभ पर, श्रेष्ठ विमान
धनाधिप का, जिसमें रघुवीर सिया लक्ष्मण अरु वानर वीर
संग हैं कपिपति लङ्कापति' सुनत सब जन प्रसन्न हो अति

## २. श्रीराम का भरत एवं अवधवासियों से मिलाप

बोल उठे 'आ गये रघुराई अवध ने खोयी निधि निज पाई'
विश्वकर्मा का रचित विमान पाइ रुख प्रभु का भू पर आन
ज्यों हि उतरा, देखे श्रीराम साधु सम वेष श्रेष्ठ निष्काम
भरत जी लोटे हैं भूमि पर कहत यूँ 'अपनायें करुणाकर !'
अनुज को देखत ही रघुराई भुजा भरि उठा लिये, हिय लाई
सींचते नयनाम्बु वरसाई कहत 'भाई ! भरत मेरे भाई !'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


भरत प्रिय लखन लाल से मिलकर सिया पद रज राखे निज सिर पर
विभीषण अङ्गदादि से मिलकर मिले कपिपति से 'कहे सुहृद्वर !
पाँचवें भाई ही हम सब के आप हैं' सुनकर शब्द भरत के
हुये आनन्दित कपि-समुदाई सराहन लगे शील नवताई
शत्रुहन प्रभु को फिर अग्रज को नमन करि किये नमन सीता को
राम ने देखा, गुरु अरु पुरजन, मन्त्रिगण, मातायें अति कृश तन
आई हैं, गहे चरण सरोरुह प्रेम वश सब थीं पुलक तनोरुह
कौशिला अम्बा, लक्ष्मण-मात दुनहु वात्सल्य विवश अकुलात
तुरत जनमें बछड़े को धेनु चाटती ज्यों, जननी तन रेणु
झारतीं सहलातीं अति विकल देत आशीष नयन थे सजल
'मोर अम्बा !' कहकर रघुनाथ नाये मझली माँ को ज्यों माथ
अम्ब सम्बोधन अमृत घोली सुनत हि कैकेयी रो बोलीं
'आ गये राम ! वत्स ! मेरे लाल ! बुरा था मेरा तुझ बिन हाल
पतिव्रते ! मैथिली ! जनकलली ! सदा ही जो तूँ सुख में पली
तुझे दारुण दुःख मैंने दिया' 'न ऐसा कहिये' बोलीं सिया
राम बोले 'माँ ! दया तुम्हारी जगत में अक्षय कीर्ति हमारी
फैल गई' बोल उठे श्रीलखन 'अम्ब ! अब सारे साधु सुजन
निरापद हैं, रावण को मारे अतुल बलशाली तात हमारे'
सभी माताओं से मिल लखन जननी का जा गहे श्रीचरण
सुमित्राजी अतिशय सुख मान दीं आशिष, रघुवर का प्रिय जान
मैथिली ने सासुन्ह का चरण छुआ, सब की सब साश्रु नयन
हृदय से लगा दीं आशीर्वाद लहीं अति आनन्द गत अवसाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अनुज संग आगे बढ़ रघुनन्दन द्विजन्ह का कर सादर अभिनन्दन
गहे गुरुवर वशिष्ठ के चरण विनम्रता पूर्वक बोले वचन
'आपकी कृपा से कण्टक टला मरा रावण, सुर नर भू बला
पूज्य गुरुवर ! ये मीत हमारे कीसपति, लङ्कापति, कपि सारे
विजय का श्रेय इन्हीं से द्विजवर !' बहुत आनन्दित सारे बन्दर
सबों को सादर शीश झुकाये मात से गुरु से आशिष पाये
मिले फिर परिजन पुरजन साथ घड़ी दुइ में सानुज रघुनाथ
सभी ने जाना श्रीरघुराई मिले पहले मुझसे ही आई
कहा सब ने 'स्वागत रघुराई' पूज्य पादुका भरत जी लाई
प्रेम से प्रभु पद में पहिराये हुये गद्‌गद यह वचन सुनाये
'आपके चरणों में रघुराया ! धरोहर रूप राज्य लौटाया
कोष सेना अरु अन्नागार आपकी कृपा से करुणागार !
सभी दसगुणित सम्हालें आप मिटा मेरे मन का सन्ताप'
अनन्तर अनुज को अपने साथ बिठाये पुष्पक में रघुनाथ
आ गये जहवाँ आश्रम पावन भरत का, सोहत परम सुहावन

### ३. पुष्पक की वापसी

कहे पुष्पक से तब रघुराई 'श्रेष्ठ वाहन ! धनपति पहँ जाई
करो उनकी आज्ञा का पालन पूर्ववत् रहो उन्हीं के वाहन'
राम की आज्ञा सुना विमान धनाधिप लोक गया सुख मान

### ४. मङ्गलस्नान एवं नगर-प्रवेश

कहे श्रीभरतजी प्रेमविभोर 'आप प्रभु मान अरज अब मोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अवध सिंहासन करें सनाथ भार बड़ भारी लागत नाथ!'
मात कैकई तभी तहँ आकर राम से कहीं 'राज्य अपनाकर
तपनकुलश्रेष्ठ! ताप मोरि हरो लाल! मेरे 'नहीं' नाहीं करो'
तथास्तु बोल विराजे राम स्नान शृङ्गारादिक सब काम
व्यवस्था से शत्रुघ्न लला के लगे होने तीनों अग्रज के
भरत की जटा स्वयं सुलझाये राम निज कर से, फिर नहलाये
भरत को, लक्ष्मण को, तब आपन जटा शोधन कर जनमनभावन
किये विधि पूर्वक मङ्गल स्नान, कराये धारण शुभ परिधान
अनुज रिपुसूदन प्रभु को आई, परम शोभा वह वरनि न जाई
चतुर्दश वर्षों तक रघुवंशी कुअँर अरु वधुएँ बनकर तपसी
रहीं जो, उनके सब उपकरण सँजो कर श्रुतिकीरति निज सदन
बनालीं मानहु पावन मन्दिर निरख कर सभी झुकाते थे सिर
मात्र मैथिली के हि परिधान नहीं थे उनमें, क्योंकि स्नान
करीं जब लंका में जगरानी परम पावन प्रसाद जिय जानी
रखी थीं सरमा अपने पास कि पावन होवे असुर निवास
बनाना हो जीवन यदि सुखमय, यशस्वी, तो तप त्याग यही द्वय
श्रेष्ठ साधन हैं, यह सन्देश दे रहे, ये उपकरण विशेष
सासुयें सिय को स्नान कराई वस्त्र, आभूषण बहु पहिराई
सुसज्जित कर शोभा खानि को निरख सुख पातीं जगरानी को
संग जो वानर वधुएँ आईं उन्हें कौशल्या स्वयं सजाईं
अवध में गुरुवर को कर आगे मन्त्री-गण अतिशय अनुरागे
राम अभिषेक हेतु सुविचार व्यवस्था किये, उमङ्ग अपार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जहाँ जो जन आज्ञा कुछ पाता दौड़ वह काम तुरत कर लाता
मन्त्रिवर स्यन्दन लाये सजाई बैठ गये उस पर सिय रघुराई
भरतजी थामे रथ की डोर डुलाते चवँर लखन इक ओर
चवँर दूजा लङ्केश डुलाये शत्रुहन सिर पर छत्र लगाये
चलीं वानर वीरों की नारी सिया के पीछे चढ़ असवारी
सुसज्जित अतिशय कान्तिमान वीर सुग्रीव और हनुमान
मनुज-तन धारी कीस समाज सवारी सबका था गजराज
सभी को संग लिये सुखदाई नगर को चले राम रघुराई
सिया संग, सोहत आनन्दराशि सूर्य सम, मैथिली दीप्त प्रभा सी
भाग्यशाली सब अवधनिवासी निहारे, रथासीन सुखराशि
आ रहे राम, किये अगवानी बोलकर, 'जै हो प्रभु धनुपाणि'
पुष्प लाजादिक मङ्गल द्रव्य लुटाते सब, पुर लागत रम्य
दुन्दुभि और शंख शहनाई बज रहे, अनुपम खुशियाँ छाई
प्रफुल्लित कामिनी हिय, पति प्यारे आ रहे, हिय पर रहने वारे
तरंगित होते मुक्ताहार ताहि विधि सरयू निर्मलधार
छहरती शोभ रही है आज अवधपति आये श्रीरघुराज
चतुष्पथ हाट नगर के द्वारे बधाई देते पुरजन सारे
आरती कर करतीं न्योछावरी रोक रथ जहाँ तहाँ पुर-नारी
आ गये राजसदन के द्वारे सियानुज साथ अवध के प्यारे
भरत से बोले तब सुखसिन्धु 'भवन जो उत्तम मेरा बन्धु !
सखाओं को मेरे तहँ वास दिलाओ' स्वयं जननी के पास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गये, पद धूलि शीश चढ़ाये भवन मुखरित 'रघुनन्दन आये'
सिया संग रविकुल रवि रघुराई विराजे गेह तो बजी बधाई
त्याग तप सेवा की प्रतिमूर्ति उर्मिला माण्डवी श्रुतिकीर्ति
पाइ पति, सब हैं मुकुलित आज 'धन्य तव प्रीति रघुकुल राज'
आज चौदह वर्षों के बाद अवध में गूँजत मङ्गलनाद

## ९. *श्रीराम राज्याभिषेक*

भरत रिपुसूदन ने सम्मान किया कपिपति का अति, सुखमान
कहे फिर अतिशय कोमल वाणी 'मित्र ! सागर का पावन पानी
भेज दूतों को आप मंगावें ताकि गुरु प्रभु का तिलक रचावें
तुरत सुग्रीव भेजे कपि चारि बोलकर 'जल्दी जलधि वारि
लाने, तुम सब चहुँ दिशि जाओ लौट प्रातः तक वापस आओ'
पूर्व दक्षिण पश्चिम अरु उत्तर दिशा को चले, ये क्रमशः बन्दर
रीछपति, ऋषभ, गवय, हनुमान स्वयं को भाग्यशाली अति मान
उदधि जल और पञ्चशत पावन श्रेष्ठ सरिता जल-पूर्ण सुहावन
स्वर्ण घट भरभर, कपि गण लाये सुमन्त्र रिपुसूदन मिल रखवाये
गये फिर गुरु वशिष्ठ पहँ भरत नमन कर बोले अति सुख लहत
'सुचारु सुखद व्यवस्था हेतु राज्य की, अब दिनकरकुलकेतु
विराजे सिंहासन, मुनिराई ! करें आज्ञा शुभ समय बताई'
विचारि विप्रन्ह संग वशिष्ठ कहे 'यह सप्तमी योग बलिष्ठ
राज्य आरोहन का अतिश्रेष्ठ, अवधपति होंगे रघुकुलज्येष्ठ'
सुनत सब जन अतिशय सुख पाये भरत, मन्त्री, सेवक सब धाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


छत्र, सिंहासन, चामर, व्यजन, पादुकापीठ रत्नमय सघन
सजाये गये, महल अति सजा होत प्रातः बहु बाजन बजा
रेशमी वस्त्र रत्नमय भूषण किये धारण रविवंश विभूषण
सासुएँ उद्वर्तन पिसवाई लगा कर सिय को स्नान कराई
रेशमी लहँगा अँगिया चादर कराईं धारण, वेणी सजाकर
सजाईं शीशफूल गले हार कान कुण्डल छवि लहत अपार
मांग सिन्दूर भाल पे बिन्दिया विराजत, नाक रत्नमय नथिया
बाँह में बाजूबन्द कर कंगन चूड़ियाँ, हथसंकर, कटि करधन
लगाने को पाँवन्ह महुँ लाली आ गई सन्मुख सिय की आली
कही वह चरण कमल को रँग कर 'जान पड़ता है कभी महा-वर
आपने दिया है इसको आलि ! चरण रज सुलभ इसे, यह लाली
धन्य है' बोलीं सिय सुकुमारी 'चातुरी तोर न्यारी अति, प्यारी !
'महावर' नूतन नाम धराई रचे पैरों में अब अरुणाई'
सजा नूपुर फिर मणिमय बिछिया सुसज्जित महारानी सम सिया
पीत पीताम्बर सिर पे सवाँरी लाई सिय को जहँ सुखकारी
ताहि क्षण सियाराम की शोभा निरख रति काम मनहिं मन क्षोभा
माइ, भाई, पुरजन, अनुरागे मन्त्रिवर सिंहासन किये आगे
'विराजो राम ! सिया संग' गुरुवर कहे जब, शीश झुकाई रघुवर
किये सबही को सादर नमन बैठे सिंहासन पर शुभसदन
सोहती बायें सिय गुणखानि निरख जननी जीवन धन मानी
विप्रगण सस्वर स्वस्ति वाचन कर रहे, बाजत मंगल वादन
हरषि के उठे किये अभिषेक पूज्य गुरुवर, तब विप्र अनेक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



विप्रवर वामदेव के साथ किये अभिषेक एक ही साथ
ब्रह्म निर्मित किरीट जिसे पूर्वज करत आये धारण, भरताग्रज
किये गुरु की आज्ञा से धारण तथा राजोचित अन्याभरण
विप्रगण रघुवर को पहिराये जगतपति अवधपति कहलाये
अवधपति लखन से बोले 'भाई ! विराजो इस आसन पर आई
रहे यह पद भी अब ना रिक्त बनो युवराज तुझे अभिषिक्त
करुँ मैं' लिपट गये गहि चरण लखन बोले 'प्रभु ! मेरा वरण
करें नहीं मैं सेवक, अनुगामी मुझे अपना रहने दें, स्वामी !'
विनय जब किये लखन गुण धाम किये युवराज भरत को राम
निरख अभिषेकपूत रघुवर को प्रसन्नता भइ अति माताओं को
उतारी आरती नेवछावर लगीं करने सब अति सुख पाकर

## ६. *अभिनन्दन एवं उपहार*

हो रहा था जब कि अभिषेक उपस्थित थे नृप वहाँ अनेक
यक्ष, किन्नर व लोकपति, नाग तथा गन्धर्व सहित अनुराग
भेंट सबने दिये न्यारे-न्यारे प्रेम प्रभुता प्रभु की स्वीकारे
उसी क्षण सुरपति ने भी न्यारा भेंट भेजा वायु के द्वारा
स्वर्ण निर्मित अति आभावाला कमल-शत युक्त, दीप्तिमयी माला
तथा मणिमय मुक्ता का हार किये रघुवर सादर स्वीकार
ऋचाएँ, यजुष् , गीति धरी देह तभी विधि संग आये, सस्नेह
किये रघुनन्दन का गुणगान 'सगुन निर्गुण तुझको कुछ मान
भक्ति पूर्वक भज जन भव पार तैर जाता, तुम लेते उबार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


शिवा शिव वन्दित रहित विकार निरन्तर तुझको नमन हमार'
स्तवन करि गये वेद विधि धाम आ गये आशुतोष प्रियराम
इष्ट छवि लखि शिव पुलक शरीर करत विनती सन्मुख रघुवीर

रविवंश विभूषण असुरारि !
वधि दशमुख भू विपदा हारी
मद मोह ममत्व निशा नाशक
दुःख द्वन्द्व विनाशक भू पालक
तुम हो वैकुण्ठ निवासी हरि
पद रज पाइ मुनि पत्नी तरी
दैत्यारि तुम हो प्रियाब्धिसुता
शबरी तर गइ तव भक्तिरता
भक्ति, जो भवाब्धि तरन को तरी
करि छोह यही मुझको दो हरि !
मैं नाम जपूँ निशि दिन तेरा
तुम सम प्रिय कोउ न हो मेरा

गये कैलास विनय करी ईश मुड़े अब इधर कोशलाधीश
विप्र, सैनिक, सेवक, परिवार, मित्र, मन्त्री, नर हों या नार
सूत, मागध, बन्दी-जन, आये सभी को राजा-राम बुलाये
अश्व, गउ, साँड़ व हीरे मोती युक्त आभरण, रेशमी धोती
स्वर्णमुद्रादिक, जो जेहि लायक प्रेम अरु आदर से रघुनायक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बाँटने लगे विविध उपहार उदारचूड़ामणि परमोदार
और फिर मणिमय मुक्ताहार पवन लाये जिसको, उपहार
श्रेष्ठ वह, मैथिली को पहिराये सुखद अवसर था, सब सुख पाये

## ८. श्रीसीता द्वारा हनुमान को उपहार

सिया ने भी मन माहिं विचारा पवनसुत मुझको सुत सम प्यारा
इसे दूँ भेंट, निकालीं हार दिये थे अभी जो करुणागार
निहारन लगीं पिया की ओर, कहे प्रभु-कोशलभूपकिशोर
'प्रिये ! जिसको मन माने तेरा भेंट में दे दो, आयसु मेरा'
सिया तब वह अत्युत्तम हार कीमती अनुपम, कह उपहार
पवनसुत को दे दीं महारानी 'परम प्रिय ये' सब कहे वखानी
मिला माँ से अनुपम उपहार बहुत ही खुश थे पवनकुमार
कहत सब 'धन्य धन्य' कपिराई उठे बैठे इक कोने जाई
कण्ठ से मणिमय मुक्ताहार निकाले कर धरि रहे निहार
परखते मानहु पारखी भले अचानक मणि इक दाँतो तले
दबा कर फोड़े ज्यों कपिराई सिया संग सस्मित श्रीरघुराई
सभा-जन को था अतिशय कष्ट हार को वानर करता नष्ट
विभक्त मणि खण्डों को हनुमान ध्यान से देख, जाने क्या मान
फेंक इक ओर दूसरी मणि तोड़े जब, सभा मध्य यह ध्वनि
गूँज गई 'अनुपम है यह हार पात्र नहीं इसके पवनकुमार
रोके कोई झट इनको अभी' किन्तु पहले की भाँति तभी
निरख फेंके, कपि तीसर मनका लिये मुख मध्य, विभीषणजी का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


गूँजा स्वर 'कपिवर ! हनुमान ! तोड़ मणियों को अतिशय ध्यान
सहित क्या ढूढ़ रहे हैं ? बोलें स्वर्ग की सम्पति भी यदि तोलें
हार की एक मोती से आप तुच्छ वह, श्रेष्ठ यही निष्पाप !'
'विभीषणजी ! मैं ने भी माना मिला माँ से अमूल्य है जाना
इसी से तो वह अनुपम निधि खोज मैं रहा आपनि विधि'
विभीषण बोले 'करके नष्ट पायेंगे मूल्य कौन ? सुस्पष्ट
बतावें' तब बोले कपिराई निरख सिंहासनस्थ सुखदाई
'परम छवि मात संग जो सोहै अमूल्य अनुपम निधि इनसे को है
यही छवि अथवा इनका नाम ढूढ़ मैं रहा इनमें सुखधाम
भवाब्धि तारक नाम या रूप नहीं हो जिसमें, राक्षसभूप !
तुच्छ वह त्याज्य मोर मन माने देख भली विधि से मुक्ता दाने
इसी से फेंका निशिचरराया !' कहे लङ्केश 'ठीक, यह काया
आपकी क्या रघुवर के नाम चाहे सुन्दर छवि का है धाम ?'
कहत वायुसुत 'निशिचरराया ! आपने ठीक हि ध्यान दिलाया
जरा मैं देख लूँ छाती चीर विराजत हैं कि नहीं रघुवीर'
बोल अस आपन छाती विदार पवनसुत देखे, राम हमार
सिया संग राजत हुये प्रसन्न विभीषणजी होकर के सन्न
चरण में गिर बोले 'कपिराई ! आपके रोम-रोम रघुराई
व्याप्त हैं' सबहि यही निहारे राममय ही हैं पवनदुलारे
स्नेह से उठ हनुमत का हाथ पकड़ कर रोक लिये रघुनाथ
नहीं तो अपनी सारी त्वचा चीर लेते कपि, प्रभु ने बचा
लिया, छाती का व्रण भी भरा वरद कर तन पर ज्यों ही फिरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ताकती थीं सरोष महारानी विभीषण को, पर सुन मृदु वाणी राम की, जगजननी की दाया सभी पुलकित, हर्षित कपिराया पड़ी थी जो भू पर मणिमाल विभीषण की अञ्जलि में डाल कहे 'अति मूल्यवान यह हार असुरपति! आप करें स्वीकार'

## ८. रामदरबार

पवनसुत का कर गहि अब राम बिठाये निज समीप, अभिराम दृश्य लखि सभा के सारे सभ्य बोल उठे 'रामभक्त यह धन्य' चरण गहि पादपीठ के पास बैठ गये कपि बनकर प्रभुदास सभा में हुआ सुनिश्चित स्थान परम प्रिय रघुवर के हनुमान राम सिंहासन पर हैं विराजे भूमिजा वाम पार्श्व में राजें चवँर ले सादर भरत डुलावत निहारत मनहर छवि सुख पावत लखन रिपुसूदन दुनहु भाई व्यजन गहि पवन करत हरषाई भाग्यशाली सुग्रीव विभीषण विलोकत शोभा अपलक नयन अवधपुर का सिंहासन आज सुशोभित हुआ कि कोशलराज विराजे राम, जनकलली बायें निरख सब पुरवासी सुख पाये अवध में हुआ राम का तिलक देव गन्धर्व गगन पर थिरक नाचने लगे बजा कर बाजा 'सबों में श्रेष्ठ अवध का राजा' हुये जब नृपति श्रीरघुवीर सुगन्धित शीतल मन्द समीर बहा, धन धान्य पूर्ण हुयी क्षमा सिया बन राज रहीं जो रम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## ९. अभ्यागतों की विदाई

राम राज्योत्सव में सहभागी होन आये जो नृप अनुरागी
यथोचित रीति से सनमानि अनुज संग, विदा दिये धनुपाणि
सभी को रघुवर प्राण समान, बीतता समय न पड़ता जान
एक दिन वानर सखा को राम बुलाये, आ सब किये प्रणाम
बैठ मुख छवि निरखत सस्नेह नहीं सुध कहाँ गेह कस देह
विविध विधि सत्कारे रघुवीर कहे मृदुवाणी पुनि 'हे वीर!
आप सब के हिय प्रेम अपार किये सेवा तजि निज घर द्वार
मुझे अति प्यारे हैं सब आप बात एक कहूँ, छोड़ सन्ताप
सुनो, मानो, जाओ निज धाम निबाहो जग महुँ सारे काम
याद करना सब मेरा नाम सदा हितकारक सबका राम'
वस्त्र आभूषण बहु मंगवाये सभी को सादर प्रभु बँटवाये
विभीषण, जामवन्त, सुग्रीव, नील, नल का सत्कार अतीव
किये, पर सबका मन था भारी 'दिखेगी फिर कब यह छवि प्यारी'
श्रेष्ठ आज्ञा पालन, जिय जान किये सब निज पुर को प्रस्थान
परन्तु वाली-सुत नहीं डोले तत् क्षण प्रभु भी कुछ नहिं बोले
सभी को भेजे जब रघुराई कहे अङ्गद प्रभु-पद सिर नाई
'प्रभु! कोउ मोर नहिं रखवाला पिता ने शरण आपके डाला
अज्ञ हूँ पर छोटे सब काज करूँगा घर के रघुकुलराज!
आपको छोड़ कहाँ पर जाई रहूँगा, तजिये नहिं रघुराई!'
सरल मृदु सुन अङ्गद की वाणी कमल जैसे नैनों में पानी
आ गया प्रभु के, पुनि समझाये बहुत विधि, जननी पास पठाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चले अङ्गद पर मन की डोर वहीं था, जहँ थे अवधकिशोर
पवनसुत से कहि नमन पठाये दुआरे थे जो छोड़न आये
अञ्जनिसुत ने आकर कहा 'विलग होते सब वानर महा-
विकल थे' रघुवर के दोउ नैना गये भर, हिय अति कोमल है ना
बुलाये गुह को अब रघुराई कहे 'तुम तो हो जस ये भाई
सुमित्रानन्दन अथवा भरत' हुये गद्गद् गुह वाणी सुनत
बहुत सत्कार किये श्रीराम गये केवटपति अपने धाम
अवधपति कृत जन का सम्मान सुना देखा जो करत वखान
'वीरता विनय धर्म धन साथ कहाँ किसमें ?' 'वह हैं रघुनाथ'

### १०. श्रीराम का आदर्श राज्य

सिया थीं कुशल सुगृहिणी नारी कार्यरत दास दासियाँ सारी
किन्तु पति की सासुन्ह की सेवा स्वयं करतीं, करवाई कलेवा
स्वजन परिजन पूरित था गेह जानकी का सबके प्रति नेह
भवन में दासी दास अपार समय से दे सबको उपहार
सदा रखती थीं सबको तुष्ट विनम्र मन से तन से सब पुष्ट
अवधवासी सब इन्द्रियजयी नारियाँ पतिव्रत धर्म-मयी
सभी मौसम ऋतुयें अनुकूल विपुल फलते फल, फूलत फूल
पाकशाला हो या मखशाला वह्नि में उठे प्रदक्षिण ज्वाला
मेघ वरसाता जल अनुकूल तपन तपते पर अन्धड़ धूल
नहीं करते मन को उद्विग्न कहीं कोई होता नहीं रुग्ण
कोइ याचक नहिं सब थे दाता अनुग्रह हेतु कोउ कुछ लेता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


स्वर्ग से सुर, वन से ऋषि मुनि अवध में आते, रघुकुलमणि सुसादर मिलते थे सुखमान धरम, नीति अरु कथा, पुराण भाइयों संग सुनत सुख मानी नित्य हि उत्सव मय रजधानी

श्रीराम राजा राम राजा कहत प्रमुदित लोग सब।
मन में रही नहीं पीर काहू को न तन में रोग अब ॥
सुख सम्पदा शोभा अवध की आँके सक्षम कौन कब।
'सुरपुर न समता करी सके' कहि डारे हारे लोग जब ॥
शुभ आचरण शुभ कर्म चारो ओर ही दिखते सदा।
विद्या विनय संतोष संयम धर्म रत सब सर्वदा ॥
रति राग लोभाशक्ति नाम ही मिट न जाये लोक से।
इस हेतु प्रभु पद प्रीति आश्रय ले मनुज के मन वसे ॥
यतियों के कर में 'दण्ड' 'जीतो' मन को शब्द बचा यहीं।
सारी प्रजा अनुकूल नृत्य में 'भेद' और कहीं नहीं ॥
पशु पक्षी भी निर्मल मना फिर नारीनर को को कहे।
संघर्ष, द्वेष, अमर्ष, ईर्ष्या भागे सब सद्गुण गहे ॥
निज वर्ण आश्रम धर्म के अनुकूल सब, सुफला मही।
श्रीराम राज्य में पाप ताप को ठौर कतहुं रहा नहीं ॥
एकछत्र शासक रामजी वसुधा अतीव सुहागिनी।
सारे चराचर सुत सहित भू राम की अनुरागिनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## उपसंहार

लिखे श्री लखन पुनश्च मात! कही गुरुवर की है यह बात
'दशानन का राघव संहार किये वह इष्ट मित्र परिवार
तथा आसुरी शक्ति के साथ गया यमलोक परन्तु अनाथ
बना लोकापवाद आ पास अवध में वसा उसी का नाश
हुआ नहिं उसने देख सुअवसर किया जो वार सिया का रघुवर
किये निष्कासन उसका शमन यही था जन-जन का मन वचन
सिया को कहि पवित्र वेदाग नमत अब, राघव का अनुराग
जनकलली के प्रति अनुपम, मिलन पुनः होगा दोनों का लखन!
राम का चरित पूर्ण मर्यादित न कोई शक्ति इसको बाधित
कभी कर सकती, सुनो कुमार! पुनः काल-क्रम में चक्रार
पंक्तिरिव आयेगा युग त्रेता, स्वजन पालक हरि असुर विजेता
प्रकट होंगे कौशल्या गोद, चराचर जग को नूतन मोद
मिलेगा, उधर राम की सीता प्रकट हो कर भूमि से दुहिता
बनेंगी सीरध्वज की, अवसर व्याह का आयेगा जब रघुवर
करेंगे सिय का पाणिग्रहण कौशिलानन्दन अशरण शरण'
विचारी आप्त वाक्य माँ! धीर धरें निश्चय मिलिहें रघुवीर
अनुज सम लखन आपका छोट हुयी हो गलती या हो खोट
क्षमा करियेगा, सहित प्रणाम लेखनी को दे रहा विराम
विनत –

सौमित्र

– राम का चरित लिखे लछिमन जो आदर सहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पढ़ीं सीता आनन्द अपार हुआ हिय में, गोपद सम पार
करूँगी विरहोदधि सुख मान, मिलेंगे प्रभु गुरु वाक्य प्रमाण

कथा अति पावनी मनभावनी सौमित्र सीता को
लिखे श्रीराम की कहि पाति हुयी सुखदायिनी सिय को
इसे जो कहत गावत सुनत ध्यावत राम अरु सीता
करत कल्याण यह सौमित्ररामायण, रची 'गीता'

*

मुद्रक : सीमा प्रेस, भरत मिलाप कालोनी, ईश्वरगंगी, वाराणसी, फोन० : २११०९२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | |
|---|---|
| नाम- | डॉ॰ गीता देवी मिश्रा |
| जन्म- | विक्रम सम्वत् २००१ |
| जन्म स्थान- | गढ़वा, पलामूँ (तत्कालीन बिहार) |
| पिता- | श्री काञ्चन पाठक वैद्य |
| माता- | श्रीमती केसर देवी |
| पति- | वेदपण्डित डॉ॰ वामदेव मिश्र प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग तथा सङ्कायाध्यक्ष, मानविकी सङ्काय, महात्मा गान्धी काशी विद्यापीठ वाराणसी-२२१००२ |
| शिक्षा- | प्रारम्भिक शिक्षा मायके में माध्यमिक एवं स्नातक स्तर तक का अध्ययन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, स्नातकोत्तर अध्ययन महात्मा गान्धी काशी विद्यापीठ एवं शोधकार्य काशी हिन्दू विश्व विद्यालय। समस्त अध्ययन विवाहोपरान्त पूज्य पतिदेव डॉ॰वामदेव मिश्र के निर्देशन में वाराणसी में ही हुआ। |
| रचना- | महाभारत में प्राप्त निर्वचनों का समीक्षात्मक अध्ययन, श्रीसौमित्ररामायण एवं भक्ति रसायन (पद्यसंग्रह)। |
| अभिरुचि- | लेखन, धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, एवं गार्हस्थ्य जीवन का दायित्व निर्वहण। |
| वर्तमान पता- | गीता-निवास के० २०/१४६ बी-१ राजमन्दिर, वाराणसी-२२१००१ |
| दूरभाष- | (०५४२) ३३१२८६ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi